www.indiatodayhindi.in

75वां स्वतंत्रता दिवस विशेषांक

1 सितंबर, 2021 50 रुपए

इंडिया टुडे

पथ प्रवर्तक

आजाद भारत को ढालने वाले असाधारण पुरुषों और महिलाओं की प्रशंसा में लिखी गई देश की प्रमुख हस्तियों की राय

RNI NO 45823/86 REGISTERED NO. DL(ND)-11/6042/2021-22-2023; LICENSED TO POST WPP NO U(C)-31/2021-23; FARIDABAD/46/2020-22

अग्रिम सप्ताह के लिए प्रत्येक शनिवार को प्रकाशित; एलपीसी दिल्ली-आरएमएस-दिल्ली-110006 से प्रत्येक शनिवार और सोमवार को प्रेषित; कुल पन्नों की संख्या 116 (आवरण सहित)

VISIT…

LANZAROTE
Caliente.COM

प्रधान संपादक की कलम से

भारत 15 अगस्त, 2022 को दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र के रूप में अपने 75 साल का जश्न मनाएगा. कृतज्ञ होने के लिए बहुत कुछ है. आजादी के वक्त हम कंगाल और अल्पविकसित देश थे. महज 18 फीसद से कुछ ज्यादा लोग ही पढ़-लिख सकते थे. औसत आदमी मात्र 32 साल की उम्र तक जीने की उम्मीद कर सकता था. खाने-पीने की चीजों से लेकर स्वास्थ्य केंद्रों, डॉक्टरों, संस्थाओं और उद्योगों तक हर चीज की किल्लत थी. यह सब तब था, जब हमारी आबादी मौजूदा 1.3 अरब के मुकाबले महज 35 करोड़ थी. 74 बरस पूरे होते-होते हमने सकल राष्ट्रीय खुशहाली में ऊंची छलांगें लगाई हैं. हमारे तीन-चौथाई से ज्यादा लोग अब शिक्षित हैं. औसत जीवन प्रत्याशा दोगुनी से ज्यादा हो गई है. खाद्य उत्पादन में हम आत्मनिर्भर हैं और आर्थिक तौर पर नाउम्मीद देश बनने की आशंकाओं को झुठला चुके हैं. 25 खरब डॉलर की जीडीपी के साथ अब हम दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था हैं.

हमारी उपलब्धियों का एक सबक यह है कि देशों में अपने हालात से उबरने की ताकत होती है. देश बेशक लोगों से बने हैं और उन्हीं की जमात से कुछ असाधारण नेता निकलते हैं, जिन्हें हम रहनुमा कहते हैं. अपनी शख्सियतों और कामयाबियों के बल पर उन्होंने हमें मौजूदा मुकाम तक लाने में अहम भूमिका निभाई. राजनैतिक नेताओं से दिग्गज कारोबारियों, वैज्ञानिकों से सेनापतियों, खिलाड़ियों से लेखकों और कलाकारों तक, देश सबकी उपलब्धियों का निचोड़ है. सबने इस सफर में संजीदा असर डाला.

मोहनदास करमचंद गांधी को ही लीजिए. उन्होंने ब्रितानियों के खिलाफ आजादी की लड़ाई में अहिंसा को ताकतवर औजार बनाया और दुनिया के कई नेताओं और आंदोलनों को प्रेरित किया. भीमराव आंबेडकर ने न केवल लोकतंत्र बल्कि सामाजिक सुधारों का भी ढांचा दिया. सरदार पटेल ने रियासतों में बंटे पैबंदों को भारतीय संघ में मजबूती से पिरोया. पहले 17 साल देश के प्रधानमंत्री रहे जवाहरलाल नेहरू ने हमारे नवजात गणतंत्र की अनेक संस्थाओं का निर्माण किया. इंदिरा गांधी ने और आगे बढ़कर उपमहाद्वीप का भूगोल बदला, मगर आपातकाल भी थोपा, जिसकी परिणति विपक्ष की अगुआई वाली पहली सरकार के गठन में हुई. किसी भी प्रधानमंत्री को मिले सबसे बड़े जनादेश के साथ सत्ता में आए उनके बेटे राजीव गांधी ने कंप्यूटरों से भारत का तआरुफ करवाया और टेलीफोन सुविधा का विस्तार किया. उनके बाद सबसे अप्रत्याशित प्रधानमंत्रियों में से एक नरसिंह राव ने बागडोर संभाली और हमें उदारीकरण की राह पर ले गए. फिर, अटल बिहारी वाजपेयी ने परमाणु परीक्षण किए. उनके बाद मनमोहन सिंह आए, जिन्होंने सबसे तेज बढ़ती अर्थव्यवस्था की सदारत की. अब लगातार दो एकदलीय चुनावी जनादेश जीतने वाले एकमात्र गैर-कांग्रेसी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी हैं, जिन्होंने प्रत्यक्ष नकद हस्तांतरण और मुफ्त रसोई गैस सिलेंडर, शौचालयों और स्वच्छ पेयजल के साथ सामाजिक क्षेत्र की योजनाओं में जबरदस्त रद्दोबदल किए. अनुच्छेद 370 को रद्द करके उन्होंने भारतीय संघ की दिशा को भी बदल डाला.

26 अगस्त, 2020 का आवरण

इस तरह हमें खुशकिस्मती से ऐसे नेता मिले, जिनके कामों का मोटे तौर पर अच्छा ही असर पड़ा है. राष्ट्र निर्माण अलबत्ता राजनैतिक तबके का ही विशेषाधिकार नहीं है. हमें उद्योगों और अनुसंधान संस्थाओं की नींव डालने वाले जे.आर.डी. टाटा और शेयर बाजार की जीवंत संस्कृति का निर्माण करने वाले धीरूभाई अंबानी सरीखे कारोबारी दिग्गज और संपदा निर्माता भी मिले. एन.आर. नारायण मूर्ति सरीखे सूचना प्रौद्योगिकी दिग्गजों ने देश को दुनिया के आइटी नक्शे पर जगह दिलवाई. लीक से हटकर इन असाधारण शख्सियतों ने राष्ट्र की नियति की राह बदल दी. उत्कृष्टता के और भी द्वीप रहे हैं, खासकर अत्याधुनिक वैज्ञानिक अनुसंधान और टेक्नोलॉजी में. होमी भाभा, ए.पी.जे. अब्दुल कलाम, राजा रमन्ना, विक्रम साराभाई और सतीश धवन सरीखे दूरदर्शियों के सिलसिले ने इस विकासशील देश का अंतरिक्ष और एटमी शक्ति बनना पक्का किया. अनुसंधान प्रयोगशालाओं की शृंखला स्थापित करने वाले शांति स्वरूप भटनागर और हरित क्रांति के जनक एम.एस. स्वामीनाथन सरीखे वैज्ञानिकों ने भी देश को वैज्ञानिक मन और मिजाज दिलाया.

खेलों में भी सुनील गावस्कर, सचिन तेंडुलकर सरीखे क्रिकेट दिग्गजों और पी.टी. उषा और मिल्खा सिंह सरीखे एथलीटों ने नई पीढ़ी के कई खेल सितारों को प्रेरित किया. सत्यजित राय और अडूर गोपालकृष्णन जैसे फिल्मकार भारत को विश्व मानचित्र पर लाए. मदर टेरेसा ने सबसे गरीब की सेवा करके करुणा को नए मायने दिए.

मैंने कुछ ही पथप्रदर्शकों का जिक्र किया है, पर स्वतंत्रता दिवस के इस विशेषांक में ऐसे 115 दिपदिपाते सूर्य हैं. वे राजनीति, कारोबार, विज्ञान, प्रतिरक्षा, आध्यात्मिकता, साहित्य, संगीत, नृत्य, कला, खेल, सिनेमा के क्षेत्रों से आए हैं. इन सभी ने अपने ढंग से देश को समृद्ध किया. यकीनन और भी कई पथप्रदर्शक हैं, जिन्हें हम यहां शामिल नहीं कर पाए, लेकिन जिनका राष्ट्र निर्माण में योगदान है. इसके लिए मैं क्षमाप्रार्थी हूं.

हमारे पथप्रवर्तक इतने जाने-माने हैं कि उनकी जिंदगी और काम को नए नजरिए से देखना चुनौती भरा काम था. इसलिए हमने उनके बारे में लिखने के लिए कुछ और असाधारण शख्सियतों को जुटाया. यह हमारे इस खास अंक को और भी खास बनाता है. इस तरह हमारे यहां राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद पूर्व प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई पर, महामहिम दलाई लामा महात्मा गांधी पर, राजमोहन गांधी सरदार पटेल पर, मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान प्रधानमंत्री मोदी पर, अकाली प्रमुख प्रकाश सिंह बादल शेख अब्दुल्लाह पर, कांग्रेसी कमल नाथ पी.वी. नरसिंह राव पर, पी. चिदंबरम मनमोहन सिंह पर, बिहार के नीतीश कुमार ओडिशा के मुख्यमंत्री नवीन पटनायक पर, बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव अपने मार्गदर्शक राममनोहर लोहिया पर, अजीज प्रेमजी जेआरडी टाटा पर, सिमी ग्रेवाल राज कपूर पर, बीसीसीआइ के अध्यक्ष और पूर्व कप्तान सौरभ गांगुली सचिन तेंडुलकर पर लिख रहे हैं. ये कुछ उदाहरण भर हैं. हमारी पथप्रदर्शक शख्सियतों पर उनकी राय पढ़ना दिलचस्प और लीक से हटकर होगा.

भारत वह देश है जहां 50 फीसद आबादी 25 वर्ष से कम उम्र की है. इसीलिए यह युवा जोश और विचारों से भरा देश है. हम निरंतर आगे बढ़ते देश हैं. हमारी आजादी की स्वर्ण जयंती मात्र 26 साल दूर है. मैं उम्मीद करता हूं कि हमारी हीरक जयंती इस अगले बड़े पड़ाव की तरफ हमारी छलांग का सोपान बनेगी. इसके लिए तमाम नए पथप्रवर्तकों को आगे आना होगा. मैं कामना करता हूं कि उनकी नस्ल फूले-फले और वे नियति से साक्षात्कार पूरा कर पाएं.

अरुण पुरी

(अरुण पुरी)

इंडिया टुडे
www.indiatodayhindi.in

चेयरमैन और प्रधान संपादकः अरुण पुरी
वाइस चेयरपर्सनः कली पुरी
ग्रुप चीफ एग्जीक्यूटिव ऑफिसरः दिनेश भाटिया
ग्रुप एडिटोरियल डायरेक्टरः राज चेंगप्पा
चीफ एग्जीक्यूटिव ऑफिसरः मनोज शर्मा
एडिटरः अंशुमान तिवारी
सीनियर एडिटरः मोहम्मद वक़ास
एसोसिएट एडिटरः शिवकेश मिश्र, शुभम शंखधर,
आशीष मिश्र (लखनऊ)
असिस्टेंट एडिटरः मनीष दीक्षित, सुजीत ठाकुर
राज्य ब्यूरोः, अमिताभ श्रीवास्तव (पटना), रोहित परिहार (जयपुर),
एम.जी. अरुण (मुंबई), राहुल नरोन्हा (भोपाल), अमरनाथ के.
मेनन (हैदराबाद)
ग्रुप क्रिएटिव एडिटरः नीलांजन दास
एसोसिएट आर्ट डायरेक्टरः चंद्रमोहन ज्योति
असिस्टेंट आर्ट डायरेक्टरः असित रॉय
ग्रुप फोटो एडिटरः बंदीप सिंह
फोटो डिपार्टमेंटः यासिर इकबाल, राजवंत रावत,
चंद्रदीप कुमार, मंदार सुरेश देवधर (मुंबई)
चीफ फोटो रिसर्चरः प्रभाकर तिवारी
प्रिंसिपल फोटो रिसर्चरः सलोनी वैद
प्रोडक्शन चीफः अभिनव पुगला

एसोसिएट पब्लिशरः विद्या मेनन (इंपैक्ट)
इंपैक्ट टीम
नेशनल हेडः सुपर्णा कुमार (गवर्नमेंट ऐंड पीएसयू)
सीनियर जनरल मैनेजरः जीतेंद्र लाड (वेस्ट)
जनरल मैनेजरः मयूर रस्तोगी (नॉर्थ),
उपेंद्र सिंह (बेंगलूरू)
डिप्टी जनरल मैनेजरः इंद्रनील चटर्जी (ईस्ट)
ग्रुप चीफ मार्केटिंग ऑफिसरः विवेक मल्होत्रा
सेल्स एवं ऑपरेशन
सीनियर जनरल मैनेजरः दीपक भट्ट (नेशनल सेल्स)
जनरल मैनेजरः विपिन बग्गा (ऑपरेशंस)
डिप्टी जनरल मैनेजरः राजीव गांधी (नॉर्थ)
रीजनल सेल्स मैनेजरः सैयद आसिफ सलीम (वेस्ट)
डिप्टी रीजनल सेल्स मैनेजरः एस. परमशिवम (साउथ)
सीनियर सेल्स मैनेजरः पीयूष रंजन दास (ईस्ट)

INDIA TODAY GROUP

वर्षः 35; अंकः 40; 26 अगस्त-1 सितंबर 2021; प्रत्येक शनिवार को प्रकाशित

- **संपादकीय कॉर्पोरेट कार्यालयः** लिविंग मीडिया इंडिया लिमिटेड, इंडिया टुडे ग्रुप मीडियाप्लेक्स, एफसी-8, सेक्टर 16-ए, फिल्म सिटी, नोएडा-201301, फोनः 0120-4807100;
- **ग्राहकी चंदा भेजें:** इंडिया टुडे (हिंदी), पो. बॉक्स 114, नई दिल्ली-110001
- **ग्राहक सेवाः** कस्टमर केयर, इंडिया टुडे ग्रुप, सी-9, सेक्टर-10, नोएडा (उत्तर प्रदेश)-201301, टोल फ्री फोन नं. 1800 1800 100 (बीएसएनएल/एमटीएनएल लाइनों से) फोनः दिल्ली, फरीदाबाद से (95120) 2479900; शेष भारत से (0120) 2479900. (सोम से शुक्र-सुबह 10 बजे से शाम 6 बजे तक), फैक्सः (0120) 4078080. ई-मेलः wecare@intoday.com
- **सर्कुलेशन कार्यालयः** लिविंग मीडिया इंडिया लिमिटेड, सी-9, सेक्टर-10, नोएडा (उत्तर प्रदेश)-201301
- **इंपैक्ट कार्यालयः** 1201, 12वां तल, टावर 2ए, वन इंडियाबुल्स सेंटर, (जुपिटर मिल्स) एस.बी. मार्ग, लोअर परेल (पश्चिम)-मुंबई-400013. फोनः 022-66063355 फैक्सः 022-66063226
- **क्षेत्रीय विज्ञापन कार्यालयः** ए1-ए2, एनके सेंटर, विनुज्य निकुंज, उद्योग विहार, फेज-5, गुड़गांव, हरियाणा, फोनः 0124-4948400;
- 201-204 रिचमंड टावर्स, द्वितीय मंजिल, 12 रिचमंड रोड, बंगलुरू-560 025 फोनः 2212448, 226233, टेलेक्सः 0845-2217 INTO IN. फैक्सः 080-2218335.
- रजिस्टर्ड कार्यालयः एफ-26, फर्स्ट फ्लोर, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली-110001

- लिविंग मीडिया इंडिया लि. विश्व भर में सर्वाधिकार सुरक्षित. किसी भी रूप में सामग्री की नकल प्रतिबंधित. इंडिया टुडे अनिमंत्रित प्रकाशन सामग्री को लौटाने की जिम्मेदारी स्वीकार नहीं करता.
- सभी विवादों का निबटारा दिल्ली/नई दिल्ली की सीमा में आने वाली सक्षम अदालतों और फोरमों में किया जाएगा.

- **लिविंग मीडिया इंडिया लि. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक मनोज शर्मा द्वारा एफ-26, फर्स्ट फ्लोर, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित और थॉमसन प्रेस इंडिया लि., 18-35, माइलस्टोन, दिल्ली-मथुरा रोड, फरीदाबाद-121 007 (हरियाणा) में मुद्रित. संपादकः राज चेंगप्पा**

भीतर

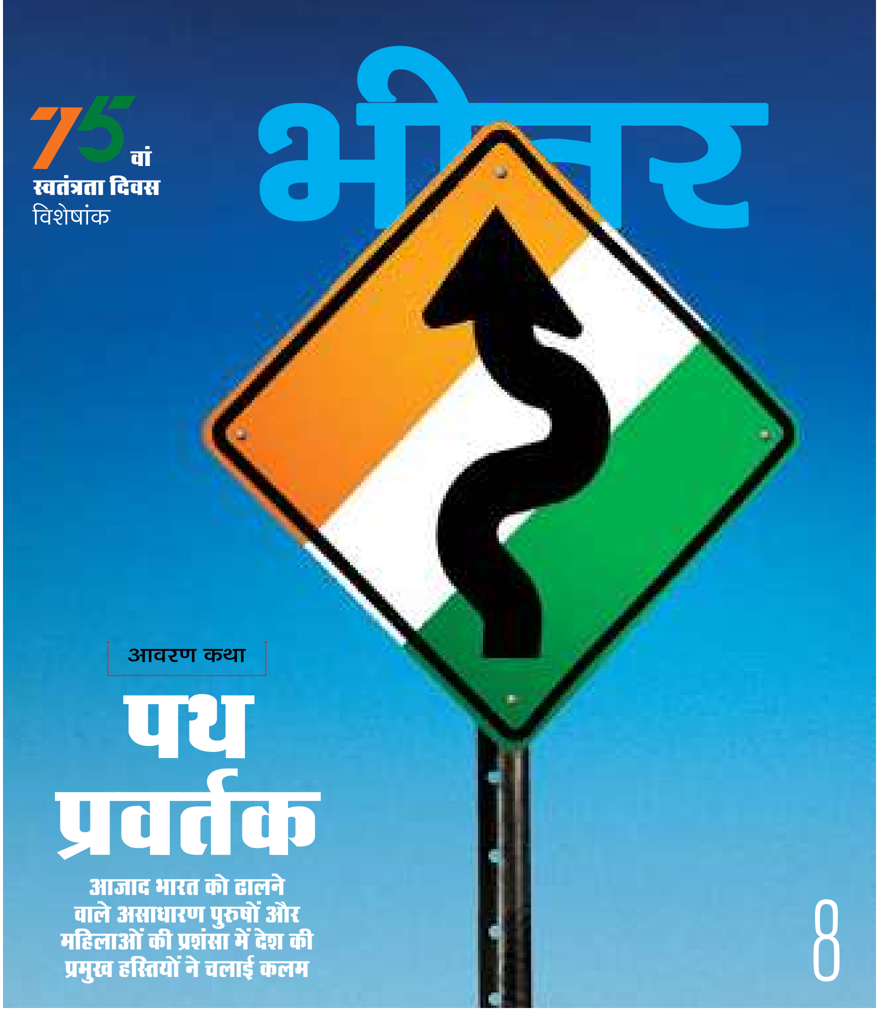

75 वां
स्वतंत्रता दिवस
विशेषांक

आवरण कथा

पथ प्रवर्तक
आजाद भारत को ढालने वाले असाधारण पुरुषों और महिलाओं की प्रशंसा में देश की प्रमुख हस्तियों ने चलाई कलम 8

इलस्ट्रेशनः नीलांजन दास

राजनीति

10 **महात्मा गांधी** *दलाई लामा*
12 **जवाहरलाल नेहरू** *शशि थरूर*
13 **सरदार वल्लभभाई पटेल** *राजमोहन गांधी*
14 **भीमराव रामजी आंबेडकर** *कांचा इलैया शेफर्ड*
15 **इंदिरा गांधी** *के. नटवर सिंह*
16 **मोरारजी देसाई** *रामनाथ कोविंद*
17 **दीनदयाल उपाध्याय** *कृष्ण गोपाल*
17 **सी.एन. अन्नादुरै** *एम.के. स्टालिन*
18 **जयप्रकाश नारायण** *रविशंकर प्रसाद*
18 **राम मनोहर लोहिया** *लालू प्रसाद यादव*
19 **मौलाना अबुल कलाम आजाद** *सलमान खुर्शीद*
20 **गोपीनाथ बोरदोलोई** *हेमंत बिस्व सरमा*
20 **शेख अब्दुल्लाह** *प्रकाश सिंह बादल*
21 **ज्योति बसु** *सीताराम येचुरी*
21 **राजीव गांधी** *सैम पित्रोदा*
22 **वी.पी. सिंह** *मोहन गुरुस्वामी*
22 **पी.वी. नरसिंह राव** *कमल नाथ*
23 **अटल बिहारी वाजपेयी** *यशवंत सिन्हा*
24 **मनमोहन सिंह** *पी. चिदंबरम*
25 **नरेंद्र मोदी** *शिवराज सिंह चौहान*
26 **नवीन पटनायक** *नीतीश कुमार*
27 **बाल ठाकरे** *नितिन गडकरी*
28 **ममता बनर्जी** *महुआ मोइत्रा*
29 **सोनिया गांधी** *अशोक गहलोत*

इंडिया टुडे
इंडिया टुडे मैगजीन मिलने में दिक्कत हो रही है?
9311409555 पर नाम पता या 'हेलो' संदेश भेजें.
या मेल करें: Moreinfo@intoday.com
हम आपसे संपर्क कर लेंगे.

आवरणः नीलांजन दास

पाठकों के लिए सूचनाः कभी-कभी आपको इंडिया टुडे पत्रिका में 'इम्पैक्ट फीचर' या 'एडवरटोरियल' या 'फोकस' के पन्ने नजर आएंगे. ये विज्ञापन होंगे और इन्हें बनाने में पत्रिका के संपादकीय स्टाफ शामिल नहीं होते.

INDIA TODAY GROUP

पाठकों को सलाह दी जाती है कि पत्रिका में प्रकाशित किसी भी वस्तु, सेवा या व्यक्ति के विज्ञापन और प्रचार से संबंधित सामग्री से वचनबद्धता कायम करने, पैसा भेजने या खर्च करने से पहले उचित जांच-पड़ताल कर लें. विज्ञापनदाताओं के किसी भी दावे का उत्तरदायित्व इंडिया टुडे ग्रुप का नहीं है. ऐसे किसी भी तरह के दावों को विज्ञापनदाता अगर नहीं पूरा करता है तो इंडिया टुडे ग्रुप के प्रकाशनों के मुद्रक, प्रकाशक, एडिटर-इन-चीफ और एडिटर इसके लिए जिम्मेदार नहीं होंगे.

भीतर

75 वां
स्वतंत्रता दिवस
विशेषांक

कारोबार

30 **जे.आर.डी. टाटा**
अज़ीम प्रेमजी

31 **धीरूभाई अंबानी**
तरुण दास

32 **रतन टाटा**
अजय पिरामल

33 **राहुल बजाज**
विक्रम किर्लोस्कर

34 **केशब महिंद्रा**
आर.सी. भार्गव

34 **मुकेश अंबानी**
दीपक पारेख

35 **आदित्य विक्रम बिड़ला**
डॉ. गीता पिरामल

36 **आर.सी. भार्गव**
अमिताभ कांत

36 **एन. नारायणमूर्ति**
किरण कार्णिक

37 **बृजमोहन लाल मुंजाल**
राहुल बजाज

37 **वाइ.सी. देवेश्वर**
संजीव पुरी

38 **कुमार मंगलम बिड़ला**
राम चरण

38 **अज़ीम प्रेमजी**
अशोक सूता

40 **किरण मजूमदार शॉ**
टी.वी. मोहनदास पै

40 **सुनील भारती मित्तल**
डॉ. पवन मुंजाल

41 **दीपक पारेख**
हेमेंद्र कोठारी

41 **नंदन नीलेकणि**
किरण मजूमदार शॉ

42 **के.वी. कामथ**
उदय कोटक

42 **प्रताप सी. रेड्डी**
डॉ. देवी शेट्टी

विज्ञान और तकनीक / प्रतिरक्षा

44 **सी.वी. रमण**
संदीप त्रिवेदी

46 **डॉ. होमी जहांगीर भाभा**
डॉ. आर. चिदंबरम

46 **सुब्रह्मण्यम चंद्रशेखर**
जयंत विष्णु नार्लीकर

47 **शांति स्वरूप भटनागर**
आर.ए. माशेलकर

48 **विक्रम साराभाई**
के. कस्तूरीरंगन

48 **डॉ. वर्गीज कुरियन**
आर.एस. सोढ़ी

48 **डॉ. राजा रमन्ना**
डॉ. अनिल काकोदकर

50 **एम.एस. स्वामीनाथन**
योगिंदर के. अलघ

51 **सतीश धवन**
वी. सिद्धार्थ

51 **सालिम अली**
माधव गाडगिल

52 **डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम**
डॉ. वी.के. सारस्वत

53 **फील्ड मार्शल एस.एच.एफ. जे. मानेकशॉ**
इयान कार्डोजो

54 **जनरल कृष्णास्वामी सुंदरजी**
एस.एस. मेहता

खेल

55 **मिल्खा सिंह**
पी.टी. उषा

56 **प्रकाश पादुकोण**
पुलेला गोपीचंद

57 **सुनील मनोहर गावस्कर**
सचिन तेंडुलकर

57 **पी.टी. उषा**
हिमा दास

58 **सचिन तेंडुलकर**
सौरव गांगुली

58 **लिएंडर पेस**
महेश भूपति

59 **अभिनव बिंद्रा**
रणधीर सिंह

59 **कपिल देव**
सुनील गावस्कर

ऐश्वर्य

60 **बिक्की ओबेरॉय**
अमन नाथ

60 **कुंदन लाल गुजराल**
मनीष मेहरोत्रा

61 **कपिल मोहन**
डेसमंड नजारेथ

62 **विट्ठल माल्या**
किरण मजूमदार शॉ

62 **तरला दलाल**
संजीव कपूर

63 **राजीव सामंत**
ए.डी. सिंह

63 **इम्तियाज कुरैशी**
रणवीर बरार

अध्यात्म

64 **मदर टेरेसा**
नवीन बी. चावला

65 **ओशो**
मां आनंद शीला

साहित्य

65 **आर.के. नारायण**
पेरुमल मुरुगन

66 **सलमान रुश्दी**
जीत थाइल

कला, संगीत और नृत्य

92 **उस्ताद बिस्मिल्लाह खान**
गौरव मजुमदार

92 **पंडित रविशंकर**
पंडित सतीश व्यास

93 **एम.एस. सुब्बुलक्ष्मी**
बेगम परवीन सुल्ताना

93 **पंडित भीमसेन जोशी**
शुभा मुद्गल

94 **एम. बालमुरलीकृष्ण**
अरुणा साईराम

94 **पंडित कुमार गंधर्व**
पंडित विश्व मोहन भट्ट

94 **उस्ताद अल्ला रक्खा**
रंजीत बारोट

96 **रुक्मिणी देवी अरुंडेल**
लीला सैमसन

96 **पंडित बिरजू महाराज**
अदिति मंगलदास

97 **केलूचरण महापात्र**
माधवी मुद्गल

97 **अनिश कपूर**
सुबोध गुप्ता

98 **पृथ्वीराज कपूर**
लिलेट दुबे

98 **इब्राहिम अल्काजी**
नसीरुद्दीन शाह

99 **एस.एच. रजा**
गणेश हलोई

99 **जामिनी राय**
अंजलि इला मेनन

100 **एफ.एन. सूजा**
रुबीना करोडे

100 **एम.एफ. हुसैन**
कृशन खन्ना

सिनेमा

101 **सत्यजित रे**
रितेश बत्रा

102 **गुरु दत्त**
सुधीर मिश्र

103 **राज कपूर**
सिमी ग्रेवाल

103 **दिलीप कुमार**
ऋचा चड्ढा

104 **देव आनंद**
जैकी श्रॉफ

104 **लता मंगेशकर**
श्रेया घोषाल

105 **किशोर कुमार**
अमित खन्ना

106 **यश चोपड़ा**
रानी मुखर्जी

106 **आर.डी. बर्मन**
प्रीतम चक्रवर्ती

107 **भानु अथैया**
सव्यसाची मुखर्जी

107 **अदूर गोपालकृष्णन**
बी. उन्नीकृष्णन

108 **नसीरुद्दीन शाह**
मनोज वाजपेयी

108 **गुलज़ार**
वरुण ग्रोवर

109 **राजेश खन्ना**
शत्रुघ्न सिन्हा

110 **रजनीकांत**
सुरेश कृष्णा

110 **आमिर खान**
राजकुमार हीरानी

111 **श्रीदेवी**
विद्या बालन

111 **शाहरुख खान**
आशुतोष गोवारीकर

112 **सलमान खान**
अली अब्बास जफर

113 **ए.आर. रहमान**
इम्तियाज अली

113 **एस.एस. राजमौलि**
राना दग्गूबती

114 **अमिताभ बच्चन**
आर. बाल्की

मंदी की हवेलियां

अंशुमान तिवारी

भारतीय शहरों की दहलीज पर खड़ी हजारों भुतहा इमारतों में मंदी की मशीनें लगी हैं. हर एक अधबना-अनबिका मकान एक छोटी मंदी है. करीब 6.29 लाख मंदियां (ग्राहकों का इंतजार करते मकान) अर्थव्यवस्था के पैरों में पत्थर की तरह बंधी हैं. भारत के अचल संपत्ति बाजार पर प्रापर्टी कंसल्टेंट एनरॉक की ताजा रिपोर्ट पढ़ते हुए, अर्थविद् एड लीमर नजर आने लगे. लीमर कहते थे कि समग्र अर्थव्यवस्था के सिद्धांतों में अचल संपत्ति के असर को कभी गंभीरता से नहीं लिया गया जबकि बीती 11 मंदियों में आठ का जन्म प्रॉपर्टी बाजार में ही हुआ था.

जिनको लगता है कि महामारी के बाद बाजार खुल जाने से मंदी गायब हो जाएगी या सरकारी स्कीमों की बारात में झांझ-मंजीरे बजने से मांग और रोजगार के नृत्य शुरू हो जाएंगे उन्हें इन भुतही इमारतों का मारक अर्थशास्त्र समझना चाहिए, जहां मंदी के कारखाने, कोविड की आमद से साल भर पहले ही शुरू हो चुके थे.

तकरीबन डूब चुका रियल एस्टेट (अचल संपत्ति) कारोबार मंदी के प्रेत की सबसे बड़ी ताकत है. ऐसा लग रहा है कि यह संकट एक दूसरे संकट की मदद से ही दूर हो सकेगा.

मंदी की नींव

■यह मंदी इतनी जिद्दी इसलिए है क्योंकि 2018 तक कारखाने नहीं बल्कि बनते-बिकते-बसते लाखों मकान ही अर्थव्यवस्था का टरबाइन थे. बहुत बड़ी आबादी के पास अपना मकान खरीदने की कुव्वत भले ही न हो लेकिन भारतीय अर्थव्यवस्था में कंस्ट्रक्शन का हिस्सा 15 फीसद (2019) है जो दुनिया में दूसरा सबसे बड़ा (पहला इंडोनेशिया) स्तर है जो अमेरिका, कनाडा, फ्रांस ऑस्ट्रेलिया जैसे 21 बड़े देशों (चीन शामिल नहीं) से भी ज्यादा है. मोतीलाल ओसवाल रिसर्च का विस्तृत अध्ययन बताता है कि 2012 में 19.7 फीसद के साथ निर्माण में निवेश अपने शिखर पर था, तब केवल इंडोनेशिया और स्पेन भारत से आगे थे

■मंदी और निवेश टूटने के बावजूद इस वक्त भी भारत में मकान निर्माण में निवेश (जीडीपी का 7.8 %) दुनिया में सबसे ऊंचा है.

■2000 के दशक के दौरान कुल निवेश में कंस्ट्रक्शन का हिस्सा 60 फीसद था. बीते एक दशक में यह घटकर 52-53 फीसद रह गया जो दो दशक का न्यूनतम है. इसके साथ ही लंबी मंदी की नींव रख दी गई.

■बीते एक दशक में घर बनाने में निवेश गिरने (2012 में 13 फीसद से 2017 में 7.8 फीसद) लगा जबकि गैर-आवासीय निर्माण में निवेश (2012 में 6.9 फीसद से 2017 में 7.6 फीसद) बढ़ा. इस तरह पहले मकानों का कारोबार डूबा फिर दुकान और वाणिज्यिक निर्माण का.

रियल एस्टेट कारोबार मंदी के प्रेत की सबसे बड़ी ताकत है. यह संकट एक दूसरे संकट की मदद से ही दूर होगा

कोविड की दस्तक से पहले ही भारतीय अर्थव्यवस्था की यह सबसे बड़ी टरबाइन बंद हो चुकी थी. मंदी सीमेंट-स्टील की मांग से लेकर सरकार के खजानों तक फैल गई थी. भवन निर्माण में गिरावट से राज्यों में स्टांप ड्यूटी का संग्रह बढ़ने की गति 2019-20 में 19 फीसद से घटकर 7 फीसद रह गई.

खेती के बाद रोजगारों का दूसरा बड़ा स्रोत भवन निर्माण है. 2012 में यहां 5 करोड़ लोगों (2000 में 1.7 करोड़) को काम मिला जो कुल कामगारों का करीब 10.6 फीसद (1983 में 3.2 फीसद) है. 2016 के बाद से यहां रोजगार गिरना शुरू हुए. नतीजन 2017-18 में बेकारी की दर 6.1 फीसद यानी 45 साल के सबसे ऊंचे स्तर पर पहुंच गई.

टाइम बम की टिक्-टिक्

दुनिया का पता नहीं लेकिन अगर एड लीमर के अध्ययन की रोशनी में भारत में प्रॉपर्टी बाजार और अर्थव्यवस्था के आंकड़े करीब से पढ़े जाएं तो दिल बैठने लगेगा. लीमर कहते थे कि अन्य कारोबारों की तरह आवास निर्माण का भी एक बिजनेस साइकिल है जो शिखर से तलहटी की तरफ जाता ही है. इस पैमाने की रोशनी में महसूस होता है कि असली संकट तो अभी आया नहीं है क्योंकि मंदी के बावजूद भारत के रियल एस्टेट बाजार में कीमतें नहीं घटीं.

मोतीलाल ओसवाल रिसर्च ने बताया कि दुनिया के सभी देश जहां हाउसिंग की मांग टूटी और निवेश गिरा वहां कीमतों में कमी हुई है लेकिन भारत में आवास क्षेत्र में 2014 के बाद कीमतों में 2.7 फीसद की तेजी आई.

सबसे सस्ते होम लोन, रेरा कानून की मदद और केंद्र सरकार के पैकेज के बावजूद 6.29 लाख मकान (एनरॉक रिपोर्ट अगस्त 2021) इसलिए अधबने-अनबिके खड़े हैं क्योंकि मकानो की कीमतें नहीं गिरी हैं.

लेकिन ठहरिए और पेच समझिए.

अगर मकानों की कीमतें गिरीं तो उसके साथ बैंक भी गिरेंगे, जिनके कर्ज की दम पर इन सन्नाटा भरी इमारतों में पांच लाख करोड़ का निवेश फंसा है.

अर्थव्यवस्था को कंस्ट्रक्शन और हाउसिंग में मांग-निवेश की संजीवनी चाहिए लेकिन इसे लाने के लिए आग के दरिया में डूब कर जाना होगा. कीमतें टूटेंगी, बिल्डर डूबेंगे, बैंकों के कर्ज का सत्यानाश होगा तब जाकर बाजार में ग्राहक लौटेंगे. यह दर्दनाक सर्जरी कब होगी, यह सरकार को तय करना है लेकिन इस बलिदान के बिना मंदी का प्रेत वापस नहीं जाएगा.

@anshuman1tiwari

इलस्ट्रेशनः असित रॉय

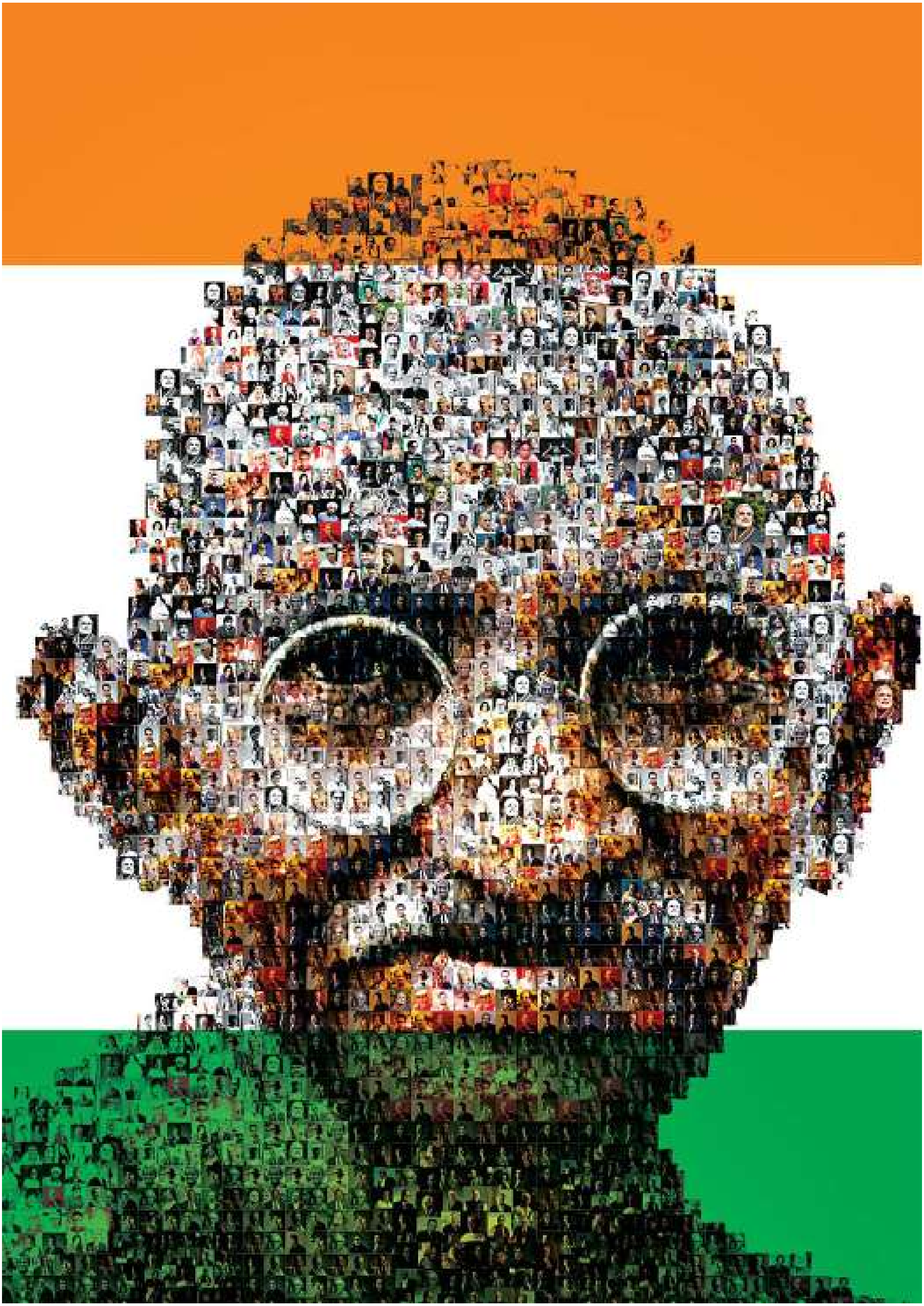

नई राहों के अन्वेषक

अपने 75वें स्वतंत्रता दिवस पर हम उन दिग्गज शख्सियतों को याद कर रहे हैं, जिन्होंने अब तक का यह सफर पूरा करने में मदद की, जिन्होंने राजनीति में और खेल में, कारोबार में और साहित्य में अपने असाधारण कार्यों से हमें रास्ता दिखाया

राज चेंगप्पा

दुनिया को बदल देने वाले दो अन्वेषियों का जिक्र करते हुए अमेरिकी नागरिक अधिकार आंदोलन के अगुआ मार्टिन लूथर किंग जूनियर ने कहा था, ''हमारी सदी में इनसान ने दो बार सोचा, एक बार अल्बर्ट आइंस्टीन के रूप में और फिर महात्मा गांधी के रूप में. आइंस्टीन के विचार ने भौतिक दुनिया की समझ को आमूलचूल बदल डाला, तो गांधी के विचार ने राजनैतिक दुनिया की समझ का कायापलट कर दिया.'' आइंस्टीन ने गांधी के बारे में कहा था, ''घोर नैतिक पतन के हमारे समय में गांधी अकेले सच्चे राजनेता थे, जो हमारे राजनैतिक दायरे में उच्चतर मानव संबंधों के हक में खड़े हुए. आने वाली पीढ़ियां मुश्किल से ही यकीन कर पाएंगी कि हाड़-मांस का ऐसा एक शख्स कभी इस धरती पर चला था.''

वह क्या था जिसने गांधी को इस युग की सबसे प्रभावशाली शख्सियतों में से एक बनाया? हार्वर्ड के मनोवैज्ञानिक होवार्ड गार्डनर अपनी किताब *लीडिंग माइंड्स: ऐन एनाटॉमी ऑफ लीडरशिप* में गांधी को उन दूरदर्शी नेताओं की बिरली श्रेणी में रखते हैं, जो उनकी परिभाषा के मुताबिक ''फिलहाल चल रही कोई कहानी सुनाकर या हालिया अतीत से ली गई कोई कहानी दोबारा सुनाकर संतुष्ट नहीं होते. यह शख्स असल में नई कहानी गढ़ता है, ऐसी कहानी जो ज्यादातर लोगों को पहले से पता न हो, और यह कहानी असरदार तरीके से दूसरों को बताकर वह कम से कम कुछ हद तक कामयाबी हासिल कर ही लेता है.'' गार्डनर इस श्रेणी में और किन लोगों को रखते हैं? यीशु, बुद्ध और पैगंबर मुहम्मद!

तो जिस वक्त आइंस्टीन की अगुआई में पश्चिम की वैज्ञानिक दुनिया दूसरे विश्व युद्ध में एडोल्फ हिटलर की अगुआई वाली फौजों को नाकाम करने के लिए मैनहटन प्रोजेक्ट के मार्फत मानवजाति का ईजाद किया गया अब तक का सबसे विनाशकारी हथियार—एटम बम—बनाने में मशगूल थी, गांधी दुनिया की सबसे बड़ी औपनिवेशिक ताकत का तख्ता पलटने के लिए पूर्णतः नया हथियार विकसित कर रहे थे: अहिंसा का सिद्धांत. गांधी को यकीन था कि ब्रिटिश साम्राज्य की समूची ताकत शांतिपूर्ण प्रतिरोध से उपजी श्रेष्ठतर नैतिक और आध्यात्मिक ताकत को कुचल नहीं पाएगी. उन्होंने कहा भी था, ''आत्मा की शक्तियां सदैव प्रगतिशील और अंतहीन होती हैं. इसकी पूर्ण अभिव्यक्ति इसे दुनिया के लिए अपराजेय बना देती है.'' गांधी सही साबित हुए जब 15 अगस्त, 1947 को उनकी अगुआई में चले सत्याग्रह और असहयोग के माध्यम से भारत ने आजादी पाई. ऐसा करते हुए उन्होंने मार्टिन लूथर किंग जूनियर और नेल्सन मंडेला से लेकर दलाई लामा तक नेताओं की एक समूची पीढ़ी को प्रेरित किया.

इन पथप्रवर्तकों में गजब की स्पष्टता और ऊर्जा है, वे साहसी दूरदृष्टि का अनुसरण करने से डरते नहीं

भारत के 75वें स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष में *इंडिया टुडे* ने गांधी के साथ जीवन के कई क्षेत्रों के 114 अन्य पथ प्रवर्तकों को प्रस्तुत करने का फैसला किया, जिन्होंने खुद अपने सम्मोहक अफसाने गढ़े और राष्ट्र की वृद्धि और विकास पर असर डाला. वे राजनीति में रहे हों या कारोबार, विज्ञान, रक्षा, कला, मनोरंजन या अवकाश में, इन असाधारण अगुआओं में बहुत कुछ साझा है. उनमें गजब की स्पष्टता और ऊर्जा है, वे साहसी दूरदृष्टि का अनुसरण करने से डरते नहीं, उसे हासिल करने के लिए किसी भी रुकावट पर पार पाने के लिए तैयार हैं, अपने-अपने ढंग से विद्रोही हैं, नियमों से नहीं बंधे हैं, अलग ढंग से सोचते हैं और यथास्थिति को बदलने के मिशन में वस्तुतः किसी के रोके रुकने वाले नहीं.

उनकी उपलब्धियों की नीरस फेहरिस्त बनाने की बजाए हमने तय किया कि उनके काम से परिचित प्रमुख शख्सियतों से आग्रह किया जाए कि वे अपनी अंतर्दृष्टि और परख से इन असाधारण शख्सियतों के बारे में हमें बताएं खासकर यह कि किस चीज ने उन्हें कामयाब बनाया. मदर टेरेसा के जीवनीकार नवीन चावला बताते हैं कि शुरुआत में उन्हें अपने जिस सबसे बड़े डर को जीतना पड़ा, वह जरूरतमंदों के लिए खाना और दवाइयां मांगने के अपमान का डर था. तिस पर भी 1997 में जब उनकी मृत्यु हुई, वे बेसहारा और दीन-हीन लोगों के लिए 123 देशों में बहुराष्ट्रीय अनुकंपा व्यवस्था कायम कर चुकी थीं. उन्होंने कहा था, ''हम बड़ी चीजें नहीं कर सकते, बहुत प्यार से बस छोटी चीजें कर सकते हैं.'' अगले पन्नों पर हम असाधारण कहानियां लेकर आए हैं, जो इन नई राहों के अन्वेषियों का अनुकरण करने के लिए नई पीढ़ियों को यकीनन प्रेरित करेंगी. ■

इलस्ट्रेशनः नीलांजन दास

दुनियाभर के लिए महात्मा

महात्मा गांधी (1869-1948)

भारत के स्वतंत्रता संग्राम के लिए अनोखा मुहावरा गढ़ने से लेकर किसी भी कीमत पर—अपने जीवन की भी—सांप्रदायिक सद्भाव के लिए जूझने तक भारत के राष्ट्रपिता अपने पीछे दुनिया के लिए चिरस्थायी विरासत छोड़ गए

दलाई लामा

मेरे लिए महात्मा गांधी 'अहिंसा' के साथ 'करुणा' के भी प्रतीक हैं. आज मैं मुख्य रूप से इन्हीं दोनों सिद्धांतों को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध हूं और मानता हूं कि भारत अकेला देश है जिसमें अपने पुरातन ज्ञान को आधुनिक शिक्षा से जोड़ने का सामर्थ्य है. गांधी जी अहिंसा और करुणा दोनों की मिसाल हैं और मैं उन्हें अपने गुरु की तरह देखता हूं.

भारत की पहली यात्रा में 1956 में मैं यमुना नदी के किनारे राजघाट के उस तीर्थ पर गया जहां महात्मा गांधी का दाहसंस्कार किया गयाा था. वहां प्रार्थना करते वक्त मुझे गहरी उदासी ने घेर लिया कि मैं उनसे आमने-सामने नहीं मिल पाया, लेकिन उनकी जिंदगी की शानदार मिसाल पर बहुत खुशी भी हुई. मेरे लिए वे आदर्श राजनीतिज्ञ हैं, ऐसे व्यक्ति जिन्होंने सारे निजी आग्रहों से ज्यादा परोपकार में यकीन किया और सभी महान आध्यात्मिक परंपराओं के प्रति सम्मान लगातार बनाए रखा.

गांधी हमारे वक्त के शायद महानतम व्यक्ति थे. ऐसे व्यक्ति जो अपनी मृत्यु के दिन तक भारत की और समूची मानवजाति की आत्मा की रक्षा करते रहे: शांति और सौहार्द्र में सच्चा यकीन करने वाले व्यक्ति. उन्होंने अफ्रीका और अमेरिका में नेल्सन मंडेला और मार्टिन लूथर किंग जूनियर जैसे अनुयायियों को प्रेरित किया. आज इस दुनिया में जहां सताना और मार डालना अब भी जारी है, करुणा और अहिंसा की जरूरत पहले से कहीं ज्यादा है. मैं इन दोनों आदर्शों को श्रेष्ठतम आधुनिक शिक्षा से जोड़ने के लिए दृढ़ता से प्रतिबद्ध हूं. ■

गांधी आदर्श राजनीतिज्ञ हैं, ऐसे व्यक्ति जिन्होंने सारे निजी आग्रहों से ज्यादा परोपकार में यकीन किया और सभी महान आध्यात्मिक परंपराओं के प्रति सम्मान लगातार बनाए रखा

दलाई लामा *तिब्बती बौद्धों के आध्यात्मिक नेता और नोबेल पुरस्कार से सम्मानित हैं. 1959 से वे धर्मशाला (भारत) में रह रहे हैं*

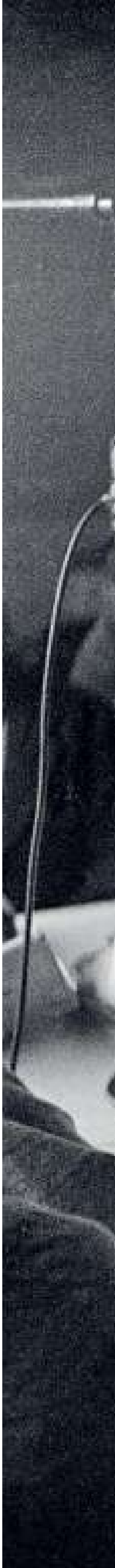
अलामी

CHICAGO

अलामी

उन्हें विशाल बरगद का पेड़ कहा जाता था जिसकी छाया में कोई दूसरा पौधा पनप नहीं सका मगर संस्थाओं के बेमिसाल निर्माता के तौर पर उन्होंने जंगल में अनेक किस्म के पेड़-पौधों का फलना सुनिश्चित किया

राष्ट्र निर्माता

जवाहरलाल नेहरू (1889-1964)

देश के पहले प्रधानमंत्री के नाते नेहरू ने भारत को अपने वक्त के समाजवादी और पंथनिरपेक्षतावादी आदर्शों से ओतप्रोत 'नियति से महामिलन' के लिए तराशा और तैयार किया

शशि थरूर

स्वतंत्र भारत के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने 1964 में जब आखिरी सांस ली, देश और दुनिया के लिए छोड़ी गई उनकी विरासत महफूज मालूम देती थी. राष्ट्रीय राजनीति की गगनचुंबी शख्सीयत, चिंतनशील और तुनकमिजाज नेहरू ने, अनगिनत किताबों और भाषणों में और प्रधानमंत्री के तौर पर अपने आचरण में, ऐसी विश्व दृष्टि विकसित और व्यक्त की, जिसने उनकी पीढ़ी, उनके देश और (कई मानते हैं कि) औपनिवेशिक काल के बाद की विकासशील दुनिया की आकांक्षाओं को मूर्त रूप प्रदान किया.

भारत की आजादी के पहले 17 सालों में नेहरू—यानी तुनकमिजाज और आदर्शवादी बौद्धिक, जिनके दिल में किसान समुदाय के प्रति तकरीबन रहस्यमयी हमदर्दी थी; सुख-सुविधाओं के आदी कुलीन, जो प्रबल समाजवादी विश्वासों से ओतप्रोत थे; हैरो और कैंब्रिज से पढ़े-लिखे अंग्रेजीदां, जिन्होंने 18 साल ब्रिटिश जेलों में बिताए; संशयवादी स्वतंत्र व्यक्ति जो संत सरीखे महात्मा गांधी के शिष्य बन गए—ही भारत थे. महात्मा गांधी की हत्या के बाद नेहरू राष्ट्रज्योति के रखवाले और भारत के स्वतंत्रता संग्राम की सबसे प्रत्यक्ष मूर्तरूप बन गए.

भ्रष्टाचार से ऊपर, दूरदर्शी, सार्वभौम, सर्वथा लोकतांत्रिक और राजनीति से ऊपर एक राजनीतिज्ञ

नेहरू का कद इतना ऊंचा था कि एक भी विरोधी आवाज उठने पर उन्हें इस्तीफे की धमकी भर देनी होती थी और फिर आम तौर पर वही होता था जो वे चाहते थे. उन्हें बरगद का विशाल पेड़ कहा जाता था जिसकी छाया में कोई दूसरा पौधा नहीं पनप सका, मगर संस्थाओं के बेमिसाल निर्माता के तौर पर उन्होंने जंगल में अनेक किस्म के पेड़-पौधों का फलना-फूलना पक्का किया.

नेहरू की विरासत चार स्तंभों पर टिकी थी—लोकतांत्रिक संस्थाओं का निर्माण, कट्टर अखिल भारतीय पंथनिरपेक्षतावाद, देश में समाजवादी अर्थव्यवस्था और गुटनिरपेक्षता की विदेश नीति. हाल के वर्षों के घटनाक्रम से इन चारों को ही चुनौती मिली है और टूटने की हद तक दबाव झेलना पड़ा है. ■

__शशि थरूर__ जाने-माने लेखक, लोकसभा सांसद हैं और संयुक्त राष्ट्र के पूर्व अंडर सेक्रेटरी जनरल रह चुके हैं

सूबों का संगठक

सरदार वल्लभभाई पटेल (1875-1950)

नरम मिजाज नेहरू और फौलादी इरादे वाले सरदार पटेल, देश के लिए यह जोड़ी एकदम मुफीद साबित हुई. छोटी-छोटी रियासतों में बंटे देश को संगठित भारत बनाने का काम लौह पुरुष से बेहतर कोई और कर ही नहीं सकता था

राजमोहन गांधी

छह फुट दूर एक आरामकुर्सी पर बैठे सरदार पटेल मुझे चिढ़ा रहे थे. मैं तब 14 साल का था. जब मैंने गौर से देखा तो उनकी आंखों में स्नेह था. चार दशक बाद मैंने उनकी जीवनी लिखी. मध्य गुजरात में गरीब किसान परिवार में पैदा हुए, घर के उपेक्षित मंझले बेटे ने अपने दम पर कुछ करने की ठानी थी. गोधरा और बोरसाड में वकील के रूप में काम करते हुए, उन्होंने अपनी पत्नी झवेरबा को कम उम्र में ही खो दिया था लेकिन अपनी जमा-पूंजी का इस्तेमाल लंदन में कानून की पढ़ाई के लिए किया. बैरिस्टर बनकर लौटने के बाद अपनी कमाई और ब्रिज-टेबल कौशल से उन्होंने अहमदाबाद को चकित कर दिया. 1918 में उन्होंने भारत की स्वतंत्रता की लड़ाई में गांधी का हाथ बंटाने के लिए खुद को झोंकने का फैसला किया.

1928 में भूमि कर में वृद्धि के खिलाफ एक सफल सत्याग्रह का नेतृत्व करने के बाद बारदोली के किसानों ने उन्हें 'सरदार' की उपाधि दी. 1931 में वे कांग्रेस के अध्यक्ष बने जबकि 14 वर्ष छोटे नेहरू महासचिव थे; एक साल पहले स्थिति इसके उलट थी. पहले गांधी के मुख्य सहयोगियों के रूप में और बाद में भारत के दो मजबूत नेताओं के रूप में, पटेल और नेहरू की जोड़ी भारतीय जनमानस में छा गई थी. 1937 और 1939 के बीच, पटेल ही व्यवहारिक रूप से कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष थे. 1942 से 1945 तक पटेल, नेहरू, तत्कालीन कांग्रेस अध्यक्ष आजाद और अन्य नेता महाराष्ट्र के अहमदनगर फोर्ट में कैद थे.

अगस्त 1947 से दिसंबर 1950 तक, पटेल ने उप-प्रधानमंत्री के रूप में और नेहरू ने प्रधानमंत्री के रूप में संयुक्त रूप से स्वतंत्र भारत की पहली सरकार चलाई. सैकड़ों रियासतों का विलय कराने के बाद, पटेल भारत के वेल्डर या एकसूत्र में पिरोने वाले नेता बन गए. संक्षिप्त और तीखा बोलने वाले, पक्के इरादे से काम करने वाले सरदार ने वादों को पूरा किया जिसमें महात्मा के शव के बगल में खुद से किया गया उनका एक वादा भी शामिल था: नेहरू का स्पष्टवादी लेकिन वफादार साथी बने रहना का वादा. ■

राजमोहन गांधी पटेलः अ लाइफ *(1990) के लेखक हैं. वे महात्मा गांधी के पौत्र हैं*

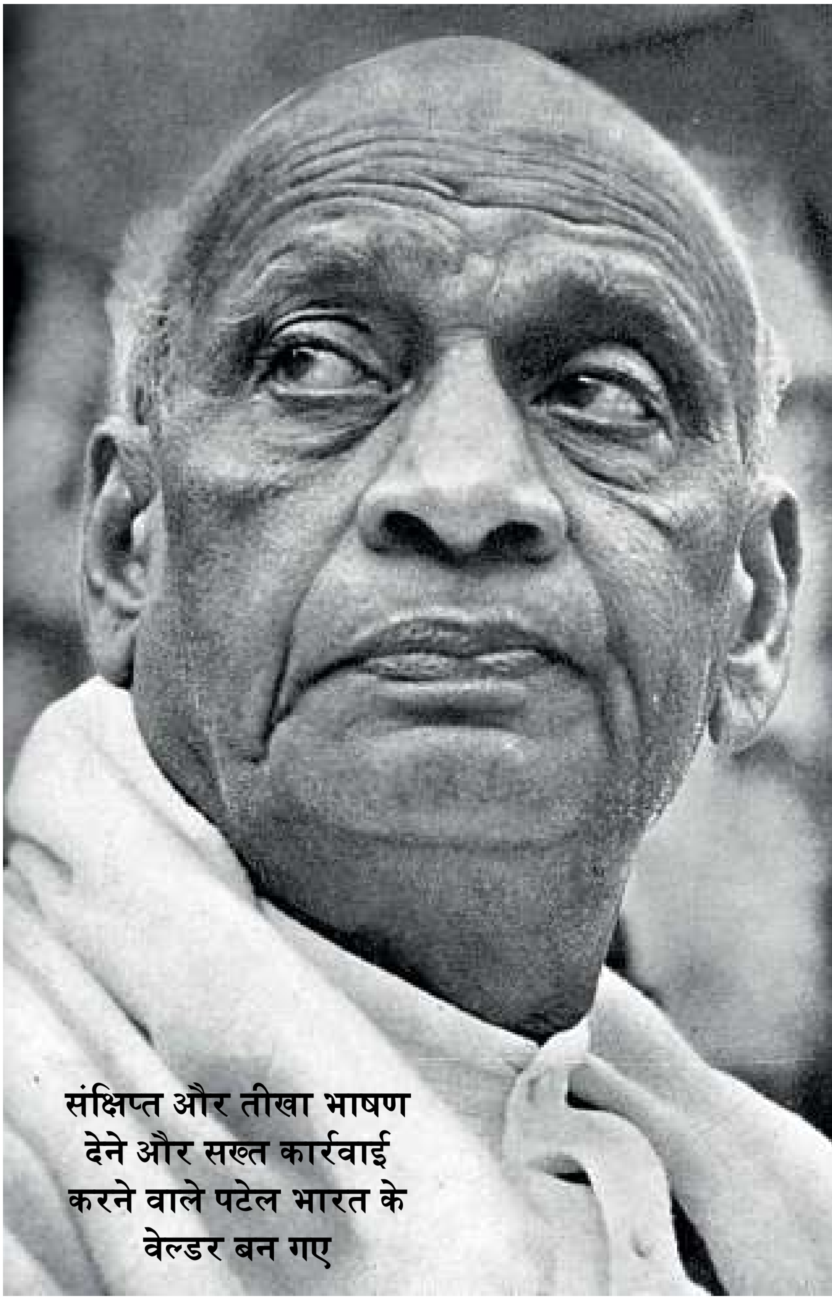

संक्षिप्त और तीखा भाषण देने और सख्त कार्रवाई करने वाले पटेल भारत के वेल्डर बन गए

अलामी

लोकतंत्र के प्रकाश स्तंभ

भीमराव रामजी आंबेडकर
(1891-1956)

कोलंबिया और एलएसई, दोनों से अर्थशास्त्र में डॉक्टरेट आंबेडकर ने न केवल भारतीय लोकतंत्र के लिए बल्कि सामाजिक सुधार के लिए भी एक ढांचा तैयार किया. वे दलित आंदोलन की मशाल बने हुए हैं

कांचा इलैया शेफर्ड

इंडियन एक्सप्रेस आर्काइव

अगले साल भारत जब अपनी स्वतंत्रता का 75वां साल मना रहा होगा, हम भीमराव आंबेडकर का आकलन किस प्रकार करते हैं, संविधान की उस मसौदा समिति के अध्यक्ष के रूप में जिसने 'हम भारत के लोगों' को लोकतंत्र के रूप में जीवित रहने में मदद करने वाला एक संविधान दिया है? यह सामाजिक-आध्यात्मिक और आर्थिक असमानताओं और अवसरों को पुनर्परिभाषित करने के लिए आवश्यक दृष्टिकोण के साथ विभिन्न श्रेणियों में बंटे देश के असमान जाति/वर्ग संरचनाओं जैसे मुद्दों को संबोधित करने वाले संविधान के पथप्रवर्तक वैचारिक ढांचे के बिना संभव नहीं होता. हमारे समाज में 1947 तक छुआछूत और बहु-धार्मिक समाज को लेकर जिस प्रकार का माहौल था, उसके लोकतांत्रिक संविधान को छिन्न-भिन्न कर सकने में समर्थ आसन्न खतरे को महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू और सरदार वल्लभभाई पटेल नहीं देख सके थे.

यह आंबेडकर थे जो उस तरह के आधुनिक संविधान की कल्पना कर सकते थे जो उस सामाजिक, आध्यात्मिक और राजनैतिक अलोकतांत्रिक संरचना को तोड़ सकता था जो तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में कौटिल्य की ओर से स्थापित वर्णधार्मिक राजशाही व्यवस्था और नागरिक समाज तथा आगे चलकर खंडित भारतीय समाज को वैधता देने वाली *मनुस्मृति* पर आधारित थी. राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और भारतीय जनता पार्टी के दिल्ली पर कब्जा करने—1999 और 2014 के चुनावों में—के बाद गोलवलकरवादी (मनु के एक आधुनिक प्रतिनिधि) आधुनिक वर्णधर्म व्यवस्था को आसानी से वापस ले आए होते, पर दलित/शूद्र/ओबीसी जातियों में उस दार्शनिक जागरण, जो आंबेडकर की विरासत है, ने ऐसा नहीं होने दिया.

सभी प्रकार की द्विज सियासी ताकतें सावरकर-गोलवलकर विचारधारा के साथ आसानी से घुल-मिल गई होतीं क्योंकि इससे उनका सामाजिक-आध्यात्मिक और राजनैतिक आधिपत्य भंग नहीं होता. यहां तक कि वाम-उदारवादी विचारक भी, जो धर्मनिरपेक्षता और समाजवाद को अपना लक्ष्य बताते हैं, गोलवलकरवादियों से लोकतंत्र के संभावित विघटन को नहीं रोक सकते थे.

> एक शक्तिशाली लिखित सैद्धांतिक ढांचे के साथ आंबेडकर ने सामाजिक-धार्मिक सुधार का मार्ग प्रशस्त किया

आंबेडकर ने भारत को पाकिस्तान, म्यांमार और श्रीलंका की तरह उत्तर-औपनिवेशिक राजनैतिक व्यवस्था बनने से बचाया. हमारे जाति-ग्रस्त, बहु-धार्मिक सामाजिक ताने-बाने के साथ-साथ भारत की जातीय सामंतशाही वाले पूंजीवाद, जहां सब कुछ चंद लोगों के नियंत्रण में हैं, को देखते हुए ऐसा लगता है कि लोकतंत्र शायद अब तक नष्ट हो चुका होता. एक कुशल संविधान का मसौदा तैयार करके, एक शक्तिशाली लिखित सैद्धांतिक ढांचे के साथ आंबेडकर ने सामाजिक-धार्मिक सुधार का मार्ग प्रशस्त किया. वे न केवल पथप्रवर्तक हैं, बल्कि भारतीय लोकतंत्र के रक्षक भी हैं. ■

कांचा इलैया शेफर्ड *राजनैतिक सिद्धांतकार, सामाजिक कार्यकर्ता तथा* व्हाइ आइ एम नॉट ए हिंदू *व* पोस्ट-हिंदू इंडिया *के लेखक हैं*

दिग्गज महिला

इंदिरा गांधी (1917-1984)

'गूंगी गुड़िया' से लेकर 'कैबिनेट में एकमात्र पुरुष' और 'भारत की लौह महिला' कहे जाने तक, भारत की पहली और एकमात्र महिला प्रधानमंत्री ने राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय, दोनों मंचों पर फैसला लेने की दुर्लभ क्षमता का परिचय दिया, खासकर बांग्लादेश की आजादी की जंग में

के. नटवर सिंह

इंडिया टुडे आर्काइव

पहली बार 1966 में इंदिरा गांधी प्रधानमंत्री बनीं तो विपक्षी नेताओं ने उन्हें ''गूंगी गुड़िया'' करार दिया. कुछ वर्षों के भीतर वे भारत की सबसे प्रभावशाली नेताओं में और विश्व की प्रमुख हस्ती के रूप में उभरीं. इतिहास में उनका नाम कई वजहों से यकीनी तौर पर दर्ज रहेगा. उनमें सबसे ऊपर यह तथ्य है कि उन्होंने बांग्लादेश को आजाद कराने के लिए 1971 की जंग जीतकर भारतीय उपमहाद्वीप का भूगोल बदल दिया.

बांग्लादेश संकट के दौरान इंदिरा गांधी ने सुनिश्चित किया कि हमारी कूटनीति पल भर के लिए भी सुस्त न पड़े. उन्होंने ऐसा आत्मविश्वास दिखाकर और फैसले से जुड़े जिद को छोड़कर किया. उन्होंने एक कुशल चाल चलते हुए उस साल अगस्त में भारत-रूस शांति समझौते पर दस्तखत किए. इससे चीनियों को संदेश मिल गया और उन्होंने बांग्लादेश के संघर्ष के समय पाकिस्तान की मदद नहीं की.

नकारात्मक पहलू में, आपातकाल की घोषणा कर इंदिरा गांधी 'महापाप' कर बैठीं. वहीं, ब्लू स्टार की वजह से उनकी हत्या कर दी गई. इन दो खामियों को छोड़ दिया जाए तो उन्हें महान प्रधानमंत्री कहा जाएगा. इंदिरा गांधी बहुत हंसी-मजाक भी करती थीं. अक्तूबर, 1984 में उनकी हत्या से पहले मैंने उनसे मुलाकात की थी और बताया था कि मैं लोकसभा चुनाव की तैयारी करने के लिए भरतपुर जा रहा हूं और मुझे खादी कुर्ता-पायजामा के नए जोड़े और नेहरू जैकेट लेने होंगे. उनकी प्रतिक्रिया थी: ''अब जब आप सियासत में आ रहे हैं तो मोटी चमड़ी ज्यादा कारगर रहेगी!'' ■

इंदिरा गांधी ने 1971 की जंग के दौरान सुनिश्चित किया कि भारत की कूटनीति पल भर के लिए भी सुस्त न पड़े. उन्होंने आत्मविश्वास के साथ ऐसा किया

के. नटवर सिंह *पूर्व विदेश मंत्री और कई किताबों के लेखक हैं*

Kerovit
Aurum
COLLECTIONS
Symphony of Colours
KAJARIA BATHWARE PVT. LTD.
J1/B1 (Extn.), Mohan Co-op
Industrial Estate, Mathura Road,
New Delhi - 110044
Phone : +91-11-26946409,
Fax : +91-11-26946407
www.kerovit.com info@kerovit.com /kerovit
/kerovit /KerovitByKajaria /KerovitIndia

इंडिया टुडे आर्काइव

सत्तर के दशक में राष्ट्रीय राजनीति में उनकी व्यापक उपस्थिति ने देश को तानाशाही की ओर फिसलने से बचा लिया

राजनीति का संत

मोरारजी देसाई (1896-1995)

खांटी गांधीवादी मोरारजी देसाई सार्वजनिक जीवन में सैद्धांतिक मूल्यों के पैरोकार थे. आपातकाल के बाद देश का प्रधानमंत्री बनने पर वे तानाशाही प्रवृत्तियों के विरोध के प्रतीक पुरुष बनकर उभरे

रामनाथ कोविंद

महान लोग शायद ही कभी अपनी श्रेष्ठता को लेकर बहुत सचेत रहते हैं. उनकी प्रतिभा अक्सर उनके सांसारिक, नियमित कार्यों में प्रकट हो जाती है. 1972-74 के दौरान उनके निजी सचिव के रूप में मोरारजी देसाई के साथ अपनी बातचीत में और उसके बाद उनके प्रशंसक के रूप में मैंने उन्हें एक गांधीवादी विरासत और सिद्धांतवादी सार्वजनिक जीवन की हमारी अंतिम प्रामाणिक कड़ी के रूप में पाया.

मेरी उनसे मुलाकात कैसे हुई, यह एक लंबी कहानी है जो यहां प्रासंगिक नहीं. फिर भी मैं कह सकता हूं कि वे भारतीय राजनीति में सच्चे पथप्रदर्शक थे. उन्होंने लगभग अस्सी वर्ष की उम्र में तानाशाही के खिलाफ उसी उत्साह के साथ लड़ाई लड़ी, जो उत्साह उन्होंने युवावस्था में दिखाया था जब वे ब्रिटिश राज के खिलाफ खड़े हुए थे. गांधीजी के दिखाए मार्ग का अनुसरण करती उनकी राजनीति आध्यात्मिक आदर्शों से प्रेरित थी. इसलिए उनकी लंबी और उपलब्धियों भरी यात्रा कभी भी व्यक्तिगत पूर्वाग्रहों से प्रभावित नहीं हुई. वे *गीता* के प्रकांड विद्वान थे, उस पर घंटों आख्यान दे सकते थे. उन्होंने गांधीजी के सच्चे शिष्य की तरह कर्मयोगी का जीवन जीया.

मोरारजीभाई दिनचर्या में कोई बदलाव नहीं करते थे. वे सुबह 4 बजे उठते और बिला नागा सुबह करीब 8 बजे लोगों से मुलाकात के लिए तैयार हो जाते. वे लोगों से बातचीत भी करते रहते और साथ-साथ अपने कपड़ों के लिए सूत कातने को चरखा भी चलाते रहते. वे खादी के पीछे के उस गांधीवादी तर्क में पूरी तरह से विश्वास रखते थे कि खादी से निर्धन सूत कातने वाले और बुनकर लाभान्वित होते हैं, जबकि मिलों में तैयार कपड़ों से पूंजीपतियों का फायदा होता है. यह अजीब लग सकता है क्योंकि उन्हें पूंजीवाद का समर्थक माना जाता था.

वे ऐसे व्यक्ति थे जिनके बारे में बहुत-सी अनुचित धारणाएं बनाई गईं और गलत समझा गया. उनकी समय की पाबंदी और सार्वजनिक जीवन में शुचिता की व्याख्या अक्सर उनकी सनक के रूप में पेश की जाती है. लेकिन छोटी से छोटी बात पर भी बारीकी से नजर रखने की आदत ने कभी भी अन्याय के खिलाफ उनकी अक्रामकता को मंद नहीं पड़ने दिया. सत्तर के दशक में राष्ट्रीय राजनीति में मोरारजीभाई की विराट उपस्थिति ने देश को तानाशाही की ओर फिसलने से बचाया. वे एक राजनैतिक संत थे, जिन्हें उनके दौर में समझने के पर्याप्त प्रयास नहीं हुए. ■

रामनाथ कोविंद *देश के राष्ट्रपति हैं*

सबके अन्ना

सी.एन. अन्नादुरै (1909-1969)

प्रशंसित लेखक और नाटककार, अन्नादुरै ने 17 सितंबर, 1949 को क्षेत्रीय पार्टी द्रविड़ मुनेत्र कड़गम की स्थापना की और तमिल सिनेमा का इस्तेमाल करके इसका प्रभावी प्रचार किया

एम.के. स्टालिन

इंडियन एक्सप्रेस

लाखों लोग पेरारिग्नार अन्ना को एक ऐसे बड़े भाई के रूप में देखते थे और देखते हैं, जिन्होंने तमिलों को एक नई राजनैतिक सुबह दिखाई. उनका नाम अन्ना, भाईचारे के गहरे बंधन को दर्शाता है और राजनीति के इस प्रतीक पुरुष के प्रति आकर्षण को उस स्तर तक बढ़ाता है जिसकी बराबरी द्रविड़ परिदृश्य में कोई अन्य नेता नहीं कर सका है. 1947 में जिस दिन भारत स्वतंत्र हुआ, उस दिन द्रविड़ कड़गम के नेता थानथाई पेरियार ने घोषणा की थी कि वे स्वतंत्रता का जश्न नहीं मनाएंगे क्योंकि समाज अभी जातिवाद की बुराइयों से मुक्त नहीं था. इसके विपरीत, अन्ना ने तर्क दिया कि भारत का स्वतंत्रता दिवस राजनैतिक स्वतंत्रता का प्रतीक है और हमें सामाजिक मुक्ति की लड़ाई जारी रखनी चाहिए और संघीय भावना का आह्वान करना चाहिए.

अलग द्रविड़ नाडु की मुखर मांग के बावजूद, अन्ना दिल से प्रतिबद्ध देशभक्त थे. 1962 के भारत-चीन युद्ध के दौरान, जब प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने विभिन्न सियासी ताकतों को एक साथ आने का आह्वान किया, अन्ना केंद्र के विरुद्ध आंदोलन को छोड़ने को राजी हो गए. अन्ना ने कहा कि अभी संघ का साथ देने का वक्त है.

राज्यसभा के सदस्य के रूप में अन्ना ने भाषाई समानता और शक्तियों के केंद्रीकरण के विरुद्ध लड़ाई लड़ी. जब 1967 में मुख्यमंत्री बने तो अन्ना ने मद्रास राज्य का नाम तमिलनाडु रखा, 'आत्म सम्मान विवाह' जिसमें पुजारियों की कोई भूमिका नहीं होती थी, उसे वैध बनाया, और राज्य में कम दाम पर चावल की आपूर्ति सुनिश्चित की. उनकी सामाजिक-आर्थिक नीतियां तमिलनाडु का मार्गदर्शन करती हैं और प्रभावी संघीय सहयोग के लिए मॉडल के रूप में काम करती हैं. ■

मुथुवेल करुणानिधि स्टालिन *तमिलनाडु के मुख्यमंत्री हैं*

विचारक

दीनदयाल उपाध्याय

(1916-1968)

आजीवन आरएसएस प्रचारक, उसके मुखपत्र *पांचजन्य* के संपादक और भारतीय जन संघ के 15 वर्षों तक नेता रहे दीनदयाल उपाध्याय के आदर्श भाजपा की विचारधारा को आज भी प्रेरित कर रहे हैं

कृष्ण गोपाल

अपनी शिक्षा पूरी करते ही दीनदयाल उपाध्याय राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक बन गए. लेकिन श्यामा प्रसाद मुखर्जी के आग्रह पर उन्हें भारतीय जन संघ में जाने को कहा गया. वे साल 1952 में उसके महासचिव और 1967 में अध्यक्ष बन गए. दुखद कि कुछ ही समय बाद उनकी हत्या कर दी गई. उनका जीवन सादा, चरित्र निर्मल और आत्मा संवेदनशील थी. उपाध्याय का मानना था कि राजनीति का उद्देश्य मौलिक दर्शन और राष्ट्र के सिद्धांतों को दृढ़ करना है. जब राजनैतिक दिग्गज विचार कर रहे थे कि इस देश को पश्चिम की नकल करनी चाहिए या कम्युनिज्म की ओर चले जाना चाहिए, तभी उन्होंने कह दिया था कि दोनों में से कोई योग्य नहीं है. उन्होंने कहा कि भारत को अपने संसाधनों, जनसंख्या, सांस्कृतिक विरासत और आवश्यकताओं के अनुसार बढ़ना चाहिए.

दीनदयाल उपाध्याय की राय स्पष्ट थी कि भारत की निर्गुट नीति निष्प्रभावी है. उनका मानना था कि जब 1950-51 में चीन ने तिब्बत को अपने मिलाया था तब भारत को मौन नहीं रहना चाहिए था. लेकिन वे नेहरू की नीतियों की उस समय आलोचना नहीं करते थे जब वे विदेश में हों क्योंकि ये भारत के अंदरूनी मामले थे. साल 1962 में चीनी आक्रमण के समय उन्होंने राष्ट्रीय संकट के दौरान पार्टी कार्यकर्ताओं को सरकार के साथ खड़े रहने को कहा.

दीनदयाल उपाध्याय ने सारे प्रांतों और नागरिकों को समान बताते हुए तर्क दिया कि अनुच्छेद 370 असंवैधानिक है. उन्होंने कहा कि किसी का तुष्टिकरण नहीं किया जाना चाहिए. उन्होंने जाति के आधार पर मतदान से बचने की आवश्यकता बताई और वे भारत की आध्यात्मिक प्रकृति को उसकी सांस्कृतिक एकता का इकलौता आधार मानते थे. उनका मानना था कि अनगिनत विविधता के बावजूद यह राष्ट्र एक संयुक्त इकाई है. उन्होंने भारतीय जन संघ की ठोस वैचारिक नींव रखी जिसे भारतीय जनता पार्टी ने विरासत में हासिल किया. ■

कृष्ण गोपाल *आरएसएस के सह सरकार्यवाह हैं*

संपूर्ण क्रांतिकारी

जयप्रकाश नारायण (1902-1979)

समाजवाद के एक ऐसे प्रतीक जिन्होंने यह सुनिश्चित किया कि कोई भी नेता, चाहे वह कितना भी शक्तिशाली क्यों न हो, कभी भी आपातकाल जैसे विनाशकारी प्रयोग को दोहराने की हिम्मत नहीं करेगा

रविशंकर प्रसाद

जेपी ने लोकतांत्रिक जागृति की नींव रखी और उन्होंने भारतीय नागरिकों को उनके अधिकारों का एहसास दिलाया

जयप्रकाश नारायण जेपी के नाम से मशहूर हैं और उन्हें जेपी आंदोलन से उपजे हमारे जैसे लोग लोकनायक कहते हैं. जेपी सत्ता के लिए नहीं बल्कि शक्तिहीनों के लिए राजनीति करते थे. वे सत्ता से दूरी के प्रतीक बने. आजाद भारत में एक उज्ज्वल सियासी भविष्य उनका इंतजार कर रहा था. पर वे एक पक्के समाजवादी थे और यह पक्का करना चाहते थे कि भारत उसी मॉडल पर विकसित हो. यह भाव उन्हें जवाहरलाल नेहरू के करीब ले आया. ऐसा माना जाता है कि नेहरू चाहते थे कि जेपी उनकी सरकार में अहम भूमिका निभाएं, संभवत: सरदार पटेल के निधन के बाद उप-प्रधानमंत्री के रूप में भी. पर जेपी ने गांवों में जाकर गरीबों के बीच काम करने का फैसला लिया. 1969 के राष्ट्रपति चुनाव में, जब इंदिरा गांधी ने कांग्रेस के आधिकारिक उम्मीदवार नीलम संजीव रेड्डी के खिलाफ वी.वी. गिरि को उतारा, तब दोनों पक्षों में सर्वसम्मति के उम्मीदवार के रूप में जेपी के नाम पर सहमति बनी. लेकिन उन्होंने विनम्रता से मना कर दिया.

उसके बाद जेपी आंदोलन हुआ जिसमें उन्होंने भ्रष्टाचार-कुशासन के खिलाफ छात्रों का नेतृत्व किया. लोकतंत्र में उनका शानदार योगदान यह रहा कि कोई नेता आपातकाल जैसा दुस्साहस अब कभी नहीं करेगा. जेपी ने लोगों को एहसास दिलाया कि वे मताधिकार के बल पर किसी भी नेता को हरा सकते हैं. 1977 में जब जनता पार्टी ने इंदिरा गांधी को हरा दिया तो जेपी आसानी से प्रधानमंत्री बन सकते थे. पर उन्होंने इसमें कोई रूचि नहीं ली क्योंकि वे अपने सिद्धांतों के प्रति प्रतिबद्ध थे. प्रतिबद्धता उनके लिए सब कुछ थी. ■

*पूर्व केंद्रीय मंत्री **रविशंकर प्रसाद** ने अपने युवा दिनों में जेपी के साथ काम किया है*

एक्सप्रेस आर्काइव फोटो

समाजवाद का बुलंद स्तंभ

राम मनोहर लोहिया

(1910-1967)

उन्होंने 1956 में जो सोशलिस्ट पार्टी बनाई, वह भारतीय समाजवादियों की कई पीढ़ियों के लिए सांचा बन गई

लालू प्रसाद यादव

राम मनोहर लोहिया विचारक, प्रखर वक्ता और संगठनकर्ता के रूप में जन नेता की भूमिका निभाने वाले भारतीय राजनीतिज्ञों की लंबी कतार से जुड़े थे. ये खूबियां इन दिनों राजनीतिज्ञों में दुर्लभ होती जा रही हैं. दबे-कुचले समुदायों के लिए सामाजिक न्याय पक्का करने को लेकर उनके विचार हमेशा की तरह आज भी प्रासंगिक हैं. मगर ज्यादा जरूरी यह है कि जब जीत की संभावना न के बराबर हो तब भी घुटने न टेकने और अपना संघर्ष जारी रखने के उनके जज्बे से हम सीखें. 'फावड़ा, जेल और वोट' के नारे में मूर्त विरोध के मिले-जुले अलग-अलग तरीकों से नाइंसाफी के खिलाफ लड़ना आज की मांग और जरूरत है. यह हमें लोकतंत्र के हर स्तंभ पर संघ की विचारधारा के हमले से लड़ने में रास्ता दिखा सकता है. लोहिया जी उन इने-गिने विचारकों में थे, जिन्होंने नागरिक स्वतंत्रताओं के हक में पुरजोर लड़ाई लड़ी, क्योंकि उन्हें लगता था कि सरकार की आलोचना करने की आजादी किसी भी समाज की तरक्की के लिए बेहद जरूरी है. उनका यह कथन कि ''भारत निरंकुशता की छाया और उससे भी बदतर निरंकुशता के भय में जी रहा है'' आज की स्थिति के लिए भी मौजूं है. लोहिया जी का समाजवादी आचरण जैविक था और उसकी जड़ें हिंदुस्तानी हकीकत में थीं. वे मानते थे कि जाति आधारित आरक्षण समतामूलक समाज के निर्माण का सच्चा औजार है. उन्होंने ने यह भी याद दिलाया कि साथ ही

लोहियाजी का मानना था कि सरकारी की आलोचना करने की आजादी किसी भी समाज की तरक्की के लिए बेहद जरूरी है

साथ लैंगिक पक्षपात के खिलाफ लड़ाई छेड़े बगैर जाति को खत्म नहीं किया जा सकता. विडंबना यह है कि भाजपा संविधान की आत्मा पर हमलों के खिलाफ ताउम्र लड़ने वाले लोहिया जी की विरासत को हड़पने में लगी है. लोहिया जी के माध्यम से हमें समझना होगा कि आज भारत में सामाजिक न्याय की लड़ाई को उखाड़ फेंकने के लिए आक्रामक बहुसंख्यकवाद का इस्तेमाल किया जा रहा है. लोहिया जी के विचार और कार्य पहले के किसी भी वक्त से ज्यादा आज प्रासंगिक हैं. ■

लालू प्रसाद यादव *राष्ट्रीय जनता दल के अध्यक्ष और बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री हैं*

चिरकाल के ध्रुवतारे

मौलाना अबुल कलाम आजाद (1888-1958)

भारत के पहले शिक्षा मंत्री के रूप में उन्होंने देश की शैक्षणिक बुनियाद रखी

सलमान ख़ुर्शीद

नव-स्वतंत्र भारत की समावेशी और पंथनिरपेक्ष समाज की प्रतिबद्धता के महत्वपूर्ण सार्वजनिक प्रतीक थे मौलाना आजाद. इस तरह वे जिन्ना के दो-राष्ट्र के सिद्धांत को मुस्लिम भारत की ओर से नकार दिए जाने का साक्षात रूप थे. मगर वह ऐतिहासिक भूमिका उन्होंने जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में कांग्रेस के अपने तमाम साथियों के दोटूक और ईमानदार समर्थन से निभाई, खासकर जब आम मुसलमानों में झलकने वाले अटूट संदेह और असुरक्षा बोध विरासत में मिले थे. जामा मस्जिद की सीढ़ियों पर उनके झकझोर देने वाले शब्द याद आते हैं, जिनमें नेहरू के 'नियति से महामिलन' वाले भाषण की गूंज थी. नेहरू और कांग्रेस ने केंद्रीय शिक्षा मंत्री के तौर पर भावी पीढ़ियों के दिलो-दिमाग को गढ़ने के लिए युवा राष्ट्र का भरोसा उन्हें सौंपा, यह उस दूरदृष्टि की तस्दीक थी जिसके साथ नया भारत जन्मा था. उनमें से कई सपने काफी हद तक पूरे हुए, हालांकि अभी बहुत कुछ करना बाकी है. देश के हालिया राजनैतिक रुझानों ने हो सकता है कि नेहरू-आजाद प्रगति की दिशा मिटाने और उसकी जगह बहुसंख्यकवादी विचारों को लाने की कोशिश की हो, जो इस प्रक्रिया में अल्पसंख्यकों को उलझन में डाल रहा है. इसीलिए मौलाना आजाद हमारे वक्त और नागरिकता के ध्रुवतारे बन जाते हैं. हमारे लिए आज तूफानी समुद्र में सुरक्षित ठिकानों की तलाश करते हुए उनकी जिंदगी अहम सबक है. ■

सलमान ख़ुर्शीद *पूर्व विदेश मंत्री हैं*

अलामी

साभार: बोलिन बोरदोलोई, श्री गोपीनाथ बोरदोलोई के सबसे छोटे पुत्र

पूर्वोत्तर का तारणहार

गोपीनाथ बोरदोलोई (1890-1950)

असम के निर्माता और उसके पहले मुख्यमंत्री लोकप्रिय गोपीनाथ बोरदोलोई ने पूर्वोत्तर को पूर्वी पाकिस्तान में जाने से बचाया

हेमंत बिस्व सरमा

आजादी से पहले किसी कांग्रेसी के लिए जवाहरलाल नेहरू और मौलाना अबुल कलाम आजाद जैसे पार्टी के दिग्गजों के खिलाफ जाना अकल्पनीय था. लेकिन असम के निर्विवाद नेता गोपीनाथ बोरदोलोई ने अपने राज्य को कैबिनेट मिशन के ग्रुपिंग सिस्टम (समूहीकरण) से बचाने के लिए कांग्रेस के धुरंधरों की अवज्ञा का साहस किया. उस योजना को स्वीकारने का अर्थ होता विभाजन के बाद असम का पूर्वी पाकिस्तान में विलय. बोरदोलोई ने इसका जोरदार विरोध किया, हालांकि उन्हें बंगाल के दो नेताओं—कांग्रेस के शरत चंद्र बोस और जनसंघ के संस्थापक श्यामा प्रसाद मुखर्जी को छोड़कर बहुत कम लोगों का समर्थन मिला. अंततः महात्मा गांधी को हस्तक्षेप करना पड़ा और बोरदोलोई अविभाजित असम को ग्रुपिंग से बाहर रखने में सफल रहे.

संविधान सभा की पूर्वोत्तर सीमांत (असम) जनजातीय और अपवर्जित क्षेत्रों की उपसमिति के अध्यक्ष के रूप में बोरदोलोई ने पूर्वोत्तर के मूल निवासियों के सशक्तीकरण के लिए एक नई संस्था की परिकल्पना की, जिसे छठी अनुसूची के रूप में जाना जाता है. विश्वविद्यालयों और संस्थानों की स्थापना से लेकर क्षेत्र के असंख्य जातीय समूहों के बीच सद्भाव बनाए रखने तक, असम के पहले मुख्यमंत्री के रूप में उन्होंने राज्य के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई.

भारत की मुख्यभूमि से भौगोलिक रूप से दूर एक क्षेत्र में राष्ट्र निर्माण में उनके अनमोल योगदान के बावजूद भारत के ये महान सपूत राष्ट्रीय पटल में अपरिचित-से ही रहे. अटल बिहारी वाजपेयी ने उन्हें 1999 में भारत रत्न से सम्मानित किया तब जाकर असम के इस महान नेता को यथेष्ट सम्मान मिला. ■

हेमंत बिस्वसरमा *असम के मुख्यमंत्री हैं*

धर्मनिरपेक्षतावादी

शेख अब्दुल्लाह (1905-1982)

यदि आज जम्मू-कश्मीर भारत का हिस्सा है, तो यह काफी हद तक उन्हीं की बदौलत

प्रकाश सिंह बादल

भले ही मुझे शेख अब्दुल्लाह साहब के साथ करीब से काम करने का अवसर नहीं मिला पर मैं उन्हें उसी स्थान पर रखूंगा जहां मैं लोकनायक जयप्रकाश नारायणजी, वाजपेयीजी, चंद्रशेखरजी, देवी लालजी और अन्नादुरै साहब जैसी अन्य राजनैतिक विभूतियों को रखता हूं जिनके साथ मेरा संवाद रहा है. जब इतिहास उन घटनाओं, विचारों और शख्सियतों को दर्ज करेगा जिन्होंने स्वतंत्रता के बाद के भारत की नियति लिखी, तो शेख साहब का नाम एक धर्मनिरपेक्ष, लोकतांत्रिक भारत के लिए प्रतिबद्ध दूरदर्शी राजनेता के रूप में दर्ज होगा. अगर कहें कि जम्मू-कश्मीर को भारत का अभिन्न अंग बनाने में उनके बराबर योगदान शायद ही किसी का हो, तो यह कोई अतिश्योक्ति न होगा.

उनका करिश्मा और उनकी आभा ऐसी थी कि शेख साहब से जो मिलता उनके जादू में बंध जाता. उनके साहस और धर्मनिरपेक्ष विचारों की मुखरता से वकालत की उनकी दृष्टि को, उनके बेटे फारूक साहब ने आगे बढ़ाया है जिन्हें उन्होंने एक बार पंजाब और केंद्र के बीच एक मुद्दे पर मध्यस्थता के लिए तैनात किया था. फारूक साहब ने पंजाब में शांति बहाली का एक मौका देने के लिए दिल्ली को मनाने की पूरी कोशिश की. उनके साथ मेरी एक मुलाकात याद आती है जिसमें फारूक साहब ने अचानक अपने ओवरकोट की जेब में हाथ डाला और एक छोटी-सी थैली निकालकर मेरे हाथों में थमा दी. ''बादल साहब, ये मैं खुसूसन शेख साहब से आप के लिए लाया हूं—कश्मीर की मेवा और कश्मीर से मोहब्बत और खैर सगाली का पैगाम.'' उनके शब्द उतने ही गर्मजोशी भरे और आनंददायक थे जितना कि उनका उपहार. अफसोस की बात है कि उन्हें जितना समझा जाना चाहिए था, समझा ही नहीं गया. ■

प्रकाश सिंह बादल *पंजाब के पांच बार मुख्यमंत्री रहे हैं.*

सिद्धांतवादी राजनेता

ज्योति बसु (1914-2010)

पूरे 23 साल पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री रहे और प्रधानमंत्री बनने से बाल-बाल चूके इस राजनेता की आकंठ ऋणी है भारत की वाम राजनीति

सीताराम येचुरी

लंदन में वे उस वक्त कानून की पढ़ाई कर रहे थे जब हिटलर का उभार, फासीवाद और भारत का स्वतंत्रता आंदोलन उन्हें वापस देश ले आया. उनकी अगुआई में वाम दलों ने 1977 में बड़ी जीत हासिल की और वे भूमि सुधार लाने और लोकतंत्र का विकेंद्रीकरण करने में अहम माध्यम बने. गठबंधन सरकारों के ढर्रा बनने से बहुत पहले 1967-68 में बसु ने सबसे बड़े समूह का नेता होने के बावजूद दूसरी सबसे बड़ी पार्टी बांग्ला कांग्रेस के अजय मुखर्जी का नाम मुख्यमंत्री के लिए प्रस्तावित किया. 1989 और 1996 में केंद्र में गैर-कांग्रेसी गठबंधन सरकारों और 2004 में कांग्रेस की अगुआई वाली सरकार में भी उनकी प्रमुख भूमिका थी. जब उन्हें लगा कि उम्र और घटती ऊर्जा से सरकार और पार्टी का कामकाज प्रभावित हो सकता है, उन्होंने मुख्यमंत्री के पद से स्वेच्छया रिटायर होकर मिसाल कायम की. ऐसा करने वाला महज एक और नेता मुझे याद आता है—नेल्सन मंडेला. 1996 में जब पार्टी ने उनके गठबंधन सरकार का प्रधानमंत्री बनने के खिलाफ फैसला किया, तो पार्टी के वफादार सिपाही की तरह उन्होंने अपने पैर पीछे खींच लिए. उनकी विनोदप्रियता गजब की थी. मैं अलग-अलग नेताओं से अलग-अलग भाषाओं में बात करता था, तो वे कहते कि मैं विद्रोह भड़का रहा हूं. ■

भास्कर पॉल

(रोमिता दत्ता से बातचीत पर आधारित)

सीताराम येचुरी *राज्यसभा सदस्य हैं*

नए जमाने का राजनेता

राजीव गांधी (1944-1991)

अपनी मां की मृत्यु के बाद विरासत में देश की कमान संभालने को मजबूर राजीव गांधी ने अपना सब कुछ देकर देश को युवा कल्पनाशीलता और ऊर्जा के जोश से भर दिया

सैम पित्रोदा

भारत को राजीव गांधी का योगदान देश को 21वीं सदी में ले जाने के लिए '80 के दशक में उनके हाथों बोए गए बीजों में निहित है. वे युवा ऊर्जा और नए विचार लेकर आए. कई अहम कार्यक्रमों में मुझे उनके साथ करीब से काम करने का मौका मिला. मैं जानता हूं कि वे आर्थिक पिरामिड के सबसे नीचे के लोगों के फायदे के लिए टेक्नोलॉजी के इस्तेमाल को लेकर प्रतिबद्ध थे. उन्होंने स्वदेशी विकास, संस्था निर्माण, नागरिक समाज, लोकतंत्रीकरण, विकेंद्रीकरण, निजीकरण, विनियमन, उद्यमशीलता, रचनात्मकता, खुलेपन और जवाबदेही को बढ़ावा दिया. वे समय को लेकर सजग थे और मुझसे कहते, ''मैं चाहता हूं लोग समझें कि 30 सेकंड में बताई जाने वाली चीजों में वे 30 मिनट लगाते हैं.''

उन्होंने टेलीकॉम और कंप्यूटरीकरण के लिए जरूरी राजनैतिक इच्छाशक्ति मुहैया की. तब हमारे यहां 20 लाख टेलीफोन थे और फोन कनेक्शन लेने में 10 साल लगते थे. कोई सॉफ्टवेयर निर्यात नहीं होता था. अब हम 75 करोड़ स्मार्टफोन से जुड़ी एक अरब से ऊपर आबादी के देश हैं. हम सॉफ्टवेयर और सेवा निर्यात से करीब 150 अरब डॉलर कमाते हैं.

मुझे याद है जब सोवियत राष्ट्रपति मिखाइल गोर्बाचोव भारत की राजकीय यात्रा पर आए, मैं इन क्षेत्रों में हमारी विशेषज्ञता के बारे में बताने के लिए उनसे मिलना चाहता था. दोनों देशों के अफसरशाह इसके खिलाफ थे. राजीव ने रास्ता निकाला, जैसा वे हमेशा करते थे. प्रधानमंत्री आवास में रात्रिभोज के बाद वे मुझे गोर्बाचोव से मिलवाने ले गए और हमने सूचना क्रांति के बारे में एक घंटे से ज्यादा बात की.

रघु राय

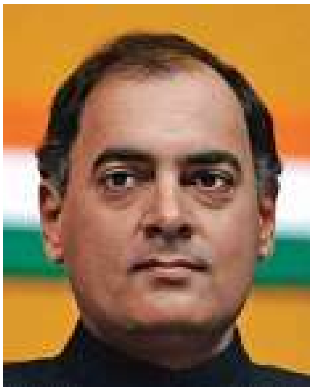

राजीव हदों को लांघने वाले उतावले शख्स थे. उन्होंने पानी, टीकाकरण, साक्षरता, तिलहन, टेलीकॉम और डेयरी विकास के लिए टेक्नोलॉजी मिशन शुरू किए. पोलियो को जड़ से खत्म करने और भारत को दुनिया का सबसे बड़ा वैक्सीन और दुग्ध उत्पादक देश बनाने में मदद की. उन्होंने एनआइसी में ई-गवर्नेंस, सी-डीएसी में सुपरकंप्यूटर और विकेंद्रीकृत अमल के लिए राष्ट्रव्यापी पंचायती राज के विकास की ताकत भारत को दी. इन योजनाओं ने 21वीं सदी की वृद्धि की नींव रखने के लिए भारत को दिशा, क्षमता और मानव संसाधन दिए. ■

सैम पित्रोदा *टेलीकॉम इंजीनियर, आविष्कारक और उद्यमी हैं, जो टेक्नोलॉजी अभियानों में तब प्रधानमंत्री राजीव गांधी के सलाहकार थे*

शानदार रणनीतिकार

वी.पी. सिंह (1931-2008)

ओबीसी के शुभंकर, भ्रष्टाचार विरोधी योद्धा, पंथनिरपेक्षतावादी... वी.पी. सिंह कई सिद्धांतों पर चले और जिए

मोहन गुरुस्वामी

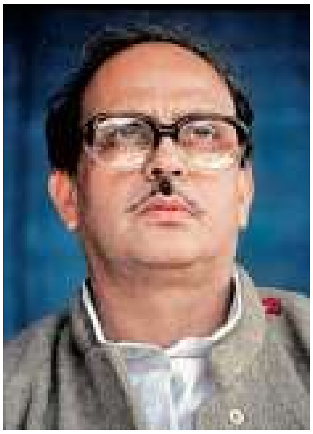

एक स्वतंत्र राजनैतिक हस्ती के रूप में वी.पी. सिंह का उभार देश में चल रहे राजनैतिक तमाशे की चरम घटनाओं में से एक था. इसके साथ देश की असरदार राजनैतिक ताकत के तौर पर कांग्रेस का अंत हो गया. आश्चर्य क्या कि लालकृष्ण आडवाणी ने कहा था कि ''अगर वी.पी. सिंह नहीं होते तो हमें उनका आविष्कार करना पड़ता!'' उन्होंने बेवजह ऐसा नहीं कहा. 1984 में कांग्रेस 414 लोकसभा सीटों और 49.1 फीसद वोट की जबरदस्त ताकत के साथ उभरी थी. दूसरी सबसे ज्यादा 7.7 फीसद वोट पाने वाली भाजपा के पास महज दो सांसद थे. संसद में अगली सबसे बड़ी पार्टी एन.टी. रामराव की टीडीपी थी, जिसे महज 4.3 फीसद वोट और 30 सीटें मिली थीं.

मैं वी.पी. सिंह से पहली बार उनके घर पर मिला जब उनके भाई और पूर्व कांग्रेस सांसद संतबख्श सिंह का फोन आया, जो जिंदगी का लुत्फ लेने वाले शख्स और बेजोड़ किस्सागो थे. वी.पी. सिंह बिल्कुल उलट थे—संयमी, कम बोलने वाले, हंसी-मजाक में रूखे. मगर 1987 में उनका एक आभामंडल बना. उन्होंने कामयाबी के शिखर पर सवार राजीव गांधी को चुनौती दी और सिद्धांत के लिए सत्ता छोड़ने को तैयार शख्स का प्रभामंडल अख्तियार कर लिया.

विडंबना यह कि जिस जाहिरा सिद्धांत के लिए उन्हें सत्ता छोड़ने के लिए मजबूर किया गया, वह जर्मनी से एचडीडब्ल्यू पनडुब्बियों की खरीद से जुड़ा था. जब मैंने वी.पी. सिंह से कहा कि पनडुब्बी सौदा तो गौण था और बोफोर्स तोप सौदे के नतीजे कहीं ज्यादा भीषण थे, वे भड़क गए और बोले कि इस सौदे को वित्त मंत्री और सुरक्षा मामलों की कैबिनेट कमेटी के सदस्य के नाते खुद उन्होंने मंजूरी दी थी और यह 100 फीसद साफ-सुथरा था. जैसे-जैसे खुलासे होने शुरू हुए, वी.पी. सिंह ने बोफोर्स को ही अपनी टेक बना लिया. नए वी.पी. सिंह उभरे. जनसाधारण के साथ उनका तार जुड़ने लगा. वे नाटकीय ढंग से कागज लहराते और कहते कि इसमें राजीव गांधी के बोफोर्स से जुड़े स्विस बैंक खाते का नंबर है और उन्हें सत्ता से बेदखल करने के बाद इसकी जांच होगी. बेशक वैसा कुछ हुआ नहीं.

एक और पूर्व प्रधानमंत्री चंद्रशेखर ने एक बार उन्हें ऐसा शख्स बताया था जिसके पास रणनीतिक दूरदृष्टि नहीं थी पर जो व्यूहरचना शानदार करता था. राजीव गांधी उनके आगे कहीं टिकते नहीं थे और लड़ाई हार गए. अशोक के बाद कांग्रेस रूपी सबसे बड़ा भारतीय साम्राज्य समय के साथ ढलने लगा और अब अपनी ही फीकी परछाई भर है. इसकी शुरुआत वी.पी. सिंह ने की थी. ■

मोहन गुरुस्वामी सेंटर फॉर पॉलिसी ऑल्टरनेटिव्ज के चेयरमैन और संस्थापक हैं

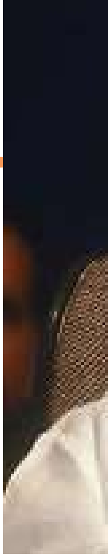

मौन कर्मयोगी

पी.वी.नरसिंह राव (1921-2004)

बहुभाषाविद, बुद्धिजीवी और दूरदर्शी, भारत के दसवें प्रधानमंत्री ने आर्थिक सुधारों से देश की किस्मत बदल दी

कमल नाथ

पी.वी. नरसिंह राव के साथ मेरा जुड़ाव युवा कांग्रेस के दिनों से ही था जब हमने विभिन्न मुद्दों पर साथ काम किया था. साल 1984 में, जब वे छिंदवाड़ा की सीमा से लगी महाराष्ट्र की रामटेक लोकसभा सीट से सांसद बने तो उन्होंने हमेशा मेरे निर्वाचन क्षेत्र के विकास कार्यों पर नजर रखी. एक बार जब मैंने पांढुरना रेलवे स्टेशन पर कुछ ट्रेनों का ठहराव शुरू कराया तो उन्होंने हल्के-फुल्के अंदाज में कहा कि मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए क्योंकि इसका असर

बंदीप सिंह

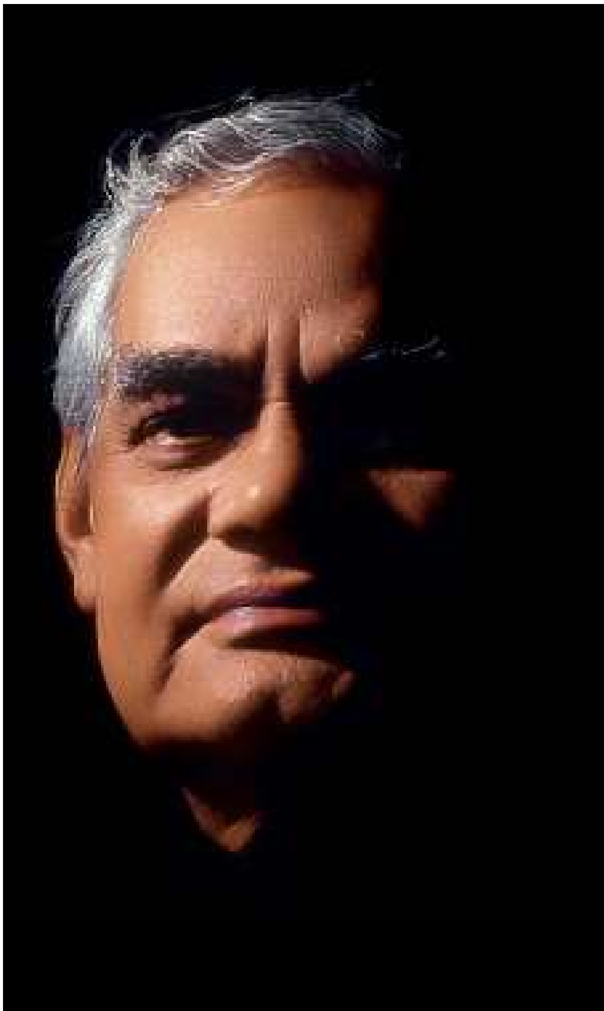

शरद सक्सेना

उनके निर्वाचन क्षेत्र पर होता है.

वे विद्वान व्यक्ति थे जो कई भाषाएं बोल सकते थे. उन्होंने वित्त मंत्री मनमोहन सिंह के माध्यम से भारत में सुधारों की शुरुआत की, क्योंकि देश के सामने और कोई रास्ता नहीं बचा था. भारत के भुगतान संतुलन की स्थिति इतनी गंभीर थी कि हमारे पास अगली तिमाही के लिए कच्चा तेल खरीदने के लिए भी पैसे नहीं थे. वास्तव में उनके जैसे समाजवादी के लिए बाजार पूंजीवाद बाजार की ओर बढ़ना, बहुत कठिन फैसला था. इस द्वंद्व को दूर करने के लिए, उन्होंने ''निरंतरता के साथ परिवर्तन'' की बात कही. उन्होंने कठिन समय में भारत को कुशल नेतृत्व दिया लेकिन उनके लिए संकट की घड़ी अयोध्या में आई. भाजपा नेताओं के धोखा देने के कारण वह दौर देश के लिए सांप्रदायिक रूप से अशांत हो गया था.

उनकी सबसे बड़ी उपलब्धि यह थी कि उन्होंने डॉ. सिंह के रूप में अपना महान वित्त मंत्री खोजा था, जिन्होंने 2014 से पहले तक भारत के विशाल आर्थिक विकास की बुनियाद रखी थी. हमें उनके दौर में भारत के परमाणु शक्ति बनने की दिशा में खामोशी के साथ हुई प्रगति को भी नहीं भूलना चाहिए. उन्होंने पोकरण में इंदिरा गांधी की विरासत को आगे बढ़ाया, हालांकि इसका श्रेय उन्हें कभी नहीं मिला, अटल बिहारी वाजपेयी वह श्रेय ले गए. ■

कमल नाथ *मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री और पूर्व केंद्रीय मंत्री हैं*

कवि हृदय प्रधानमंत्री

अटल बिहारी वाजपेयी

(1924-2018)

व्यवहार में सौम्य लेकिन परमाणु परीक्षण से लेकर करगिल की जंग तक काम संपन्न करने के लिए उनके भीतर पर्याप्त धीरज था

यशवंत सिन्हा

हम परमाणु परीक्षण करने जा रहे हैं. दुनिया इसे पसंद नहीं करेगी. मैं चाहता हूं कि आप परिणाम भुगतने के लिए तैयार रहें,' वाजपेयी ने आश्चर्यजनक शांतभाव के साथ यह बात कही थी. यह मई 1998 की बात है. लेकिन वे वाजपेयी थे, संतोषी और हर स्थिति में शांतचित्त. एक प्रमुख कंसल्टेंसी फर्म की एक टीम ने उनके सामने आर्थिक विकास के लिए बहुत ज्यादा सैद्धांतिक फॉर्मूला रखा तो उनकी प्रतिक्रिया थी 'लेकिन यह सब होगा कैसे?' वाजपेयी हमेशा जमीनी सचाई को समझकर उसके मुताबिक फैसले में यकीन रखते थे. मेरे पहले बजट के लिए उन्होंने मुझे सलाह दी कि 'किसानों को ध्यान में रखें'.

वाजपेयी सबसे बड़े नेताओं में से एक थे और भारत के अब तक के सबसे महान प्रधानमंत्रियों में से भी एक. वे हमेशा जमीन से जुड़े रहे इसलिए उन्हें भारत की समस्याओं की गहरी समझ थी. वे दुनिया को समझते थे और भारत की विदेश नीति के लक्ष्यों को लेकर एकदम स्पष्ट थे. उन्हें विश्व के नेताओं के बीच बहुत सम्मान प्राप्त था और उनके दौर में भारत को सभी प्रतिष्ठित वैश्विक संस्थाओं में जगह मिली थी.

वे अपने भाषण से लोगों को मंत्रमुग्ध कर देते थे. अपनी वाक्पटुता से वे संसद में अपने विरोधियों और प्रतिद्वंद्वियों को चुप करा देते थे. उनकी कमजोरी: वे आम सहमति बनाने के लिए बहुत अधिक प्रयासरत रहते थे. भारत का सौभाग्य है कि उनके जैसा प्रधानमंत्री मिला. ■

यशवंत सिन्हा *पूर्व केंद्रीय वित्त मंत्री और पूर्व विदेश मंत्री हैं*

Kajaria PLY
INDIA JAISA STRONG

Kajaria LAMINATES
STRENGTH IN BEAUTY

To know more about our products:

www.kajariaply.com

info@kajariaply.com

विचारों की शक्ति

मनमोहन सिंह, 88 वर्ष

1991 के आर्थिक सुधारों के सूत्रधार और 2004-2014 तक भारत के प्रधानमंत्री, विनम्र, मृदुभाषी, ऑक्सफोर्ड-शिक्षित अर्थशास्त्री की उपलब्धियां इतनी हैं कि देश के विकास में उनके योगदान का सही फैसला केवल इतिहास कर सकता है

पी. चिदंबरम

आजादी के बाद के 75 सालों में कई ऐसे नेता रहे जिन्होंने बहुत सावधानी से चुने हुए रास्ते पर हमें आगे बढ़ाया. कुछ नेता ऐसे भी रहे जिन्होंने हमें एक अलग राह दिखाई और एक ऐसे मुकाम पर पहुंचाया जिससे हम पूरी तरह अनजान थे. डॉ. मनमोहन सिंह दूसरी श्रेणी से ताल्लुक रखते थे. डॉ. सिंह को पहले स्वयं को फिर से गढ़ना पड़ा. उन्होंने उस विचारधारा को पीछे छोड़ा जो समाजवाद की वकालत करती थी. अर्थव्यवस्था सरकार और सार्वजनिक क्षेत्र के नियंत्रण में थी, लाइसेंस परमिट का दौर था. उन्होंने लोगों से खुली अर्थव्यवस्था, उदारीकरण, मुक्त व्यापार, लाइसेंस और परमिट राज के खात्मे और वैश्वीकरण को स्वीकार करने के लिए कहा. इनमें से कई अवधारणाओं से अधिकांश लोग अपरिचित थे और कट्टर समाजवादियों के लिए तो ये अभिशाप जैसी थीं. फिर भी डॉक्टर मनमोहन सिंह डटे रहे.

अगर डॉ. सिंह के साहसिक कार्य विफल हो जाते तो वे किसी गुमनामी में भेज दिए गए होते. लेकिन, डॉ. सिंह को अपने विचारों की शक्ति पर विश्वास था और वे कभी भी न तो विचलित हुए, न राह बदली.

रोहित चावला

डॉ. मनमोहन सिंह को समाजवादी सोच, लाइसेंस और परिमट को पीछे छोड़ना पड़ा और उन्होंने उदारीकरण की वकालत की

तीन प्रमुख उपलब्धियां हैं: तीन वर्षों में 9 प्रतिशत से अधिक की विकास दर प्राप्त करना; स्थिर कीमतों में भारत के सकल घरेलू उत्पाद को चौगुना करना; और 27 करोड़ लोगों को गरीबी से बाहर निकालना. मई 2014 के अंत तक भारतीय अर्थव्यवस्था कुलांचे भरते हिरन जैसी फुर्ती से चल रही थी. ■

पी. चिदंबरम *पूर्व केंद्रीय गृह मंत्री और पूर्व वित्त मंत्री हैं.*

काम को अंजाम तक पहुंचाया

नरेंद्र मोदी, 70 वर्ष

दृढ़ और निर्णायक प्रशासन के समर्थक प्रधानमंत्री ने भारत को आत्मनिर्भरता के पथ पर स्थापित करना अपना मिशन बना लिया है

शिवराज सिंह चौहान

कई वर्षों से उनके साथ काम कर रहा हूं. मैं केसरिया वाहिनी का राष्ट्रीय संयोजक था तभी मैंने उन्हें 'मैन ऑफ आइडियाज' के रूप में देखा. ऊपर से कठोर दिखने वाले मोदी जी अंदर से कितने नरम और संवेदनशील है, यह भी मैंने एकता यात्रा के दौरान तब देखा जब एकता यात्रा की टीम के कई साथी जो एकता यात्रा को सफल बनाने के लिए जान हथेली पर रखकर काम कर रहे थे, योजना बदलने के कारण लाल चौक तिरंगा झंडा फहराने नहीं पहुंच सके, तब उनके दर्द का वर्णन करते हुए मैंने उन्हें फूट-फूट कर रोते हुए देखा है.मैं युवा मोर्चा का राष्ट्रीय अध्यक्ष था और वे पार्टी के राष्ट्रीय महामंत्री के रूप में प्रभारी थे. तब उनके जबरदस्त संगठन कौशल को मैंने देखा.

गुजरात के महाविनाशक भूकंप के बाद वे मुख्यमंत्री बने. तब भुज जैसे क्षेत्र जो पूरी तरह बरबाद हो गये थे, तब भूकंप प्रभावित क्षेत्र का पुनर्निमाण करके विकास और पुनर्निमाण के नायक के रूप में देखा.

भाजपा के पवित्र एजेंडे को पूरा करने के लिए अनेक नेताओं ने प्रयास किए. केवल मोदी उन्हें अंजाम तक ले गए

सूखे खेतों और प्यासे कंठों की प्यास बुझाने के लिए सरदार सरोवर बांध की ऊंचाई बढ़ाने की उनके जज्बे को मैंने देखा.

प्रधानमंत्री बनते ही देश को गौरवशाली, समृद्ध, शक्तिशाली और स्वाभिमानी राष्ट्र के रूप में खड़ा करते हुए देखा. सर्जीकल स्ट्राइक जैसे अनेकों कदम इसके प्रतीक है. कालेधन की अर्थव्यवस्था को समाप्त करने नोटबंदी तथा टेक्नोलॉजी का उपयोग कर भ्रष्टचार को समाप्त करने के अनेक कदम उठाते देखा. मैंने समृद्धि और विकास का प्रकाश गरीब तक पहुंचे, समावेशी विकास के लिए सस्ता राशन, प्रधानमंत्री आवास, आयुष्मान भारत, उज्वला जैसी योजनाएं बनाकर क्रियान्वित करते हुए देखा.

किसान की आय दुगनी हो इसके लिए प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि, बीमा योजना, कृषि अधोसंरचना, समर्थन मूल्य पर रिकॉर्ड खरीदी, कृषि का विविधीकरण जैसी अनेक योजनाओं के साथ कृषि विधेयक का क्रांतिकारी कदम उठाते देखा.

राष्ट्रहित में कश्मीर में धारा 370 हटाने, सीएए कानून बनाने, अयोध्या में भगवान राम मंदिर के निर्माण की राह में बाधा समाप्त करते हुए देखा. 'मेक इन इंडिया', लोकल को वोकल, और आत्मनिर्भरता का मंत्र उन्होंने देशवासियों आत्मसात कराते हुए देखा.

स्वच्छता, पर्यावरण और कोरोना विरोधी लड़ाई को जन अभियान बनाते हुए देखा. अतुल्य भारत के अद्भुत और अभूतपूर्व जननेता, राष्ट्रभक्त, प्रशासक और समाज सुधारक हैं मोदी जी. ■

शिवराज सिंह चौहान *मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री हैं*

विनम्र नायक

नवीन पटनायक, 74 वर्ष

चाहे चक्रवातों से मुकाबला हो या खेल तथा पर्यटन का विकास कार्य हो, अपने शांत स्वभाव के अनुरूप वे राज्य में बड़ी खामोशी से बदलाव का सूत्रपात कर रहे हैं

नीतीश कुमार

पीटीआइ

श्री नवीन पटनायक के साथ मेरा एक लंबा व्यक्तिगत संबंध रहा है. वे एक अलग किस्म के राजनेता हैं. दलितों के उत्थान के लिए उनका दृष्टिकोण, न्यायसंगत विकास पर उनका जोर और सांस्कृतिक परंपरा के प्रति उनके सम्मान की सभी ने हमेशा सराहना की है.

उन्होंने राजनीति में कदम रखा तब उनकी पहचान ''बीजू बाबू के पुत्र'' के रूप में थी और लोग उनका सम्मान करते थे. पिछले 24 वर्षों में उन्होंने खुद की एक विरासत गढ़ी है. लोग आमतौर पर सत्ता और समय के साथ बदल जाते हैं लेकिन वे नहीं बदले हैं. मैंने जिन नवीन बाबू को 50 साल की उम्र में देखा था, आज भी वे बिल्कुल वैसे ही हैं. वे अपने राज्य और देश के लिए पूरी तरह से प्रतिबद्ध हैं.

लोग पूछते रहते हैं कि श्री नवीन पटनायक राजनीति में इतने सफल कैसे हुए? मुझे लगता है उन्होंने अपने एक साक्षात्कार में इसका उत्तर दिया था, जिसे मैं उद्धृत कर रहा हूं—''मैं लोगों के लिए काम करता हूं...चुनाव के लिए नहीं.'' वे ओडिशा के लोगों को यह बताने में कामयाब रहे हैं कि पूरा प्रदेश उनका परिवार है.

और वे चुनाव दर चुनाव जीतते रहे हैं. उनका काम बोलता है. मुझे बताया गया है कि अपने पांचवें कार्यकाल के चुनाव में उन्होंने सिर्फ एक लाइन बोली और चुनाव जीत गए. उन्होंने लोगों से पूछा, ''क्या आप खुश हैं?''

> उनका काम बोलता है. पांचवें कार्यकाल के लिए चुनाव लड़ते हुए उन्होंने लोगों से सिर्फ एक बात पूछी 'क्या आप खुश हैं?' लोगों ने उन्हें फिर से चुन लिया

सन् 2000 के दशक की शुरुआत में जब उन्होंने कार्यभार संभाला, ओडिशा कठिन दौर से गुजर रहा था. पिछले दो दशकों में प्राकृतिक आपदा-संभावित इस राज्य ने आपदाओं का सामना करने के लिए तैयार करने के साथ एक लंबा सफर तय किया है. चक्रवातों से उपजे संकट से निबटने में उनके प्रयासों की राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रशंसा हुई. राज्य ने खेल और पर्यटन के क्षेत्र में पहचान बनाई है.

इतिहास उन्हें एक सौम्य, आत्मविश्वास से भरे, आदर्शों और प्रतिबद्धता वाले सोशलाइट (कुलीन व्यक्ति) के रूप में याद रखेगा. ■

नीतीश कुमार *बिहार के मुख्यमंत्री हैं*

हेमंत पिठवा

अपने आप में पूरी सेना

बाल ठाकरे (1926-2012)

वे किसी निर्वाचित पद पर भले न रहे हों लेकिन शिवसेना के संस्थापक की महाराष्ट्र की राजनीति पर तगड़ी पकड़ थी, जिसमें वे कट्टर स्थानीयतावाद का पुट लाए और जिसने उन्हें 'हिंदू हृदय सम्राट' बना दिया

नितिन गडकरी

एक बार लोकसभा चुनाव के दौरान हम विदर्भ की एक सीट पर जाति का गणित खिलाफ होने के कारण एक शिव सैनिक की उम्मीदवारी तय करने में हिचक रहे थे. बालासाहेब ने सुना तो दहाड़े, ''मैं सार्वजनिक जीवन में जाति और संप्रदाय को अहमियत नहीं देता.'' उसी उम्मीदवार का नाम तय हुआ और वह चुनाव जीता.

पक्का इरादा, दिलेरी, बेधड़क दुस्साहस और फिर भी दयालु-हृदय. बालासाहेब की शख्सियत के यही वे गुण हैं जिन्हें मैं अपने सार्वजनिक जीवन में अपनाने की कोशिश करता हूं. कार्टूनकार से महाराष्ट्र की राजनीति को गढ़ने वाला राजनैतिक दिग्गज बनने के सफर में वे कई चुनौतियों से गुजरे, पर हरेक का सामना बिरले धैर्य और शक्ति से किया. वे मुझे अपने बेटे की तरह प्यार करते थे. मेरी राय में आज भी बालासाहेब दिलेरी का दूसरा नाम हैं.

मुंबई-पुणे एक्सप्रेसवे और बांद्रा-वर्ली सी लिंक का उनका सपना साकार कर देने की वजह से वे मुझे 'रोडकरी' कहकर बुलाते थे

वे मुझे 'रोडकरी' कहते. मैंने बुनियादी ढांचे का उनका सपना पूरा करने में मदद जो की थी. उन्होंने बेहिचक दिल खोलकर मेरी तारीफ की. इस हद तक कि जब उन पर एक फोटोबुक के लिए कुछ तस्वीरें ली जानी थीं, उन्होंने राज ठाकरे से मुझे बुलाने के लिए कहा. मैं गया और हमने कई तस्वीरें खिंचवाईं.

राजनीति मतलबपरस्त खेल है. इसलिए जब आपका सामना लोगों के हित में पार्टी से ऊपर उठकर सोचने वाले बालासाहेब सरीखे विशाल-हृदय नेता से होता है, आप प्रभावित हुए बिना रह नहीं पाते. स्वयंसेवक के अपने प्रशिक्षण और आरएसएस, एबीवीपी, बीवाइजेएम के दिग्गजों के मार्गदर्शन के अलावा अटल जी और बालासाहेब मेरे आइकन हैं. उनकी यादें हमेशा मेरे दिल में रहेंगी. ■

नितिन गडकरी *केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री हैं*

हिम्मत-हौसले का दूसरा नाम

ममता बनर्जी, 66 वर्ष

2011 में वाम दलों से लेकर 2021 में भाजपा तक, महिषासुरमर्दिनी ममता ने पश्चिम बंगाल की राजनीति में कई शैतानी ताकतों को मार गिराया है

महुआ मोइत्रा

सुबीर हलदर

अमेरिकी पत्रकार पेगी नूनन ने 25 साल पहले लिखा था, ''किसी राष्ट्रपति को प्रतिभाशाली होने की जरूरत नहीं, उसे चतुर होने की जरूरत नहीं. आप किसी चतुर को काम पर रख सकते हैं लेकिन आप साहस और शालीनता नहीं खरीद सकते, और आप एक मजबूत नैतिक भावना को नौकरी पर नहीं रख सकते. किसी राष्ट्रपति में ये सारे गुण होने चाहिए.'' 11 साल पहले तृणमूल में शामिल होने के बाद से परिजनों, दोस्तों और अजनबियों ने मुझसे जो सवाल सबसे ज्यादा सवाल पूछा है वह यह कि ''ममतादी वास्तव में कैसी हैं?''

भाजपा ने कुछेक महीने पहले जब बंगाल को अधीन करने की कोशिश में ताकत का इस्तेमाल किया तो वे, और अकेली वे ही राज्य की संस्कृति और इसके लोगों को कट्टरता और नफरत की गर्म कड़ाही में गिरने से बचाने को डटकर खड़ी हो गईं. जब मेरे क्षेत्र में एक दुर्भाग्यपूर्ण बस दुर्घटना हुई जिसमें 40 से अधिक लोग मारे गए, वे पूरी रात इंतजार करती रहीं जब तक पोस्टमॉर्टम पूरा न हो गया और शव परिजनों के पास नहीं भेज दिए गए. जब उन्होंने दो छोटे स्कूली बच्चों को बिना जूतों के चलते देखा, तो कार रोक दी और शिक्षा मंत्री को निर्देश दिया कि बंगाल के सभी स्कूली बच्चों को किताबों के साथ जूते उपलब्ध कराए जाएं.

तो मुझसे पूछे जाने वाले सवाल का उत्तर है: मैं जिस ममता दी को जानती हूं वे सबसे सरल, सबसे साहसी, सबसे सभ्य और सबसे वास्तविक व्यक्ति हैं. उनमें सही और गलत में फर्क करने की जबरदस्त आंतरिक शक्ति है. आप में से उन सभी के लिए जो यह सोच रहे हैं कि ममता बनर्जी ने बंगाल विधानसभा चुनावों में पैसे, मशीन और सभी दूसरे माध्यमों से चुनाव जीतने को तैयार रहने वाली अजेय भाजपा को कैसे मात दी और सभी बाधाओं को पार करते हुए सबसे अधिक बहुमत के साथ सत्ता में वापसी की, इसका उत्तर यहां है: साहस, शालीनता और एक मजबूत नैतिक भावना लेकिन जमीन पर लोगों से सीधे जुड़ाव के साथ उन्होंने ऐसा बड़ी सहजता से कर दिखाया.

> ममता दी कैसी हैं? इस सवाल का जवाब है: वे सबसे सरल, सबसे साहसी, सबसे सभ्य और सबसे वास्तविक व्यक्ति हैं

लोग ममता बनर्जी से सहजता से जुड़ जाते हैं और वे उनकी नब्ज महसूस कर सकती हैं. और सबसे अच्छी बात यह है कि अगर कोई मुझे मेरे बड़े आकार वाले धूप के चश्मे को लेकर चिढ़ाता है तो वे हमेशा एक मुस्कान के साथ मेरे पक्ष में खड़ी रहती हैं! ■

महुआ मोइत्रा *तृणमूल कांग्रेस की सांसद हैं*

एकता की डोर हैं वे

सोनिया गांधी, 74 वर्ष

देश की सबसे पुरानी पार्टी का नेतृत्व करते हुए उन्होंने देश, इसकी संस्कृति और यहां के लोगों को अपना बनाया है

अशोक गहलोत

बंदीप सिंह

एक अलग देश और संस्कृति से ताल्लुक रखने वाली युवती के लिए एक ऐसे ऐतिहासिक परिवार में शादी करना आसान नहीं हो सकता था जिसकी देश की आजादी में प्रमुख भूमिका रही थी. फिर भी सोनिया जी ने जिस देश में शादी की, उसकी संस्कृति को सहजता से अपनाया, समृद्ध किया.

31 अक्तूबर, 1984 को इंदिरा जी की मृत्यु और 21 मई, 1991 को राजीव जी की मृत्यु के बाद वे पूरी तरह से टूट गईं और कांग्रेसियों के आग्रह के बावजूद राजनीति में शामिल होने से इनकार कर दिया. पार्टी में नेतृत्व का संकट खड़ा होने के बाद ही वे कमान संभालने को तैयार हुईं. यह कठिन निर्णय था लेकिन एक स्वस्थ लोकतंत्र के लिए कांग्रेस की अपरिहार्यता के एहसास ने उन्हें 6 अप्रैल, 1998 को आग्रह स्वीकार करने और कांग्रेस अध्यक्ष बनने के लिए मजबूर कर दिया. कांग्रेस 100 करोड़ के देश में से पार्टी का नेतृत्व करने में समर्थ एक भी भारतीय खोजने में सक्षम नहीं, कहकर पार्टी का उपहास किया गया फिर भी सोनिया जी ने वह चुनौती स्वीकारी जो वक्त की मांग थी. 2004 में यूपीए ने उनके नाम पर जनादेश पाया था पर उन्होंने प्रधानमंत्री की कुर्सी डॉ. मनमोहन सिंह जी को सौंप दी.

> अपनी राजनैतिक और निजी, दोनों सफर में सोनिया जी को कठिन चुनौतियों का सामना करना पड़ा है पर हर बार वे विजयी बनकर उभरी हैं

बोलने के लिए शब्दों का उनका चुनाव मुझे आश्चर्यचकित और प्रभावित करता है. हर शब्द का श्रोताओं पर पड़ने वाले असर का वे बारीकी से आकलन करती हैं. वे भाषण पढ़ती हैं पर उसकी सारी बात उनकी अपनी होती है. एक बार हम एक चुनाव अभियान पर एक हेलिकॉप्टर में थे और वे अपना भाषण तैयार कर रही थीं. अचानक उन्होंने मेरी ओर देखा और हिंदी में एक बेहतर शब्द बताने को कहा. मैं कुछ सोच पाता, उससे पहले उन्होंने खुद ही एक अच्छा पर्यायवाची बता दिया. इसी तरह मैंने उन्हें हमेशा इस बात की पूरी जानकारी मांगते देखा कि विभिन्न जातियों का प्रतिनिधित्व कैसा होना चाहिए. पीसीसी प्रमुखों की नियुक्ति सहित किसी भी अहम निर्णय पर पहुंचने से पहले वे कार्यकर्ताओं, नेताओं और जनता की नब्ज टटोलती हैं. सोनिया जी को निजी और राजनैतिक सफर, दोनों में मुश्किल समय का सामना करना पड़ा है. हालांकि, हर बार उन्होंने इस चुनौती का डटकर मुकाबला किया है. ■

अशोक गहलोत *राजस्थान के मुख्यमंत्री हैं*

नमस भोजानी

महान सूत्रधार

जे.आर.डी. टाटा (1904-1993)

जहांगीर रतनजी दादाभाई टाटा सिर्फ बड़े उद्योगपति भर नहीं थे, अस्पतालों और अनुसंधान सुविधाओं से लेकर कला प्रतिष्ठान तक उन्होंने जो संस्थान स्थापित किए, उन्होंने आधुनिक भारत के ताने-बाने को आकार दिया है

अज़ीम प्रेमजी

जे’ का जीवन 20वीं शताब्दी में भारत के प्रक्षेपपथ को पूरी तरह से प्रतिबिंबित करता था. बहुत कम ही लोग अपने समय की मूल भावना के जीवंत वाहक—वास्तव में न केवल वाहक, बल्कि उसके निर्माता भी—हो सकते हैं.

उनका जन्म एक असाधारण परिवार में हुआ था, लेकिन उन्होंने इस पृष्ठभूमि पर जो किया उसने इस परिवार को भारत के सच्चे उच्चस्थलों में से एक में बदल दिया. एक तरफ उनके परिवार ने सफल व्यवसायों की व्यापक संभव श्रेणियों की स्थापना और संचालन किया तो दूसरी तरफ, इस देश के विकास के मूल काम कर रहे में कुछ सबसे महत्वपूर्ण संस्थानों की स्थापना की. इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस, टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च, टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंस, नेशनल सेंटर फॉर परफॉर्मिंग आर्ट्स और टाटा मेमोरियल हॉस्पिटल इनमें से कुछ सबसे प्रसिद्ध संस्थान हैं. अगर आप पूरे भारत की यात्रा करें तो आपको हर जगह ऐसी छोटी-बड़ी संस्थाएं और नागरिक समाज संगठन मिलेंगे, जो ‘जे’ की बोई लोकोपकारी भावना से पैदा हुए हैं. टीसीएस से लेकर टाइटन तक उन्होंने जिन व्यवसायों की स्थापना की, वे आज भी सफलता के मॉडल बने हुए हैं.

सचमुच, अगर हम आधुनिक भारत के निर्माताओं की गिनती करें, तो ‘जे’ उन दिव्य लोगों में सबसे ऊंचे स्थान पर होंगे.

अज़ीम प्रेमजी विप्रो के संस्थापक-चेयरमैन हैं

जादुई हस्ती

धीरूभाई अंबानी

(1932-2002)

भारत के निजी क्षेत्र की सबसे बड़ी कंपनी, रिलायंस इंडस्ट्रीज के संस्थापक और पूर्व अध्यक्ष को भारतीय मध्यमवर्ग में जीवंत शेयर बाजार संस्कृति पैदा करने का श्रेय दिया जाता है

तरुण दास

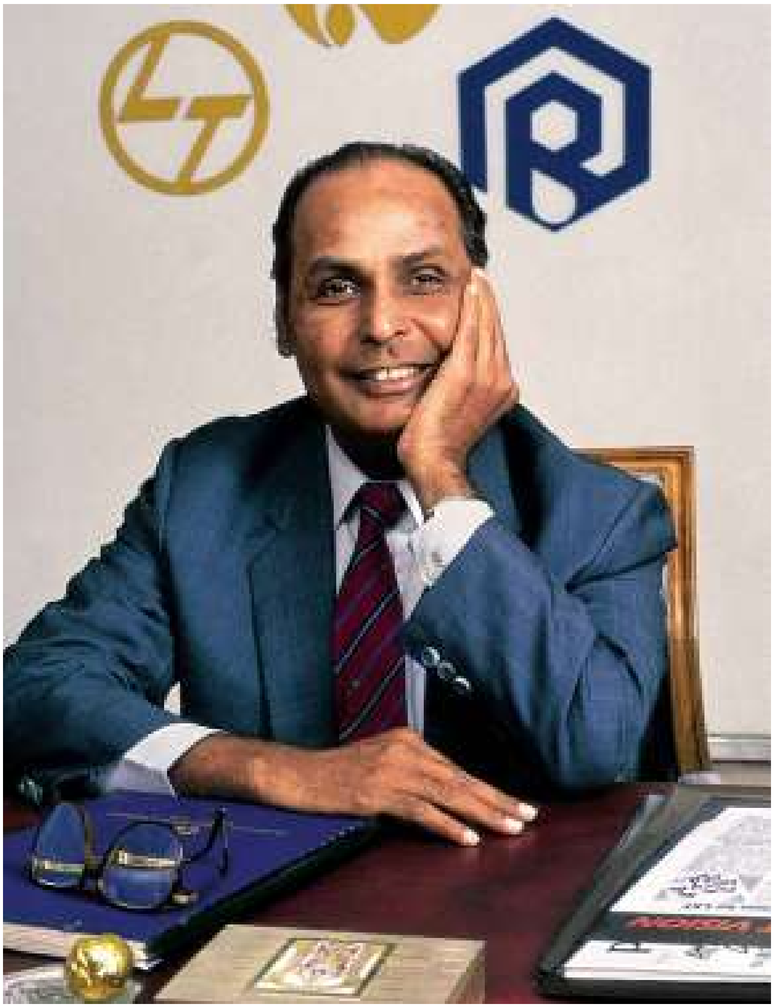

रघु राय

जब स्वतंत्र भारत का इतिहास लिखा जाएगा तो एक व्यक्ति- धीरूभाई जी—का उल्लेख प्रमुखता से होगा. उनमें सात विस्मयकारी विशेषताएं थीं. सबसे पहली यह कि उन्होंने अपने व्यवसाय को ऐसे समय में चलाया जब अर्थव्यवस्था का सूक्ष्म प्रबंधन सरकार कर रही थी. लेकिन यह माहौल उन्हें रोक नहीं पाया- वे पहली पीढ़ी के अग्रणी उद्यमी थे. दूसरे, उनमें सच्ची उद्यमशीलता थी और वे जोखिम लेने के लिए तैयार रहते हुए दूसरों के लिए उदाहरण स्थापित कर रहे थे. तीसरे कि उन्होंने बाधाओं को पार करते हुए अपना औद्योगिक साम्राज्य खड़ा किया. उनका रणनीतिक दृष्टिकोण समाधान खोजना था—वे समाधान पैदा करने का व्यवसाय करते थे. चौथे, वे समस्याओं के एक समाधानकर्ता थे जिसके पास अपार ऊर्जा और उत्साह था. उन्होंने अपने सपने को साकार करने के लिए पेशेवरों की एक उत्कृष्ट टीम बनाई. इससे सफलता सुनिश्चित हुई. पांचवें, उनमें साहस और धैर्य जैसे अन्य आवश्यक गुण थे. वे दृढ़ निश्चय के साथ मैराथन दौड़ रहे थे. छठें, उनकी आकांक्षाएं बहुत ऊंची थीं क्योंकि ढेरों विनियमों और नियंत्रणों के वातावरण में भी उन्होंने अपना साम्राज्य शून्य से बनाया था. सातवां, उन्हें भारत के भविष्य में विश्वास था. वे एक नए भारत का निर्माण कर रहे थे. यह विश्वास और आत्मविश्वास धीरूभाई जी के व्यक्तित्व का अभिन्न अंग था. नेतृत्व उनके खून में था. उन्होंने बीआइएलएल यानी 'बिल'- 'बिल्ड इंस्टीट्यूशन, लीव लेगेसी' (संस्थान बनाओ, विरासत छोड़ो) अवधारणा को मूर्त रूप दिया. धीरूभाई अंबानी ने एक संस्था के रूप में रिलायंस का निर्माण किया और ऐसी विरासत छोड़ी जो आज कई क्षेत्रों और प्रौद्योगिकियों में मजबूती से आगे बढ़ रही है.

धीरूभाई अंबानी ने ‘बिल’-बिल्ड इंस्टीट्यूशन, लीव लेगेसी (संस्थान बनाओ, विरासत छोड़ो) की अवधारणा को मूर्त रूप प्रदान किया

तरुण दास *आर्थिक विकास संस्थान (आइईजी) के चेयरमैन और भारतीय उद्योग परिसंघ के पूर्व मुख्य संरक्षक और महानिदेशक हैं*

गेट्टी इमेजेज

सुशील दिग्गज

रतन टाटा, 83 वर्ष

रतन टाटा ने टाटा ग्रुप को ऐसी दिग्गज कंपनी में बदला जिसके कारोबार का दायरा कई नए उद्यम क्षेत्रों में फैला और कई विदेशी कंपनियों का अधिग्रहण किया गया

अजय पिरामल

मैं रतन को कई दशकों से जानता हूं और पिछले पांच वर्षों में टाटा संस के बोर्ड में रहने के दौरान, मुझे उनकी बेमिसाल शांत नेतृत्व शैली देखने को मिली जिससे उन्होंने टाटा ग्रुप को प्रतिष्ठा के शिखर पर पहुंचाया है. रतन ने कई नई शुरुआतें कीं जो पथ प्रदर्शक बनीं और इनसे समूह के राजस्व में उनके कार्यकाल में 40 गुना से अधिक की वृद्धि हुई.

रतन ने टाटा के मूल सिद्धांतों की मजबूत नींव पर खड़े व्यापारिक घराने की उस संस्कृति को और मजबूत किया है. अपने लोगों, अपने व्यावसायिक निर्णयों और रोजमर्रा के कामकाज के साथ गहरा लगाव, टाटा संस के ऐसे मूल्य हैं जिनकी बदौलत समूह ने सफलता के इतने झंडे गाड़े हैं. टाटा संस ने एनटीटी डोकोमो के साथ विवाद को जिस प्रकार सुलझाया, उसमें भी इन मूल्यों की झलक मिली.

उन्होंने समूह के वैश्विक विस्तार अभियान को चतुराई से आगे बढ़ाया. उनकी अगुवाई में टाटा की विभिन्न कंपनियों ने यूके के टेटली और कोरस, कोरिया के देवू कमर्शियल वाहन और फोर्ड मोटर कंपनी से जगुआर और लैंड रोवर जैसे वैश्विक ब्रांडों-यह किसी भारतीय ऑटोमोटिव फर्म की ओर से अब तक का सबसे बड़ा अधिग्रहण है- जैसे कई बड़े अधिग्रहण सफलतापूर्वक किए. टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (टीसीएस) शेयर बाजार में है और टाटा मोटर्स को न्यूयॉर्क स्टॉक एक्सचेंज में सूचीबद्ध किया गया, जिससे समूह की अंतरराष्ट्रीय शक्ति और प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई.

उन्होंने टाटा नैनो और टाटा इंडिका जैसी कारों के व्यापार विस्तार और अवधारणा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई. रतन ने भारत की पहली पूर्ण स्वदेश निर्मित और डिजाइन कार बनाने के अपने सपने को इंडिका के रूप में साकार किया और देश ने इसे हाथों-हाथ लिया. 2003 में, टीसीएस 1 अरब डॉलर के राजस्व को पार करने वाली पहली भारतीय सॉफ्टवेयर कंपनी बनी और 2004 में भारत में सबसे बड़े आईपीओ के साथ पब्लिक कंपनी बनकर करीब 1.2 अरब डॉलर जुटाए. रतन भारतीय स्टार्ट-अप में खूब निवेश करते हैं और उन्होंने जहां भी निवेश किया है वे समय के साथ अपने क्षेत्रों में दिग्गजों के रूप में उभरे हैं.

एक परोपकारी व्यक्ति के रूप में रतन टाटा की प्रतिष्ठा बेजोड़ है. टाटा ट्रस्ट जो बाल कुपोषण, स्वास्थ्य देखभाल, साक्षरता, सामाजिक न्याय और ग्रामीण विकास जैसे कल्याणकारी कार्यों के लिए समर्पित है, के कार्यों में वे बहुत सक्रिय रुचि लेते हैं.

वे कड़े फैसले लेने में रत्तीभर भी नहीं हिचकिचाते और इस दृढ़ता से उन्होंने कंपनी को कई मुश्किलों से उबारा है जिनमें टाटा समूह में अपने करियर की शुरुआत में सात क्षत्रपों के साथ विवाद या साइरस मिस्त्री के साथ हालिया मामला शामिल है. व्यावहारिकता, विचारों की अत्यधिक स्पष्टता और परोपकारी कार्यों के प्रति गहरी प्रतिबद्धता, रतन की नेतृत्व शैली की सच्ची पहचान है. वे विनम्र, शांत, समझदार, दयालु और भविष्यवादी हैं, जो उन्हें उद्योग क्षेत्र का वैश्विक प्रतिष्ठा वाला एक अद्वितीय अगुआ बनाता है. ■

व्यावहारिकता, विचारों की स्पष्टता और परोपकारी कार्यों के प्रति प्रतिबद्धता रतन टाटा की नेतृत्व शैली की पहचान है

अजय पिरामल, *पिरामल ग्रुप के चेयरमैन हैं*

बुलंद भारत की पहचान

राहुल बजाज 83 वर्ष

राज्यसभा सदस्य रहे बजाज समूह के मानद (इमेरिटस) अध्यक्ष घरेलू मैनयुफैक्चरिंग के मुखर समर्थक रहे हैं, जिसने उनके दोपहिया वाहनों के ब्रांड को भारत में एक घरेलू नाम बना दिया

विक्रम किर्लोस्कर

राहुल भाई से मैं पहली बार 1980 के दशक की शुरुआत में मिला था, जब मैं उनसे मिलने बजाज ऑटो की फैक्ट्री बिल्डिंग के कोने पर बने उनके कार्यालय में गया था. मैं उन्हें मशीन टूल्स बेचने की कोशिश कर रहा था और उन्होंने मुझे बहुत धैर्यपूर्वक सुना. आगे के सालों में मुख्य रूप से सीआईआई (भारतीय उद्योग परिसंघ) में मैंने उन्हें और करीब से जाना. वे कई मायनों में रोल मॉडल हैं. मुझे लगता है कि वे स्तर ऊंचा उठाने वाले भारतीय मैन्युफैन्चरर्स में सर्वप्रथम थे. बजाज ऑटो सभी पूंजीगत उपकरणों की स्थानीय खरीद करना चाहता था और उसने अपने आपूर्तिकर्ताओं से गुणवत्ता और उत्पादकता में भारी सुधार की मांग करते हुए एक नया मानदंड स्थापित किया.

राहुल भाई बाजार को समझते थे और उन्होंने उस समय भी व्यवसाय पर ध्यान केंद्रित रखा जब सबसे ज्यादा चर्चा विविधीकरण पर होती थी. जिन वर्षों में हमारी बातचीत होती थी, उसमें मैंने सीखा कि सुशासन और नैतिकता पर निरंतर जोर देते हुए और अपने मन की बात आत्मविश्वास से कहते हुए सही काम करना महत्वपूर्ण है. यह सबक समय की कसौटी पर खरा उतरा है. हमारी उम्र के अंतर के बावजूद उनके साथ समय बिताना और उनके साथ चाट खाने का आनंद लेना हमेशा सुखद होता है. उन्होंने अपनी कार्य नैतिकता और मूल्यों को अगली पीढ़ी तक पहुंचाया है और मैं उनके लिए हर तरह की सफलता की कामना करता हूं.

विक्रम किर्लोस्कर *टोयोटा किर्लोस्कर के वाइस चेयरमैन हैं.*

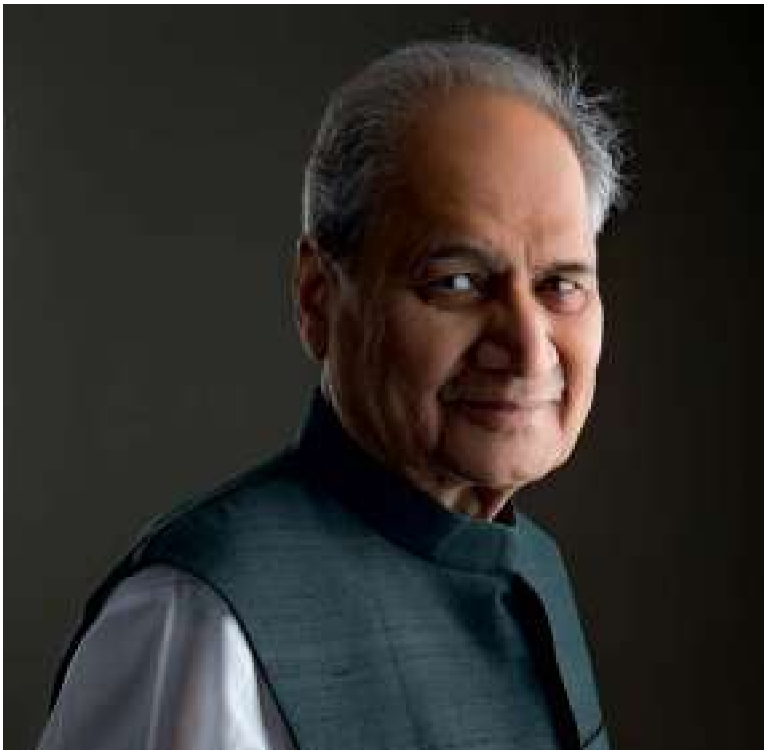

रचित गोस्वामी

Kajaria

DESH KI MITTI SE BANI TILE SE
DESH KO BANATE HAIN

MAKING INDIA
AATMANIRBHAR

India's largest tiles manufacturer is now world's No. 8

Manufacturing spread across 10 plants - 8 tiles, 1 sanitaryware & 1 faucet

PAN India network of 1600 Dealers

Won Superbrand status 12 times in a row

Surging ahead into sanitaryware & faucets under the brand name - Kerovit

Forayed into plywood under the band name KajariaPLY

www.kajariaceramics.com

ऊंचे मूल्य

केशब महिंद्रा, 97 वर्ष

महिंद्रा समूह के मानद अध्यक्ष ने विलीज जीप की निर्माता कंपनी को ऑटोमोबाइल, रक्षा और ऊर्जा क्षेत्र में फैले एक समूह में तब्दील कर दिया

आर.सी. भार्गव

वर्ष 1986 में केशब महिंद्रा की बेटी लीना ने संजय लबरू से शादी की. मैं शादी में संजय के मेहमान के तौर पर शामिल हुआ था. सारे समारोह केशब के घर में हुए. कोई पांच सितारा होटल का मनोरंजन नहीं था, मेहमानों की सूची छोटी थी, कोई दिखावा नहीं और सब कुछ सरल और शानदार तरीके से किया गया था. मैंने महसूस किया कि केशब महिंद्रा अन्य अति-समृद्ध लोगों से बहुत अलग थे और उनके पास एक उत्कृष्ट मूल्य प्रणाली थी.

रचित गोस्वामी

इसी मूल्य प्रणाली ने उनकी कंपनी को भारत के सबसे बड़े और सबसे सफल वैविध्यपूर्ण औद्योगिक साम्राज्यों में से एक बना दिया. वे लगभग 50 वर्षों तक महिंद्रा ऐंड महिंद्रा का नेतृत्व कर रहे थे और कंपनी की वृद्धि और सफलता अनिवार्य रूप से उनकी ओर से शुरू की गई संस्कृति के कारण है.

केशब ने हर जगह नैतिकता के उच्च मानकों पर जोर दिया. उन्होंने व्यक्तिगत उदाहरण स्थापित किया और यह सुनिश्चित किया कि कंपनी की किसी भी संपत्ति का उपयोग कभी भी उनके परिवार के लाभ के लिए नहीं किया जाएगा. वे कंपनी के शुरुआती प्रोमोटरों में से एक थे जो अपनी कंपनी चलाने के लिए पेशेवर प्रबंधकों पर भरोसा करते थे. उन्होंने सभी कर्मचारियों के साथ सहकर्मियों जैसा व्यवहार किया–उनके लिए एक चौकीदार भी उतना ही महत्वपूर्ण था जितना कि एक महाप्रबंधक. मजदूरों और यूनियन ने उन पर भरोसा किया, ये सब उनकी सफलता के घटक थे. मानद चेयरमैन के तौर पर वे अब शतक लगाने वाले हैं. ईश्वर उन पर कृपा बनाए रखे. ■

आर. सी. भार्गव *मारुति सुजुकी के चेयरमैन हैं.*

बंदीप सिंह

साहसी

मुकेश अंबानी, 64 वर्ष

रिलायंस इंडस्ट्रीज के अध्यक्ष के रूप में अंबानी ने प्रमुख पेट्रोकेमिकल्स कंपनी को हाइड्रोकार्बन्स, टेलीकॉम और रिटेल पावरहाउस में तब्दील कर दिया

दीपक पारेख

मुकेश अंबानी. इस परिवार का नाम धीरूभाई अंबानी की तरफ से अविस्मरणीय बना दी गई दृढ़ता, साहस और व्यवसाय के मनमौजी तरीकों के साथ जुड़ा है. अपने परिवार की विशालता और उत्कृष्टता की खोज के साथ मुकेश आधुनिक भारत के उद्योग जगत का एक प्रकाशस्तंभ रहे हैं. उनका ब्रांड रिलायंस विकास की दुनिया का समर्थन करता है, उद्योग में अगली पीढ़ी के लिए दूरदर्शी तत्परता दिखाता है और औसत दर्जे से ऊपर उठने के लिए बाध्य है.

मैं धीरुभाई को जानता था, मैं नई संभावनाओं को हासिल करने और धीरे–धीरे विकासशील राष्ट्र में धन और स्थिरता दोनों का विस्तार और निर्माण करने की उनकी बेचैनी को महसूस कर सकता था.

मुझे मुकेश में वही चमक दिखती है; उनकी नपी–तुली दूरदर्शिता, शीर्ष स्तर पर काम करने और राष्ट्र के साथ साझा करने की क्षमता, उनका भरोसा और अदम्य साहस का उनका ब्रांड. वे अनूठे हैं, कमरे में प्रवेश करने से पहले ही उनका व्यक्तित्व छा जाता है. उनका परिवार ही उनकी सुरक्षा रहा है, जिसमें एक स्वतंत्र और हलचलपूर्ण भारतीय अर्थव्यवस्था में योगदान करने की उनकी दृष्टि शामिल है.

मैं उनके और उनके रिलायंस परिवार के लिए ऐसी विशालता की कामना करता हूं, जिससे केवल आसमान ही मुकाबला कर सकता है.

दीपक पारेख *एचडीएफसी के चेयरमैन हैं*

साम्राज्य निर्माता

आदित्य विक्रम बिड़ला (1943-1995)

आदित्य बिड़ला समूह के पूर्व अध्यक्ष ने समूह के विविधीकरण और बड़े पैमाने पर विदेशों में उसके प्रवेश में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी

डॉ. गीता पिरामल

शरद सक्सेना

उन्नीस सौ नब्बे के दशक की शुरुआत में, आदित्य बिड़ला समूह विस्कोस का दुनिया का नंबर 1 उत्पादक बन गया, पाम ऑयल का भी, इंसुलेटर का तीसरा सबसे बड़ा उत्पादक और कार्बन ब्लैक का छठा सबसे बड़ा उत्पादक—कुल मिलाकर, इसके 70 संयंत्र थे. आधुनिकीकरण करना, अद्यतन करना, बाधाएं हटाना, लागत में कटौती और तकनीकी सुधारों से उत्पादन बढ़ाना बिड़ला का मंत्र बन गया. इसमें वित्तीय निगरानी और नियंत्रण की सदियों पुरानी मारवाड़ी व्यवस्था पर्था पवित्र बनी रही.

उस समय भारतीय कारोबारी माहौल कठिन था. बिड़ला ने एक साक्षात्कार में बताया, ''इतने सारे प्रतिबंध थे, इतनी सारी मंजूरी की आवश्यकता थी, कि अगर मुझे इसे खुद बनाना होता, तो विदेश जाना ही एकमात्र उपाय था.'' 1990 तक, पी. वी. नरसिंह राव के सुधारों की घोषणा से ठीक पहले बिड़ला ने थाईलैंड, मलेशिया, इंडोनेशिया और फिलीपींस में 12 कंपनियों के 12 अरब रुपए (1,200 करोड़ रुपए) के विदेशी साम्राज्य का निर्माण किया था. यह संख्या 14 देशों की 17 कंपनियों तक पहुंच गई, जिनकी कुल बिक्री 52 अरब रुपए (5,200 करोड़ रुपए) है. उनकी पत्नी राजश्री ने याद करते हुए कहा, ''जब मैंने पूछा कि आपकी पसंदीदा फैक्ट्री कौन सी है तो उन्होंने जवाब दिया, 'जो मुसीबत में है, क्योंकि एक पिता के मन में हमेशा सबसे कमजोर बच्चे के लिए करुणा का भाव होता है'.'' ■

> **साल 1990 तक बिड़ला ने अपना विदेशी साम्राज्य 1,200 करोड़ रु. का कर लिया जो चार देशों में फैला था**

डॉ. गीता पीरामल *कारोबारी इतिहासकार और लेखिका हैं*

छोटी कारों के मसीहा

आर. सी. भार्गव, 87 वर्ष

मारुति सुजुकी के पूर्व सीईओ और मौजूदा चेयरमैन ने लाखों भारतीयों को गर्वीले कार मालिक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई

अमिताभ कांत

अगर कोई है, जो साहस, जोखिम लेने, दृढ़ संकल्प और नवाचार के गुणों का उदाहरण पेश करता हो, तो वह आर. सी. भार्गव हैं. उनकी जोखिम लेने की क्षमता तब सामने आई, जब उन्होंने एक नई कंपनी, मारुति का नेतृत्व करने के लिए भारतीय प्रशासनिक सेवा को छोड़ दिया. वह साहसी कदम था, क्योंकि उन्होंने एक कंपनी बनाने के लिए नौकरी की सुरक्षा को त्याग दिया, जिसमें तमाम तरह की चुनौतियां शामिल थीं, खासकर देश में उदारीकरण सुधारों से पहले. उन्होंने भारतीय मैन्युफैक्चरिंग की महत्वपूर्ण ताकत के रूप में उभरकर इन चुनौतियों का चतुराई से सामना किया.

उन्होंने जिस कंपनी का निर्माण किया, वह भारतीय उद्योग की दिग्गज कंपनियों में एक है और देश में सबसे भरोसेमंद ब्रांडों में एक है. उन्होंने सिर्फ एक कंपनी ही नहीं बनाई; बल्कि एक संस्था का निर्माण किया.

उनके पास बड़ी तस्वीर देखने और बारीक ब्योरों पर गहरी नजर रखने की दुर्लभ क्षमता है, भारतीय व्यवस्था में चीजों को पूरा करने की क्षमता एक अन्य दुर्लभ कौशल है—जो उनके अधिकार में है. इन्हीं गुणों के कारण मैंने हमेशा उनकी प्रशंसा की है. उनकी पुस्तक *गेटिंग कॉम्पीटिटिव—ए प्रैक्टिशनर्स गाइड फॉर इंडिया* भारत के उत्पादन क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण सबक प्रदान करती है, जो विकास और रोजगार पैदा करने के लिए महत्वपूर्ण है. मैं उनकी सलाह और मार्गदर्शन के लिए नियमित रूप से उनसे बातचीत करता हूं और मैंने उन्हें हमेशा ऊर्जावान, नए विचारों और नवीनतम तकनीकों से पूरी तरह वाकिफ पाया है.

अमिताभ कांत नीति आयोग के सीईओ हैं

बंदीप सिंह

विवान मेहरा

तकनीकी नायक

एन. आर. नारायणमूर्ति, 74 वर्ष

इन्फोसिस के सह-संस्थापक नारायणमूर्ति की देश को दुनिया के आइटी नक्शे में चमकदार स्थान दिलाने में अहम भूमिका

किरण कार्णिक

कर्नाटक के छोटे-से शहर के स्कूल शिक्षक के बेटे नारायणमूर्ति का नाम आज देश के कामयाब आइटी उद्योग के अगुआ के नाते दुनिया भर में है. उन्होंने दिखाया कि बौद्धिक पूंजी मध्यवर्गीय भारतीय को अरबों डॉलर का उद्यम बनाने में मददगार है. इससे लाखों लोगों में उद्यमशीलता के सपने जगे.

नारायणमूर्ति के नेतृत्व में इन्फोसिस पथप्रवर्तक रही है. उन्होंने बड़े पैमाने पर इन्फोसिस और देश की आइटी कंपनियों के विकास के लिए नए बिजनेस मॉडल की कल्पना की और उस पर अमल करके दिखाया. इन्फोसिस अमेरिकी स्टॉक एक्सचेंज में सूचीबद्ध होने वाली पहली भारतीय आइटी कंपनी थी, और कॉर्पोरेट गवर्नेंस बेंचमार्क स्थापित करने में अग्रणी है. इसने धन का सृजन किया और कर्मचारियों को भी शेयर विकल्प मुहैया कराके उसका लाभ दिया. उसने अपने 30,000 से अधिक कर्मचारियों को करोड़पति बना दिया.

सत्यनिष्ठा, ईमानदारी और पारदर्शिता के गुणों के पैरोकार नारायणमूर्ति ने कई लोगों को नेतृत्व करना सिखाया है. उनके व्यवहार में रुतबे का रौब नहीं है. वे हंसी-मजाक करने वाले और संगीत रसिक हैं. तमाम प्रशंसाओं और असंख्य बड़े पुरस्कारों के बावजूद नारायणमूर्ति में विनम्रता है. जाहिर है, वे अपने मन की बात स्पष्ट, प्रत्यक्ष और सशक्त शब्दों में कहने से नहीं हिचकते हैं. ■

किरण कार्णिक *नैसकॉम के पूर्व अध्यक्ष हैं*

मोबाइक मुगल

बृजमोहन लाल मुंजाल (1923-2015)

हीरो मोटोकॉर्प के संस्थापक ने 1940 के दशक में एक छोटी साइकिल कंपनी को एक दुर्जेय दोपहिया कंपनी में बदल दिया, जो अब दुनिया की बड़ी साइकिल कंपनियों में एक

राहुल बजाज

मैं बृजमोहन लालजी को बहुत पसंद करता था और अक्सर सार्वजनिक रूप से उन्हें अपना गुरु बताता था. उनमें अद्भुत गुण थे और वे वास्तव में एक अद्वितीय व्यक्ति थे. इन वर्षों में, हमने पहले हीरो होंडा और फिर हीरो मोटोकॉर्प के साथ बाजाार में बहुत जबरदस्त होड़ की. हमारा आपस में कोई लेना-देना नहीं था. फिर भी हम बहुत अच्छे दोस्त बने रहे. जब भी हम मिले, उन्होंने मुझे बहुत सम्मान दिया और उनसे मुझे सच्चा प्यार और स्नेह मिला, जबकि मेरे कुछ अन्य प्रतिस्पर्धियों के साथ ऐसा नहीं था. चालीस साल के रिश्ते में मैंने बृजमोहन लालजी के बारे में एक भी नकारात्मक बात नहीं सुनी. मेरा मानना है कि उन्होंने अपने स्टाफ के साथ अपने परिवार के सदस्यों जैसा व्यवहार किया, जैसा कि हममें से कोई नहीं कर सकता.

उनके बहुआयामी व्यक्तित्व और उत्कृष्ट संबंध बनाने की उनकी क्षमता ने उन्हें एक बड़े औद्योगिक नेता के रूप में स्थापित किया. मैं उनसे केवल विभिन्न उद्योग समारोहों में मिला हूं, और उन औपचारिक अवसरों पर भी, वे एक महान व्यक्तित्व के रूप में सामने आए. उन्होंने अपने स्वभाव और चरित्र के माध्यम से एक महान कंपनी का निर्माण किया. उन्होंने आश्वस्त किया कि कर्मचारियों से लेकर सप्लायरों और डीलरों तक किसी भी संबंधित पक्ष के साथ कोई गलतफहमी न हो. ■

विवान मेहरा

राहुल बजाज *बजाज समूह के मानद अध्यक्ष हैं*

अपने समय से आगे

वाइ.सी. देवेश्वर (1947-2019)

भारतीय उद्योग जगत में सबसे लंबे समय तक सीईओ रहने वालों में एक देवेश्वर ने आइटीसी को सिगरेट निर्माता कंपनी से विविध उद्योगों के समूह में तब्दील कर दिया

संजीव पुरी

बंदीप सिंह

उनकी स्मृति में मीडिया की एक सुर्खी में उन्हें ऐसा शख्स बताया गया जो आने वाले कल को देख सकता था. वाइ. सी. देवेश्वर की यही दूरदर्शिता कई मौकों पर उन्हें दुनिया भर में सम्मान दिला चुकी है. वे कॉर्पोरेट रणनीति में टिकाऊपन को सबसे अधिक तवज्जो देते थे. वे अक्सर कहा करते थे कि विफल समाजों में सफल व्यवसाय नहीं हो सकता है, और आने वाली पीढ़ियों को सुरक्षित रखना है, तो सामाजिक गैर-बराबरी, पर्यावरण तबाही और जलवायु परिवर्तन के खतरे से निपटने के लिए क्रांतिकारी आर्थिक मॉडल की आवश्यकता है. इसी नजरिए से आइटीसी ने एकीकृत रणनीति के तहत आर्थिक, पर्यावरण और सामाजिक पूंजी का निर्माण करने वाला व्यवसाय मॉडल बनाया, ताकि वित्तीय, सामाजिक और पर्यावरण के पहलुओं को ध्यान में रखकर मिसाल कायम कर सके.

इसके मूल में उनकी देशभक्ति की भावना थी. इसी भावना से आइटीसी को राष्ट्रीय प्राथमिकताओं के अनुरूप भारतीय उद्यम बनाने की उन्हें प्रेरणा मिली. एक उदाहरण बड़े पैमाने पर वनरोपण है, जो आइटीसी के पेपरबोर्ड व्यवसाय के लिए दीर्घकालिक फाइबर सुरक्षा को ध्यान में रखकर प्राकृतिक संसाधनों की फिर से पूर्ति करने और आजीविका उत्पन्न करने के लिए किया गया था. देवेश्वर ने विश्व स्तरीय भारतीय ब्रांडों को पोषित करने की आवश्यकता का भी समर्थन किया. ऐसे असाधारण और दूरदर्शी नेता के साथ मिलकर काम करना वास्तव में सौभाग्य की बात थी. ■

संजीव पुरी *आइटीसी के चेयरमैन और मैनेजिंग डायरेक्टर हैं*

बंदीप सिंह

वैश्विक विस्तार

कुमार मंगलम बिड़ला, 54 वर्ष

28 साल की उम्र में आदित्य बिड़ला समूह की कमान संभालने वाले के.एम. बिड़ला ने समूह को वैश्विक व्यापार साम्राज्य में बदल दिया

राम चरण

राष्ट्र निर्माण में उसके हर क्षेत्र के नेताओं की भूमिका खास होती है. मुझे ऐसे श्रेष्ठ नेताओं में से एक, के. एम. बिड़ला को कई वर्षों तक देखने-जानने का अवसर मिला. जहां दूसरों की हिम्मत जवाब दे जाए, वह करने की उनकी इच्छा उन्हें पथप्रवर्तक बनाती है. उन्होंने आदित्य बिड़ला समूह को दो अरब डॉलर से 54 अरब डॉलर से अधिक की कंपनी बना दिया. यह समूह पिछले कई दशकों में देश की अर्थव्यवस्था के लिए खास रहा है.

बिड़ला एक असाधारण व्यवसायी के रूप में विशिष्ट हैं. 2007 में, कनाडाई फर्म नोवेलिस की डाउनस्ट्रीम परिसंपत्तियों के लिए बोली लगाने का अवसर आया. उन्होंने इसे समूह के वैश्विक विस्तार के अवसर के रूप में देखा. उस निर्णय ने समूह की प्रोफाइल बदल दी और अलौह धातु की कंपनी हिंडाल्को का ग्राफ ऊंचा कर दिया.

पथपवर्तक शख्सियतों के बारे में उनके साथ काम किए बिना नहीं जाना जा सकता. वे प्रतिभाओं की परख करते वक्त तीखे सवाल पूछते हैं, लेकिन हमेशा कर्णप्रिय अंदाज में. वे सेबी, बिट्स पिलानी और आइआइएम-अहमदाबाद में अपनी भूमिकाओं के जरिए सामाजिक प्रगति का ख्याल रखते हैं. कुमार जैसे ही लोग भविष्य का निर्माण करते हैं. ■

राम चरण *कारोबारी सलाहकार और लेखक हैं*

नई लीक के अगुआ

अज़ीम प्रेमजी, 76 वर्ष

विप्रो के पूर्व चेयरमैन अज़ीम प्रेमजी ने अपनी सूझबूझ से कंपनी को दुनिया में आइटी क्षेत्र का अगुआ बना दिया

अशोक सूता

अज़ीम प्रेमजी की पहली बेमिसाल उपलब्धि तो यही है कि उन्होंने वनस्पति तेल की एक कंपनी का उपभोक्ता सामान का दिग्गज बना डाला. फिर उन्हें देश की सबसे बड़ी कंप्यूटर कंपनी और दूसरी सबसे बड़ी सॉफ्टवेयर कंपनी के निर्माण के लिए भी जाना जाता है. हालांकि यह ऐसी रैंकिंग है, जिसे बनाए रखना मुश्किल रहा है. विप्रो के कंप्यूटर व्यवसाय के नई पेशकश में इंटेल 286 चिप पर आधारित दुनिया के पहले मल्टीबस-2 कंप्यूटर और विप्रो सुपरजिनियस पर्सनल कंप्यूटर का लॉन्च शामिल है, जो देश का सबसे ज्यादा बिकने वाला पीसी बना.

प्रेमजी के सॉफ्टवेयर क्षेत्र में प्रवेश से देश की आइटी कंपनियों के लिए इंजीनियरिंग सॉफ्टवेयर क्षेत्र में कदम बढ़ाने का मार्ग प्रशस्त हुआ. यह सॉफ्टवेयर क्षेत्र में देर से प्रवेश था, फिर भी विप्रो ने उद्योग के रणनीतिक और बुनियादी ढांचा के मामले में देश की आइटी फर्मों की अगुआई की.

प्रेमजी की नेतृत्व शैली का खास गुण ऐसी अग्रणी प्रतिभाओं का चयन रहा, जिन पर वे भरोसा करते थे और उन्हें अपने निर्णय लेने देते थे. उन्होंने उनके साथ कई घंटे बिताए, निर्णयों में उनके भरोसे की परख की और अहम सलाह दी.

विप्रो के आइटी कारोबार में मेरे 15 वर्षों के कामकाज में, उन्होंने मेरे एक भी फैसले को कभी खारिज नहीं किया. प्रेमजी पर अक्सर आरोप लगता है कि प्रबंधन की बारीकियों पर ज्यादा जोर देते हैं. लेकिन मेरा मानना है कि ऐसा आरोप लगाने वाले विस्तार और अत्यधिक उपयोगिता पर ध्यान देने के लिए बारीक प्रबंधन को को ही दोष दे रहे होते हैं.

अशोक सूता *हैपियेस्ट माइंड्स टेक्नोलॉजीज के कार्यकारी अध्यक्ष हैं*

नमस भोजानी

अनुकरणीय शख्सियत

किरण मजूमदार शॉ, 68 वर्ष

बायोटेक में देश की पहली महिला उद्यमी, जिनके काम ने दुनिया के नक्शे में अहम स्थान हासिल किया

टी.वी. मोहनदास पै

विवान मेहरा

असाधारण लोगों की असाधारण उपलब्धियों के कारण ही समाज का विकास होता है. किरण मजूमदार शॉ ऐसी ही शख्सियत हैं. लगभग 40 साल पहले उन्होंने एक सपने को साकार करने के प्रयास शुरू किए थे. वह सपना था देश में एक विश्वस्तरीय बायोटेक फर्म की स्थापना का. वे बड़े पैमाने पर कामयाब भी हुईं और सभी उद्यमियों के लिए रोल मॉडल बन गईं. गुणवत्तापूर्ण अनुसंधान और उम्दा संचालन व्यवस्था पर उनका जोर और दृढ़ संकल्प उन्हें दूसरों से अलग करता है.

अपने देशवासियों के जीवन को बेहतर बनाना भी किरण का लक्ष्य रहा है. यह उनके परोपकारी कार्यों और सामाजिक उद्देश्यों के लिए दिल खोलकर समर्थन में दिखाई देता है. वे नीतिगत और सामाजिक सरोकार के विषयों पर अपनी बात बिना किसी लाग-लपेट के रखती हैं, लेकिन उद्देश्य सकारात्मक रहता है. लोग उन्हें समाज की बेहतरी के लिए समर्पित एक बहुत ही ईमानदार, कर्मठ शख्सियत के रूप में देखते हैं और वे आम नागरिकों और राजनैतिक नेताओं, दोनों के साथ सहजता से जुड़ जाती हैं. उत्कृष्ट उपलब्धियों के लिए उन्हें विश्वस्तर पर भी सराहा गया है. ■

टी.वी. मोहनदास पै *ऑरिन कैपिटल पार्टनर्स के चेयरमैन हैं*

चंदीप सिंह

टेलीकॉम दिग्गज

सुनील भारती मित्तल, 63 वर्ष

युवावस्था में कारोबार में उतरे भारती एंटरप्राइजेज के संस्थापक तथा चेयरमैन की दूरसंचार कंपनी भारती एयरटेल आज दुनिया की सबसे बड़ी कंपनियों में एक

डॉ. पवन मुंजाल

हम, सुनील और मैं, 1960 के दशक में लुधियाना में घनिष्ठ पारिवारिक मित्र के रूप में बड़े हुए. छोटी उम्र से ही हमारी जान-पहचान है. हमारा दशकों का साथ रहा है.

किशोरावस्था में ही साइकिल के पुर्जों के निर्माता के रूप में शुरुआत करके सुनील हमारे साथ बिजनेस पार्टनर के रूप में जुड़े और लुधियाना में हमारे परिवार के साइकिल व्यवसाय के लिए पुर्जों की आपूर्ति करते थे. वे मेरे पिता डॉ. बृजमोहन लाल के बहुत करीब थे और उन्होंने हमेशा सुनील को बेटे की तरह माना.

दूरसंचार उद्योग के अग्रणी मित्तल की उड़ान को मैंने बहुत करीब से देखा है. 1990 के दशक के मध्य में जब मोबाइल टेलीफोनी भारत में आई, तब सुनील ने अनजाने क्षेत्र में कदम रखने का निडर फैसला किया.

यह सुनील की दूरदर्शिता का प्रमाण है कि अफ्रीका और कई अन्य देशों में तेजी से अधिग्रहण और साझेदारी करके एयरटेल आज दुनिया की अग्रणी दूरसंचार कंपनियों में शुमार हो गई है.

हम दोनों लुधियाना के लड़के हैं, सुनील और मुझमें व्यापार के कुछ गुण एक जैसे हैं. दावोस में विश्व आर्थिक मंच और असंख्य अन्य उद्योग सम्मेलनों में एक साथ बिताए पलों की कुछ विशेष यादें हैं.

मैं कामना करता हूं कि वे अपने सभी व्यावसायिक उपक्रमों और परोपकारी पहलों में निरंतर कामयाब हों. ■

डॉ. पवन मुंजाल *हीरो मोटोकॉर्प के चेयरमैन तथा सीईओ हैं*

श्रीमान बैंकवाले

दीपक पारेख, 76 वर्ष

एचडीएफसी के चेयरमैन दीपक पारेख ने विश्वस्तरीय वित्तीय समूह के रूप में विकसित करने में खास भूमिका निभाई

हेमेंद्र कोठारी

रचित गोस्वामी

दीपक पारेख और मेरी दोस्ती किशोरावस्था की है-हम एक ही कॉलेज में पढ़े और दोनों ही खेल के जुनूनी थे. सच्ची दोस्ती, मिलनसार स्वभाव और खरेपन में दीपक युवावस्था से ही सबसे अलग थे. 1978 में लौटते हैं, जब उन्होंने चेस मैनहट्टन की अपनी मोटी तनख्वाह वाली शानदार नौकरी अपने महान अंकल हसमुखभाई पारेख के स्टार्ट-अप एचडीएफसी में जुड़ने के लिए छोड़ दी. तब यह फैसला हैरान करने वाला था. तब से, उनकी दूरदर्शिता और गहन व्यावसायिक कौशल से कंपनी आज विश्वस्तरीय दिग्गज बनी हुई है.

दीपक दूरदर्शी हैं और उनमें लोगों को समझने का जबरदस्त हुनर है. उन्होंने समूह के व्यवसायों का नेतृत्व करने के लिए उद्योग के सर्वश्रेष्ठ लोगों को चुना. चाहे अनुभवी परामर्शदाता की भूमिका हो, कोई कानूनी कार्य हो या फिर संकट समाधान हो, हर काम कायदे-कानून से होना चाहिए. ऐसी अडिग ईमानदारी और दृढ़ विश्वास उन्हें लोकप्रिय व्यक्ति बनाते हैं. दीपक की तीक्ष्ण स्मृति मुझे हमेशा विस्मित करती है. वे किसी भी घटना को सारी बारीकियों के साथ याद कर सकते हैं. बैठकों की छोटी-बड़ी हर बातें विस्तार से सुना सकते हैं और हर उम्र के अनगिनत लोगों के नाम बता सकते हैं! मैंने दीपक को सबसे अधिक तनावमुक्त तब देखा है जब वे पुराने दोस्तों के साथ होते हैं. वे मेल-मुलाकात के हर अवसर को शानदार स्मृतियों में बदल देते हैं. दीपक को कभी सेवानिवृत्त नहीं होना चाहिए-वास्तव में, मुझे यकीन है कि वे कभी होंगे भी नहीं! ■

हेमेंद्र कोठारी *डीएसपी इन्वेस्टमेंट मैनेजर्स के चेयरमैन हैं*

हेमंत चावला

टेक टॉनिक

नंदन नीलेकणि, 66 वर्ष

इन्फोसिस के सह-संस्थापक नंदन नीलेकणी की निगरानी में 'आधार' प्रोजेक्ट आगे बढ़ा जिससे एक अरब से अधिक लोगों तक सरकारी लाभ पहुंचाने में आसानी हुई

किरण मजूमदार शॉ

हम दोनों पहली पीढ़ी के स्टार्ट-अप उद्यमी हैं जिन्होंने 1980 के दशक में कम संसाधन और सरकारी नियंत्रण वाले कारोबारी माहौल में उच्च-प्रौद्योगिकी उद्यम बनाए. इस नाते मैं नंदन नीलेकणि के साथ एक विशेष संबंध साझा करती हूं. हम दोनों देशभक्ति की सोच लेकर आगे बढ़े और हम जो कुछ भी करते हैं उसमें विश्वस्तर पर अगुआ बनने के जुनून के साथ करते हैं. सोच में बहुत सी समानताओं ने हमारे बीच स्थायी मित्रता की मजबूत नींव डाल दी है.

मैं नंदन के विचार और दृष्टि में अद्‌भुत स्पष्टता की कायल हूं. उनके पास ऐसा दिमाग है जो चीजों का बड़ी गहराई से विश्लेषण करता है, जो जटिल समस्याओं को देख सकता है और उसका सरल लेकिन अत्यधिक प्रभावी समाधान दे सकता है. इस दृष्टिकोण ने उन्हें 'आधार' जैसे क्रांतिकारी प्रौद्योगिकी मंच का निर्माण करने के लिए प्रेरित किया, जो प्रत्येक देशवासी तक लाभ और सेवाओं का समान, पारदर्शी और निष्पक्ष वितरण करने की विशाल चुनौती को सरल बनाता है. आज, 1.26 अरब से अधिक लोगों के पास आधार कार्ड हैं, जिससे यह आसानी से दुनिया का सबसे बड़ा विशिष्ट पहचान कार्यक्रम बन गया है. आज, आधार अन्य तकनीकी प्लेटफॉर्मों के लिए भी रीढ़ है, जिससे देश में सस्ती वित्तीय सेवाएं, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा प्रदान संभव हो रहा है.

अपने परोपकारी कार्यों और तकनीकी नवाचारों के माध्यम से, नंदन ने अपनी उस सोच और उस सपने को व्यक्त किया हो जो वे भारत के लिए देखते हैं-एक पारदर्शी, कुशल और आर्थिक रूप से समावेशी राष्ट्र का सपना. ■

किरण मजूमदार शॉ *बायोकॉन और बायोकॉन बायोलॉजिक्स की कार्यकारी अध्यक्ष हैं*

उमेश गोस्वामी

वित्तीय ऊर्जास्रोत

के.वी. कामथ, 73 वर्ष

देश के सम्मानित बैंकरों में एक, कामथ इन्फोसिस और आइसीआइसीआइ बैंक दोनों के अध्यक्ष रहे, और आइसीआइसीआइ को वित्तीय दिग्गज में बदल दिया

उदय कोटक

मुझे के.वी. कामथ को '90 के दशक के अंत में जानने का मौका मिला जब वे एशियन डेवलपमेंट बैंक से लौटे थे. वित्तीय मामले में मेरा नजरिया उनसे अलग है. देश के वित्तीय क्षेत्र में आदर्श बदलाव लाने के इरादे से वे इस क्षेत्र के विकास पर ध्यान केंद्रित कर रहे थे. उनके नेतृत्व में इस क्षेत्र में खेल बदलने वाली घटनाएं हुई जिनमें एक आइसीआइसीआइ बैंक के साथ आइसीआइसीआइ का विलय था.

पूंजी बाजार में कामत के साहस का परिचय तब मिला जब उन्होंने 2004-05 में एडीआर (अमेरिकन डिपॉजिटरी रिसीप्ट) बाजार में बड़े पूंजी जुटाने वाले किसी भारतीय कंपनी के सबसे बड़े निर्गम में से एक को पूरा किया. 2000 के दशक की शुरुआत में, उन्होंने उपभोक्ता वित्त और उपभोक्ता बैंकिंग में आइसीआइसीआइ बैंक की शुरुआत की. वित्तीय क्षेत्र में परिवर्तनकारी और आक्रामक दृष्टिकोण रखने वाले पारेख में अग्रणी संस्थाओं के निर्माण की अभूतपूर्व क्षमता है.

इतने वर्षों से मुझे उनके साथ समय बिताने के कई अवसर मिले हैं. मुझे अभी भी जनवरी 2009 में दावोस में उनके साथ हुई एक बैठक याद है जब वैश्विक वित्तीय संकट चरम पर था. जब चीजें धूमिल दिख रही थीं, कामत का दृष्टिकोण सकारात्मक था. मैं उन्हें प्रेरणा के स्रोत और उन चुनिंदा लोगों में एक के रूप में देखता हूं जिन्होंने देश के कॉर्पोरेट और उपभोक्ता दोनों वित्तीय क्षेत्रों को बदलने में मदद की है और उसका सुखद परिणाम आज हमारे सामने है. मैं देश के सुंदर भविष्य के लिए वामन (मैं उन्हें अभी इस नाम से पुराकने की अनुमति चाहता हूं) के पथप्रदर्शक योगदानों को आगे भी देखते रहना चाहता हूं. ■

उदय कोटक *कोटक महिंद्रा बैंक के डायरेक्टर और सीईओ हैं*

स्वास्थ्य रत्न

प्रताप सी. रेड्डी, 88 वर्ष

देश के पहले कॉर्पोरेट हॉस्पिटल चेन के संस्थापक, जिन्होंने देश में विश्वस्तरीय स्वास्थ्य सेवाओं की शुरुआत की

डॉ. देवी शेट्टी

कई देशवसी यह बताएंगे कि हाल के वर्षों में देश की स्वास्थ्य सेवा में मौलिक रूप से कैसा सुधार हुआ है. लोगों को कभी इलाज के लिए विदेश जाना पड़ता था; आज, दुनिया भर से मरीज भारत आते हैं. कुछ दशक पहले की तुलना में आज, अस्पताल खोलना आसान है, और आज लोगों के लिए स्वास्थ्य बीमा प्रीमियम के एवज में कर छूट का दावा करना भी बहुत आसान है. इनमें से कई परिवर्तनों का श्रेय अकेले एक व्यक्ति—डॉ. प्रताप चंद्र रेड्डी—के प्रयासों को जाता है.

चालीस साल पहले, देश में गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाओं के सामने नियामक, कानूनी, भौगोलिक और आर्थिक-कई तरह की बाधाएं थीं. उदाहरण के लिए, चिकित्सा उपकरणों पर किसी विलासिता के सामान के बराबर 375 फीसद का आयात शुल्क लगाया जाता था. इस पृष्ठभूमि में, डॉ. रेड्डी ने तमाम बाधाओं पर विजय प्राप्त करते हुए भारतीय स्वास्थ्य सेवाओं में एक अग्रणी नाम और एशिया की शीर्ष स्वास्थ्य देखभाल समूहों में से एक अपोलो ग्रुप ऑफ हॉस्पिटल्स की स्थापना की.

यह एक वास्तविक धर्मयुद्ध था. ऐसे समय में जब अस्पताल स्टॉक एक्सचेंजों में सूचीबद्ध होने की सोच भी नहीं सकते थे, डॉ. रेड्डी ने अथक प्रयासों से नीतियों में बदलाव संभव कराए, जो काबिले तारीफ है. और अपोलो हॉस्पिटल्स के सार्वजनिक (पब्लिक) होने के बावजूद, डॉ. रेड्डी स्पष्ट थे कि वे शेयरधारकों के लिए रिटर्न पैदा करने के बजाए मरीजों की सेवा करने के दृष्टिकोण के साथ आगे बढ़ेंगे. ■

डॉ. देवी शेट्टी *नारायण हेल्थ के चेयरमैन और कार्यकारी निदेशक हैं*

रवि शंकर

दुनिया के प्रकाशस्तंभ

सी.वी. रमण
(1888-1970)

प्रकाश के प्रकीर्णन की उनकी नई खोज 'रमण प्रभाव' ने देश में वैज्ञानिकों की एक पूरी बिरादरी को प्रेरित किया

संदीप त्रिवेदी

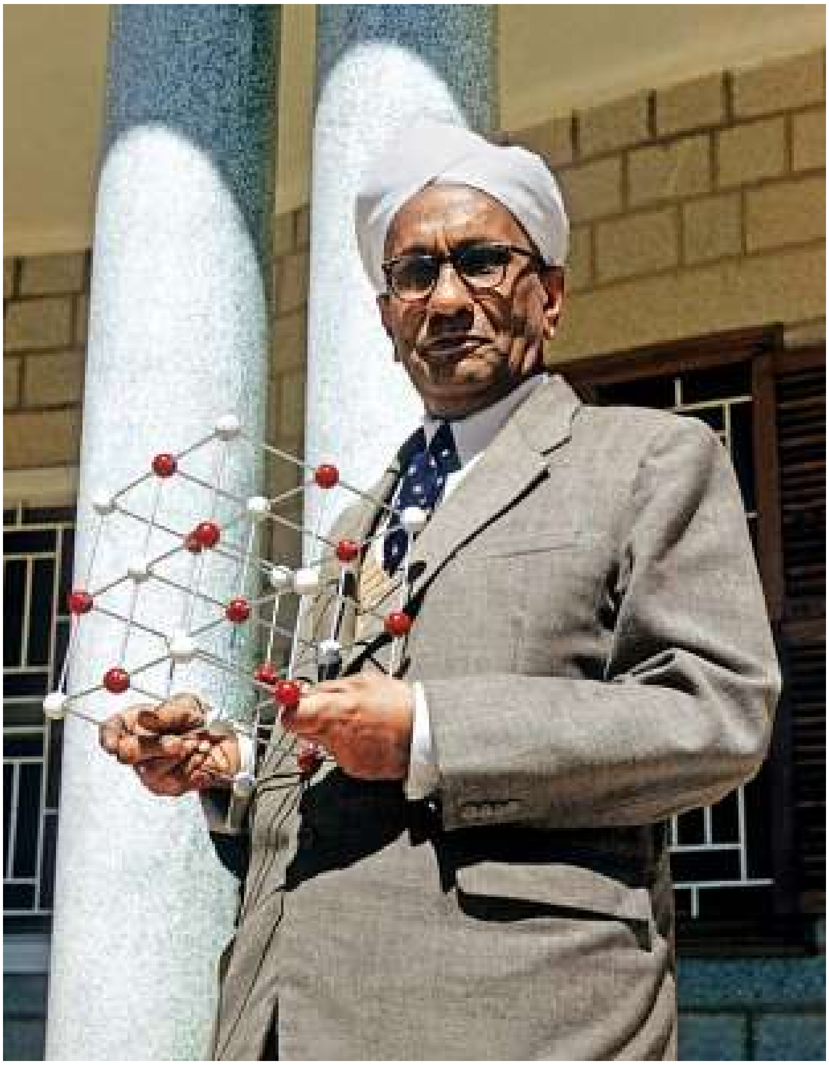

आलमी स्टॉक फोटो

भारत के महानतम वैज्ञानिकों में से एक चंद्रशेखर वेंकट रमण, विद्यार्थी के.एस. कृष्णन के साथ, अपनी पथप्रवर्तक खोज 'रमण प्रभाव' के लिए सबसे ज्यादा जाने जाते हैं. इसके लिए 1930 में उन्हें नोबेल पुरस्कार मिला. रेले प्रकीर्णन नामक प्रक्रिया से जब प्रकाश आम तौर पर फैलता या प्रकीर्ण होता है, तब वह दिशा बदलता है पर ऊर्जा में बदलाव नहीं होता. मसलन, यह तब होता है जब प्रकाश धूल से वायुमंडल में फैलता है और उसके नतीजतन आसमान नीला हो जाता है. रमण और कृष्णन ने प्रकीर्णन का एक नया तरीका ढूंढा, जिसमें प्रकाश दिशा और ऊर्जा दोनों बदलता है. ऊर्जा बदलने का मतलब यह हुआ कि प्रकाश अपनी वेवलेंग्थ या तरंगदैर्ध्य भी बदलता है. रमण प्रभाव विज्ञान में बेहद अहम साबित हुआ. यह अनेक किस्म के अणुओं को पहचानने और उनकी खासियतें बताने के लिए अहम तरीकों में से एक है.

रमण की महान खोजों और हमारे देश और इसकी संस्कृति में उन्होंने जो आत्मविश्वास पैदा किया, वह स्वतंत्र भारत के वैज्ञानिकों के लिए जबरदस्त प्रेरणा बना. जब भारत के योगदान को जानबूझकर कम किया जा रहा था, रमण ने दिखाया कि भारतीय संगीत के वाद्ययंत्र दुनिया में वैज्ञानिक रूप से सबसे उन्नत वाद्ययंत्रों में हैं. मसलन, तबला सरीखे भारतीय तालवाद्यों का निश्चित स्वर है, जो उनकी कंपायमान सतह के घटते-बढ़ते घनत्व के कारण है.

सी.वी. रमण ने संस्थाओं को आकार देने में महत्वपूर्ण तरीके से अपनी मौजूदगी और योगदान के जरिए भूमिका निभाई

उन्होंने अपनी उपस्थिति और योगदान से संस्थानों को अहम तरीकों से गढ़ा. इंडियन एसोसिएशन फॉर द कल्टीवेशन ऑफ साइंस में काम करने के बाद वे 1917 में कलकत्ता विश्वविद्यालय में पालित प्रोफेसर नियुक्त किए गए. 1933 में वे भारतीय विज्ञान संस्थान में आए, जहां आगे चलकर इसके पहले भारतीय डायरेक्टर बने और 1948 में रमण रिसर्च इंस्टीट्यूट की स्थापना की, जो देश की अग्रणी वैज्ञानिक अनुसंधान प्रयोगशाला बनी हुई है. ■

संदीप त्रिवेदी *सैद्धांतिक भौतिकशास्त्री और मुंबई स्थित टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च के पूर्व डायरेक्टर हैं*

अलामी स्टॉक फोटो

एटमी सपने का शिल्पी

डॉ. होमी जहांगीर भाभा (1909-1966)

परमाणु कार्यक्रम के जनक ने उस समय एटमी रिएक्टर का मंसूबा बांधा जब भारत साइकिल तक नहीं बनाता था

डॉ. आर. चिदंबरम

आर्थर कोस्लर दो किस्म के रहनुमाओं का जिक्र करते हैं: 'योगी' और 'कमिसार'. योगी यानी 'गहन चिंतनशील विचारक' और कमिसार यानी 'कर्मठ व्यक्ति'. डॉ. होमी जहांगीर भाभा दोनों का अनोखा मेल थे. खुशकिस्मती से भाभा और प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के बीच प्रगाढ़ रिश्ता था—भाभा नेहरू को 'भाई' कहते थे. भारतीय विज्ञान संस्थान (आइआइएससी) में पढ़ाने से पहले भाभा कैंब्रिज में उच्च ऊर्जा के जाने-माने सैद्धांतिक भौतिकशास्त्री थे. उन्होंने इलेक्ट्रॉन-पॉजिट्रॉन प्रकीर्णन, जिसे 'भाभा प्रकीर्णन' के नाम से जाना जाता है, और कॉस्मिक रे शॉवर्स या ब्रह्मांड किरण बौछार पर पथप्रदर्शक कार्य किया था.

भाभा ने सर दोराबजी टाटा ट्रस्ट की मदद से 1945 में मुंबई में टाटा मूलभूत अनुसंधान संस्थान की स्थापना की और उसे परमाणु प्रतिष्ठान का शीर्षस्रोत बनाने का मंसूबा बांध रहे थे. इसका नाम बाद में भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र ही हो गया. मैं जब आइआइएससी से पीएचडी कर रहा था, उस वक्त यह बात मुझे बहुत प्रेरित करती थी कि जिस समय हम साइकिल तक नहीं बना रहे, भाभा में न्यूक्लियर रिएक्टर बनाने की दूरदृष्टि और आत्मविश्वास (खुद अपने में और अपने देशवासियों में) है.

परमाणु ऊर्जा आयोग की स्थापना के अलावा भाभा ने परमाणु ऊर्जा विभाग में अंतरिक्ष गतिविधि का एक अहम केंद्र बनाया. संयुक्त राष्ट्र ने 1955 में भाभा को एटमी ऊर्जा के शांतिपूर्ण उपयोग पर पहली जेनेवा कॉन्फ्रेंस का अध्यक्ष मनोनीत किया. वे वियना स्थित इंटरनेशनल एटॉमिक ऊर्जा एजेंसी के संस्थापक सदस्य भी थे. दरअसल, ओपेरा संगीत के प्रति अपने प्रेम के चलते उन्होंने जेनेवा की बजाए वियना को आइएईए का मुख्यालय बनाने की वकालत की. भाभा ने अपने इर्द-गिर्द अगुआओं का एक समूह जोड़ा. यही वजह है कि 1966 में हवाई हादसे में 56 बरस की उम्र में इस महान वैज्ञानिक अगुआ की मृत्यु के बाद भी परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम लगातार फलता-फूलता रहा. ■

डॉ. आर. चिदंबरम *परमाणु ऊर्जा आयोग के पूर्व अध्यक्ष और फिलहाल बीएआरसी में डीएई होमी भाभा चेयर प्रोफेसर हैं*

दमकता सितारा

सुब्रह्मण्यम चंद्रशेखर

(1910-1995)

लाहौर में जन्मे वैज्ञानिक ने ब्रह्मांड के सबसे विशाल तारों की मृत्यु का सिद्धांत दिया

जयंत विष्णु नार्लीकर

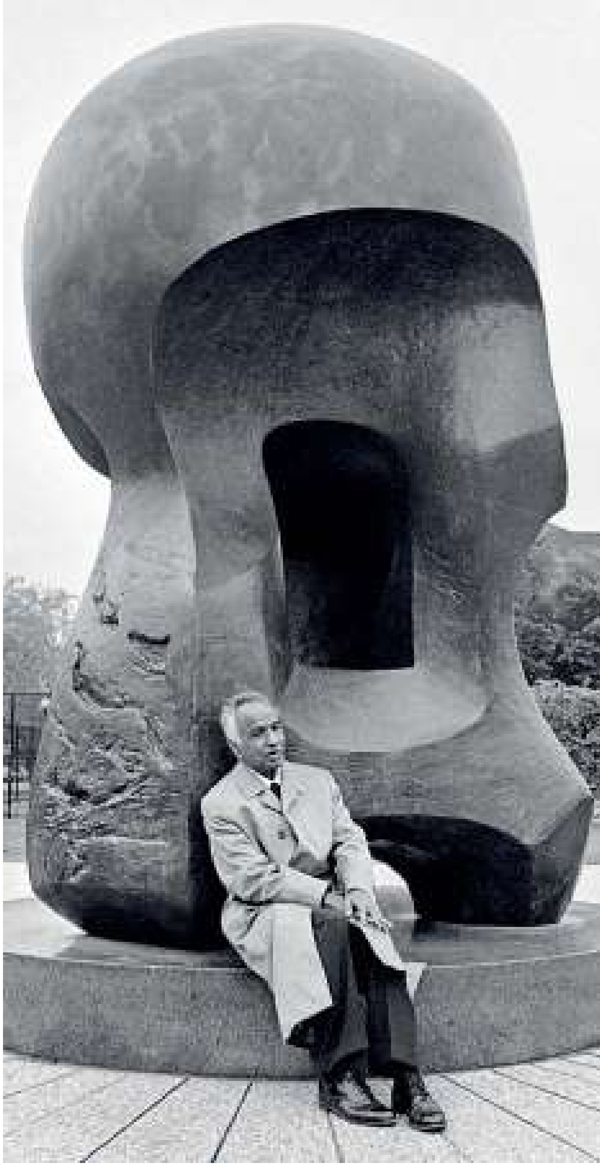

गेट्टी इमेजेज

बहुत लंबे वक्त से 'सफेद बौनों' पर चल रहा काम 1930 के दशक के मध्य में भारत के एक छात्र ने पूरा कर दिखाया. सफेद बौने उन छोटे और कमजोर तारों को कहा जाता है जिनका घनत्व पानी के घनत्व से कम से कम दस लाख गुना होता है. इन तारों के पीछे भौतिक विज्ञान क्या है? सुब्रह्मण्यम चंद्रशेखर को इसी काम के लिए कैंब्रिज से पीएचडी मिली, जो वहां ट्रिनिटी कॉलेज में फेलो थे. इस काम को इतना अहम माना गया कि ब्रिटेन की रॉयल एस्ट्रोनॉमिकल सोसाइटी ने चंद्रा को प्रस्तुति देने के लिए आमंत्रित किया. वे उम्मीद कर रहे थे कि वहां एकत्र ख्यातिलब्ध लोग उनकी पीठ थपथपाएंगे, पर हुआ उलटा. ट्रिनिटी के ही फेलो आर्थर स्टेनली एडिंगटन ने उनके सिद्धांत की तीखी आलोचना की.

चंद्रा की खोज यह थी कि सफेद बौने तारे का द्रव्यमान सूर्य के द्रव्यमान से 1.4 गुना से ज्यादा नहीं हो सकता, इसलिए अपना सारा परमाणु ईंधन चमकने में खर्च करने के बाद यह आंतरिक संतुलन बनाए रखना बंद कर देगा. एडिंगटन ने पूछा कि इस सीमा से बहुत ज्यादा बड़े तारों का क्या होगा? चंद्रा का सिद्धांत यह था कि ऐसा तारा तब तक सिकुड़ता जाएगा जब तक कि उसका प्रकाश उसके गुरुत्वाकर्षण में नहीं अटक जाता. एडिंगटन ने कहा, ''यह बेतुकी बात है और कुदरत ऐसा नहीं होने देगी.''

चंद्रशेखर की विश्लेषण की अपनी जो तकनीक थीं, उनके अनुयायी उस मामले में दूर-दूर तक कहीं उनका मुकाबला नहीं कर पाए

एडिंगटन तपे-तपाए मशहूर भौतिकशास्त्री थे और उस वक्त उनकी ही बात मानी गई. चंद्रा मन मसोसकर रह गए. समय बलवान होता है और उसने चंद्रा को अंततः सही साबित किया. 1.4 सौर द्रव्यमानों की द्रव्यमान सीमा को अब 'चंद्रशेखर सीमा' के नाम से जाना जाता है. चंद्रा को 1983 में नोबेल पुरस्कार मिला. भारी-भरकम तारों पर उन्होंने वाकई नई राह दिखाने वाला काम किया. उनके अनुयायी गणितीय पद्धतियों में उनकी बराबरी नहीं कर पाए. मगर 1970 के बाद सैद्धांतिक काम कंप्यूटरों पर होने लगा था. ज्यादा बड़े और तेज कंप्यूटरों ने कहीं ज्यादा अच्छे नतीजे दिए. चंद्रा ने मेरे समक्ष एक बार माना था कि इस रुझान पर उन्हें अफसोस था. वे विदेश में अपना काम करते रहे, पर उनके काम ने खगोल भौतिकी में हाथ आजमा रहे भारतीयों की पीढ़ियों को प्रेरित किया.■

लेखक खगोल भौतिक वैज्ञानिक और पुणे स्थित अंतर विश्वविद्यालय खगोलविज्ञान और खगोलभौतिकी केंद्र में एमेरिटस प्रोफेसर हैं

संस्थाओं के सरपरस्त

शांति स्वरूप भटनागर
(1894-1955)

विज्ञान प्रशासक अनुसंधान केंद्रित राष्ट्रीय प्रयोगशालाओं की स्थापना के पीछे प्रमुख शक्ति थे

आर.ए. माशेलकर

शांति स्वरूप भटनागर चमचमाते सितारे थे—भविष्यद्रष्टा, जाने-माने रसायनशास्त्री, असाधारण अध्येता और कुशाग्र विज्ञान प्रशासक. ज्यादातर भारतीय देश के आजाद होने से भी पहले राष्ट्रीय प्रयोगशालाओं की श्रृंखला स्थापित करने के पीछे की प्रेरक शक्ति और फिर वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद के पहले महानिदेशक के तौर पर इसकी अगुआई करने के लिए उन्हें इज्जत की नजर से देखते हैं. पर यह बात कम ही लोग जानते हैं कि भारत का परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम शुरू करने में योगदान के अलावा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के पहले अध्यक्ष और 'प्राकृतिक संसाधनों' से जुड़े मंत्रालय के सचिव के तौर पर भी उन्होंने प्रमुख भूमिका निभाई.

भटनागर ने संस्था निर्माण के जरिए कौशल विकास और क्रमिक भारतीयकरण की वकालत की, पर उन्होंने अगुआई के ओहदों पर विदेशियों को भी स्वीकार किया. उन्होंने हमें कई सीख दीं, पर मेरे लिए सबसे बड़ी सीख यह थी कि विज्ञान में आर्थिक समझ भी होनी चाहिए और मूलभूत विज्ञानों से जुड़े होने के बाद भी विज्ञान में अग्रणी भूमिका अदा की जा सकती है. भटनागर ने 1950 के दशक तक चलने वाले लंबे 'उत्तर-औपनिवेशिक' बदलाव में भी प्रमुख भूमिका निभाई. सी. राजगोपालाचारी ने राष्ट्रीय रसायन प्रयोगशाला के उद्घाटन भाषण में उन्हें 'लाइव वायर' यानी सजग और ऊर्जावान शख्स कहा. इस पर नेहरू ने भी मजाक में कहा कि राष्ट्रीय भौतिकी प्रयोगशाला के उद्घाटन पर उन्हें भी 'झटका' लगा था. भारतीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी उस सबकी बहुत ऋणी है जिसे सर सी.वी. रमण ने 'नेहरू भटनागर प्रभाव' कहा था. ■

आर.ए. माशेलकर *प्रसिद्ध वैज्ञानिक और पूर्व डीजी, सीएसआइआर हैं*

अंतरिक्ष के पुरोधा

विक्रम साराभाई (1919-1971)

दूरदर्शी खगोलविद ने इसरो की नींव रखी और रॉकेट तथा उपग्रह परियोजनाओं की कल्पना की

के. कस्तूरीरंगन

मैं 1963 में भौतिकी में परास्तानक करने के बाद जब खगोल भौतिकी और खगोल विज्ञान में शोध के अवसर खोज रहा था, तब मुझे अहमदाबाद स्थित भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला (पीआरएल) में डॉ. विक्रम साराभाई से मिलने के लिए आमंत्रित किया गया. साराभाई स्थापित पीआरएल भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम का उद्‌गम स्थल बन गया. मैं उनके साहस, दृढ़ विश्वास, दूरदृष्टि और प्रेरक शक्तियों से प्रभावित था. इन सबका मुझ पर गहरा प्रभाव पड़ा और मैं पीआरएल में पीएचडी करने लगा. इसके बाद मैं अंतरिक्ष कार्यक्रम में शामिल हुआ जिसकी साराभाई ने शानदार कल्पना की थी. उनकी पहल से भारत को अपना पहला उपग्रह प्रक्षेपण यान मिला और उपग्रह संचार (सैटेलाइट कम्युनिकेशन) के लिए बुनियादी ढांचा स्थापित हुआ.

एक बार एक उपकरण खराब हो गया जिसे हम विद्युत चुंबकीय विकिरण मापने के लिए उड़ाने वाले थे. साराभाई ने हमें इसे ठीक करने को कहा. ठीक कर देने पर उन्होंने हमें बधाई देते हुए कहा, ''मुझे खुशी है कि आपने समस्या का समाधान किया, पर अधिक महत्वपूर्ण वह अंतर्दृष्टि है जो आपने ऐसा करने के दौरान प्राप्त की. जीवन में विफलता और सफलता के बीच बहुत बारीक फर्क होता है, और आप हमेशा विफलताओं से ज्यादा सीखेंगे.'' फिर उन्होंने मजाक में कहा, ''पार्टी कब है?'' हम सब ठठाकर हंस पड़े.

एक प्रतिष्ठित और धनी परिवार में जन्मे और कैम्ब्रिज से कॉस्मिक रेज में डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त, साराभाई बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे. उन्होंने अहमदाबाद में भारतीय प्रबंधन संस्थान की स्थापना की. परमाणु ऊर्जा आयोग के अध्यक्ष के रूप में उन्होंने कुछ मौलिक योगदान दिया. वे उत्कृष्ट दूरदर्शी थे जिन्होंने समकालीन प्रौद्योगिकियों को बढ़ावा दिया और राष्ट्र के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देने वाले नवीन संस्थानों का निर्माण किया. ■

डॉ. के. कस्तूरीरंगन *इसरो के पूर्व अध्यक्ष हैं*

अलामी स्टॉक फोटो

शैलेष रावल/इंडिया टुडे

सहकारिता का भाव

डॉ. वर्गीज कुरियन (1921-2012)

'मिल्कमैन ऑफ इंडिया' और भारत में श्वेत क्रांति के जनक. उनके सहकारी आंदोलन ने दूध की किल्लत खत्म की और एक सामाजिक-आर्थिक क्रांति को प्रेरित किया

आर.एस. सोढ़ी

परमाणु ईंधन

डॉ. राजा रमन्ना (1925-2004)

भारत के पहले परमाणु परीक्षण 'स्माइलिंग बुद्धा' के नायक

डॉ. अनिल काकोदकर

अगर मुझसे कहा जाए कि ऐसे एक व्यक्ति का नाम लें, जिनसे मैं सबसे ज्यादा प्रभावित रहा हूं, तो वे है डॉ. राजा रमन्ना. मैं मूल रूप से एक मैकेनिकल इंजीनियर हूं, जबकि डॉ. रमन्ना भौतिक विज्ञानी. इसलिए मेरे और उनके बीत बहुत कुछ समान नहीं था. फिर भी भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र (बीएआरसी) में मेरे शुरुआती दिनों से ही डॉ. रमन्ना हमेशा मेरी परवाह करते थे. उस समय के मेरे कई साथियों को भी डॉ. रमन्ना को लेकर वैसा ही महसूस होता जैसा मुझे अनुभव होता था. चाहे परमाणु ऊर्जा विभाग में अनुसंधान और मानव संसाधन

उनके खड़े किए अमूल आंदोलन ने भारत को डेयरी सेक्टर में आत्मनिर्भर बना दिया

मिल्कमैन ऑफ इंडिया' और 'श्वेत क्रांति के जनक' के रूप में सम्मानपूर्वक याद किए जाने वाले डॉ. वर्गीज कुरियन भारत में डेयरी सहकारी आंदोलन के पुरोधा थे. वे उत्कृष्ट संस्था निर्माता थे, जिन्होंने डेयरी के माध्यम से ग्रामीण किसानों के बीच सामाजिक-आर्थिक क्रांति का बीजारोपण किया. जीवन में उनका मिशन लाखों वंचितों के भाग्य को बदलते हुए यूं कहें कि अपनी मातृभूमि की नियति को बदलना था.

डॉ. कुरियन उन कुछ राष्ट्र निर्माताओं में से थे जिन्होंने स्वतंत्रता के बाद के भारत का भविष्य गढ़ने में बहुत योगदान दिया. उन्होंने जिस अमूल सहकारी आंदोलन की शुरुआत की, उसने देश को डेयरी क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनने में खासी मदद की है.

1973 में भारत में साल भर में केवल 2.3 करोड़ मीट्रिक टन (एमएमटी) दूध की पैदावार होती थी, और दूध की प्रति व्यक्ति उपलब्धता भी केवल 111 ग्राम थी. दूध के लिए हम आयात पर अत्यधिक निर्भर थे. डॉ. कुरियन ने ऑपरेशन फ्लड के माध्यम से अमूल के सहकारी मॉडल का प्रयोग पूरे देश में दोहराया. और उसका नतीजा देखिए कि आज भारत दुनिया में दूध पैदा करने वाला सबसे बड़ा देश है. आज यही कोई 19.8 करोड़ मीट्रिक टन दूध यहां पैदा होता है और प्रति व्यक्ति दूध की उपलब्धता भी अब 408 ग्राम हो गई है. इसक अलावा हम दुनिया भर में दुग्ध उत्पादों का निर्यात करते हैं.

हाल ही में गठित किया गया केंद्रीय सहकारिता मंत्रालय इस बात का परिचायक है कि सहकारी मॉडल कितनी अहमियत रखता है और सभी आर्थिक वर्गों की ताकत को एकत्रित करके उद्यमशीलता में कितनी बड़ी क्रांति लाने की क्षमता रखता है. डॉ. कुरियन ने दिखाया कि कैसे सहकारी दुग्ध समितियां लाखों छोटे और सीमांत किसानों की सामूहिक शक्ति का उपयोग करके दुग्ध उत्पादों के आयात की हमारी आवश्यकता को समाप्त कर सकती हैं.

ऑपरेशन फ्लड ने बहुत ही कम समय के भीतर डेयरी के माध्यम से किसानों की आय को दोगुना करने के लिए एक तंत्र का निर्माण किया. इसे मेक इन इंडिया की जीती जागती मिसाल कहा जा सकता है.

यह वर्ष डेयरी सहकारिता के इतिहास में दो वजहों से बहुत महत्वपूर्ण हो जाता हैः एक तो अमूल आंदोलन की 75वीं वर्षगांठ और दूसरे डॉ. कुरियन की जन्मशती. सुदूर केरल के कालीकट में जन्मे डॉ. कुरियन 13 मई, 1949 को गुजरात के आणंद शहर पहुंचे थे. यहां उन्हें अपने जीवन का एक बड़ा उद्देश्य मिला और बाकी के 63 वर्ष उन्होंने यहीं व्यतीत किए. इन छह दशकों में डॉ. कुरियन ने ईमानदारी, साहस, समर्पण और किसानों तथा उपभोक्ताओं दोनों के प्रति प्रतिबद्धता जैसे मूल्यों की मजबूत नींव पर अमूल आंदोलन को खड़ा किया. उन्होंने इस बात को पक्का किया कि अमूल नवाचार और उत्कृष्टता का प्रतीक बने.

2020-21 में 53,000 करोड़ रुपए के वार्षिक समूह कारोबार के साथ अमूल अब भारत का सबसे बड़ा खाद्य संगठन है. अमूल के 87 डेयरी मैन्युफैक्चरिंग प्लांट हैं, जिनकी दूध प्रबंधन की कुल क्षमता 3.9 करोड़ लीटर रोजाना की है. गुजरात की 18,563 ग्राम-स्तरीय डेयरी सहकारी समितियों और 18 जिला-स्तरीय दुग्ध उत्पादक सहकारी संघों के लगभग 36 लाख किसान परिवार एक वृहत्तर अमूल परिवार का हिस्सा हैं. इसका सारा श्रेय डॉ. कुरियन को जाता है. ■

डॉ. आर.एस. सोढ़ी *गुजरात सहकारी दुग्ध विपणन संघ लि. (अमूल) के प्रबंध निदेशक हैं.*

भवान सिंह

विकास को शुरुआती आकार देना हो या भारत के परमाणु विज्ञान कार्यक्रम की तैयारी हो या फिर 1974 में 'स्माइलिंग बुद्धा' (भारत का पहला परमाणु परीक्षण) को साकार करना हो, वे एक सच्चे पथपवर्तक थे. यहां तक कि परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम के लिए 10,000 मेगावाट बिजली तक का लक्ष्य भी उन्होंने ही बनाया था.

एक दिन उन्होंने मुझे अपने साथ काहिरा, वियना और वारसॉ के दौरे पर चलने को कहा. उनके साथ काहिरा और वारसॉ जाने के लिए अलग-अलग दल बनाए गए थे. इसके बीच उन्हें वियना में एक वरिष्ठ-स्तरीय बैठक में हिस्सा लेना था. मुझे पता न था कि मेरी क्या भूमिका होगी. मैंने उनसे पूछ लिया, ''आप मुझसे क्या चाहते हैं?'' उनका जवाब था, ''कुछ नहीं, बस चलो.'' यात्रा के दौरान, मैंने परमाणु ऊर्जा के कई आयामों को समझा जिसे मैं कभी न समझ पाता, अगर साथ न गया होता. ऐसे थे डॉ. रमन्ना: सच्चे गुरु. वे किसी भी चीज के पीछे की तार्किक और साथ-साथ अतार्किक चीजों को भी सहजता से बता सकते थे. वे स्वयं 'स्माइलिंग बुद्धा' थे. ■

डॉ. अनिल काकोदकर *परमाणु ऊर्जा आयोग के पूर्व अध्यक्ष हैं, और वर्तमान में राजीव गांधी विज्ञान और प्रौद्योगिकी आयोग के अध्यक्ष हैं*

अन्न गुरु

एम. एस. स्वामीनाथन

(96 वर्ष)

उनकी हरित क्रांति ने गेहूं की अधिक उपज वाली किस्मों के माध्यम से खाद्यान्न आत्मनिर्भरता के द्वार खोले

योगिंदर के. अलघ

दुनिया एम.एस. स्वामीनाथन—जिन्हें हम प्यार से 'एमएसएस' कहते हैं—को भारत की हरित क्रांति के वास्तुकार के रूप में देखती है, वह शख्स जिसने देश को खाद्यान्न के मामले में आत्मनिर्भर बनाया. स्वामीनाथन किसानों की जरूरतों के प्रति उतने ही जागरूक थे, जितने कि बीजों के जीनोम के प्रति. खेती की जटिलताओं को समझने की क्षमता उन्हें उनके साथियों के बीच सबसे अलग बनाते हुए उनके काम को असाधारण बना देती थी.

साठ के दशक के मध्य में, भारत ने एक के बाद एक लगातार सूखे का सामना किया था और तब किसानों को दूसरी फसल लेने के लिए प्रेरित करना एक चुनौती थी. विश्व स्तर पर कृषि अर्थशास्त्री अपने लोगों की जरूरत का पर्याप्त अनाज उगाने की दिशा में भारत के प्रयासों को कम आंक रहे थे. फसल पैटर्न और उपज पर वास्तविक डेटा और जानकारियां एकत्र करने के कार्य के लिए सरकार की ओर से चुने जाने पर मैंने सभी जिला कलेक्टरों को ऐसी जानकारी साझा करने को लिखा था. इसके पहले मैंने कृषि संबंधी काम कभी नहीं किया था, इसलिए स्वामीनाथन के मार्गदर्शन से मुझे आत्मविश्वास मिला. जिलेवार आंकड़ों को इकट्ठा करने की बड़ी कसरत ने हमें हरित क्रांति की दृष्टि से संभावनाशील जिलों पर केंद्रित करने को अपेक्षित प्रयास समझने में मदद की. इस कार्य के मानचित्रण के काम के दौरान स्वामीनाथन लगातार हमारी मदद में खड़े रहे. उपलब्ध सिंचाई सुविधाओं और व्यवहार्यता पर उनकी अंतर्दृष्टि बहुत काम आई और हमें पंजाब और हरियाणा पर ध्यान केंद्रित करने में मदद मिली.

स्वामीनाथन हालांकि आश्वस्त थे कि पंजाब और हरियाणा के मॉडल को हर जगह नहीं दोहराया जा सकता. उन्होंने महसूस किया कि देश के अन्य हिस्सों में अलग-अलग फसल पैटर्न और मॉडलों की जरूरत है. बाद में उन्हीं की दूरदृष्टि के परिणामस्वरूप देश में स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) का नेटवर्क बनाने में मदद मिली, कॉर्पोरेट्स की भागीदारी के लिए दरवाजे खोले गए और फसल विविधीकरण को प्रोत्साहित किया गया. मेरे और व्यवहार्य तथा विविधतापूर्ण कृषि के लिए काम कर रहे अन्य लोगों के लिए एमएसएस हमेशा शक्ति स्तंभ बने रहेंगे. ■

योगिंदर अलघ *विख्यात अर्थशास्त्री व पूर्व केंद्रीय मंत्री हैं*

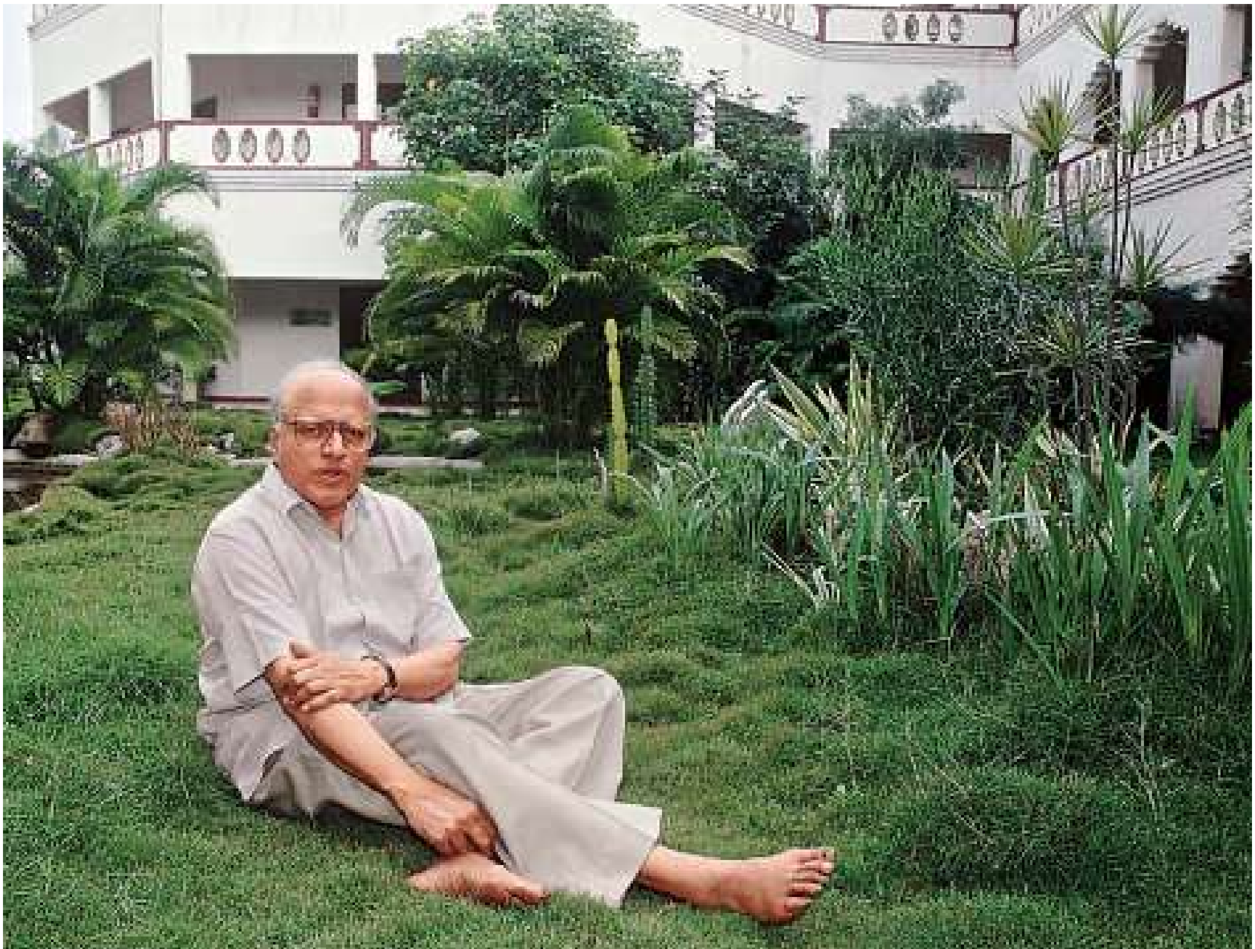

एच.के. राजशेखर

रूपांतरकारी

सतीश धवन (1920-2002)

भारतीय विज्ञान संस्थान के लोकप्रिय प्रोफेसर जिन्होंने भारत के अंतरिक्ष अभियान के मुख्य चरण का संचालन किया

वी. सिद्धार्थ

बंदीप सिंह

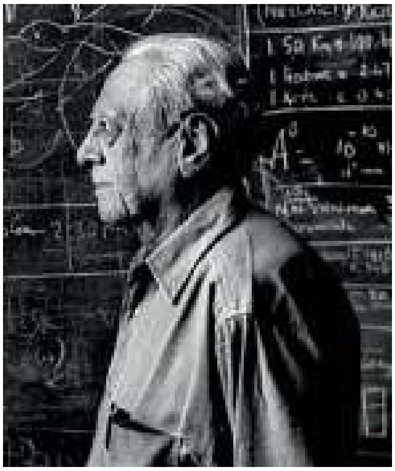

भारत के रत्नों में से एक प्रो. सतीश धवन अपने नाम के साथ इस तरह की (रूपांतरकारी जैसी) कोई भी उपमा सुन कर भी झेंप जाते और ऐसा करने के लिए मुझे बुरी तरह से झाड़ देते. भारत के अग्रणी अंतरिक्ष विज्ञानी और इंजीनियर ने इंजीनियरिंग विज्ञान में ऐसा योगदान दिया कि अभी तक औपनिवेशिक दासता के शिकार रहे हमारे दिमागों में बिल्कुल नई संस्कृति विकसित कर दी.

वे शिक्षण, वैज्ञानिक अनुसंधान, प्रौद्योगिकी विकास, प्रबंधन और नेतृत्व जैसी कई पेशेवर व्यस्तताओं में सक्रिय रहते थे—अक्सर विविध रूपों में एक साथ. भारतीय विज्ञान संस्थान (आइआइएससी) के निदेशक के रूप में धवन ने एक दर्जन से भी कम विभागों वाले अपेक्षाकृत छोटे-से परिसर को एक विश्वस्तरीय संस्थान में बदल दिया, जिसमें तब लगभग 40 विभाग और उनके युवा संकाय सदस्य थे.

1972 में, तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने प्रो. धवन से भारत के नवोदित अंतरिक्ष कार्यक्रम का नेतृत्व करने का आग्रह किया था. इसके अगले दशक तक भी भारतीय विज्ञान संस्थान का प्रमुख रहते हुए धवन ने देश के अंतरिक्ष कार्यक्रम को प्रौद्योगिकी विकास और अनुप्रयोग के मॉडल के रूप में विकसित कर दिया.

उनकी निर्विवाद सत्यनिष्ठा और नैतिक व्यवस्था की भावना ही इसरो (भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन) में उनकी प्रबंधन शैली के आधार थे. उनके व्यक्तित्व में सामाजिक मूल्यों और असाधारण निष्पक्षता के प्रति गहरी प्रतिबद्धता के साथ महान मानवीय गुणों और व्यक्तिगत आकर्षण के संयोजन ने पीढ़ियों को प्रेरित किया है. धवन ने आधुनिकता की ओर बढ़ते देश के लिए ऐसी बहुमूल्य विरासत छोड़ी है जो युवाओं को उनके सपनों के भारत का पता लगाने और उसे साकार करने का आत्मविश्वास प्रदान करती है. ■

डॉ. वी. सिद्धार्थ *डीआरडीओ के पूर्व एमेरिटस वैज्ञानिक और वर्तमान में नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस स्टडीज, बेंगलूरू के वरिष्ठ एसोशिएट हैं*

भारत के पाखीपुरुष

सालिम अली (1896-1987)

प्रसिद्ध पक्षीविज्ञानी और प्रकृतिवादी जिसने देश में पक्षियों के अध्ययन को लोकप्रिय बनाया

माधव गाडगिल

इंडिया टुडे आर्काइव

मैं उसी साल जन्मा था जिस साल सालिम अली की शानदार सचित्र पुस्तक *द बुक ऑफ इंडियन बर्ड्स* छपी थी. मेरे पिता चिड़ियों को ढूंढने-देखने के बड़े शौकीन थे और मैं लिखना-पढ़ना सीखने के पहले ही चित्रों से चिड़ियों को पहचानने लगा था. मेरी उम्र 14 साल की थी जब मैं बिना कलगी की ग्रीन बी-ईटर देख कर उलझन में पड़ गया था. मैंने सालिम अली को चिट्ठी लिखी और उनका जवाब पाकर रोमांच से भर उठा था. मैं उनसे मिला और उनके ज्ञान तथा उत्साह से मंत्रमुग्ध रह गया. तभी मैंने तय किया कि मैं भी पक्षीवेत्ता बनूंगा. वे मुझसे 46 साल बड़े थे, फिर भी मेरे साथ मित्रवत् व्यवहार करते हुए मेरा समर्थन करते थे.

अगले 25 वर्षों में कितने ही दौरों पर उनके साथ गया. उनके साथ पक्षियों को देखना एक सुखद अनुभव था और मुझे उनके साथ पक्षियों के सामुदायिक बसेरों पर शोधपत्र लिखने का सौभाग्य भी मिला. वे तीक्ष्णबुद्धिमत्ता वाले शानदार प्रदर्शक थे और यह बात उनकी पक्षी पुस्तकों की श्रृंखला में सामने आती है. इन पुस्तकों ने शहरी मध्यमवर्गीय लोगों को पक्षी देखने और प्रकृति संरक्षण की ओर आकर्षित किया. अफसोस की बात है कि सालिम अली को पूर्वाग्रह था कि भारत के आम लोग प्रकृति का विनाश करने में लगे हैं. इसी कारण भरतपुर की जलीय भूमि में भैंसों के घुसने पर प्रतिबंध लगा दिया गया, जिसके बाद से जल-पक्षी आवास के रूप में क्षेत्र की स्थिति बिगड़ती चली गई. उनके पूर्वाग्रह ने जन-विरोधी संरक्षण आंदोलन को भी बढ़ावा दिया. ऐसे मुद्दों पर हमारे मतभेद जो भी हों, मैं उन्हें हमेशा असाधारण प्रकृतिवादी मानूंगा.■

माधव गाडगिल *प्रख्यात पारिस्थितिकी विज्ञानी तथा भारतीय विज्ञान संस्थान, बेंगलूरू में सेंटर फॉर इकोलॉजिकल साइंसेज के संस्थापक हैं*

भवान सिंह

कर्मयोगी

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम (1931-2015)

यशस्वी एरोस्पेस इंजीनियर ने उपग्रह प्रक्षेपण वाहन और मिसाइल कार्यक्रम की अगुआई की और 'जनता के राष्ट्रपति' के तौर पर हमारे दिलों में जगह बनाई

डॉ. वी.के. सारस्वत

मेरे गुरु डॉ. अवुल पाकिर जैनुलआबदीन अब्दुल कलाम ने भारत के प्रौद्योगिकीय मानचित्र को आमूलचूल बदल दिया. तमिलनाडु के रामेश्वरम के एक गांव में अत्यंत साधारण परिस्थितियों में पले-बढ़े कलाम ने अपने शिक्षकों से मिली मूल्य प्रणाली आत्मसात की. जिंदगी के सफर में यही उनका आंतरिक दिशासूचक था. उस सफर में जिसने उन्हें अखबार बांटने वाले लड़के से भारत के अंतरिक्ष और मिसाइल कार्यक्रम का अगुआ और अंततः भारत का 'जनता का राष्ट्रपति' बनाया.

अंतरिक्ष कार्यक्रम में डॉ. कलाम भारत के पहले उपग्रह प्रक्षेपण वाहन एसएलवी-3 के प्रोजेक्ट डायरेक्टर थे. उन्होंने अध्येताओं, शोधकर्ताओं और उद्योग के प्रयासों को अभूतपूर्व ढंग से जोड़कर कामयाबी पाई. फिर उन्होंने मिशन भावना से काम करने के अपने तरीके और रणनीतिक दूरदृष्टि से रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन (डीआरडीओ) का कायापलट कर दिया. अलग-अलग ढंग से सोचने वाले लोगों से एक साझा मकसद के लिए काम करवा लेने की असाधारण योग्यता डॉ. कलाम में थी. मैं अक्सर मजाक में कहता कि वे उत्तर और दक्षिण ध्रुवों को भी साथ ला सकते हैं!

अलग-अलग ढंग से सोचने वाले लोगों से एक साझा मकसद के लिए काम करवा लेने की योग्यता डॉ. कलाम में थी

उनकी नजर भारत के लिए एक आइसीबीएम (अंतर महाद्वीपीय युद्धक मिसाइल) बनाने पर थी. नाकामियों से वे कभी डरे नहीं और अग्नि मिसाइल ने 1989 में दो प्रयासों के बाद उन्हीं के मार्गदर्शन में पहली सफल उड़ान भरी. नाकामियों की जिम्मेदारी उन्होंने अपने ऊपर ली और कामयाबी का श्रेय टीम के साथियों को दिया. 2002 में जब वे राष्ट्रपति बने तो कई विश्लेषकों को लगा कि उनसे मनचाहे काम करवा लेना आसान होगा, लेकिन उन्होंने भारत के संविधान के प्रति अपनी एकनिष्ठ प्रतिबद्धता से आलोचकों को गलत साबित कर दिया. ■

डॉ. वी.के. सारस्वत *रक्षा मंत्री के पूर्व वैज्ञानिक सलाहकार और डीआरडीओ के पूर्व डायरेक्टर जनरल हैं. अब वे नीति आयोग के सदस्य हैं*

सैनिकों का जनरल

फील्ड मार्शल एस.एच.एफ.जे. मानेकशॉ

(1914-2008)

भारत के सबसे कद्दावर सैन्य नायक और 1971 के युद्ध में जीत के प्रधान रणनीतिकार, जिन्होंने आचरण के अपने स्वर्णिम मानदंडों से मिसाल कायम की

मेजर जनरल इयान कार्डोजो (सेवानिवृत्त)

फील्ड मार्शल सैम होर्मुसजी फ्रेमजी जमशेदजी मानेकशॉ से मैं पहली बार 1964 में मिला. तब वे लेफ्टिनेंट जनरल थे और मैं कैप्टन तथा भारतीय सेना का पहला सेना मेडल विजेता था. अधिष्ठापन समारोह में मैंने उनकी सलाह मांगी. उन्होंने कहा, ''किसी भी पेशे में किसी भी शख्स को वही करना चाहिए जो उसे सबसे अच्छा लगता है... और वह जो भी करे उससे उसे प्यार करना चाहिए.'' उन्होंने कुछ ऐसा भी कहा जो मैं कभी भूला नहीं—''डरना मत''. यही फील्ड मार्शल मानेकशॉ थे, सैन्य नायक जो लोगों के सोचने-कहने की परवाह किए बगैर अपने सिद्धांतों पर अडिग रहे. 1960 के दशक में एक बार रक्षा मंत्री ने उनसे सेना प्रमुख की आलोचना करने को कहा, उन्होंने इनकार कर दिया. 4 कोर कमांडर (जिसने चीन के साथ 1962 की जंग में खौफनाक हार झेली थी) की जिम्मेदारी संभालते वक्त उन्होंने साफ कर दिया कि पीछे हटने के फरमान अब नहीं दिए जाएंगे. उन्होंने कहा, ''मेरा और मेरे सैनिकों का बलिदान दिया जा सकता है लेकिन मेरे देश की प्रतिष्ठा का नहीं.''

अप्रैल 1971 में फील्ड मार्शल मानेकशॉ ने तब प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी से कह दिया कि सेना युद्ध के लिए तैयार नहीं है. फिर उन्होंने सेना को तैयार किया और दिसंबर 1971 में पूर्वी पाकिस्तान में हमने अपनी सबसे बड़ी सैन्य फतह हासिल की. कुछ गुणों की वजह से वे ध्रुवतारे की तरह अलग दिखाई देते हैं—विनम्रता, नतीजों की परवाह किए बगैर जो सही है वही करने की जिद और ऐसा नायक जो अपने लोगों को साथ लेकर चल सका क्योंकि वह उनकी परवाह करता था. 1971 की जंग छिड़ने से पहले फील्ड मार्शल मानेकशॉ ने हौसला बढ़ाने के लिए सभी सैन्य टुकड़ियों का दौरा किया. आखिर में, रिटायर होने पर उन्होंने एक आरामदेह नौकरी की पेशकश ठुकरा दी. उनके लिए भारत का सेना प्रमुख होने के बराबर कुछ नहीं था. ■

मेजर जनरल इयान कार्डोजो *(सेवानिवृत्त) 1971 के युद्ध के अलंकृत पूर्व सैनिक हैं*

भास्कर पॉल

दूरदर्शी सेनापति

जनरल कृष्णास्वामी सुंदरजी (1928-1999)

सुंदरजी ने सेना के जंगी लोकाचारों को नए रंग-ढंग में ढाला और वे शुरुआती परमाणु सिद्धांत का मसौदा तय करने वाले चुनिंदा समूह में शामिल थे

लेफ्टिनेंट जनरल एस.एस. मेहता (सेवानिवत्त)

जनरल कृष्णास्वामी सुंदरजी से मैं पहली बार अंबाला में मिला. मैं मेजर था और वे 1 आर्मर्ड डिविजन में सैंड मॉडल पर चर्चा कर रहे थे. उन्होंने मेरी राय पूछी तो मैंने कहा कि जिस योजना पर बात हो रही है, वह कारगर नहीं होगी और अपने कारण बताए. उनका जवाब: ''रणकौशल में सही या गलत कुछ नहीं होता. असल जवाब तो लड़ाई में ही निकलकर आता है.'' कई अफसरों को तब लगा कि मेरे जवाब का मतलब था मेरा सैन्य करियर खत्म हो गया. लेकिन मैं हैरान रह गया जब एक पखवाड़े बाद सुंदरजी के दफ्तर से फोन आया और मुझसे 33वीं कोर में, जहां वे पदोन्नत होकर आए थे, उनके निजी स्टाफ में आने के लिए पूछा गया. बाद में जब वे सेना प्रमुख बने तो मैं उनका सैन्य सहायक था.

जनरल सुंदरजी विचार, वचन और कर्म से सैनिक के सांचे में ढले थे. उनका दिमाग चुस्त व फुर्तीला और स्वभाव जिज्ञासु था. सैद्धांतिक और सामरिक दोनों सैन्य मामलों में उन्हें यथास्थिति से नफरत थी. वे हाजिरजवाब और सहज-सरल स्वभाव के थे. सेना प्रमुख के नाते उन्होंने जो बदलाव शुरू किए, मसलन तेजी से लामबंदी और हमले के लिए मशीनीकरण, सैन्य विमानन, स्वतंत्र वायु रक्षा शाखा, कमांड और स्टाफ वर्ग, शिकायत सलाहकार बोर्ड और सीमित परमाणु भयप्रतिरोधक, सब समय की कसौटी पर खरे उतरे. उन्होंने सेना को हमेशा नए ढंग से सोचने के लिए उकसाया. अनुष्ठान गौण और सामरिक सोच तथा उस पर अमल प्रमुख हो गए. इससे सेना की मानसिकता में बदलाव आना शुरू हुआ. जनरल सुंदरजी को 'विचारशील जनरल' माना जाता था, पर वे उससे कहीं ज्यादा थे. सबके लिए वे 'हमारे प्रमुख' थे. ■

लेफ्टिनेंट जनरल एस.एस. मेहता *(सेवानिवृत्त) पूर्व वेस्टर्न आर्मी कमांडर रह चुके हैं*

भवान सिंह

एथलीट्स की कई पीढ़ियों को उन्होंने प्रेरित किया है. उनका कोई सानी नहीं है

तूफान एक्सप्रेस

मिल्खा सिंह (1929-2021)

'फ्लाइंग सिख' ने अपनी शानदार दौड़ों से वैश्विक एथलीट परिदृश्य में भारत का सम्मान बरकरार रखा

पी.टी. उषा

अपने दौड़ की बेहतरीन टाइमिंग के साथ मिल्खा सिंह भारतीय खेलों के इतिहास में एक किंवदंती बने हुए हैं. उन्होंने न केवल मुझे बल्कि एथलीटों की कई पीढ़ियों को प्रेरित किया है. उनकी उत्कृष्टता की कोई बराबरी नहीं कर सका है. मैंने उनके बारे में पहली बार कन्नूर स्पोर्ट्स डिवीजन स्कूल में सुना था जहां मेरे कोच ओ.एम. नांबियार हमें अपना प्रदर्शन सुधारने को प्रोत्साहित करने के लिए अक्सर उनके बारे में बातें किया करते थे.

मैं मिल्खा सिंह से पहली बार 1982 में सियोल में विश्व जूनियर इन्विटेशन एथलेटिक मीट में भारत का प्रतिनिधित्व करने के दौरान मिली और 200 मीटर में स्वर्ण और 100 मीटर में कांस्य जीता. तब से उन्होंने मेरे प्रदर्शन में दिलचस्पी दिखानी शुरू की और उस पर नजर रखने लगे. लेकिन उस समय भाषा की समस्या के कारण मेरी उनसे ज्यादा बातचीत नहीं हो पाई. वे मुझे 'पीटी' कहते थे, और जब अपना स्नेह बरसाना हो तो 'बेटी'. 1984 के लॉस एंजेलिस ओलंपिक में जब मैंने एक सेकंड के बहुत छोटे अंश से एक पदक गंवा दिया तो उन्होंने मुझे अपने दौड़ के समय को बेहतर बनाने को और अधिक अंतरराष्ट्रीय आयोजनों में भाग लेने की सलाह दी.

मिल्खा के साथ मेरे संबंधों में उतार-चढ़ाव के मोड़ भी आए. मुझे दुख हुआ जब 1988 के सियोल ओलंपिक में पदक नहीं जीतने के लिए उन्होंने मेरी आलोचना की. वास्तविकता को जाने बिना, उन्होंने कह दिया कि मैंने दौड़ में खराब प्रदर्शन करके देश को धोखा दिया है. सच यह था कि मैं चोटिल थी और चोट का इलाज चल रहा था. मैं 400 मीटर स्पर्धा में भाग नहीं लेना चाहती थी पर मुझे जबरन टीम का हिस्सा बना दिया गया. बाद में सचाई का पता चलने पर उन्होंने माफी मांगी.

मिल्खा एक महान योद्धा थे. 1960 के ओलंपिक में उन्होंने 400 मीटर स्पर्धा में 45.6 सेकंड का समय निकाला पर सेकंड के दसवें हिस्से से कांस्य से चूक गए. वे मेरे और मेरे परिवार के लिए प्रेरणा के स्रोत बने हुए हैं.

पीट इमेजेज वाया गेट्टी इमेजेज

पी.टी. उषा *भारत की सबसे प्रतिष्ठित ट्रैक और फील्ड एथलीटों में से एक हैं*

शटल का शालीन सितारा

प्रकाश पादुकोण, 66 वर्ष

ऑल इंग्लैंड ओपन जीतने वाले पहले भारतीय, जिन्होंने देश की बैडमिंटन क्रांति का आगाज किया

पुलेला गोपीचंद

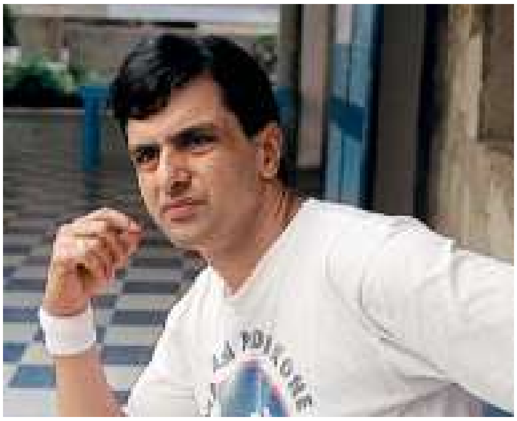

एम.के. राजशेखर

मेरे जैसे किसी व्यक्ति के लिए जिसने खेल को कभी करियर के रूप में नहीं देखा हो, विश्व बैडमिंटन सर्किट में प्रकाश सर की मौजूदगी के मायने बहुत बड़े थे. हैदराबाद, जहां कोई राष्ट्रीय चैंपियन नहीं था, के लाल बहादुर स्टेडियम से शुरुआत करके विश्व स्तर का खिलाड़ी बनना असंभव सपने जैसा लग रहा था. लेकिन ऑल इंग्लैंड ओपन में उनकी जीत ने हम में वह जोश भर दिया कि हम भी उनके जैसा कुछ बड़ा कारनामा कर सकते हैं

प्रकाश सर मेरे लिए एक आदर्श रहे हैं और एक पूरी पीढ़ी के लिए इस खेल को अपनाने के प्रेरणास्रोत हैं. यह कहना सही नहीं होगा कि हम कभी उनको पीछे छोड़ने की सोच सकते हैं क्योंकि हमारे लिए तो वे एक देवतुल्य छवि वाले खिलाड़ी हैं. मुझे याद है कि वे 1986 में हैदराबाद आए थे और मैंने उनका ऑटोग्राफ लिया था. मैंने उसे संजोकर रखा है.

1993 में मुझे बेंगलूरू के मल्लेश्वरम में केनरा यूनियन में उनसे प्रशिक्षण लेने का सौभाग्य मिला. कोर्ट पर उनकी चपलता, दमदार स्ट्रोक, प्रतिद्वंद्वी को धोखा देने का कौशल और स्फूर्ति कमाल की थी. शटल पर उनका नियंत्रण उतना ही सुखद था. मैंने भारत के कई शीर्ष खिलाड़ियों के खिलाफ अभ्यास में उनके साथ डबल्स खेला है. हम कई बार जीते, लेकिन इससे भी महत्वपूर्ण वह अनुभव है जो उस अभ्यास मैच में मुझे मिले.

संन्यास के बाद, उन्होंने प्रकाश पादुकोण अकादमी के माध्यम से बैडमिंटन खिलाड़ियों की एक नई पौध तैयार की, टूर्नामेंट आयोजित किए और ओलंपिक गोल्ड क्वेस्ट के सह-संस्थापक रहे हैं. ये ऐसी पहलें हैं जिसने भारतीय बैडमिंटन को उस मुकाम तक तक पहुंचाया, जहां हम आज गर्व से खड़े हैं. ■

पुलेला गोपीचंद *मुख्य राष्ट्रीय बैडमिंटन कोच हैं*

सनी जी ने अपनी अनूठी शैली, अपने ऊंचे मूल्यों और खेल की गहरी समझ के माध्यम से एक अलग छाप छोड़ी है

अलामी स्टॉक फोटो

75 वां
स्वतंत्रता दिवस
विशेषांक

मास्टर स्ट्रोक

सुनील मनोहर गावस्कर, 72 वर्ष

टेस्ट में 10,000 रन बनाने वाले दुनिया के पहले बल्लेबाज ने इस जेंटलमैन गेम में शैली और तकनीक को नए सिरे से परिभाषित किया

सचिन तेंडुलकर

मैं तो तब पैदा भी नहीं हुआ था जब सुनील मनोहर गावस्कर ने 1971 में क्रिकेट की दुनिया में एक सनसनी मचा दी थी. उन्होंने अपनी पहली सीरीज में 774 रन बनाए थे और उस दशक में बड़े हुए हम सभी उनके कारनामों को सुनते बड़े हुए थे. एक युवा के रूप में मुझे पता था कि मेरे सामने आदर्श के रूप में कौन है जिनके जैसा बनने की मुझे कोशिश करनी चाहिए. हमने कई मौकों पर बातचीत की है लेकिन एक मौका मेरे करियर के शुरुआती दौर में आया था जो सबसे अलग है. मैं 14 वर्ष का था और एक विश्वसनीय और लगातार अच्छे प्रदर्शन के बावजूद, मुझे उस स्तर पर सर्वश्रेष्ठ जूनियर क्रिकेटर के रूप में नहीं देखा जाता था. मेरी निराशा को भांपते हुए, एसएमजी ने मुझे प्रोत्साहित करने के लिए एक पत्र लिखा जिसमें उन्होंने कहा कि धैर्य के साथ खेलो, भविष्य में सम्मानों के ढेर लग जाएंगे. इसने मेरे जीवन के उस महत्वपूर्ण दौर में एक महत्वपूर्ण प्रोत्साहन के रूप में कार्य किया. 'लिटिल मास्टर', या 'सनी जी' ने अपनी अद्वितीय शैली, खेल भावना और खेल की गहरी समझ से हमेशा सबको प्रभावित किया है और दिल जीते हैं. वे मेरे हीरो थे और हीरो रहेंगे. क्रिकेट में मेरे पदार्पण से कुछ साल पहले एसएमजी ने रिटायरमेंट ले लिया, और मैं उनके साथ उनकी टीम के सदस्य के रूप में नहीं खेल पाया, इसका मुझे हमेशा अफसोस रहेगा. ■

सचिन तेंडुलकर *भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान हैं*

ट्रैक की सनसनी

पी.टी.उषा,
57 वर्ष

अंतरराष्ट्रीय मंच पर उनके साहसिक कारनामों ने कई भारतीय महिलाओं को एथलेटिक्स में करियर बनाने का सपना देखने को प्रेरित किया

हिमा दास

जब मैं भारत में एथलेटिक्स के बारे में सोचती हूं तो सबसे पहला नाम जो मेरे दिमाग में आता है, वह पी.टी. उषा का है. वे खेल को करियर के रूप में चुनने की चाहत रखने वाली लाखों लड़कियों के लिए प्रेरणास्रोत रही हैं. अपने शुरुआती वर्षों में मैं उनके जैसा बनने की ख्वाहिश रखती थी. मैं अपनी तरफ से प्रयास कर रही हूं और अगर अपने देश की आधी लड़कियों को भी उच्च लक्ष्यों के लिए प्रयास करने के लिए प्रेरित कर सकी, जैसा पी.टी. उषा ने किया तो मैं खुद को धन्य मानूंगी.

पी.टी. उषा ने अपने करियर में कई अंतरराष्ट्रीय पदक और सम्मान जीते. हालांकि वे 1984 के लॉस एंजिल्स ओलंपिक में महिलाओं की 400 मीटर बाधा दौड़ में एक सेकंड के सौवें हिस्से से कांस्य से चूक गईं और चौथे स्थान पर रहीं लेकिन उस दौड़ ने भारत को नई आशा दी. वे एक उत्साही एथलीट हैं, जो ट्रैक पर अपने प्रदर्शन के बूते भारत को विश्व मानचित्र पर लाने के लिए दृढ़ थीं और करके दिखाया भी. वे एक सच्ची पथप्रवर्तक हैं, जिन्होंने खेल और समाज दोनों में अपनी लड़ाई लड़ी, और मेरे और मेरे जैसे अन्य लोगों के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आत्मविश्वास के साथ चमकने के लिए कई रास्ते खोले हैं. ■

हिमा दास *एक ट्रैक और फील्ड एथलीट हैं*

एएफपी वाया गेट्टी इमेजेज

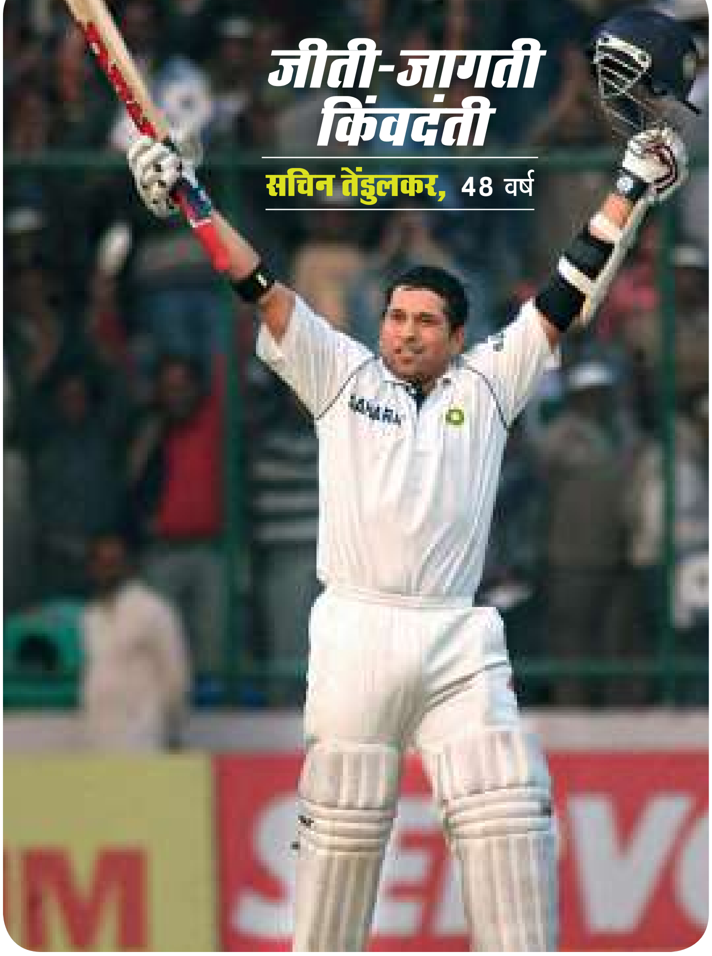

सुमीत इंदर सिंह

जीती-जागती किंवदंती

सचिन तेंडुलकर, 48 वर्ष

विश्व क्रिकेट दो बहुत साफ-साफ युगों में बंटा हैः सचिन से पहले का युग और सचिन के बाद का युग

सौरव गांगुली

मैं सचिन को 35 सालों से जानता हूं और मुझे यह कहने में कोई हिचक नहीं कि वे हमारे इस खेल के सर्वकालीन महानतम खिलाड़ियों में से एक हैं. जब मैंने उन्हें पहली बार देखा तो जो बात मुझे कौंधी वह यह कि वे बस निरंतर बल्लेबाजी करते रहना चाहते थे. जज्बा ऐसा कि आपको अपनी जद में ले ले. बिल्कुल पहली मुलाकात से हमारा जो रिश्ता शुरू हुआ, वह आज भी कायम है. कप्तान के नाते हर बात पर मैं उन्हीं के पास जाता था. 1996 में मेरे पदार्पण टेस्ट में जब मेरे बल्ले को थोड़ा ठोकने-पीटने की जरूरत थी, सचिन ने ही चाय पर उसकी मरम्मत की. अविश्वसनीय प्रतिभा के वरदान के साथ-साथ खेल के प्रति सचिन की निष्ठा और समर्पण ने ही उन्हें वह क्रिकेटर बनाया जो वे अंततः बने. उनके साथ खेलना और उनकी कप्तानी करना सुखद था.

सचिन के साथ रिश्ता बेहद निजी है. हमारे परिवार बहुत करीब हैं. 1990 के दशक के आखिरी सालों में न्यूजीलैंड में मेरी पत्नी डोना ने नन्हीं सारा की थोड़ी देखभाल की ताकि अंजली कुछ नींद ले सकें. बात जब बल्लेबाजी की हो और सचिन टीम में हों तो यह बीमे की तरह था. सौ अंतरराष्ट्रीय शतक—और कुछ कहने की जरूरत ही नहीं. या है? ■

सौरव गांगुली *पूर्व भारतीय क्रिकेट कप्तान हैं*

अपने कोर्ट का बादशाह

लिएंडर पेस, 48 वर्ष

अपनी फिटनेस और नफासत दोनों के लिए जाने जाने वाले अव्वल खिलाड़ी ने भारतीय टेनिस को नई ऊंचाइयों पर पहुंचाया

महेश भूपति

इंडिया टुडे आर्काइव

जूनियर विंबलडन में हिस्सा लेने के दौरान मैंने लिएंडर से भलीभांति बातचीत शुरू की. तब वे जूनियर विंबलडन जीत चुके थे. उसके बाद मैंने उन्हें अदृश्य रुकावटें तोड़ते हुए डेविस कप और 1996 के ओलंपिक में चमत्कारिक प्रदर्शन करते देखा. मैं लिएंडर का मुरीद था. उनके हाथ बहुत तेज थे. उनके रिफ्लेक्स ऐसे थे कि गर्व होता था.

मुरीद से अंततः हम करीबी दोस्त बन गए. फिर हम पार्टनर बने और 1999 में ओपन युग में साल के सभी ग्रैंड स्लैम के फाइनल में पहुंचने वाली पहली जोड़ी बने—शीर्ष वरीय के तौर पर हमने फ्रेंच ओपन और विंबलडन जीता. यह खास था क्योंकि एक पूर्ण भारतीय जोड़ी का ग्रैंड स्लैम जीतना और दबदबे के साथ सीजन शुरू करना अभूतपूर्व था. हमने यह किया और दुनिया भर को हराने वाली टीम बन गए. लिएंडर हमेशा भारत के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ियों में से एक रहेंगे. ■

महेश भूपति *टेनिस खिलाड़ी हैं. पेस के साथ युगल मुकाबलों में उन्होंने कई ग्रैंड स्लैम जीते हैं*

बारूद का बंदा

अभिनव बिंद्रा, 38 वर्ष

निशानेबाजी में उनके व्यक्तिगत ओलंपिक स्वर्ण ने देश में इस खेल को लोकतांत्रिक बनाया

रणधीर सिंह

मैंने अभिनव बिंद्रा को बड़े होते देखा है क्योंकि उसके पिता पटियाला के स्कूल में मेरे जूनियर थे. बचपन में वह कम बोलता था और कई लिहाज से एयर-राइफल निशानेबाज की मिसाल था, जिसमें शॉटगन शूटरों जैसी अकड़ न थी.

अभिनव ने भारत का पहला व्यक्तिगत ओलंपिक स्वर्ण पदक 2008 में बीजिंग में जीता. उसने अपने लक्ष्य पर पूरा ध्यान केंद्रित रखा और जर्मन कोच से प्रशिक्षण लिया. उसके पास एक प्राइवेट रेंज थी जो उसके पिता ने बनवाई थी. मगर जो बात उसे दूसरों से अलग करती है, वह यह कि उसने खुद को मानसिक तौर पर चैंपियन बनने के लिए तैयार किया. बीजिंग से पहले अभिनव दो ओलपिंक में भाग ले चुका था. उसकी मानसिक मजबूती और प्रशिक्षण ने पक्का किया कि पिछले ओलंपिक में सीखे गए अनुभव काम आएं. निशानेबाजी में मनोदशा ही विजेता बनने की कुंजी है.

अलामी स्टॉक फोटो

अभिनव की दूसरी उपलब्धि खेल के तौर पर निशानेबाजी को लोकतांत्रिक बनाना है. ट्रैप और स्कीट दोनों स्पर्धाओं के शॉटगन निशानेबाजों ने अंतरराष्ट्रीय मुकाबलों में हमेशा भारत की नुमाइंदगी की और पदक जीते थे, पर एयर-राइफल और एयर-पिस्टल निशानेबाजों ने ज्यादा नहीं. ज्यादातर शॉटगन शूटर संपन्न पृष्ठभूमि से आए और इसीलिए वे भारी खर्च उठाकर यह खेल खेल पाए. अभिनव ने जो स्पर्धा चुनी—एयर-राइफल शूटिंग—वह भारत में तब बहुत लोकप्रिय नहीं थी. यह शॉटगन शूटिंग के मुकाबले कम ग्लैमरस थी और अपेक्षाकृत कम खर्चीली भी.

अभिनव की कामयाबी ने निशानेबाजी को भारत में लोकप्रिय बनाया. स्कूलों और कॉलेजों ने एयर-राइफल और एयर-पिस्टल निशानेबाजी को बढ़ावा दिया और अब राज्य तथा राष्ट्रीय चैंपियनशिप में हजारों बच्चे हिस्सा लेते हैं. आज भारतीय शूटिंग दस्ते में जगह बनाना अंतरराष्ट्रीय पदक जीतने से कहीं ज्यादा मुश्किल है. ■

रणधीर सिंह *पूर्व ट्रैप और स्कीट निशानेबाज हैं*

हर फन मौला

कपिल देव, 62 वर्ष

ऑलराउंडर कपिल देव ने टीम में आत्मविश्वास भरा और 1983 के विश्वकप में विंडीज के खिलाफ भारत की जीत की पटकथा लिखी.

सुनील गावस्कर

कपिल देव निखंज भारतीय क्रिकेट में ताजा हवा के ऐसे झोंके की तरह आए जिसकी खुशबू आज भी कायम है. क्रिकेट को वे जिस आनंद के साथ खेलते थे कि हर कोई मुरीद हो जाता था. सैकड़ों हजारों युवा, नवोदित क्रिकेटर उनकी तरह खेलना चाहते थे.

भारत के पास पहले भी तेज गेंदबाज थे लेकिन नई गेंद को जिस तरह कपिल घुमाते थे, वैसा करने वाला कोई दूसरा नहीं था. उन्होंने भारत में बल्लेबाजी के अनुकूल पिचों सहित पूरी दुनिया के मैदानों पर विकेट हासिल किए; लगभग तीन साल और आठ शृंखलाओं में, कोई भी सलामी जोड़ी हमारे खिलाफ शतकीय साझेदारी नहीं कर पाई. न सिर्फ एक ओपनिंग गेंदबाज के रूप में उन्होंने अपना सिक्का जमाया बल्कि बल्ले से भी उन्होंने कई मैचों का रुख बदला और भारत के सिर पर जीत का सेहरा बांधा. 1983 वर्ल्ड कप में जिम्बाब्वे के खिलाफ 175 रन की उस नाबाद पारी को कौन भूल सकता है?

हालांकि वानखेड़े की पिच पर पाकिस्तान के खिलाफ अर्धशतक वाली उनकी पारी मेरी सबसे पसंदीदा पारी रही, जहां उन्होंने गेंद को जोरदार घुमाव दिया और खेल हमारे हाथ में आ गया. कपिल कहीं भी क्षेत्ररक्षण कर सकते थे. 1983 के उस अविस्मरणीय फाइनल में विव रिचर्ड्स को आउट करने के लिए उनके द्वारा लपके गए कैच ने मैच बदल दिया था. भारतीय क्रिकेट इतिहास में 'कैप्स' जैसा कोई दूसरा खिलाड़ी नहीं हुआ, जिसने उनकी तरह बल्ले, गेंद और क्षेत्ररक्षण तीनों से, खेल का रुख बदल दिया हो.

आज अगर भारत के पास नई गेंद के साथ जोरदार आक्रमण की टीम है जिससे पूरा क्रिकेट जगत घबराता है, तो यह सिर्फ इसलिए है क्योंकि कपिल ने उन्हें राह दिखाई. सरल शब्दों में कहूं तो, वे न केवल सदी के लिए बल्कि आने वाले युगों के लिए भारत के क्रिकेटर हैं. ■

सुनील गावस्कर *भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान हैं. उन्होंने और कपिल देव ने साथ-साथ अनेक टेस्ट और एकदिवसीय मैच खेले हैं*

एड्रियन मुरेल/गेट्टी इमेजेज

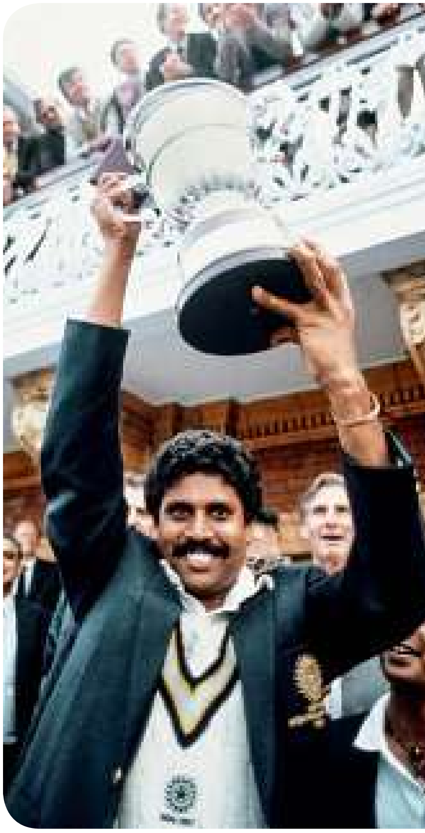

मंदार देवधर

दमदार खानसामा

इम्तियाज कुरैशी, 90 वर्ष

आइटीसी होटल के मास्टर शेफ के रूप में इम्तियाज कुरैशी ने लखनऊ की दम पुख्त तकनीक को लोकप्रिय बनाया. वे पद्मश्री से सम्मानित होने वाले पहले शेफ हैं

रणवीर बरार

शेफ बनने का सपने देखने वाले लखनऊ के एक लड़के के रूप में मैं इम्तियाज कुरैशी की कहानियां सुनता हुआ बड़ा हुआ हूं. कोई मुझे बताता कि उन्होंने शेफ कुरैशी के साथ बिरयानी बनाई थी; तो कोई यह यह कहता कि उन्होंने शेफ कुरैशी से हाथ मिलाया था. मेरे दिमाग में, वे स्पष्ट रूप से एक किंवदंती थे.

1998-99 के आसपास मैं दिल्ली के ताज पैलेस में एक प्रशिक्षु शेफ के रूप में काम कर रहा था. मुझे याद है कि एक बार मैं अपने कमाए 612 रुपए लेकर, पड़ोस के आइटीसी मौर्य गया था और दम पुख्त में केवल गलौटी कबाब लिया था. यह बात कि मैं एक आइटीसी होटल में इम्तियाज कुरैशी का खाना खा रहा था, यह खर्च मुझे जरूरी लगा था. खाना पकाना, उनके लिए एक काम भर नहीं था बल्कि उससे कहीं अधिक था. उन्होंने न केवल दम पुख्त तकनीक को लखनऊ से बाहर पहुंचाया था, बल्कि उन्होंने इसमें अपनी तरफ से उम्दा बदलाव भी किए थे. मुझे लगता है कि यह एक निर्णायक क्षण था.

उनके व्यक्तित्व में भी वह निखार दिखता है. आखिरकार, वे एक उम्दा कारीगर हैं. इसके साथ ही, वे अभी भी पूरे पहलवान हैं. वे आपको उन लोगों की कहानियां सुनाएंगे, जिन्हें उन्होंने किसी दंगल में हराया था. साथ ही आपको उन लोगों के बारे में भी बताएंगे, जिन्हें उन्होंने अपने हाथों से पकाकर खिलाया था. लब्बोलुबाब यह है कि वे अपने व्यंजनों की तरह ही लाजवाब हैं. ■

रणवीर बरार *एक शेफ, टेलीविजन पर्सनैलिटी, लेखक और रेस्त्रां संचालक हैं*

कुकिंग की महारानी

तरला दलाल (1936-2013)

तरला दलाल की व्यंजनों की किताबों ने भारत के घरों में पकने वाले शाकाहारी भोजन में क्रांति ला दी. सिर्फ एक कुकिंग क्लास से शुरू करके, उन्होंने जल्द ही एक फूड एम्पायर बना लिया

संजीव कपूर

यह कहना कि तरला दलाल घरेलू पाक-कला में सबसे बड़ा नाम थीं, केवल आधी कहानी सुनाना होगा. उन्होंने सिर्फ एक कुकिंग क्लास से शुरुआत की, जो इतनी लोकप्रिय हो गई कि जल्द ही पूरे भारत में तरला दलाल कुकिंग क्लासेज चलने लगीं. मुंबई में, विदेशी व्यंजन जो सामान्यत: केवल होटलों में उपलब्ध हुआ करते थे, वे तरला दलाल की बदौलत घरों की रसोई तक पहुंच गए. पुस्तकें उनकी एम्बेस्डर बनीं.

मेरा टीवी करियर शुरू होने के कुछ ही साल बाद, प्रकाशकों ने मुझे कुकबुक लिखने के लिए प्रोत्साहित करना शुरू किया. मैं हैरान था. जब लोग बिना कोई पैसे चुकाए मुझे खाना बनाते हुए देख सकते थे तो वे मेरी किताब क्यों खरीदेंगे भला? फिर किसी ने मुझे बताया कि तरला दलाल एक साल में कितना रॉयल्टी कमाती हैं. यह सुनकर मैं अपनी कुर्सी से लगभग गिर ही गया था. मुझे अगर उसका 20 प्रतिशत भी मिल जाता तो मैं खुशी से नाच उठता. मैं अपनी 150 किताबों के लिए उनका दिल से धन्यवाद करता हूं.

उनके बारे में सोचने भर से ही मेरे चेहरे पर मुस्कान आ जाती है. मुझे लगता है कि बहुत सी महिलाओं के साथ भी ऐसा ही होता होगा. जिस समय वे लोकप्रिय थीं, उस समय पाक कला ने कई महिलाओं के जीवन को परिवर्तित किया. मेरे विचार से, उन्होंने उन महिलाओं खाना बनाना सिखाकर उन्हें बंधनमुक्त नहीं किया बल्कि उनके अंदर यह विश्वास जगाया कि हां, वे जो चाहें कर सकती हैं. ■

संजीव कपूर *एक शेफ, उद्यमी और टेलीविजन हस्ती हैं*

अशेष शाह

बटर चिकन के जन्मदाता

कुंदन लाल गुजराल (1902-1997)

विभाजन के समय पेशावर से दिल्ली आने के बाद कुंदन लाल गुजराल ने सबसे पहले दरियागंज में मोती महल की शुरुआत की. रेस्तरां ने जल्द ही अपने नए और लजीज व्यंजनों के साथ उत्तर भारतीय भोजन में क्रांति ला दी

मनीष मेहरोत्रा

जवाहरलाल नेहरू और राज कपूर ने, 1960 के दशक में बेशक मोती महल में खाना खाया होगा लेकिन पटना से होने के कारण मैंने पहली बार वहां 90 के दशक के मध्य में ही खाना खाया था. मैं तब होटल प्रबंधन का छात्र था और मुझे भोजन के बारे में इतना ज्ञान तो था कि अनुभव कर सकूं कि मैं एक ऐसी जगह खा रहा था जहां से एक नहीं बल्कि तीन प्रतिष्ठित व्यंजन—बटर चिकन, तंदूरी चिकन और दाल मखनी पैदा हुए थे. यह निश्चित रूप से लाजवाब था.

भारतीय भोजन में दूसरे बहुत से लोगों ने जो योगदान दिया है उसे भी अनदेखा नहीं किया जा सकता, लेकिन कुंदन लाल गुजराल का योगदान बहुत बड़ा है. उन्होंने ही इन व्यंजनों को बनाया जो आज अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत का प्रतिनिधित्व करते हैं. उनके तीन अपने व्यंजनों ने युवा शेफ को स्वयं के अनगिनत व्यंजन तैयार करने के लिए प्रोत्साहित किया है. तंदूरी लॉबस्टर (झींगा) जो मैंने एक बार मिशेलिन 3-सितारा रेस्तरां के मेनू में देखी था, वह भी उनके तंदूरी चिकन रेसिपी से प्रेरित था. आपको पूरी दुनिया में उनके व्यंजनों की नकल वाले हजारों व्यंजन मिल जाएंगे.

जूलिया चाइल्ड ने एक बार कहा था कि किसी व्यंजन में कभी भी मक्खन की मात्रा पर्याप्त नहीं हो सकती. मुझे लगता है कि कुंदन लालजी के बटर चिकन ने उस बात को झुठलाते हुए स्वाद का जबरदस्त संतुलन बनाया है. आखिरकार यह व्यंजन आत्मा को तृप्त जो कर देता है.■

मनीष मेहरोत्रा *पुरस्कार विजेता शेफ हैं. उन्होंने 2009 में इंडियन एक्सेंट लॉन्च किया था*

वाइन के दिग्गज

राजीव सामंत, 54 वर्ष

1997 में, राजीव सामंत ने नासिक में अंगूर उगाना शुरू किया और 1999 तक उनकी कंपनी सुला 50,000 बोतल शराब बेच रही थी. उनका उदय बताता है कि जब आपके पास नई शराब होती है, तो आप पुरानी बोतलों को छोड़ देते हैं

ए.डी. सिंह

उमेश गोस्वामी

राजीव के अमेरिका से लौटने के तुरंत बाद मेरी उनसे दोस्ती हुई थी. जब उन्होंने मुझसे कहा था कि वे वाइन कारोबार में उतरना चाहते हैं, तब मेरे मन में कई संदेह उपजे थे: क्या लोग भारत में बनी वाइन पिएंगे? क्या यहां कोई अच्छी वाइन भी बना सकता है? उस समय लोग बमुश्किल वाइन पीते थे और जो वाइन वे पीते थे, वह अक्सर खराब गुणवत्ता की होती थी.

मुझे याद है कि राजीव उत्पादन को लेकर कितने प्रोफेशनल थे. उन्होंने एक अच्छे वाइनमेकर को साथ लाकर उत्पादन की शुरुआत की—लेकिन जो बात मुझे और भी अधिक प्रभावित करती थी, वह यह थी कि उन्होंने जिस तरह वाइन की मार्केटिंग की वह मजेदार और अंतरराष्ट्रीय स्तर की भी थी. उनके एक्सपोजर और व्यक्तित्व ने उन्हें बहुत जल्दी युवा लोगों से जुड़ने में मदद की. अचानक, वाइन प्रचलन में आई और पीना 'कूल' माना जाने लगा. यह देखकर कि लोगों की दिलचस्पी कितनी बढ़ गई है, हमने ओलिव में वाइन क्लब भी शुरू किया. जीवनशैली की उस क्रांति को आगे बढ़ाने और चलाने का श्रेय मैं राजीव को देता हूं.

चूंकि वाइन अंततः फलों का रस है, इसलिए इसे पीना दुनिया भर में सामाजिक रूप से स्वीकार्य है. दुनिया के कुछ हिस्सों में लोग इसे पानी की तरह पीते हैं. राजीव ने वास्तव में भारत में वाइन पीने को और अधिक हानिरहित बनाने में मदद की. महत्वपूर्ण बात यह है कि उन्होंने लोगों के मन को बदलने के क्रम में कभी गुणवत्ता की को लेकर अपनी समझ और दृष्टि नहीं बदलने दी. कोई आश्चर्य नहीं कि सुला अब विदेशों में भी बेची जाती है. ■

ए.डी. सिंह ऑलिव *ग्रुप ऑफ रेस्तरां के संस्थापक और प्रबंध निदेशक हैं*

मेड इन इंडिया

कपिल मोहन (1929-2018)

पद्मश्री से सम्मानित शराब कारोबारी ने भारत के सबसे प्रतिष्ठित शराब ब्रांड में से एक ओल्ड मोंक बनाया

डेसमंड नजारेथ

कपिल ने अपने उत्पादों की मार्केटिंग से इनकार कर दिया क्योंकि संवेदी अनुभव सर्वोपरि होते हैं, पीने वालों को लंबे समय तक याद रहता है

साल 2010 या उसके आसपास से, हमने भारतीय एल्कोबेव [अल्कोहलिक बेवरेज] परिदृश्य में नवाचार का एक अप्रत्याशित विस्फोट देखा है, जिसमें 'मेड इन इंडिया' उत्पाद, वैश्विक मीडिया का ध्यान काफी खींच रहे हैं. अपेक्षाकृत बड़े भारतीय खिलाड़ियों की ओर से विश्वस्तरीय सिंगल माल्ट्स, भारतीय वाइन, कुछ विशिष्ट भारतीय परंपरागत मदिरा और शराब, कई तरह की जिन, कुछ रम और वोदका से संबंधित उत्पादों की शुरुआत देखी गई.

20वीं शताब्दी के दौरान, अधिकांश भारतीय शराब कंपनियों ने वे उत्पाद बनाए जिनकी ज्यादा मांग है और जिन्हें भारत में निर्मित विदेशी शराब (आइएमएफएल) के रूप में वर्गीकृत किया गया है. इस विषय की चर्चा करते हुए, कुछ भारतीय अलकोबेव अग्रदूतों को याद करना चाहूंगा, जिनके योगदान की अनदेखी की गई है. ओल्ड मोंक रम, सोलन नंबर 1 व्हिस्की और गोल्डन ईगल बियर जैसे प्रतिष्ठित भारतीय ब्रांडों के निर्माता पद्मश्री कपिल मोहन ऐसे चंद मुट्ठी भर लोगों में शामिल हैं जिनके उत्पादों ने सफलता के झंडे गाड़े हैं.

एक पूर्व सैनिक कपिल, शराब को हाथ भी नहीं लगाते थे लेकिन उन्होंने लगभग 40 वर्षों तक अपने परिवार की मूल कंपनी मोहन मेकिन को चलाया. उन्होंने अपने उत्पादों की मार्केटिंग और सरोगेट विज्ञापन के विचार को पूरी तरह से खारिज कर दिया और इस बात पर जोर दिया कि संवेदी अनुभव सर्वोपरि होते हैं यानी शराब का स्वाद है जो पीने वाले के दिमाग पर लंबे समय तक छाया रहता है. कंपनी ने एक बिंदु के बाद अपने ब्रांडों को आगे नहीं बढ़ाया और बाजार की बड़ी हिस्सेदारी गंवा दी. 1970 के दशक के अपने उच्च स्तर की तुलना में ओल्ड मोंक की बिक्री कम हो गई, लेकिन फिर भी उस समय तक इसने अपने शौकीनों की एक बड़ी जमात तैयार कर ली थी जो आज तक कायम है. कपिल को अपने मैन्युफैक्चरिंग संयंत्रों के आधुनिकीकरण का श्रेय दिया जाता है और उनके पूर्व कर्मचारी उनकी उदार, मानवीय और समावेशी प्रबंधन शैली को आज भी याद करते हैं. गलाकाट मुकाबले वाले अल्कोबेव की दुनिया में, कपिल की उपलब्धियों को सम्मान के साथ देखा जाना चाहिए. ■

डेसमंड नजारेथ *एगेव इंडिया के संस्थापक और प्रबंध निदेशक हैं*

OLD MONK
WHITE RUM

यशवंत नेगी

इंडियन एक्सप्रेस

चतुर रणनीतिकार

विट्ठल माल्या (1924-1983)

अपने असामयिक निधन से पहले, वे भारत के चार प्रमुख व्यापारिक दिग्गजों में से एक थे

किरण मजूमदार-शॉ

विट्ठल माल्या ने बीयर और स्पिरिट कारोबार के दम पर विभिन्न वस्तुओं के कारोबार वाला विशाल व्यापार समूह बनाकर किस्मत गढ़ी. मुझे बचपन से ही उन्हें जानने का सौभाग्य प्राप्त हुआ क्योंकि मेरे दिवंगत पिता, माल्या की ओर से यूनाइटेड ब्रूअरीज (यूबी) के अधिग्रहण से पहले से ही यूबी के एमडी थे. माल्या ने किसान, बर्जर पेंट्स, हिंदुस्तान पॉलिमर और मंगलौर फर्टिलाइजर्स जैसी कंपनियों के साथ अपने साम्राज्य का विस्तार किया. वे कैडबरी इंडिया, हेक्स्ट फार्मा, बायर इंडिया और सिंगर में सबसे बड़े शेयरधारक भी थे. 1980 तक उनके व्यवसाय का मूल्य 500 करोड़ रु. से अधिक था, जिसने उन्हें धीरूभाई अंबानी, रतन टाटा और आदित्य बिड़ला के साथ देश के चार प्रमुख कारोबारी दिग्गजों में से एक बना दिया.

विट्ठल माल्या चतुर रणनीतिकार थे, जो बीमार कंपनियों को लाभदायक उद्यम बनाने में सक्षम थे. 1983 में उनकी असामयिक मृत्यु के समय, उनके साम्राज्य में 30 ब्रूअरी और 11 डिस्टिलरी शामिल थीं. उन्होंने किंगफिशर लागर, मैकडॉवेल्स व्हिस्की और ब्लू रिबैंड जिन जैसे कई ब्रांड बनाए.

व्यक्तिगत जीवन की बात करूं तो, वे एकांतप्रिय और मितव्ययी थे. वे एक पुरानी फिएट खुद चलाकर काम पर जाते थे, जबकि उनके पिता एक बड़ी डेमलर में जाते थे जिसे एक शोफर चलाता था. वे जोखिम लेने वाले व्यक्ति थे जिन्हें बेंगलूरू को विश्व मानचित्र पर यूबी समूह के मुख्यालय के रूप में स्थापित करने के लिए याद किया जाएगा. ■

किरण मजूमदार-शॉ *बायोकॉन और बायोकॉन बायोलॉजिक्स की कार्यकारी अध्यक्ष हैं*

स्टाइल का उद्योगपति

बिक्की ओबेरॉय, 91 वर्ष

अपने लंबे करियर में ओबेरॉय समूह की प्रमुख इकाई ईआइएच के अध्यक्ष, पृथ्वी राज सिंह 'बिक्की' ओबेरॉय ने अपने नाम को विलासिता का पर्याय बना दिया

अमन नाथ

एक जमाने में खन्ना, अरोड़ा, बत्रा या पुरी की तरह ओबेरॉय सिर्फ एक पंजाबी नाम हुआ करता था. उसके बाद बिक्की ओबेरॉय का प्रवेश हुआ और विलासिता की सारी कहानियां एक सराहनीय उद्यम और व्यापार शैली की किंवदंती बन गईं.

1980 के दशक में निजामुद्दीन के मेरे अपार्टमेंट को ब्रिटिश *हाउस ऐंड गार्डन* में बिक्की के फार्म और राष्ट्रपति भवन के साथ जगह मिली. बिक्की उत्सुक थे. वे कभी घर नहीं आए, लेकिन उन्होंने हरियाणा की उस हवेली का दौरा किया जो खंडहर थी पर बाद में उसका जीर्णोद्धार किया गया था. वे तुरंत उसे खरीदना चाहते थे. सोहना गोल चक्कर पर मिलने की तारीख तय हुई. वे एक लंबी काली लिमो में दो लंबे-चौड़े मर्दों के साथ पहुंचे. लेकिन वे मेरी सलाह मानकर मेरी जिप्सी में आने के लिए तैयार हो गए.

मैंने बिक्की को ठीक से जाना जब वे अपने ब्रांड को भारत में फैलाने के लिए अच्छे 3-स्टार पार्टनर की तलाश में थे. मेरे साथी फ्रांसिस वाक्जियार्ग फ्रांसीसी एकोर समूह का प्रतिनिधित्व करते थे. उन्होंने अपने ट्राइडेंट ब्रांड में एकोर तकनीक के साथ जो किया वह काबिले तारीफ था. बिक्की के कर्मचारी उनकी प्रशंसा भी करते हैं और उनसे डरते भी हैं. वे बहुत अशिष्ट हो सकते हैं—लेकिन वे दक्षता चाहने वाले नियोक्ता हैं. पृथ्वी राज सिंह वास्तव में 'शेर और धरती के राजा हैं.' लेकिन आंखें फाड़कर देखे गए बहुत बड़े सपनों को पूरा नहीं करने के लिए उन्हें कभी भी दोषी नहीं ठहराया जाएगा. ■

अमन नाथ *नीमराणा होटल ग्रुप के संस्थापक चेयरमैन, आइएनटीएसीएच के संस्थापक सदस्य और लेखक हैं*

सैबल दास

अलामी स्टॉक फोटो

अंतरात्मा की आवाज

मदर टेरेसा (1910-1997)

अपने जीवनकाल के दौरान मदर टेरेसा ने देशों की सीमाओं के परे जाकर करुणा का संदेश दिया, बेघर जरूरतमंदों के लिए धर्मशालाएं, कुष्ठ रोगियों के लिए आश्रय स्थल और जरूरतमंदों के लिए भोजनालय बनवाए

नवीन बी. चावला

सन् 1948 में एक 38 वर्षीय अल्बानियाई नन ने लोरेटो कॉन्वेंट के परिसर से बाहर निकलकर कलकत्ता की गलियों में कदम रखा. उनके पास न पैसा था, न ही साथी, पर एक चीज प्रचुर मात्रा में थी—विश्वास. हर तरफ बदहाली और तंगी थी, विभाजन और अकाल के शिकार लोग थे. जब एक अस्पताल ने एक मरणासन्न आदमी को भर्ती करने से इनकार कर दिया, तो उन्होंने बेसहारा लोगों के लिए एक छोटा आश्रय शुरू किया. उनके लिए भोजन और दवाओं की दरकार थी, इसके लिए वे भीख भी मांगा करती थीं. उनसे मेरे 23 साल के जुड़ाव में वे अक्सर कहा करती थीं कि उन्होंने सबसे बड़े डर अपमान पर काबू पाया था.

1997 में मृत्यु से पहले उन्होंने 123 देशों में बेघर, भूखे, मरणासन्न और निराश्रितों के लिए धर्मशालाएं, कुष्ठ गृह, भोजनालय और शिशु भवनों का निर्माण कराया था. उनके पास 5,000 सिस्टर्स और लाखों वॉलंटियर थे. उनका मानना था कि वे जिन-जिन लोगों तक भी पहुंच सकीं हैं, उन्हें हर उस मानव रूप में भगवान दिखे, इससे फर्क नहीं पड़ता कि वह व्यक्ति किस धर्म को मानने वाला है. दुनिया ने उनके प्रयासों को पहचाना और विभिन्न पुरस्कारों/सम्मानों से विभूषित किया. सत्ता में कोई भी हो, हर शख्स के मन में उनके लिए भरपूर आदर था. वे दुनिया की तंग गलियों/झुग्गियों में सबसे ज्यादा खुश महसूस करती थीं. इस सेवा संकल्प के साथ वे दुनिया की अंतरात्मा की रक्षक बन गई थीं. ■

> **जरूरतमंदों के लिए भोजन और दवाओं की खातिर उन्होंने सड़कों पर भीख तक मांगी. वे अक्सर कहा करती थीं कि अपने सबसे बड़े डर अपमान से उन्होंने पार पाया**

नवीन चावला *सेवानिवृत्त आइएएस अफसर, पूर्व मुख्य चुनाव आयुक्त और मदर टेरेसा की जीवनी के लेखक हैं*

अध्यात्म में भोग का तड़का

ओशो (1931-1990)

अपने जीवनकाल में वे कई नामों से जाने गए—रजनीश, भगवान, ओशो—पर दकियानूसीपन से मुक्त खुले रवैये और, हां, रोल्स रॉयस के प्रति उनके प्यार ने इस आध्यात्मिक नेता को वाकई लोकप्रिय बनाया

मां आनंद शीला

जब भगवान मेरे सामने होते थे, उस समय मेरे लिए और किसी भी चीज का कोई अस्तित्व नहीं होता था. मैं बस उनकी आंखें, उनके हाथ, उनका चेहरा देखती रहती थी. ऐसी गरिमापूर्ण उपस्थिति मैंने पहले कभी नहीं देखी थी और मेरी आंखें अब भी उनमें बस वही देख पाती हैं. मुझे लगता है यह शर्मनाक है कि कुछ लोग उन्हें बस 'सेक्स गुरु' मानते हैं. हां, वे 'सेक्स और यौनिकता' को समझने वाले शख्स थे, पर वे दुनिया से इसकी वर्जना को त्यागने के लिए कह रहे थे. भगवान उकसाते थे. वे चाहते थे कि हम अपने विश्वासों से बाहर आएं और कुछ अलहदा देखें. वे कहा करते थे कि लोग बाहर आकर उस चांद को, जिसकी तरफ वे इशारा कर रहे हैं, तभी देखेंगे जब वे उन्हें भरोसा दिला सकें कि उनके घर में आग लगी है.

भारत और पश्चिम दोनों में लोग '60 और '70 के दशक में अपनी सामान्य जीवनशैली से आजिज आ चुके थे. वे ज्यादा मौजूं फलसफों की तलाश में थे. यह कुछ ऐसा था जो उन्हें खुद उनके भीतर ही मिल सकता था. प्रेम, जीवन, हंसी और स्वीकृति के बारे में भगवान की सीखों ने हम सब लोगों को लुभाया जो उस वक्त युवा थे. उनके साथ काम कर पाना, उनसे प्यार कर पाना खजाना हाथ लगने की तरह था. उनकी ज्यादती, उनके किए-धरे के बारे में बहुत कुछ कहा जाता है, पर वह उनकी जिम्मेदारी थी. मैंने उनसे जो सीखा, वह मेरा है.■

मां आनंद शीला *ओशो की निजी सचिव और रजनीश आंदोलन आंदोलन की प्रवक्ता थीं*

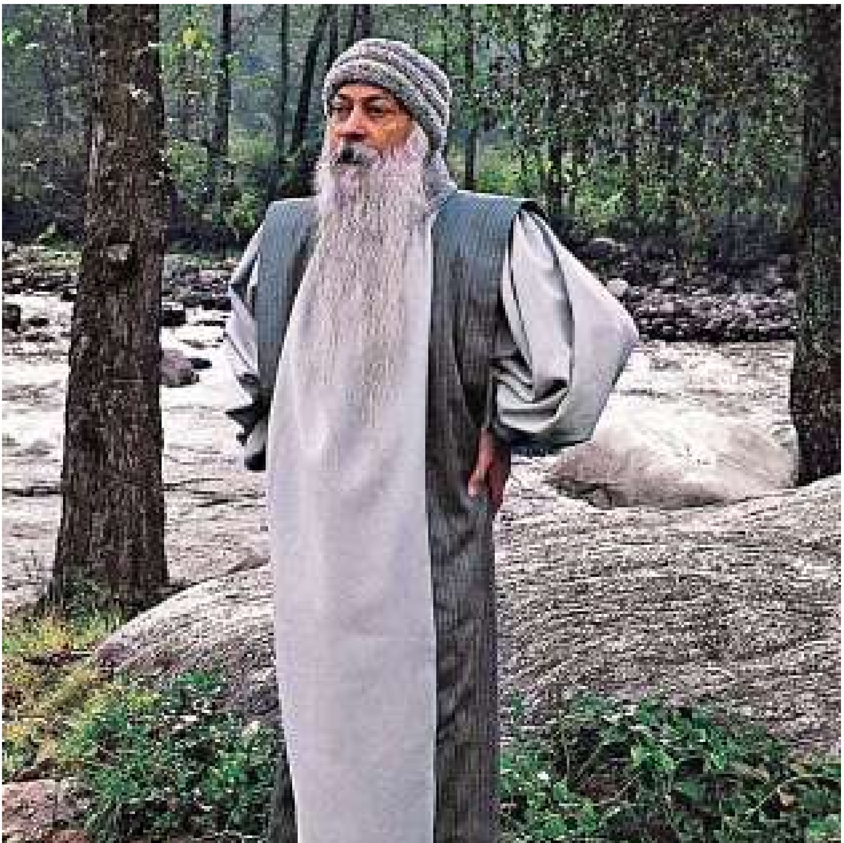

इंडिया टुडे आर्काइव

अलामी स्टॉक फोटो

लेखक की राह

आर.के. नारायण

(1906-2001)

भारतीय अंग्रेजी उपन्यास की शुरुआती नींव रखने वाले आर.के. नारायण ने 1947 के बाद के भारत को *द गाइड* सरीखे क्लासिक के साथ एक आख्यान दिया. अहम शायद यह भी कि उन्होंने *मालगुडी* से देश को कल्पित ग्राम्य जीवन की मनोरम झांकी दिखाई

पेरुमल मुरुगन

उस समय मैं कक्षा आठ में पढ़ रहा था. मेरी अंग्रेजी पाठ्यपुस्तक में आर.के. नारायण की एक कहानी *इंजन ट्रबल* पढ़ाई जाती थी. मुझे याद आता है कि जब हमारे शिक्षक इस कहानी को समझाते थे तो हम हंसते-हंसते लोटपोट हो जाया करते थे. तभी से मेरे भीतर आर.के. नारायण के प्रति गहरा खिंचाव विकसित हुआ. एक तरह से उन्होंने मुझे अपनी दूसरी कहानियां तलाशने के लिए उकसा दिया.

कुछेक साल बाद एक दिन मैंने देखा

कि हमारे यहां की पब्लिक लाइब्रेरी से गैरजरूरी किताबें फेंकी जा रही हैं. मैं पुरानी किताबों के उस ढेर में उतर पड़ा और मैंने *स्वामी ऐंड फ्रेंड्स* की अनूदित प्रति खोज ली. यह 1935 में लिखा गया आर.के. नारायण का पहला उपन्यास था. मैं उस उपन्यास में उकेरी गई बच्चों की दुनिया को कभी भूल नहीं पाया, न ही मैंने उनकी दुनिया की अपनी दुनिया से तुलना बंद की.

किसी वक्त मेरे मन में भी ऐसा एक उपन्यास लिखने की इच्छा जोर मारने लगी जिसमें मेरी दुनिया का वर्णन हो. मुझे तीव्र एहसास हुआ कि मुझे कृषि भूमि को, यानी उन खेतों को जिनमें खेलते हुए मैं बड़ा हुआ था, केंद्रीय चरित्र बनाकर एक उपन्यास लिखना ही होगा. इस तरह मेरे उपन्यास *कूलमातरी* का जन्म हुआ.

> ***स्वामी ऐंड फ्रेंड्स* में आर.के. नारायण ने जो दुनिया रची, उसे मैं कभी भुला ही नहीं पाया...आखिरकार इसी ने मुझे इस बात के लिए प्रेरित किया कि उपन्यासकार बनकर मैं अपनी दुनिया का सृजन करूं**

दुनिया जानती है कि आर.के. नारायण तमिलनाडु के थे, पर जब मुझे इत्तफाकन पता चला कि वे मेरे मूल जिले नामक्कल के एक कस्बे रासीपुरम (आर.के. नारायण में आर इसी का द्योतक है) से आते हैं, तो मेरी खुशी का पारावार न रहा. मुझे इस पर उल्लास और गर्व महसूस हुआ कि यह मेरे ही मूल स्थान का एक लेखक था जिसने मुझे लिखने की प्रेरणा दी. ■

पेरुमल मुरुगन *एक तमिल उपन्यासकार और अध्येता हैं*

भाषा जो उनकी अपनी है

सलमान रुश्दी 74 वर्ष

सलमान रुश्दी के खिलाफ 1989 में ईरान के अयातुल्लाह खोमैनी के फतवे ने लेखक की राजनीति पर भले ध्यान केंद्रित किया हो, पर *मिडनाइट्स चिल्ड्रन* सरीखी उनकी किताबों का गद्य ही है जो आज भी आनंदित करता है

जीत थाइल

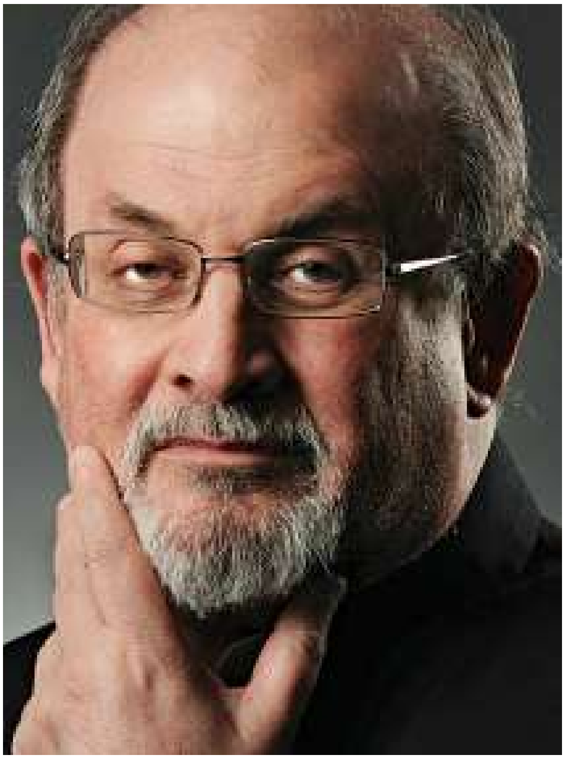

टी. नारायण

आज *मिडनाइट्स चिल्ड्रन* पढ़ने वाले पाठकों को 1981 में इस उपन्यास के रहस्योद्घाटक ढंग से सामने आने के बारे में शायद पता न हो. मैं मुंबई में यानी उस शहर में जिसे पृष्ठभूमि बनाकर यह किताब लिखी गई, विल्सन कॉलेज का छात्र था. विल्सन का कैंपस ठीक उसी शैली में डिजाइन किया गया है जिसे भारतीय गॉथिक शैली कहा जा सकता है. यह अरब सागर की बिल्कुल कगार पर स्थित है. अस्सी के दशक की शुरुआत में भारतीय छात्र अर्थशास्त्र और वाणिज्य के पाठ्यक्रमों में नाम लिखवाते थे. शहरी मध्यम वर्ग के अंग्रेजी बोलने वाले शहजादों की छोटे कस्बों और गांवों से आए क्षेत्रीय भाषा के छात्रों के साथ एक साझा महत्वाकांक्षा होती कि ऐसी नौकरी हासिल कर लें जो उन्हें नए भारत का हिस्सा बना दे.

अंग्रेजी साहित्य के कोर्स में मैं अकेला छात्र था और डिग्री पूरी करने में लगने वाले तीनों साल मुझे अकेला ही रहना था. *मिडनाइट्स चिल्ड्रन* उस समय ऐसी किताब थी जिसे दोस्त एक दूसरे को उधार दिया करते. इसी तरह मुझे भी अपनी प्रति मिली. *ऑल अबाउट एच हेटर* और बॉम्बे स्कूल की कविताओं को छोड़कर इस तरह का दूसरा कोई लेखन न था. मैं भारतीय अंग्रेजी के साथ उस किस्म के खिलंदड़पन के बारे में सोच रहा हूं, उस आविष्कारशीलता के बारे में, जो महज प्रवाह और वाक्पटुता के पार चली जाती है और उपमहाद्वीप के लेखन के लिए नई संभावनाओं के दरवाजे खोल देती है. मुझे याद है मैं अपने से बार-बार पूछताः क्या तुम यह कर सकते हो? आपको पता ही है, उत्तर हमेशा हां ही होता है. ■

जीत थाइल *कवि, संगीतज्ञ और उपन्यासकार हैं. उनका उपन्यास नारकोपोलिस 2012 में मैन बुकर प्राइज के लिए शॉर्टलिस्ट हुआ था*

आज़ादी का
अमृत महोत्सव

आजादी की 75वीं वर्षगांठ
स्वाधीनता का

अमृत महोत्सव

इंपैक्ट प्रस्तुति

> ये हमारा सौभाग्य है कि समय ने, देश ने, इस अमृत महोत्सव को साकार करने की जिम्मेदारी हम सबको दी है। एक तरह से ये प्रयास है कि कैसे आजादी के 75 साल का ये आयोजन, आजादी का ये अमृत महोत्सव भारत के जन-जन का, भारत के हर मन का पर्व बने
>
> — नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

किसी राष्ट्र का गौरव तभी जागृत रहता है जब वह अपने स्वाभिमान और बलिदान की परंपराओं को अगली पीढ़ी को भी सिखाता है। जब वह अपने अतीत के अनुभवों और विरासत के गर्व से जुड़ा रहता है तो वह सही मायनों में विकास के मार्ग पर आगे बढ़ता है। इस मामले में भारत के पास तो गर्व करने के लिए अथाह भंडार और समृद्ध इतिहास है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इसी मूल मंत्र को अपनाते हुए भारत की स्वतंत्रता के 75 साल पूरे होने के उपलक्ष्य में ‘आजादी का अमृत महोत्सव’ मनाने का फैसला लिया। प्रधानमंत्री ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की दांडी यात्रा के 12 मार्च, 2021 को 91 वर्ष पूरे होने के अवसर पर साबरमती आश्रम से दांडी तक की पदयात्रा को झंडी दिखाकर इस कार्यक्रम का शुभारंभ किया। देश में यह कार्यक्रम आजादी की 75वीं वर्षगांठ से 15 अगस्त, 2022 से 75 सप्ताह पूर्व शुरू किया गया है जो 15 अगस्त, 2023 चलेगा। आजादी का अमृत महोत्सव की 15 अगस्त, 2021 से व्यापक स्तर पर शुरुआत की जाएगी।

अंग्रेजों ने भारत के मूल्यों के साथ-साथ इसकी आत्मनिर्भरता पर भी प्रहार किया था। वर्ष 1930 में ब्रिटिश शासन में भारतीयों को नमक बनाने का अधिकार नहीं था। उन्हें इंग्लैंड से आने वाला नमक का ही इस्तेमाल करना पड़ता था। इतना ही नहीं, अंग्रेजों ने इस नमक पर कई गुना कर भी लगा दिया था। महात्मा गांधी ने देश के इस दर्द को समझा और आमजन से जुड़ी उस नब्ज को पकड़ा। लोगों के इस दर्द के विरोध में 12 मार्च, 1930 को उन्होंने नमक सत्याग्रह की शुरुआत की थी। इसके तहत उन्होंने अहमदाबाद स्थित साबरमती आश्रम से 24 दिन की यात्रा शुरू की गई थी जो समुद्र के किनारे बसे शहर दांडी के लिए थी जहां जाकर बापू ने औपनिवेशिक भारत में नमक बनाने के लिए अंग्रेजों के एकछत्र अधिकार वाला कानून तोड़ा और नमक बनाया था। उन्होंने 24 दिन में 340 किलोमीटर की दूरी तय की। नमक सत्याग्रह के दौरान 8,000 भारतीयों को जेल में डाल दिया गया था। लेकिन आंदोलन जारी रहा और एक साल बाद महात्मा गांधी की रिहाई के साथ खत्म हुआ। तब गांधी जी ने नमक हाथ में लेकर कहा था कि इसके साथ मैं ब्रिटिश साम्राज्य की नींव को हिला रहा हूं। उनका यह संकल्प आगे चलकर सफल साबित हुआ।

उस दौर में नमक भारत की आत्मनिर्भरता का एक प्रतीक था। कुछ ही दिनों में गांधी जी का यह आंदोलन हर एक भारतीय का आंदोलन बन गया। आगे चलकर यह हर एक भारतीय का संकल्प बन गया। हमारे यहां नमक का मतलब किसी सामान्य वस्तु से नहीं है। इसका मतलब है- ईमानदारी, विश्वास और वफादारी। यह कहावत आज भी कहीं भी सुनने को मिल जाएगी कि हमने देश का नमक खाया है। ऐसा इसलिए नहीं क्योंकि नमक कोई बहुत कीमती वस्तु है बल्कि यह इसलिए क्योंकि नमक हमारे यहां श्रम और समानता का प्रतीक है। इसीलिए नमक को टैक्स दायरे से बाहर रखा जाता है। उद्यमी भी कम से कम मार्जिन पर नमक का कारोबार करते हैं। दांडी मार्च को नमक सत्याग्रह के तौर पर भी जाना जाता है। इस आंदोलन ने मार्टिन लूथर किंग जूनियर और जेम्स बेवल जैसे दिग्गजों को प्रेरित किया। गांधी जी के नमक सत्याग्रह को दुनिया के सर्वाधिक प्रभावशाली आंदोलनों में शामिल है।

दांडी तक फ्रीडम पदयात्रा

गांधी जी की इस यात्रा ने आजादी के संघर्ष को एक नई प्रेरणा के साथ जन-जन से जोड़ दिया था। साथ ही अपनी आजादी को लेकर भारत के नजरिए को पूरी दुनिया तक पहुंचा दिया था। ऐसा इसलिए क्योंकि बापू की दांडी यात्रा में आजादी के आग्रह के साथ साथ भारत के स्वभाव और भारत के संस्कारों का भी समावेश था। गांधी जी की दांडी यात्रा के ऐतिहासिक क्षणों को पुनर्जीवित करने के लिए 12 मार्च, 2021 को नमक सत्याग्रह के 91 वर्ष पूरे होने के अवसर पर प्रधानमंत्री मोदी ने साबरमती आश्रम से दांडी तक फ्रीडम पदयात्रा को हरी झंडी दिखाकर अमृत महोत्सव की शुरुआत की। इस यात्रा के पहले पहले चरण में केंद्रीय मंत्री प्रह्लाद पटेल के नेतृत्व में 81 लोगों को रवाना किया गया। उन्होंने निर्धारित कार्यक्रम के तहत चार दिन में नाडियाद तक 75 किलोमीटर तक पदयात्रा चार दिन में पूरी की। इसमें केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह, गुजरात के मुख्यमंत्री विजय रूपाणी, सांसद देवू सिंह चौहान सहित भाजपा के कई वरिष्ठ नेता शरीक हुए। दांडी यात्रा में महात्मा गांधी सहित 80 स्वतंत्रता सेनानियों ने भाग लिया था, इसी बात को ध्यान में रखकर इस फ्रीडम मार्च में भी 80 पदयात्रियों को शामिल किया गया। दांडी के रास्ते में विभिन्न समूहों के लोग शामिल हुए। गुजरात के ऐतिहासिक दांडी गांव में ‘आजादी का अमृत महोत्सव’ के तहत आयोजित यह 25 दिन लंबी यह प्रतीकात्मक यात्रा छह अप्रैल को संपन्न हुई। इस अवसर गांधी जी के योगदान को याद करने के लिए एक समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर उप राष्ट्रपति एम. वेंकैया नायडू सभी से महात्मा गांधी से प्रेरणा लेने के लिए कहा जिन्होंने अपने विरोधियों के लिए भी हमेशा विनम्र और सम्मानजनक भाषा का इस्तेमाल किया। उन्होंने नसीहत दी कि राजनीतिक दलों को एक दूसरे के साथ प्रतिद्वंद्वियों के तौर पर पेश आना चाहिए न कि दुश्मन के तौर पर।

देशभर में कार्यक्रम

प्रधानमंत्री के आह्वान पर अमृत समारोह के तहत देशभर में कार्यक्रमों का आयोजन चल रहा है। 12 मार्च को साबरमती के साथ ही इस महोत्सव का स्वाधीनता संग्राम की पराकाष्ठा को प्रणामी करने वाली अंडमान की सेल्यूलर जेल, अरुणाचल प्रदेश से ‘एंग्लो-इंडियन वार’ की गवाह केकर मोनिन्ग की भूमि, मुंबई का अगस्त क्रांति मैदान, पंजाब का जालियांवाला बाग, प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की क्रांति की भूमि उत्तर प्रदेश का मेरठ, काकोरी और झांसी सहित देश के अनेक ऐतिहासिक स्थानों पर श्री गणेश किया गया। उस दौरान देशवासियों को ऐसा अहसास हुआ मानो आजादी के असंख्य संघर्ष, असंख्य बलिदानों और असंख्य तपस्याओं की

ऊर्जा पूरे भारत में एक साथ पुनर्जागृत हो रही है। दरअसल, जब हम गुलामी के उस दौर की कल्पना करते हैं जहां करोड़ों लोगों ने सदियों तक आजादी की एक सुबह का इंतजार किया, तब यह अहसास और बढ़ता है कि आजादी के 75 साल का अवसर कितना ऐतिहासिक और गौरवशाली है। इस पर्व में शाश्वत भारत की परंपरा और स्वाधीनता संग्राम की परछाई भी है और आजाद भारत की गौरवान्वित करने वाली प्रगति भी है। इसीलिए अमृत महोत्सव में पांच स्तंभों पर फोकस किया गया है। इन्हीं संदेशों के आधार पर चरखा अभियान और आत्मनिर्भर इनक्यूबेटर लांच किए गए हैं। इससे प्रधानमंत्री को उम्मीद है कि आजादी के 75 साल का ये अवसर एक अमृत की तरह वर्तमान पीढ़ी को प्राप्त होगा। एक ऐसा अमृत जो हमें प्रतिपल देश के लिए जीने, देश के लिए कुछ करने के लिए प्रेरित करेगा।

इसी तरह आजादी की लड़ाई में अलग-अलग संग्रामों, अलग-अलग घटनाओं की भी अपनी प्रेरणाएं हैं, अपने संदेश हैं, जिन्हें आज का भारत आत्मसात कर आगे बढ़ सकता है। वर्ष 1857 का स्वतंत्रता संग्राम, महात्मा गांधी का विदेश से लौटना, देश को सत्याग्रह की ताकत फिर याद दिलाना, लोकमान्य तिलक का पूर्ण स्वराज्य का आह्वान, नेताजी सुभाष चंद्र बोस के नेतृत्व में आजाद हिंद फौज का दिल्ली मार्च, दिल्ली चलो, ये नारा आज भी हिन्दुस्तान भूल नहीं सकता है। वर्ष 1942 का अविस्मरणीय आंदोलन, अंग्रेजों भारत छोड़ो का वह उद्घोष, ऐसे कितने ही अनिगनत पड़ाव हैं जिनसे हम प्रेरणा और ऊर्जा लेते हैं। ऐसे कितने ही शहीद हुए सेनानी हैं जिनके प्रति देश हर रोज अपनी कृतज्ञता व्यक्त करता है। अमृत महोत्सव इन्हीं अमर सपूतों के सपनों का भारत बनाने का सामूहिक संकल्प है। दरअसल, स्वाधीनता संग्राम में ऐसे भी कितने आंदोलन हैं। कितने ही संघर्ष हैं जो देश के सामने उस रूप में नहीं आए जैसे आने चाहिए थे। ये एक-एक संग्राम, संघर्ष अपने आप में भारत की असत्य के खिलाफ सत्य की सशक्त घोषणाएं और भारत के स्वाधीन स्वभाव के सबूत हैं।

आजादी के आंदोलन के इतिहास की तरह ही आजादी के बाद के 75 वर्षों की यात्रा, सामान्य भारतीयों के परिश्रम, इनोवेशन, उद्यमशीलता का प्रतिबिंब है। हम भारतीय चाहे देश में रहे हों या फिर विदेश में, हमने अपनी मेहनत से खुद को साबित किया है। हमें गर्व है हमारे संविधान पर। हमें गर्व है हमारी लोकतांत्रिक परंपराओं पर। लोकतंत्र की जननी भारत आज भी लोकतंत्र को मजबूती देते हुए आगे बढ़ रहा है। ज्ञान-विज्ञान से समृद्ध भारत, आज मंगल से लेकर चंद्रमा तक अपनी छाप छोड़ रहा है। आज भारत की सेना की अपार सामर्थ्य तो आर्थिक रूप से भी हम तेजी से आगे बढ़ रहे हैं। आज भारत का स्टार्टअप इकोसिस्टम, दुनिया में आकर्षण का केंद्र बना है। आज दुनिया के हर मंच पर भारत की क्षमता और भारत की प्रतिभा की गूंज है।

> **आज भारत अभाव के अंधकार से बाहर निकलकर 130 करोड़ से अधिक आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए आगे बढ़ रहा है। वह कोरोना महामारी ने अड़ंगा डाल दिया नहीं तो भारत जल्द ही पांच खरब डालर की अर्थव्यवस्था की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा था।**

अमृत महोत्सव को लेकर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी इस बात को लेकर काफी खुश हैं कि आजाद भारत के 75 साल और नेताजी सुभाषचंद्र बोस की जन्म जयंती के 125 वर्ष हम साथ-साथ मना रहे हैं। यह संगम सिर्फ तिथियों का ही नहीं बल्कि अतीत और भविष्य के भारत के विजन का भी अद्भुत संयोग है। नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने कहा था कि भारत की आजादी की लड़ाई सिर्फ ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध नहीं है बल्कि वैश्विक साम्राज्यवाद के विरुद्ध है। नेताजी ने भारत की आजादी को पूरी मानवता के लिए जरूरी बताया था। समय के साथ नेताजी की ये बात सही सिद्ध हुई। भारत आजाद हुआ तो दुनिया में दूसरे देशों में भी स्वतंत्रता की आवाज बुलंद हुई और बहुत ही कम समय में साम्राज्यवाद का दायरा सिमट गया। आज भी भारत की उपब्धियां सिर्फ हमारी अपनी नहीं हैं बल्कि ये पूरी दुनिया को रोशनी दिखाने और पूरी मानवता को उम्मीद जगाने वाली हैं। भारत की आत्मनिर्भरता से ओतप्रोत हमारी विकास यात्रा पूरी दुनिया की विकास यात्रा को गति देने वाली है। कोरोना काल में ये हमारे सामने प्रत्यक्ष सिद्ध भी हो रहा है। मानवता को महामारी के संकट से बाहर निकालने में वैक्सीन निर्माण में भारत की आत्मनिर्भरता का आज पूरी दुनिया को लाभ मिल रहा है। अमृत महोत्सव से भारत के उज्वल भविष्य का अमृत प्राप्त करने के हमारे मार्ग में यही मंत्र हमारी प्रेरणा है।

यादें संजोने की अपीलः मोदी को उम्मीद है कि आजादी के अमृत महोत्सव के दौरान, देशवासियों के सुझावों से, उनके मौलिक विचारों से अनिगनत असंख्य विचार निकलेंगे। जन भागीदारी, जन सामान्य को जोड़ना, देश का कोई नागरिक ऐसा ना हो कि इस अमृत महोत्सव का हिस्सा न हो। इसी बात को ध्यान में रखते हुए देशभर में स्लोगन, निबंध, कला और लेखन प्रतियोगिताएं आयोजित कराई जा रही हैं। उन्होंने विभिन्न संस्थानों से आग्रह किया है कि स्कूलों में भारत के नक्शे पर आजादी के आंदोलन से जुड़े 75 स्थान चिन्हित किए जाएं, बच्चों को कहा जाए कि बताओ बारडोली कहा आया ? चंपारण कहा है ? लॉ कॉलेजों के छात्र-छात्राएं ऐसी 75 घटनाएं खोजें और जिसमें आजादी की लड़ाई जब चल रही थी तब कानूनी जंग कैसे चली ? कानूनी लड़ाई कैसे चली ? कौन लोग थे कानूनी लड़ाई लड़ रहे थे? आजादी के वीरों को बचाने के लिए कैसे-कैसे प्रयास हुए ? अंग्रेज सल्तनत की न्यायपालिका का क्या रवैया था? सारी बातें हम लिख सकते हैं। जिनकी रुचि नाटक में है, वे नाटक लिखें। फाइन आर्ट्स के विद्यार्थी उन घटनाओं पर पेंटिंग बनाएं, जिसका मन करे वे गीत लिखें, कविताएं लिखें। यह सब शुरू में हस्तलिखित हो। बाद में इसको डिजिटल स्वरूप भी दिया जाए। प्रधानमंत्री की इच्छा है कि हर स्कूल-कॉलेज का ये प्रयास, उस स्कूल-कॉलेज की धरोहर बन जाए और कोशिश हो कि ये काम इसी 15 अगस्त से पहले पूरा कर लिया जाए। इस पहल से पूरी तरह वैचारिक अधिष्ठान तैयार हो जाएगा। बाद में इसे जिलाव्यापी, राज्यव्यापी, देशव्यापी स्पर्धाएं भी आयोजित हो सकती हैं।

सरकार की ओर यह सुनिश्चित किया जा रहा है कि इस अभियान में देश के ज्यादा से ज्यादा लोगों को शामिल किया जाए। महोत्सव में आम लोगों को जोड़ने को प्रेरित करने के लिए बड़े स्तर पर उपाय किए जा रहे हैं। इसी कड़ी के तहत सीआरपीएफ की टुकड़ियों प्रमुख ऐतिहासिक केंद्रों पर अमृत उत्सव के प्रति लोगों में जागरूकता लाने की जिम्मेदारी दी गई है। यह बल 15 अगस्त, 2022 तक देश 15 ऐतिहासिक स्थानों पर आजादी के बलिदानियों को बैंड बजाकर नमन करेंगे। इस तरह की अपील देशभर में जिला स्तर पर की गई है। केंद्रीय संस्कृति मंत्रालय द्वारा जारी निर्देशों के अनुसार इस पहल के तहत जाने-अनजाने वीरों की लोक कथाओं, कहानियों और घटनाओं का संकलन किया जा रहा है। स्वतंत्रता संग्राम के नायकों की उपलब्धियों को संजोया जा रहा है ताकि युवा पीढ़ी राष्ट्रीयता के प्रति जागरूक हो।

इतिहास और उपलब्धियों का गौरव

प्रधानमंत्री मोदी को उम्मीद है कि आजादी के 75 साल का त्योहार, एक ऐसा उत्सव होगा जिसमें स्वतंत्रता संग्राम की भावना, शहीदों को श्रद्धांजलि और भारत निर्माण की उनकी प्रतिज्ञा का अनुभव किया जाएगा। इस त्योहार में सनातन भारत की महिमा और आधुनिक भारत की आभा दिखनी चाहिए तथा इस महोत्सव में ऋषियों की आध्यात्मिकता की रोशनी और हमारे वैज्ञानिकों की प्रतिभा और ताकत भी प्रतिबिंबित होनी चाहिए। मोदी का मानना है कि यह आयोजन इन 75 वर्षों में हमारी उपलब्धियों को दुनिया के सामने प्रदर्शित करेगा और अगले 25 वर्षों के लिए हमें संकल्प की एक रूपरेखा भी प्रदान करेगा।

> **प्रधानमंत्री की नजर में आजादी का अमृत महोत्सव यानी- आजादी की ऊर्जा का अमृत। आजादी का अमृत महोत्सव यानी स्वाधीनता सेनानियों से प्रेरणाओं का अमृत। आजादी का अमृत महोत्सव यानी नए विचारों का अमृत। नए संकल्पों का अमृत।**

आजादी का अमृत महोत्सव यानी आत्मनिर्भरता का अमृत। आजादी के 75 साल का ये अवसर वर्तमान पीढ़ी को एक अमृत की तरह प्राप्त होगा। एक ऐसा अमृत जो हमें प्रतिपल देश के लिए जीने, कुछ करने के लिए प्रेरित करेगा। इसी सोच के साथ इस महोत्सव को पांच स्तंभों में पुरोया गया है।

नई शिक्षा नीति बनी हिस्सा

देश की शिक्षा नीति अंग्रेजों के जमाने से चली आ रही थी। इसमें तमाम तरह की खामियां गिनाई जा रही थीं। विशेषज्ञों का मानना है कि वर्ष 1835 में लॉर्ड मैकाले ने शिक्षा नीति बनाते समय भारत वर्ष को कमजोर करने की साजिश रची जबकि प्राचीन समय में भारत वर्ष को विश्व गुरु का दर्जा प्राप्त था। विशेषज्ञ तो यह भी मानते हैं कि अंग्रेजी शासन में हमारी समृद्ध संस्कृति को भारी नुकसान पहुंचाया गया। रोजगारपरक नहीं होने की वजह से राष्ट्र को भारी खामियाजा भुगतना पड़ रहा था। इससे भी बड़ा दंश यह था कि युवाओं के बीच इसे गुलामी का प्रतीक माना जा रहा था। अब देश में नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति को चरणबद्ध ढंग से लागू किया जा रहा है। अमृत महोत्सव के अवसर पर नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति भी इसका हिस्सा बनी है। राष्ट्रीय महत्व की शिक्षा नीति नए भारत के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। शिक्षा के क्षेत्र में हो रहे बदलावों की चुनौती का सामना करने में भी इससे मदद मिलेगी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को उम्मीद है कि विद्या प्रवेश, निष्ठा-2, सफल, एकेडमिक क्रेडिट बैंक, नेशनल डिजिटल एजुकेशन आर्किटेक्चर, राष्ट्रीय शिक्षा नीति फोरम, भारतीय सांकेतिक भाषा जैसी पहल हमारे युवाओं को विभिन्न क्षेत्रों में दक्षता के साथ ही हर क्षेत्र में अपनी क्षमता का विकास करने में मददगार साबित होंगी। उन्हें अब अच्छी पढ़ाई के लिए विदेश जाने के बजाय अब विदेशी यहां पढ़ने के लिए आएंगे। नई शिक्षा नीति हमारे युवाओं को दुनिया से एक कदम आगे सोचने में भी मदद करेगी। अब हर क्षेत्र में देश को आत्मनिर्भर बनना होगा। अपनी भाषा में शिक्षा दिए जाने का लाभ देश के गरीब पिछड़े आदिवासी युवाओं को मिलेगा जिन्हें अभी तक भाषाओं की समस्या का सामना करना पड़ता था। इस साल से देश के कई इंजीनियरिंग कालेजों ने क्षेत्रीय भाषाओं में पढ़ाई शुरू करा दी है। आजादी के 75 साल पूरे होने के उपलक्ष्य में इस पहल को एक बड़ी उपलब्ध माना जा सकता है।

महोत्सव के पांच स्तंभ

ऐतिहासिक अमृत महोत्सव के पांच स्तंभ हैं। आजादी के 75 साल का इतिहास इन्हीं स्तंभों के ईदगिर्द समेटा गया है। ये स्तंभ स्वतंत्र भारत के सपनों को साकार करने के लिए आगे बढ़ने की प्रेरणा देंगे। ये स्तंभ हैं-

1 स्वतंत्रता संग्राम

2 75 पर विचार

3 75 पर उपलब्धियां

4 75 पर कार्य

5 75 पर संकल्प।

सिर्फ सरकारी कार्यक्रम नहीं

किसी बड़े अभियान की पहल अपने ही घर से शुरू की जाए तो उसका लक्ष्य हासिल करने में आसानी हो जाती है। इसी सोच के तहत प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भाजपा नेताओं और कार्यकर्ताओं से आजादी का अमृत महोत्सव में बढ़चढ़ कर शामिल होने की अपील की है। हिन्दी पट्टी के राज्यों में इसका असर साफ दिख रहा है। इस महोत्सव के तहत जिला स्तर से लेकर ब्लॉक स्तर पर कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। इस बारे में मोदी का स्पष्ट संदेश है कि 'अमृत महोत्सव' केवल एक सरकारी कार्यक्रम बनकर नहीं रहना चाहिए। देश की विरासत को संजोने और इसे एक जन आंदोलन के रूप में आगे बढ़ाने के लिए जन सहभागिता सुनिश्चित करनी होगी। प्रधानमंत्री ने सांसदों से उनके संसदीय क्षेत्रों में जोर-शोर से आजादी का अमृत महोत्सव मनाने को कहा और सुझाव दिया कि वे हर विधानसभा क्षेत्र में दो-दो कार्यकर्ताओं की टोली तैयार करें जो 75 गांवों का दौरा करे और वहां 75 दिन रुके। यह टोली जनता के बीच जाकर डिजिटल साक्षरता के बारे में जागरूकता फैलाए। पार्टी के सभी सांसद इस कार्यक्रम का प्रतिनिधित्व करें। इस दर यान वह जनता बीच डिजिटल सारक्षता को लेकर जागरुकता अभियान चलाएं। इस महोत्सव के तहत उन्होंने सांसदों को उनके क्षेत्रों में स्थानीय खेलों की प्रतियोगिता कराने, स्वच्छता संबंधी कार्यक्रमों को आगे बढ़ाने सहित कार्यक्रमों के आयोजन का सुझाव दिया। इसके पीछ प्रधानमंत्री की सोच है कि आजादी के लिए अनेक लोगों ने अपनी कुर्बानी दी है लेकिन हमें जनता को समझाना है कि क्या हम देश के लिए जी सकते हैं। इसी भावना को लेकर जनता के बीच जाना है। आजादी का अमृत महोत्सव केवल सरकारी कार्यक्रम नहीं है। यह जन आंदोलन के रूप में होना चाहिए, जन भागीदारी के साथ हमें आगे बढ़ना है। यदि भाजपा आजादी के जश्न के रूप में आयोजित हो रहे इस उत्सव को जमीनी स्तर पर मना रही है तो निश्चिति रुप से अन्य दलों के नेता भी इस दिशा में आगे बढ़ेंगे। इससे उम्मीद की जा सकती है कि यह उत्सव गांव स्तर तक लोकप्रिय हो सकता है।

> **सरकार की ओर से अमृत महोत्व के दौरान युवाओं और बुद्धजीवियों से अपील की गई है कि वे हमारे स्वाधीनता सेनानियों के इतिहास लेखन में देश के प्रयासों को पूरा करें। आजादी के आंदोलन में और उसके बाद हमारे समाज की जो उपलब्धियां रही हैं, उन्हें दुनिया के सामने और प्रखरता से लाएं।**

कला-साहित्य, नाट्य जगत, फिल्म जगत और डिजिटल इंटरनेटनमेंट से जुड़े लोग अतीत में बिखरी पड़ी अद्वितीय कहानियों को संजोकर इन्हें आने वाली पीढ़ियों के लिए जीवंत करें। अतीत से सीखकर युवा भविष्य के निर्माण की जिम्मेदारी उठा सकते हैं। साइंस हो, टेक्नोलॉजी हो, मेडिकल हो, पॉलिटिक्स हो, आर्ट या कल्चर हो, आप जिस भी फील्ड में हैं, उसका कल, आने वाला कल, बेहतर कैसे हो इसके लिए प्रयास करें। प्रधानमंत्री को उम्मीद है कि 130 करोड़ देशवासी आजादी के इस अमृत महोत्सव से जब जुड़ेंगे और लाखों स्वाधीनता सेनानियों से प्रेरणा लेंगे तो भारत बड़े से बड़े लक्ष्यों को पूरा करके रहेगा। अगर हम देश के लिए, समाज के लिए, हर हिन्दुस्तानी अगर एक कदम चलता है तो देश 130 करोड़ कदम आगे बढ़ जाता है। भारत एक बार फिर आत्मनिर्भर बनेगा। यदि हम इस दिशा में सफल होते हैं तो भारत को विश्व की महान शक्ति बनने से कोई नहीं रोक पाएगा।

भारत की ग्रोथ संभावनाओं को प्रोत्साहन

श्री पी. आर. जयशंकर
प्रबंध निदेशक, आईआईएफसीएल

प्रबंध निदेशक पी.आर. जयशंकर के सक्षम नेतृत्व में भारत सरकार का उपक्रम इंडिया इन्फ्रास्ट्रक्चर फाइनेंस कंपनी लि. (आईआईएफसीएल) 2024–25 तक 50 खरब डॉलर की अर्थव्यवस्था की भारत की आकांक्षा को साकार करना चाहती है

भारत की अर्थव्यवस्था को सुधारने के लिए और ज्यादा रोजगार की जरूरत है. इन्फ्रास्ट्रक्चर उद्योग बाजार के सबसे बड़े रोजगार पैदा करने वालों में एक है. भारत सरकार ने इस पहलू को देखते हुए और अपनी पूरी क्षमता का फायदा उठाने का फैसला करते हुए 2006 में इंडिया इन्फ्रास्ट्रक्चर फाइनेंस कंपनी लि. (आईआईएफसीएल) का गठन किया, जिसका रणनीतिक उद्देश्य देश में इन्फ्रास्ट्रक्चर परियोजनाओं को दीर्घकालिक वित्तीय सहायता मुहैया कराना था. पिछले साल मई में श्री पद्मनाभन राजा जयशंकर ने आईआईएफसीएल के प्रबंध निदेशक का कार्यभार संभाला.

कुशल एवं सक्षम नेतृत्व

आईआईएफसीएल के एमडी पद्मनाभन राजा जयशंकर को डेवलपमेंट बैंकिंग और वित्तीय क्षेत्र में 33 साल का अनुभव हासिल है. इससे पहले उन्होंने नेशनल हाउसिंग बैंक (एनएचबी) के एक्जीक्यूटिव डायरेक्टर के रूप में काम किया है. उन्हें डेवलपमेंट इनिशिएटिव्ज, रिस्क मैनेजमेंट और स्ट्रक्चर्ड प्रोजेक्ट फाइनेंस जैसे क्षेत्रों में विशेषज्ञता हासिल है. भारत के पहले मॉर्टगेज्ड सुक्युरिटाइजेशन ट्रांजैक्शन के पीछे जयशंकर ही हैं. उनके दूसरे स्ट्रक्चर्ड फानेंशियल सॉल्यूशंस में क्रेडिट एनहांसमेंट, रिवर्स मॉर्टगेज, और टेकआउट फाइनेंस शामिल हैं. जयशंकर ने आइआइटी दिल्ली से टेक्नोलॉजी में मास्टर्स की डिग्री (एम. टेक) ली है और दिल्ली विश्वविद्यालय की फैकल्टी ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज (एफएमएस) से एमबीए (फाइनेंस) किया है. आईआईएफसीएल उनके नेतृत्व में बदलते बाजार के अनुरूप खुद को सार्थक बनाए रखने के लिए अपनी गतिविधियों को बदलना और सुधारना चाहती है. इस तरह का एक फैसला सेगमेंटेड रिस्क–बेस्ड प्राइसिंग शुरू करना था. दूसरा फैसला, इन्फ्रास्ट्रक्चर परियोजनाओं की रियल–टाइम निगरानी है, जो भारत में अपनी तरह की पहली पहल है.

भूमिका और प्रभाव

आईआईएफसीएल अपने अस्तित्व में आने के बाद से ही देश के इन्फ्रास्ट्रक्चर क्षेत्र को प्रोत्साहन देने, उसका विकास करने और उसे वित्त मुहैया कराने के मामले में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है. इन्फ्रास्ट्रक्चर क्षेत्र न केवल रोजगार बढ़ाता है बल्कि अधिक निवेश, वृद्धि और बढ़ी हुई मांग के जरिए अर्थव्यवस्था में परिचालन क्षमताओं का भी निर्माण करता है. इसी को ध्यान में रखते हुए सरकार ने बजट 2020–21 में नेशनल इन्फ्रास्ट्रक्चर पाइपलाइन और इन्फ्रा क्षेत्र पर विशेष जोर दिया. सरकार को अर्थव्यवस्था को तेज करने की इस क्षेत्र की क्षमता को भुनाते हुए भारत को 2024–25 तक 50 खरब डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने की उम्मीद है.

इस मामले में आईआईएफसीएल सरकार को इन्फ्रास्ट्रक्चर फाइनेंसिंग को जानकारी और नीतिगत समर्थन दे रही है. एनबीएफसी–आइएफसी के तौर पर अपनी भूमिका के अंतर्गत आईआईएफसीएल इस क्षेत्र को डायरेक्ट लेंडिंग, टेकआउट फाइनेंस, क्रेडिट एनहांसमेंट और रिफाइनेंस के जरिए मदद कर रही है. मार्च 2021 तक आईआईएफसीएल ने 620 से अधिक परियोजनाओं को 10.87 लाख करोड़ रु. से अधिक की वित्तीय सहायता दी है. स्वीकृत परियोजनाओं में 490 पब्लिक–प्राइवेट पार्टनरशिप (देश की 27 फीसद पीपीपी परियोजनाएं), 65 गीगावाट बिजली (देश की 17 फीसद स्थापित क्षमता) 28,000 किमी सड़क निर्माण (देश की नेशनल हाइवे क्षमता का 16 फीसद) शामिल हैं. इसके अलावा, एचएएम की सबसे बड़ी ऋणदाता है. यही नहीं, 800 मिलियन टन से अधिक क्षमता वाले बंदरगाह (देश की बड़े बंदरगाह क्षमता का 52 फीसद) और दूसरी परियोजनाएं शामिल हैं.

वित्त वर्ष 2020–21 का रिकॉर्ड प्रदर्शन

आईआईएफसीएल ने अकेले करीब 1.65 लाख करोड़ रु. की स्वीकृति और 83,500 करोड़ रु. का ऋण दिया. भारत सरकार के पूर्ण स्वामित्व वाली कंपनी ने वित्त वर्ष 2020–21 में 20,892 करोड़ रु. की स्वीकृति और 9,460 करोड़ रु. का ऋण दिया, जो किसी भी वित्त वर्ष में उसके द्वारा स्वीकृत सबसे अधिक राशि है. उसका सकल नॉनपरफॉर्मिंग ऐसेट (एनपीए) और नेट एनपीए घटकर क्रमशः 13.90 फीसद और 5.39 फीसद हो गया (जो वर्ष दर वर्ष 19.70 फीसद और 9.75 फीसद था). आईआईएफसीएल ने 629.42 करोड़ रु. की अब तक सबसे ज्यादा रिकवरी की.

भावी योजनाएं

आईआईएफसीएल सेगमेंटेड रिस्क–बेस्ड प्राइसिंग, एक सुधरी हुई क्रेडिट पॉलिसी, सक्रिय ट्रेजरी मैनेजमेंट, रिकवरी के प्रयासों को बढ़ाने और परियोजनाओं को प्रगति के अनुरूप ऋण देने की खातिर परियोजना निगरानी का डिजिटाइजेशन करने के साथ ही अपनी गतिविधियों में बाजार उन्मुखी गतिशीलता लाना चाहती है. कंपनी ने परियोजना निगरानी को चुस्त बनाने के लिए डिजिटाइजेशन के अपने लक्ष्य के मद्देनजर ऑनलाइन प्रोजेक्ट मॉनिटरिंग सिस्टम (ओपीएमएस) तैयार किया है. यह सिस्टम ड्रोन और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की मदद से निर्माणाधीन इन्फ्रास्ट्रक्चर परियोजनाओं की रियल टाइम निगरानी करेगा, जो देश में परियोजनाओं की निगरानी का अपनी तरह का पहला सिस्टम है. इसके अलावा, आईआईएफसीएल ने खुद को बाजार की परिस्थितियों के अनुरूप ढालकर सेगमेंटेड रिस्क–बेस्ड प्राइसिंग स्ट्रक्चर लाकर जून 2021 से अपना बेस रेट कम करके 7.40 फीसद कर दिया है.

GeM
Government
e Marketplace

Efficient • Transparent • Inclusive

एक भारत एक मंच

आत्मनिर्भरता का द्वार

भारत में एमएसएमई के बाजार को डिजिटलीकरण से नए पंख मिले हैं और कैसे यह नई-नई ऊंचाइयां छूने को आतुर है!

उत्तर प्रदेश के प्रयागराज की एक उद्यमी अमरावती देवी ने जब यह टटोलना शुरू किया कि उनके व्यवसाय के संभावित खरीदार कहां मिल सकते हैं, तो उन्हें एक स्थानीय बाजार, थोड़े से खरीदार और उत्पाद की बिक्री का एक सीमित नेटवर्क ही नजर आता था. अब वे इन सीमाओं को बहुत पीछे छोड़ चुकी हैं. 2020 में, उनके पास अपने व्यवसाय के लिए एक बड़ा नेटवर्क, एक बड़ा उपभोक्ता वर्ग और सरकारी खरीदार भी उपलब्ध थे. अमरावती की तरह, कई विक्रेताओं ने पिछले कुछ वर्षों में अपने व्यवसायों के लिए एक नई सुबह देखी है और सुगमता से अपनी आमदनी बढ़ाई है. खरीदने के नए तरीके प्रचलन में आ चुके हैं!

खरीद का तरीका, पारंपरिक से डिजिटल हो गया. इसका उद्देश्य पूरी प्रक्रिया को हर तरह से परेशानी मुक्त, संपर्क रहित और कागजमुक्त इकोसिस्टम (आर्थिक तंत्र) बनाने पर केंद्रित था. लाखों भारतीय एमएसएमई को सफलता की नए मंजिलों पर पहुंचाने के उद्देश्य के साथ डिजिटल प्रौद्योगिकी का लाभ उठाकर नई और विकसित खरीद प्रक्रिया के लिए एक मंच विकसित करने की जरूरत थी. इस दिशा में एक बड़ी पहल गवर्नमेंट ई मार्केटप्लेस (GeM) को, 2016 में माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा लॉन्च किया गया था. उन्होंने एक ऐसे डिजिटल प्लेटफॉर्म की कल्पना की जहां विक्रेता, मालिक और एमएसएमई अपने उत्पादों और सेवाओं को प्रदर्शित कर सकें और इस तरह उन्हें अपने उत्पादों के लिए मंत्रालयों, सार्वजनिक उपक्रमों, एजेंसियों और कंपनियों जैसे सरकारी खरीदारों तक पहुंच मिल सके.

> ***इसने दक्षता और पारदर्शिता के साथ वस्तुओं और सेवाओं की खरीद में लगने वाले समय और लागत को कम कर दिया है. सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि GeM पोर्टल, सूचना सुरक्षा और उपयोगकर्ता गोपनीयता के उच्चतम मानकों का पालन करता है.***
>
> - राजेश तिवारी
> अवध सिक्योरिटी सर्विस प्रा. लि. पश्चिम बंगाल

GeM को आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, डीप लर्निंग, मशीन लर्निंग और इस तरह की कई प्रौद्योगिक की मदद से सक्षम किया जा रहा है. सुविधाओं से भरपूर, GeM को उपयोगकर्ताओं– भारतीय विक्रेताओं और सरकारी खरीदारों को ध्यान में रखते हुए विकसित किया गया है. पंजीकरण, बोली और अन्य सुविधाओं के लिए अभ्यास से लेकर, GeM नियमित रूप से प्रशिक्षण सत्र आयोजित करता है.

GeM के तीन स्तंभों की कहानी

भारतीय विक्रेताओं के लिए व्यापार करने में आसानी सुनिश्चित करने के लिए स्थापित किया गया GeM का संचालन पारदर्शिता, दक्षता और समावेशिता के तीन स्तंभों पर आधारित है जिसका मकसद विक्रेताओं की उद्यमशीलता के अपने सपनों को साकार करने और उनकी लाभप्रदता में सुधार करने में मदद करना है. पोर्टल को खरीद प्रक्रिया में पूर्ण पारदर्शिता सुनिश्चित करने और विक्रेताओं को नकली संस्थाओं/ऑनलाइन धोखेबाजों से बचाने के लिए डिज़ाइन किया गया है, इस प्रकार निष्पक्ष व्यापार को सक्षम बनाता है.

> ***एक महिला उद्यमी होने के नाते, मैं एक डिजिटल प्लेटफॉर्म के तहत बोली और भुगतान प्रक्रिया जैसी अत्याधुनिक सुविधाओं के लिए GeM की सराहना करती हूं और धन्यवाद देती हूं. हमें विश्वास है कि GeM हमें नई ऊंचाइयां हासिल करने में मददगार होगा.***
>
> - अमरावती देवी,
> 720डिग्री अल्ट्रा कंसल्टेंसी एलएलपी

सुगमता सुनिश्चित करने के दृष्टिकोण को साकार करता पोर्टल के उपयोग का व्यवधानमुक्त अनुभव नए युग की उन्नत प्रौद्योगिकी का नमूना है. पोर्टल के कई नई विशेषताओं से लैस होने के बाद, इसके माध्यम से पंजीकरण, अपलोड करना और बोलियों में भाग लेना आसान हो गया है. प्राथमिक उद्देश्य प्रक्रिया में दक्षता लाना रहा है और इस प्रकार, एक ऐसा बाज़ार बनाना जो सभी के लिए सुलभ और फायदेमंद हो. व्यवसाय का आकार चाहे कुछ भी हो, GeM प्रत्येक विक्रेता के लिए सामाजिक समावेश या समावेशिता के लिए प्रतिबद्ध है. GeM के सुपात्र सदस्यों के रूप में महिला उद्यमी, स्टार्ट–अप, कारीगर, बुनकर आदि शामिल हैं.

GeM – एक जन–केंद्रित पहल का मूर्त रूप

GeM हमेशा सुनिश्चित करता है कि उसके प्लेटफॉर्म पर सभी के लिए कुछ न कुछ हो. GeM की प्रमुख पहलों में वूमनिया, एसएचजी,

स्टार्ट–अप्स, कारीगर, बुनकर, आदिवासी शिल्पकार और कई अन्य शामिल हैं. GeM ने कई मंत्रालयों के साथ मिलकर काम किया है ताकि भारत के दूरदराज और ग्रामीण क्षेत्रों के उन विक्रेता समूहों को बाजारों तक ऑनलाइन पहुंच प्रदान की जा सके जो अभी तक अपने छोटे बाजार क्षेत्र से बाहर कदम नहीं रख पाए हैं.

> ***टीम GeM ने GeM प्रणाली में गेल (GAIL) की विशिष्ट आवश्यकताओं को शामिल करके एक सराहनीय कार्य किया है. गेल को इससे यथोउचित समय के भीतर अनुबंध करने की सुविधा मिल गई है.***
> - के.आर.एम राव,
> कार्यकारी निदेशक (सीएंडपी), गेल (इंडिया) लिमिटेड

22 जुलाई 2021 तक, 28,365 कारीगरों और 1.49 लाख बुनकरों को GeM के साथ पंजीकृत किया गया था. GeM पर हथकरघा उत्पादों के लिए लगभग 28 विशिष्ट उत्पाद श्रेणियां और हस्तशिल्प उत्पादों के लिए 170 कस्टम प्रोडक्ट कैटेगरी (जरूरत के अनुरूप तैयार हो सकने वाले उत्पाद) हैं. GeM अपनी स्टार्टअप रनवे पहल के माध्यम से पूरे भारत में स्टार्ट–अप की सहायता करता है और इसने विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त 10 स्टार्ट–अप सब सेक्टर्स (उप–क्षेत्रों) को भी शुरू किया है. वर्तमान में, 10,360+स्टार्ट–अप GeM पर पंजीकृत हैं और उन्होंने 3,500 करोड़ रु. मूल्य के 74,935 ऑर्डर पूरे किए हैं. इनमें से 87 ने अपने अभिनव उत्पादों को स्टार्टअप रनवे पर सूचीबद्ध किया है.

सरस क्लेक्शन के माध्यम से, GeM ने ग्रामीण विकास मंत्रालय के सहयोग के क्षेत्र में एक स्थान बनाया है जो भारत के विभिन्न हिस्सों में संचालित स्वयं सहायता समूहों (SHG) द्वारा बनाई गई रोजमर्रा की जरूरत के उत्पादों को प्रदर्शित करता है. इसमें हस्तशिल्प, हथकरघा और वस्त्र, कार्यालय में काम आने वाली चीजें, किराना और पेंट्री, व्यक्तिगत देखभाल और स्वच्छता श्रेणी के उत्पाद शामिल हैं. वर्तमान में, 3,000+ एसएचजी पंजीकृत हैं, जिन्होंने GeM पर लगभग 1,000+ उत्पाद सूचीबद्ध किया है.

GeM के अंतर्गत, जनजातीय मामलों के मंत्रालय के ट्राइफेड की ओर से दस्तकारी जनजातीय हस्तशिल्प, वस्त्र, पेंटिंग और लघु वनोपज को प्रदर्शित करने वाला एक समर्पित पोर्टल विकसित किया गया है. GeM ने पोर्टल पर लगभग 4,500 उत्पादों को सूचीबद्ध करने की सुविधा प्रदान की है, जिसमें धातु शिल्प, आदिवासी वस्त्र, आभूषण, आदिवासी पेंटिंग, बेंत और बांस, मिट्टी के बर्तन, उपहार और नवीनता से लेकर जैविक और प्राकृतिक उत्पाद शामिल हैं. जनजातीय उद्यमियों द्वारा बनाए गए 4,000 से अधिक उत्पाद GeM पर हैं. "खादी इंडिया" शोकेस पहल में भारत के बुनकरों के हाथ से बुने हुए प्राकृतिक रेशों से बने कपड़े शामिल हैं, जिसका उद्देश्य उन्हें सरकारी खरीदारों तक बाजार पहुंच प्रदान करना है. खादी बुनकर अपने उत्पादों को चार विशिष्ट उत्पाद श्रेणियों में सूचीबद्ध कर सकते हैं. लगभग 4,157+ विक्रेताओं ने GeM पर पंजीकरण कराया है. "दिव्यांगजन कलेक्शन" की पहल विकलांग या विशेष जरूरतों वाले व्यक्तियों, यानी दिव्यांगजनों द्वारा बनाए गए ऐसे उत्पादों को प्रदर्शित करती है और उन्हें सरकारी खरीदारों तक पहुंच प्रदान करती है जिनमें बारीकी वाला काम होता है. विक्रेता अपने उत्पादों को पोर्टल पर छह विशिष्ट उत्पाद श्रेणियों में सूचीबद्ध कर सकते हैं.

राष्ट्रीय बांस मिशन के साथ GeM की एक पहल 'द ग्रीन गोल्ड कलेक्शन' दस्तकारी किए गए बांस, हस्तशिल्प, डिस्पोजल्स और रोजमर्रा की जररूतों के उत्पादों की एक श्रृंखला को प्रदर्शित करती है. विक्रेता अपने उत्पादों को पोर्टल पर दस प्रमुख उत्पाद श्रेणियों में सूचीबद्ध कर सकते हैं.

बिजली दक्षता अभियान और वहनीयता को ध्यान में रखते हुए, एक सक्षम भागीदार के रूप में GeM ने ग्रीन एसी पेश किए हैं. विश्व पर्यावरण दिवस 2021 पर लॉन्च किए गए ग्रीन एसी के लिए GeM पर ग्रीन एसी विक्रेताओं का उत्साहपूर्ण पंजीकरण देखा गया और बाजार बहुत मजबूत प्रतिक्रिया दे रहा है.

> ***हम इसके माध्यम से अपने स्टोर के लिए न केवल प्रतिस्पर्धी कीमतों पर बल्कि युक्तिपूर्ण, पारदर्शी और समयबद्ध तरीके से खरीदारी करने में सक्षम हैं.***
> - सुभाशीष दास,
> चीफ मैनेजर, एनएसएसएचओ, ओडिशा

GeM खरीदारों और विक्रेताओं को 'क्रेता और विक्रेता प्रोत्साहन योजना' आयोजित करके प्रेरित करता है जो उन्हें भाग लेने की अनुमति और अपनी क्षमता प्रदर्शन का अवसर देता है और इस तरह उन्हें पहचान दिलाता है. इसके अलावा, बिना किसी झंझट के वित्त के लिए ऋण सुविधा वाला GeM SAHAY ऐप बहुत सारे विक्रेताओं को बड़े–मूल्य के ऑर्डर के लिए तैयार कर रहा है.

पिछले साढ़े चार वर्षों में, GeM का जीएमवी कुल एक लाख करोड़ रु का रहा है. हमने सामूहिक और समावेशी विकास के अपने प्रयास जारी रखे हैं, और केवल इस एक वित्तीय वर्ष में ही 1 लाख करोड़ रुपये के जीएमवी का लक्ष्य लेकर चल रहे हैं.

भारत बदल रहा है
क्या आप इस बदलाव के साथ हैं ?

हम किसानों की आय बढ़ाने की खातिर उन्हें ज्यादा तिलहन उगाने के लिए प्रोत्साहित कर रहे हैं

नेशनल एग्रीकल्चर कोऑपरेटिव मार्केटिंग फेडरेशन ऑफ इंडिया लि. (नेफेड) के प्रबंध निदेशक संजीव कुमार चड्ढा संगठन के कायापलट की कहानी बहुत उत्साह के साथ सुनाते हैं. यह संगठन 2015–16 में बंद होने की कगार पर पहुंच गया था लेकिन अब इसके पास 700 करोड़ रु. का सरप्लस नकद है. उन्होंने एक विशेष साक्षात्कार में कई तरह के मुद्दों पर बातचीत की. पेश है उसका कुछ अंश:

संजीव कुमार चड्ढा
प्रबंध निदेशक, नेशनल एग्रीकल्चर कोऑपरेटिव मार्केटिंग फेडरेशन ऑफ इंडिया लि. (नेफेड)

आप हमें नेफेड के हाल के वर्षों की यात्रा के बारे में बताइए?

2015–16 में हम पर करीब 1,700 करोड़ का कर्ज था और हमने सरकार से बेलआउट पैकेज मांगा था लेकिन यह नहीं मिल रहा था. हमने 2016–17 के बाद से सचमुच कड़ी मेहनत शुरू की; सरकार ने भी हमारी पूरी मदद की. अब हमने 700 करोड़ रु. का सरप्लस कैश तैयार कर लिया है. 2016–17 में हमारा कुल टर्नओवर 570 करोड़ रु. था. पिछले साल हमारा टर्नओवर 32,200 करोड़ था, जिसमें 480 करोड़ रु. मुनाफा था. संगठन के इतिहास में कभी ऐसा नहीं हुआ.

तो क्या महामारी के दौर का नेफेड के विकास पर कोई असर नहीं पड़ा?

महामारी के दौरान सरकार ने हमें किसानों से खरीदारी की जिम्मेदारी सौंपी थी क्योंकि अगर किसानों के उत्पाद एमएसपी पर न खरीदे जाएं तो वे हताश होकर कम कीमत पर अपना माल बेचने लगते हैं. लिहाजा, हमने बड़ी मेहनत की और कोविड–19 के प्रतिबंधों के बावजूद अपने सारे केंद्र खोल दिए और किसानों से एमएसपी पर 25,000–30,000 करोड़ रु. से ज्यादा का अनाज खरीद लिया.

दूसरा, हमने प्रत्येक परिवार को 1 किलो दाल देने के लिए मुफ्त भोजन वितरण में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई. सारी मिलें बंद थीं. दाल खरीदना, उन्हें मिल तक ले जाना, उन्हें पैक करना और फिर वितरण के आखिरी ठिकाने पर पहुंचाना चुनौती थी; इसके अलावा, मजदूर भी नदारद थे. लेकिन हमने दाल मिल में पहुंचाई और फिर हर तरफ उसका वितरण शुरू किया. दालों की डिलिवरी हर महीने सुनिश्चित करने के लिए हमने सड़क, ट्रेन, पानी के जहाज, वायु सेना, हर माध्यम का इस्तेमाल किया, और निरंतर आपूर्ति सुनिश्चित की.

कश्मीर से जब अनुच्छेद 370 हटाया गया तो हमें अचानक सेब खरीदने के लिए कहा गया क्योंकि सेब कश्मीर की अर्थव्यवस्था की रीढ़ की हड्डी है. आमतौर पर हम सेब नहीं खरीदते क्योंकि सड़ने–गलने वाले कृषि उत्पाद नहीं खरीदते. कनेक्टिविटी और सुरक्षा, दोनों का मसला था लेकिन पांच दिन के भीतर हमने वहां अपना दफ्तर खोल दिया. तब से हम वहां अधिक घनत्व वाला प्लांटेशन कर रहे हैं. इस तरह, यह कश्मीर की अर्थव्यवस्था में बहुत बड़ा बदलाव लाने वाला है, क्योंकि अधिक घनत्व के प्लांटेशन से पांच गुना उत्पादकता बढ़ जाएगी.

दूसरी बात, पहले हम 20,000–25,000 टन प्याज खरीदते थे, लेकिन इस बार हमने 2 लाख टन खरीदारी की–देश के इतिहास में अब तक की सबसे ज्यादा खरीदारी. हालांकि यह बहुत मुश्किल था लेकिन हमने कोऑपरेटिव सोसाइटीज और एफपीओ के जरिए खरीदारी की. किसानों को एक किलो प्याज उगाने पर 12–14 रु. लागत आती है. पिछले साल उन्हें मात्र 10 रु. मिले, इस साल उन्हें प्रति किलो 20–21 रु. मिले क्योंकि उनका माल हमने खरीदा. इसकी वजह से व्यापारी उनसे कम दाम पर प्याज नहीं खरीद पाए.

इसके अलावा, आप राइस ब्रान ऑयल जैसे अपने उत्पाद भी ला रहे हैं...

नेफेड द्वारा हाल में लॉन्च किए गए फोर्टिफायड राइस ब्रान ऑयल को जबरदस्त रेस्पॉन्स मिल रहा है. उपभोक्ताओं ने इसकी गुणवत्ता, पैकेजिंग और अपेक्षाकृत कम कीमत को काफी सराहा है. फिलहाल भारत 65,000–70,000 करोड़ रु. का करीब 150 एलएमटी खाद्य तेल आयात करता है. खाद्य तेल आयात को मांग और आपूर्ति की खाई कम करके ही घटाया जा सकता है. राइस ब्रान ऑयल की विभिन्न स्वास्थ्यवर्धक फायदों की वजह से भारत में काफी संभावना है तथा यह तथ्य भी है कि चीन के बाद भारत में ही सबसे ज्यादा धान उगाया जाता है. नेफेड इस तेल को फोर्टिफायड करने के बाद बेचता है, जिससे स्वास्थ्यवर्धक गुण बढ़ जाते हैं. मांग बढ़ने के साथ ही राइस ब्रान ऑयल का देश में उत्पादन बढ़ जाएगा, जिससे प्रधानमंत्री के आत्मनिर्भर भारत के विजन में योगदान होगा.

हमें धान और गेहूं की तरफ मोह से बाहर निकलना होगा. लिहाजा, किसानों को ज्यादा तिलहन उगाने के लिए प्रोत्साहित कर रहे हैं, जिससे उन्हें ज्यादा आय मिलती है.

उत्पादकता बढ़ाकर, अधिक मूल्य वाली फसलों को उगाकर और किसानों को लाभदायक कीमत के जरिए किसानों की आय दोगुनी करने के विजन को साकार करने के लिए आप क्या योगदान दे रहे हैं?

नेफेड किसानों की आय दोगुनी करने के प्रधानमंत्री के विजन को साकार करने के लिए हर संभव योगदान कर रहा है. तिलहन, दाल और अनाजों की एमएसपी पर खरीदारी के जरिए नेफेड सुनिश्चित करता है कि किसानों को एक तैयार बाजार और उनके उत्पादों का मुनासिब दाम मिले. नेफेड ने प्रमाणित बीज उत्पादन के क्षेत्र में भी विस्तार किया है, जिसका उद्देश्य किसानों के लिए अधिक पैदावार वाला अधिक गुणवत्ता वाजा बीज मुहैया कराना है.

इसके अलावा, नेफेड राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन (एनएफएसएम) के अंतर्गत भारत सरकार के सीड मिनी किट कार्यक्रम के लिए राज्यों को सीड मिनी किट आपूर्ति कर रहा है, जिसे किसानों को मुफ्त वितरित किया जाता है.

फसल की कटाई – एक उम्मीद

देशभर में खरीद, भंडारण और विपणन संचालनों के जरिए कृषि उत्पादों के लिए तैयार बाजार और लाभकारी कीमत सुनिश्चित करते हुए नेफेड प्रधानमंत्री के किसानों की आय दोगुनी करने के विजन को साकार करने का हर संभव प्रयास कर रहा है

नेशनल एग्रीकल्चर कोऑपरेटिव मार्केटिंग फेडरेशन ऑफ इंडिया लि. (नेफेड) देश में मार्केटिंग कोऑपरेटिव का शीर्ष फेडरेशन है, जो किसानों को उनके उत्पादों की लाभकारी कीमत देता है और निजी व्यापार और तथा बिचौलियों के हाथों उनके शोषण को रोकता है. 2 अक्तूबर, 1958 को स्थापित नेफेड का प्राथमिक उद्देश्य कृषि, बागबानी और वनोपजों को संगठित करना, उसे प्रोत्साहित करना, उसके विपणन की व्यवस्था करना, उसको प्रोसेस करना तथा भंडारण करना था. शाखा/उपकार्यालय/सदस्य कोऑपरेटिव के नेटवर्क के जरिए इस फेडरेशन की देश के सभी राज्यों में मौजूदगी है. इसके अलावा इसके पास प्री कूलिंग/कोल्ड स्टोरेज, जनरल वेयरहाउसेज, ग्रेडिंग पैकिंग इकाइयां, प्याज भंडार, बायो फर्टिलाइजर संयंत्र जैसे इन्फ्रास्ट्रक्चर और कंज्यूमर मार्केटिंग डिविजन तथा अन्य सुविधाएं हैं.

भारत में कृषि उत्पादों की खरीदारी के साथ ही उनकी मार्केटिंग की सबसे बड़ी एजेंसियों में शुमार नेफेड देश में खाद्यान्न की कीमत को स्थिर रखने के मामले में बड़ी भूमिका निभाता है, इस तरह किसानों और उपभोक्ताओं को समान रूप से लाभ मिलता है. मार्च 2020 में कोविड–19 महामारी शुरू होने के समय से ही नेफेड के ठोस इन्फ्रास्ट्रक्चर और कुशल तथा सुव्यवस्थित संचालन ने देश में आवश्यक खाद्यान्न की आपूर्ति श्रृंखला को बनाए रखने में मदद की है. मूल्य समर्थन योजना (पीएसएस) के तहत तिलहन और दलहन की खरीदारी के लिए केंद्र सरकार की नोडल एजेंसी के रूप में नेफेड राज्यों को खाद्यान्न की आपूर्ति कर रहा है, जहां से उन्हें गरीब लोगों को रियायती दर पर वितरित किया जाता है. नेफेड ने प्रधानमंत्री गरीब कल्याण योजना (पीएमजीकेवाइ) के तहत गरीब लोगों को दाल के वितरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई. आत्मनिर्भर भारत योजना के अंतर्गत 34,000 एमटी चना दाल के साथ ही अप्रैल से नवंबर 2020 के दौरान कोविड–19 महामारी के समय दाल वितरण योजना के तहत 15 लाख एमटी दाल (साबुत/पिसी हुई) की आपूर्ति की गई.

नेफेड का उल्लेखनीय कायापलट

जो संगठन 2015–16 तक एक दशक से जबरदस्त घाटे में था, उसने जोरदार छलांग लगाई और 2017–18 के दौरान 226.81 करोड़ रु. का शानदार मुनाफा दर्ज किया. बढ़ते टर्नओवर और नए कारोबारी पहल के साथ मुनाफे को बरकरार रखा गया है.

जम्मू और कश्मीर में नेफेड की पहल

जम्मू और कश्मीर के लिए कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय की मार्केट इंटरवेंशन स्कीम को सेब के लिए नेफेड 2019 से ही लागू कर रही है. इसका उद्देश्य किसानों को वैकल्पिक मार्केटिंग चैनल मुहैया कराना है ताकि वे अपने उत्पाद की मुनासिब कीमत हासिल कर सकें.

इसके अलावा, नेफेड ने दो चरणों में सेब के अधिक घनत्व वाला प्लांटेशन शुरू किया है और एंड–टु–एंड सप्लाई चेन के लिए इन्फ्रास्ट्रक्चर तैयार करने का प्रस्ताव है, जिसमें प्री–कंडिशनिंग, कंट्रोल्ड एटमोस्फेयर सीए स्टोरेज (60,000 एमटी), प्याज भंडार (20,000 एमटी), प्रोसेसिंग सुविधाएं (50,000 एमटी), राइपनिंग चौंबर्स (5,000 एमटी), रेफ्रिजरेटेड ट्रांसपोर्ट (25–30) और ड्राइ वेयरहासिंग (20,000 एमटी) शामिल हैं. निजी क्षेत्र की भागीदारी में नेफेड ने शुरू में तीन क्लस्टर तैयार करने का प्रस्ताव रखा है, जिसमें उत्तर और दक्षिण कश्मीर में एक–एक, और जम्मू डिवीजन के सांबा/कठुआ क्षेत्र में एक क्लस्टर होगा. इस इन्फ्रास्ट्रक्चर से उत्पादकता चार गुना बढ़ने की उम्मीद है और फसल की कटाई के बाद बर्बादी में 50 फीसद कमी होने की संभावना है, जिससे न केवल किसानों की आय दोगुनी हो जाएगी बल्कि बाकी देश के उपभोक्ताओं को भी बढ़िया उत्पाद मिलेगा. इन वैल्यू चेन के निर्माण से केंद्रशासित प्रदेश के बढ़िया उत्पाद का दूसरे देशों में निर्यात सुनिश्चित होगा, जो फिलहाल सेब की कुछ ही प्रजातियों तक सीमित है. इसके अलावा, इस इन्फ्रास्ट्रक्चर के निर्माण से ग्रामीण इलाकों के 50,000 शिक्षित युवकों को सीधा रोजगार का अवसर मिलेगा और करीब दो लाख रोजगार परोक्ष रूप से मिलेंगे.

जम्मू और कश्मीर में चेरी की खरीदार में

नेफेड का हस्तक्षेप

सेब की खरीदारी के बाद नेफेड ने पहली बार कश्मीरी चेरी सीधे उत्पादकों से खरीदी. यह खरीदारी जम्मू और कश्मीर के विभिन्न जिलों में तहसील स्तर पर नेफेड समर्थित फार्मर प्रोड्यूसर ऑर्गेनाइजेशन के जरिए की गई. चेरी की प्रजातियों में मखमली और मिश्री शामिल थीं. शोपियां, पुलवामा और बारामुला में यह फल बाजार की कीमत पर सीधे उत्पादकों से खरीदा गया और खरीदारी के तीन दिन के अंदर डायरेक्ट पेमेंट कर दिया गया.

नेफेड ने सेंट्रल बफर के लिए 2 लाख एमटी प्याज खरीदा

उपभोक्ता मामले, खाद्यान्न और सार्वजनिक वितरण मंत्रालय के उपभोक्ता मामला विभाग (डीओसीए) के दिशानिर्देशों के अनुरूप नेफेड ने सेंट्रल बफर के लिए प्याज की खरीदारी शुरू कर दी है. अब तक महाराष्ट्र, गुजरात और मध्य प्रदेश में 425.25 करोड़ रु. का 2.08 लाख एमटी प्याज खरीदा गया है.

कृषि जिंसों में कोऑपरेटिव संस्थाओं के लिए मार्केटिंग और ट्रेडिंग की गतिविधियों की खातिर सुविधा, समन्वय और प्रोत्साहन देकर नेफेड ने किसानों के लिए खेती को ज्यादा लाभकारी और टिकाऊ बनाने में जबरदस्त योगदान किया है, और इस तरह राष्ट्र की खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित की है. आश्चर्य नहीं कि नेफेड भारतीय अर्थव्यवस्था को बढ़ाने में अपने योगदान की वजह से प्रमुख ग्लोबल ब्रांड बन गया है.

> “केंद्र सरकार ने जैसे ही वर्ष 2020 में नई ‘राष्ट्रीय शिक्षा नीति’ की घोषणा की थी, तभी से इसे त्वरित रूप में लागू करने की दिशा में उच्च शिक्षा और तकनीकी शिक्षा के दोनों विभागों में तीन स्तरों पर परामर्श समितियों का गठन किया गया। ये तीन स्तर हैं, विश्वविद्यालय स्तर, कॉलेज एवं ‘पॉलिटैक्निक स्तर’ और ‘निदेशालय स्तर’।”
>
> – नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

हरियाणा अब बनेगा ‘तक्षशिला’

वस्तुत: ‘एनईपी’ अर्थात राष्ट्रीय शिक्षा नीति हमारे युवाओं को शैक्षणिक आधार पर सशक्त बनाने जा रही है। नए भारत की नींव रखते हुए सरकार ने समय की मांग के अनुसार युवाओं को दक्षता प्रदान करने पर पूरा ध्यान केंद्रित किया है।

हरियाणा अब शिक्षा के क्षेत्र में प्राचीन तक्षशिला का आधुनिक संस्करण बनता जा रहा है। यह पहचान उसे उच्च स्तरीय शिक्षा प्रणाली में किए गए नए बदलावों, नई सोच व नए शोध के आधार पर मिली है। इसी सोच को लेकर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल जी ने भविष्य की चुनौतियों के दृष्टिगत सभी स्तरों पर सभी छात्रों के लिए गुणवत्ता से परिपूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराने के लिए पूरी क्षमता झोंक दी है।

प्रदेश के युवाओं के लिए स्वर्णिम भविष्य का मार्ग प्रशस्त करने के उद्देश्य से हरियाणा सरकार ने अपनी शिक्षा-प्रणाली के स्वरूप को उच्च लक्ष्य की ओर उन्मुख प्रणाली के रूप में विकसित किया है।

……

> “शिक्षा-प्रणाली में बदलाव लाने, सुधार लाने, गुणवत्ता बढ़ाने और सुलभ व सस्ती शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रधानमंत्री के संकल्प हमारे प्रदेश में पूरी गंभीरता से लागू होंगे।
>
> हमारा लक्ष्य एक ऐसी शिक्षा प्रणाली विकसित करना है जो राज्य को एक स्थायी, न्यायसंगत और जीवंत शिक्षित समाज में बदल पाए और यह तभी संभव होगा जब सबके लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुलभ कराई जा सके। राज्य के सभी शिक्षण संस्थानों में एक ऐसा समग्र वातावरण बनाने का प्रयास किया गया है जिससे छात्रों में उच्च गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा के साथ-साथ नैतिकता और मौलिक मूल्यों के साथ सर्वांगीण विकास हो सके।”
>
> – मनोहर लाल, मुख्यमंत्री, हरियाणा

'एनईपी' बहुआयामी अनुशासन, बेहतर भविष्य और अपने दृष्टिकोण में समय के अनुरूप सार्थक लचीलापन लाने में मदद देगी। हरियाणा सरकार ने निश्चय किया है कि वर्ष 2025 तक हम इस नीति के घोषित संकल्पों की पूर्ति कर लेंगे, जबकि राष्ट्रीय लक्ष्य 2030 तक का है।

लक्ष्य–प्राप्ति के ये संकल्प सरकार की इस सोच को दर्शाते हैं कि हम प्रदेश में भरपूर गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान करने के लिए संकल्पबद्ध हैं। नियोजित कार्य लक्ष्यों के अनुसार सरकार प्रदेश के सभी 15,000 सरकारी स्कूलों में 'मिश्रित शिक्षण–मॉडल' लागू करने वाला पहला राज्य होगा। 'मिश्रित–शिक्षण मॉडल' में घर में 'ऑनलाइन शिक्षा' के साथ–साथ व्यक्तिगत स्तर पर भी विकास को प्राथमिकता मिलेगी।

केंद्र सरकार ने जैसे ही वर्ष 2020 में नई 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति' की घोषणा की थी, तभी से मुख्यमंत्री गतिशील हो गए थे। इसे त्वरित रूप में लागू करने की दिशा में उच्च शिक्षा और तकनीकी शिक्षा के दोनों विभागों में तीन स्तरों पर परामर्श समितियों का गठन किया गया। ये तीन स्तर हैं, विश्वविद्यालय स्तर, कॉलेज एवं 'पॉलिटैक्निक स्तर' और 'निदेशालय स्तर'।

मुख्यमंत्री का कहना है कि शिक्षा–प्रणाली में बदलाव लाने, सुधार लाने, गुणवत्ता बढ़ाने और सुलभ व सस्ती शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रधानमंत्री के संकल्प हमारे प्रदेश में पूरी गंभीरता से लागू होंगे।

हमारा लक्ष्य एक ऐसी शिक्षा प्रणाली विकसित करना है जो राज्य को एक स्थायी, न्यायसंगत और जीवंत शिक्षित समाज में बदल पाए और यह तभी संभव होगा जब सबके लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुलभ कराई जा सके। राज्य के सभी शिक्षण संस्थानों में एक ऐसा समग्र वातावरण बनाने का प्रयास किया गया है जिससे छात्रों में उच्च गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा के साथ साथ नैतिकता और मौलिक मूल्यों के साथ सर्वांगीण विकास हो सके।

स्कूली शिक्षा पर विशेष बल

किसी भी ढांचे की नींव उसकी मजबूती की परिचायक होती है। बच्चों की नींव, स्कूली शिक्षा पर आधारित है। इसी ध्येय के चलते स्कूली शिक्षा पर ध्यान केंद्रित किया गया है और इसके कुछ स्पष्ट परिणाम भी सामने आये हैं जैसे सरकारी स्कूलों में नामांकन में वृद्धि। उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार वित वर्ष 2020–21 की तुलना में वर्ष 2021–22 में नामांकन में 7.3 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। इस बात को सिद्ध करते हुए 1.6 लाख छात्रों ने निजी स्कूलों से सरकारी स्कूलों में दाखिला लिया।

इन्हीं दिशा–निर्देशों के अंतर्गत राज्य ने मूल्यांकन की गुणवत्ता में सुधार के लिए भी कुछ कदम उठाए हैं। सभी छात्रों के लिए शिक्षा की पहुंच सुनिश्चित करने के लिए कुछ विशेष कार्यक्रम प्रारंभ किए गए हैं ताकि स्कूल न आने वाले बच्चों को सरकारी स्कूलों में समाहित किया जा सके। अब तक लगभग 30,000 छात्रों की स्कूल न आने वाले बच्चों के रूप में पहचान की जा चुकी है जिनमें से 86 प्रतिशत को 2021 के सत्र में सरकारी स्कूलों में लिया जा चुका है। कक्षा 9 से 12 तक समाज के सभी वर्गों (विशेषकर आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग) के छात्रों को मुफ्त शिक्षा प्रदान की जा रही है।

सक्षम युवा योजना, राज्य सरकार की एक ऐसी पहल है, जिसका उद्देश्य शिक्षित बेरोजगार युवाओं को रोज़गार प्रदान करना है। वर्ष 2020–2021 के बजट में राज्य के सरकारी स्कूलों में प्रौद्योगिकी आधारित शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए 'डिजिटल टैबलेट', 'डिजिटल कक्षाओं' आदि पर खर्च करने के लिए 700 करोड़ रुपये आवंटित किए गए हैं। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए 192 करोड़ रुपये की राशि खर्च की जा रही है। स्कूलों में स्थापित किए गये 50 दक्ष केंद्रों में कम से कम 50 प्रतिशत छात्रों को व्यावसायिक शिक्षा प्रदान की जाएगी।

राज्य सरकार ने 113 नए संस्कृति मॉडल स्कूल भी स्थापित किए हैं। उच्च श्रेणी की शिक्षा प्रदान करने के अलावा ये स्कूल छात्रों के नैतिक मूल्यों और सिद्धांतों पर आधारित विकास पर भी बल देते हैं। इसके अलावा, सुपर 100 योजना के अंतर्गत जे.ई.ई., आई.आई.टी. और एन.ई.ई.टी. की प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने वाले छात्रों को बोर्डिंग और मुफ्त कोचिंग सुविधाएं प्रदान करने के लिए अपनी तरह की नई पहल की है।

डिजिटल–मार्ग

वर्तमान महामारी के दौरान डिजिटल माध्यम से शिक्षण में बिना अवरोध गति बनाए रखने के लिए हमने अपनी शिक्षा प्रणाली को समय की आवश्यकता के अनुसार ढाला। हमने छात्रों के सीखने के अनुभव को बेहतर और अधिक प्रभावी बनाने के उद्देश्य से हमने शिक्षा सेतु, एजुसेट, व्हाट्सऐप, गूगल सूट, और संपर्क बैठक जैसे कई तरह के 'ऐप' (एप्लिकेशन) शुरू किए। इसके अलावा, इस संकट की घड़ी से पैदा होने वाली भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक कठिनाइयों की संभावना का संज्ञान लेते हुए हमने छात्रों और उनके अभिभावकों के लिए टेली–परामर्श सेवायें भी शुरू की और 16 जिलों में 'उम्मीद केंद्र' स्थापित किए।

कोविड काल में स्कूल बंद होने के कारण संभावित शिक्षण हानि को कम करने की दृष्टि से राज्य सरकार ने जून, 2021 में मुख्यमंत्री की प्रमुख योजना 'दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम – ई–विद्यालय' आरंभ की। राज्य के अधिकतम छात्रों तक पहुंचने के लिए एक 'चैनल' पद्धति अपनायी गयी है जिसमें टी.वी. आधारित एजुसेट के अलावा व्हाट्सएप के वीडियो लिंक के माध्यम से शिक्षण सामग्री प्रसारण और स्मार्ट फोन वाले छात्रों के लिए मोबाइल ऐप आधारित शिक्षण की व्यवस्था की गई है।

हरियाणा ने 'अवसर–ऐप' को एक समग्र प्लेटफार्म के रूप में विकसित किया है जहां छात्रों के लिए वीडियो देखना, क्विज़ का अभ्यास और आंकलन जैसे सभी कार्य संभव हैं। अभी तक राज्य के 24 लाख नामांकित छात्रों में से लगभग 89 प्रतिशत इस ऐप पर पंजीकृत हैं।

उच्च शिक्षा और तकनीकी शिक्षा

शिक्षा क्षेत्र में हरियाणा सरकार के अथक प्रयास प्राथमिक स्तर पर की गई पहलों तक ही सीमित नहीं हैं। उच्च शिक्षा स्तर पर भी सरकार द्वारा की गई अनेकों ऐसी पहलकदमियां हैं जो राज्य के छात्रों को उनकी व्यावसायिक कर्मभूमि

में उन्नति और उनके विकास में सहायी सिद्ध होंगी।

'ग्लोबल जॉब इकोसिस्टम' पर नजर रखते हुए युवाओं की 'स्किलिंग' के साथ–साथ उच्च शिक्षा पर भी खासा जोर दिया गया है। एन.ई.पी. के तहत, 50 प्रतिशत छात्रों को व्यावसायिक शिक्षा सुलभ करवाने की भी योजना है।

हरियाणा में आज एक केंद्रीय विश्वविद्यालय के अलावा 10 राजकीय विश्वविद्यालय, 23 निजी विश्वविद्यालय, 172 सरकारी कॉलेजों सहित 849 कॉलेज हैं, जिनमें 1,96,845 छात्र शिक्षा पा रहे हैं। इसके अलावा, राज्य में 97 सरकारी सहायता प्राप्त कॉलेज और 87 वित्तीय रूप से स्वायतता प्राप्त डिग्री कॉलेज हैं।

वर्ष 1966 में, हरियाणा में केवल 4 सरकारी पॉलिटेक्निक, 2 सरकारी सहायता प्राप्त पॉलिटेक्निक और कुरुक्षेत्र में केवल एक क्षेत्रीय इंजीनियरिंग कॉलेज था जिसमें सालाना 1,341 छात्र पढ़ते थे। जबकि आज राज्य में 24,345 छात्रों की क्षमता वाले 4 राजकीय तकनीकी विश्वविद्यालय, 90 इंजीनियरिंग कॉलेज (4 केन्द्रीय, 9 राजकीय विश्वविद्यालय – संचालित और 77 निजी कॉलेज) हैं। 37,525 विद्यार्थियों की क्षमता के साथ 202 पॉलिटेक्निक व डी. फार्मा संस्थान (39 सरकारी, 4 सहायता प्राप्त और 159 प्राइवेट) भी हैं। इसके अलावा 420 क्षमता वाले 7 बी. आर्क. संस्थान (02 सरकारी, 5 प्राइवेट) और 4,740 क्षमता के साथ 66 बी. फार्मेसी संस्थान (08 सरकारी, 58 निजी) भी राज्य में सक्रिय हैं।

उच्च शिक्षा के लिए ऋण व्यवस्था

छात्रों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने में सक्षम बनाने के उद्देश्य से मुख्यमंत्री ने 4 मार्च, 2020 को राज्य विधानसभा में हरियाणा सरकार की शिक्षा ऋण योजना की घोषणा की। इस योजना के अंतर्गत राज्य सरकार छात्रों द्वारा लिए गए शिक्षा ऋण के लिए ऋण गारंटी प्रदान करेगी।

योजना का मुख्य उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि राज्य का कोई भी छात्र अनुसांगिक (कोलेट्रल) जमानत की कमी के कारण व्यावसायिक और अन्य संस्थानों में उच्च शिक्षा से वंचित न रहे। इस योजना में शिक्षा के लिए विभिन्न श्रेणियों के तहत ऋण के लिए एक उच्च शिक्षा ऋण गारंटी निधि बनाई जाएगी ताकि हरियाणा के छात्रों को शिक्षा ऋण के लिए जमानत लाने की आवश्यकता न हो।

राज्य सरकार राष्ट्रीय कौशल योग्यता फ्रेमवर्क के साथ तालमेल बिठाकर काम कर रही है जो राष्ट्रीय स्तर पर एकीकृत शिक्षा और योग्यता आधारित कौशल ढांचा है। यह ढांचा सीखने के एक स्तर को दूसरे उच्च स्तर से जोड़ने के लिए व्यावसायिक और सामान्य शिक्षा में कई रास्ते प्रदान करता है, जिससे शिक्षार्थियों को उच्च स्तर तक प्रगति करने में सक्षम बनाता है। यह ढांचा अकादमिक 'स्ट्रीम' के साथ–साथ कुछ नया सीखने के कौशल को लागू करके छात्रों के रोज़गार कौशल को बढ़ाने में मदद करता है।

हरियाणा सरकार द्वारा की गई कुछ अन्य पहलकदमियों पर अपना दृष्टिकोण रखते हुए, मुख्यमंत्री ने स्पष्ट किया कि 'हम समाज के हर वर्ग को लाभान्वित करने का प्रयास करते हैं, और प्रत्येक छात्र के लिए समान रूप से गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए कृतसंकल्प हैं। हरियाणा के छात्रों को विश्व स्तर पर एक जगह बनाने में मदद करने के लिए, हमने कुल 6,793 ऐसे छात्रों के लिए मुफ्त पासपोर्ट की सुविधा दी जो विदेश में काम करना या पढ़ना चाहते हैं। हमने ई–ग्रंथकोश (सेंट्रल डिजिटल लाइब्रेरी) की भी स्थापना की, जो हरियाणा के सार्वजनिक पुस्तकालयों का एकीकृत भंडार है। यह एक ऐसी डिजिटल पहल है जिसका उद्देश्य 'सेल्फ–लर्निंग डिजिटल प्लेटफॉर्म' स्थापित करके छात्रों के भविष्य को एक नया आकार देना है।

मुख्यमंत्री ने यह भी बताया कि 300 से अधिक विकलांग छात्रों के लिए राज्य में 'ई–कोन दिव्यांग जन' के अंतर्गत सांकेतिक भाषा में वीडियो और 4000 से अधिक ऑडियो सुविधाएं आरंभ की हैं। इसके अलावा, महिला सशक्तीकरण और बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से राज्य में 15 नए सरकारी कॉलेजों का शिलान्यास किया गया है जिनमें से 11 कॉलेज लड़कियों के लिए हैं। आई.आई.टी. में पढ़ने वाली छात्राओं के लिए 500 रुपये की मासिक छात्रवृत्ति की शुरुआत भी कर दी गई है।

मुख्यातिथि- श्री मनोहर लाल, माननीय मुख्यमंत्री, हरियाणा
लोक निर्माण विभाग विश्राम गृह, पंचकूला - 30 जुलाई, 2021
गरिमामयी उपस्थिति
गुप्ता
अनिल विज
गृह, स्वास्थ्य एवं
शिक्षा मंत्री, हरियाणा
श्री कंवर प
पर्यटन,
श्रीमती कम
हरियाणा

युवाओं का कौशल विकास

तकनीकी और व्यावसायिक प्रशिक्षण को बढ़ावा देने के लिए हरियाणा सरकार ने विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त कुछ शैक्षणिक संस्थानों के लिए दरवाजे खोल दिए हैं, जिनमें मुख्य हैं राष्ट्रीय डिजाइन संस्थान, भारतीय प्रबंधन संस्थान (रोहतक), राष्ट्रीय इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान (एन.आई.ई.एल.आई.टी.), केंद्रीय प्लास्टिक इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी संस्थान, भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान और राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान इत्यादि।

औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान, हरियाणा में अपनी तरह का पहला प्लाईवुड निर्माण पाठ्यक्रम शुरू किया गया है और सिरसा में एक मॉडल कौशल केंद्र स्थापित किया गया है, जो क्राफ्ट बेकरी, वेयरहाउस पैकेजिंग, सैपलिंग टेलर जैसे विशेष व्यावसायिक कौशल में उपयोगी पाठयक्रम प्रदान करता है।

श्री विश्वकर्मा कौशल विश्वविद्यालय द्वारा लगभग 94 ऐसे समझौतों पर हस्ताक्षर किए गए हैं जो राज्य में समग्र कौशल विकास की पहल में योगदान देंगे। 'मिस्त्री' हरियाणा सरकार का ऐसा प्रयास है जिसके अंतर्गत इलेक्ट्रीशियन, प्लंबर, रेफ्रिजरेशन और ए.सी. आदि के ट्रेड में योग्य आई.टी.आई. पास आउट की सूची तैयार की जाएगी।

राज्य में तकनीकी शिक्षा के स्तर को और आगे बढ़ाने के लिए, हरियाणा स्टेट बोर्ड ऑफ टेक्निकल एजुकेशन (एचएसबीटीई) ने हाल ही में भारत की सबसे ज्यादा बिकने वाली कार के निर्माता मारुति सुजुकी के साथ एक सांझा ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। यह ज्ञापन यानि एम.ओ.यू. टूल एंड डाई डिजाइन में विशेषज्ञता के साथ मैकेनिकल इंजीनियरिंग में तीन साल की डिप्लोमा डिग्री आयोजित करने की अनुमति देता है। अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद (ए.आई.सी.टी.ई.) द्वारा अनुमोदित यह तीन वर्षीय पाठयक्रम सरकारी पॉलिटेक्निक, मानेसर में कंपनी के उत्कृष्टता केंद्र में आयोजित किया जाएगा।

कुछ ऐसी ही तर्ज पर हीरो मोटोकॉर्प ने महिलाओं के लिए महत्वपूर्ण कौशल–सेट के विकास के लिए आई.टी.आई. अम्बाला में महिलाओं के लिए एक उत्कृष्टता केंद्र शुरू किया है। इस केंद्र का उद्देश्य मोटर वाहन उद्योग में महिलाओं के लिए रोजगार के अवसरों को बढ़ावा देना है।

इतना ही नहीं, हरियाणा कौशल विकास मिशन के तहत हरियाणा में 73,595 से अधिक युवा अब तक लाभान्वित हो चुके हैं। हमारा यह प्रयास है कि हम विश्व की लगातार बदलती जरूरतों और मांगों के अनुसार अपनी शिक्षा प्रणाली को विकसित करते हुए अपने देश के युवाओं को सर्वोत्तम अत्याधुनिक सुविधाओं के साथ प्रशिक्षित कर सकें।

मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल जी ने नई शिक्षा नीति (एन.ई.पी.) की घोषणा के लिए मोदी सरकार के प्रति आभार व्यक्त किया है और कहा है कि इस ऐतिहासिक नीति (एन.ई.पी.) का उद्देश्य शिक्षा में समग्र सुधार लाने के साथ शिक्षा पर सकल घरेलू उत्पाद का 6 प्रतिशत खर्च करने की भारत सरकार की 50 साल पुरानी प्रतिबद्धता को प्रतिध्वनित करती है।

मुख्यमंत्री ने भरोसा जताते हुए कहा है कि ''देश के शिक्षा तंत्र में एक लम्बे समय से अपेक्षित और सोचे–समझे सुधारों को हर स्तर पर लागू करने में सक्षम यह शिक्षा नीति न केवल हरियाणा राज्य बल्कि देश भर में शिक्षा को नई ऊंचाइयों पर ले जाएगी।''

युवा नेतृत्व में विकास की राह पर

उत्तराखंड

जब पुष्कर सिंह धामी उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पद पर 5 जुलाई को आसीन हुए तो इसे इस पर्वतीय प्रदेश के विकास को गति देने के लिए सुविचारित रणनीतिक कदम के तौर पर देखा गया। राज्य के साथ देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विशेष लगाव को देखते हुए धामी जी उनकी उम्मीदों पर खरा उतरने के लिए हर मुमकिन कोशिश कर रहे हैं।

मुख्यमंत्री पहले ही पर्यटन क्षेत्र के लिए 200 करोड़ और स्वास्थ्य क्षेत्र के लिए 205 करोड रुपए के दो बड़े राहत पैकेजो की घोषणा कर चुके है जिन्हें कोरोना से प्रभावित राज्य की जनता को राहत पहुंचाने के लिए उठाए गए एक बड़े कदम के तौर पर देखा जा रहा है। 45 साल की उम्र में कुर्सी पर बैठने वाले पुष्कर सिंह धामी राज्य के सबसे कम उम्र के मुख्यमंत्री हैं। उन्होंने अब तक जो भी फैसले लिए वह सभी साहसिक फैसले माने जा रहे हैं और राज्य की जनता भी नई धामी सरकार की ओर उम्मीद भरी निगाहों से देख रही है उत्तरकाशी से ले के उधमसिंहनगर तक मुख्यमंत्री जी ने पूरे प्रदेश का दौरा करना शरू कर दिया है और समाज के विभिन्न तबकों के साथ लगातार बातचीत और संवाद कर रहे हैं। राज्य के व्यापक हित में उन्होंने तमाम प्रशासनिक फैसले लिए हैं। वास्तव में धामी जी बहुत ही तेज गति से काम कर रहे हैं क्योंकि आगामी चुनावों में सिर्फ 6 महीने का ही वक्त बाकी है।

एक महत्वपूर्ण प्रशासनिक फैसले के तहत सरकार ने सभी अधिकारियों को आम लोगों की समस्याओं को हल करने के लिए कम से कम 2 घंटे निकालने के निर्देश दिए हैं। वहीं दूसरी तरफ धामी जी ने जनता दरबार भी शुरू किया है जहां बड़ी संख्या में लोग अपनी समस्याएं लेकर आ रहे हैं।

धामी जी ने यह पहले ही स्पष्ट कर दिया है कि उनकी प्राथमिकता उत्तराखंड को तेजी से आगे बढ़ती अर्थव्यवस्था वाले राज्यों की श्रेणी में लाना है और साथ ही साथ इसे सबसे बेहतर प्रशासित प्रदेश भी बनाना है। धामी जी प्रधानमंत्री द्वारा दिए गए नए मंत्र, सबका साथ सबका विकास और सबका विश्वास की भावना के साथ आगे बढ़ रहे हैं। मुख्यमंत्री ने इस बात की भी शपथ ली है कि वह राज्य आंदोलनकारियों के सपनों को पूरा करेंगे जो चाहते थे कि राज्य का विकास पहाड़ केंद्रित हो और रोजगार की तलाश के लिए मैदानों की तरफ युवाओं का पलायन खत्म हो।

धामी सरकार ने यह स्पष्ट कर दिया है कि वह चौमुखी विकास की प्रक्रिया जारी रखेगी।

पुष्कर सिंह धामी
मुख्यमंत्री उत्तराखंड

इसके लिए 6 संकल्प लिए गए हैं जिनमें भ्रष्टाचार मुक्त सरकार और लोगों तक तेजी से सभी सुविधाएं पहुंचाना शामिल है। कोरोना महामारी के चलते बेरोजगारों की तादाद में बढ़ोतरी हुई है और धामी सरकार ने बेरोजगार युवाओं के मन में आशा की किरण भी जगाई है। सरकार ने कहा है कि वह अगले 6 महीनों के भीतर विभिन्न सरकारी विभागों में खाली पड़े बीस से बाइस हजार पदों पर भर्तियां करेगी। राज्य मंत्रिमंडल ने भी इस फैसले पर मुहर लगा दी है एक अन्य फैसले में राज्य में गेस्ट टीचरों का मानदेय भी रु.15000 से बढ़ाकर रु.25000 कर दिया है।

कोरोना काल में राज्य के लोगों के स्वास्थ्य की सुरक्षा भी राज्य के लिए बड़ी चुनौती है। अतीत से सबक लेते हुए धामी सरकार कोरोना महामारी के मद्देनजर स्वास्थ्य क्षेत्र को मजबूत करने की रणनीति पर काम कर रही है। राज्य सरकार का लक्ष्य सभी नागरिकों को सबसे बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं मुहैया कराना है ताकि जरूरत के वक्त उन्हें किसी मुश्किल का सामना ना करना पड़े। मुख्यमंत्री ने पहले ही 205 करोड़ रुपए के हेल्थ पैकेज का ऐलान कर दिया है जिससे तीन लाख 73 हजार के करीब लोगों को फायदा होगा। सरकारी डॉक्टरों को रु.10000 का एकमुश्त बोनस दिया जा रहा है वही स्वास्थ्य विभाग के समूह ग और समूह घ के कर्मचारियों को रु.3000 बोनस के तौर पर दिए जा रहे हैं। इससे स्वास्थ्य क्षेत्र के 61000 से अधिक कर्मचारियों को फायदा होगा। आशा कार्यकत्रियों को भी अगले 5 महीनों में रु.2000-2000 दिए जाएंगे। इसके साथ ही 1120 आशा और आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को एक मोबाइल टेबलेट भी मुहैया कराया जाएगा। इसके अलावा इन कर्मचारियों को कोरोना के दुष्प्रभाव से बचाने के लिए आयुर्वेदिक और होम्योपैथिक दवाओं की किट भी दी जाएगी। राज्य सरकार ने पिथौरागढ़ और हरिद्वार जिलों में अलग से मेडिकल कॉलेज स्थापित करने के लिए भी प्रतिबद्धता जाहिर की है। इस दिशा में 70 करोड़ रुपए प्रति मेडिकल कॉलेज के हिसाब से बजट स्वीकृत किया गया है। कोरोना की संभावित तीसरी लहर के मद्देनजर भी सभी जरूरी इंतजाम किए जा रहे हैं। राज्य के सभी जिला अस्पतालों और दूसरे स्वास्थ्य केंद्रों पर पर्याप्त संख्या में ऑक्सीजन, आईसीयू, वेंटिलेटर और बच्चों के लिए अलग से वार्ड बनाए जा रहे हैं। दिसंबर 2021 तक राज्य में टीकाकरण अभियान भी पूरा हो जाएगा।

उत्तराखंड के आर्थिक विकास और रोजगार सृजन में पर्यटन एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और यहां होने वाली चार धाम यात्रा को अर्थव्यवस्था की रीढ़ माना जाता है। राज्य के पर्यटन क्षेत्र को नया जीवन देने के उद्देश्य से धामी सरकार ने कोरोना से बुरी तरह प्रभावित राज्य के पर्यटन सेक्टर के लिए 200 करोड़ रुपए के पैकेज का ऐलान किया है। जो भी लोग राज्य में पर्यटन से जुड़े व्यवसाय में शामिल हैं राज्य सरकार सीधे उनके खातों में पैसे देगी। कोरोना महामारी के मद्देनजर चार धाम यात्रा स्थगित चल रही है जिसने लोगों की जीविका को बुरी तरह प्रभावित किया है। राज्य सरकार के इस पैकेज से लगभग 1लाख 64 हजार परिवारों को फायदा होगा। ऐसे सभी लोग जिनका व्यवसाय प्रभावित हुआ है उनके खातों में रु.2000-2000 की विशेष राशि भेजी जा रही है।

कोरोना महामारी को देखते हुए राज्य में लोक सेवा आयोग की परीक्षाओं में बैठने वाले अभ्यर्थियों को आयु सीमा में 1 वर्ष की छूट दी गई है। जो अगले वर्ष 30 जून तक लागू रहेगी।

धामी जी के सामने एक बड़ी चुनौती केदारनाथ क्षेत्र में हो रहे विकास कार्य को पूरा करने की है जिसकी निगरानी खुद प्रधानमंत्री कर रहे हैं। इसके मद्देनजर वह सरकारी अधिकारियों के साथ लगातार कार्य कर रहे हैं। चार धाम देवस्थानम बोर्ड एक्ट को लेकर राज्य सरकार ने एक उच्चस्तरीय कमेटी बनाई है जो इस संबंध में उठाई गई आपत्तियों को सुधारने से जुड़े आवश्यक कदम उठाएगी।

पहाड़ में जमीन की अनाधिकृत खरीद-फरोख्त रोकने के लिए वेरिफिकेशन ड्राइव शुरू होगी। पहाड़ की संस्कृति और सामाजिक परिवेश को सुरक्षित रखने का होगा प्रयास।

पलायन की समस्या को रोकने के लिए केंद्र सरकार और उत्तराखंड के नौजवानों और पूर्व सैनिकों की मदद से हिम प्रहरी योजना लागू करेंगे।

भूमि कानून को लेकर उठी आशंकाओं पर विचार के लिए उच्च स्तरीय समिति गठित होगी जो राज्य की भूमि के संरक्षण के साथ ही रोजगार और निवेश संबंधी विषयों पर भी ध्यान देगी।

देवस्थानम बोर्ड के संबंध में जन भावनाओं के अनुरुप होगा निर्णय । तीर्थ पुरोहितों के अधिकारों का ख्याल रखते हुए देवस्थानम बोर्ड के बारे में सभी वर्गों से राय लेकर निर्णय लिया जायेगा।

जनसंख्या नियंत्रण के लिए उच्च स्तरीय समिति का गठन कर प्रभावी कानून लागू करने की दिशा में उठाए जाएंगे ठोस कदम।

नन्हे मुन्नो के चेहरों पर मुस्कान

यह उन बच्चों के चेहरों पर मुस्कान लाने की कोशिश है जिन्होंने कोरोना महामारी के चलते अपने माता पिता को खो दिया। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने ऐसे बच्चों की मदद के लिए मुख्यमंत्री वात्सल्य योजना शुरू की है और यह अपने आप में अनूठी योजना है। यह योजना राज्य में ऐसे 2347 बच्चों को आर्थिक सुरक्षा मुहैया करा रही है। इस योजना के तहत ऐसे बच्चों को 21 साल की उम्र पूरा होने तक हर महीने रु.3000 सरकार की तरफ से दिए जाएंगे। राज्य सरकार इन बच्चों की शिक्षा का भी पूरा ख्याल रखेगी और इस योजना के तहत सरकारी नौकरियों में उन्हें 5 फीसदी का आरक्षण भी मिलेगा। इसके अलावा राज्य सरकार इन बच्चों को मुफ्त भोजन देगी। मुख्यमंत्री ने बताया कि पहले चरण में इस योजना के तहत 1062 बच्चों को आर्थिक सुरक्षा मुहैया कराई जाएगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि, मां-बाप की कमी को पूरा करना असंभव है लेकिन सरकार ऐसे बच्चों का अभिभावक की तरह ही पूरा ख्याल रखेगी। उन्होंने कहा कि हम उन बच्चों के चेहरों पर मुस्कान लाने और उनके भविष्य को संवारने का काम कर रहे हैं जिन्होंने महामारी की वजह से अपने माता पिता को खो दिया। धामी ने कहा कि उत्तराखंड ऐसी योजना लाने वाला पहला राज्य है। देहरादून में ऐसे बच्चों के लिए आयोजित कार्यक्रम में बच्चों की ओर मुस्कुराते हुए मुख्यमंत्री पुष्कर धामी ने कहा कि अब से मैं तुम्हारा पुष्कर मामा हूं।

75 वां स्वतंत्रता दिवस

#राजस्थान_सतर्क_है

150 YEARS OF CELEBRATING THE MAHATMA

भारत का संविधान उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक **संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न, समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य** बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**
विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म
और उपासना की **स्वतंत्रता,**
प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**
प्राप्त कराने के लिए,
तथा उन सब में व्यक्ति की गरिमा और
राष्ट्र की एकता और अखंडता
सुनिश्चित करने वाली **बंधुता** बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवम्बर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) को **एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

मूल कर्तव्य

भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह -

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्र ध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे;

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे;

(ग) भारत की प्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण रखे;

(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभाव से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो स्त्रियों के सम्मान के विरूद्ध है;

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्व समझे और उसका परिरक्षण करे;

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणि मात्र के प्रति दयाभाव रखे;

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे;

(झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे;

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करे जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊंचाइयों को छू ले;

(ट) यदि माता-पिता या संरक्षक है, छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयु वाले अपने, यथास्थिति, बालक या प्रतिपाल्य के लिए शिक्षा के अवसर प्रदान करे।

आजादी के 75वें वर्ष में प्रवेश के शुभ अवसर पर
मूल कर्तव्यों को अंगीकृत कर हम सब
सत्य, अहिंसा और शांति के मार्ग पर चलते हुए
प्रदेश को उन्नति की ओर बढ़ाएं।

सभी प्रदेशवासियों को
स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।

जय हिन्द, जय भारत
अशोक गहलोत, मुख्यमंत्री, राजस्थान

राजस्थान संवाद

1 घर से बाहर निकलें तो हमेशा मास्क पहनें

2 आपस में दो गज की दूरी बनाए रखें

3 अपने हाथ साबुन से धोते रहें या सैनेटाइज़ करें

4 वैक्सीन जरूर लगवाएं

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, राजस्थान

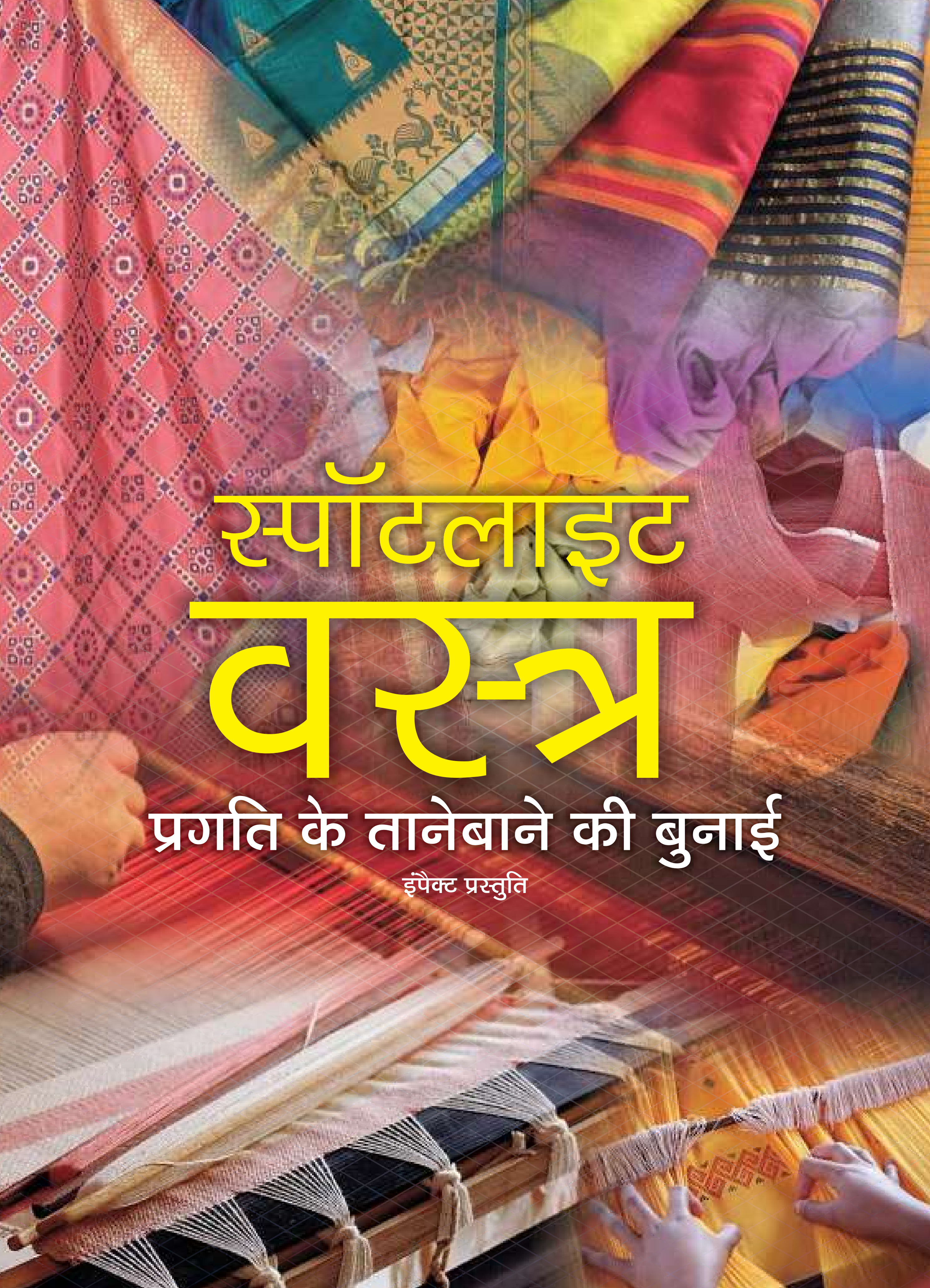

स्पॉटलाइट

वस्त्र

प्रगति के तानेबाने की बुनाई

इंपैक्ट प्रस्तुति

बड़ी छलांग

वैश्विक वस्त्र बाजार में भारत का गौरवशाली स्थान बहाल करने के लिए वस्त्र मंत्रालय ने समग्र विकास का मॉडल अपनाया है, जिसमें इन्फ्रास्ट्रक्चर और क्लस्टर विकास, टेक्निकल टेक्स्टाइल मिशन, प्रदर्शन से जुड़े प्रोत्साहन और निर्यात पर शून्य टैक्स की नीति शामिल है

भारत वस्त्र और परिधान निर्यातक प्रमुख देशों में रहा है. लेकिन परिधान निर्यात में 2008 से लगातार गिरावट दर्ज की जा रही थी क्योंकि यह देश में प्रतिबंधात्मक भूमि एवं मजदूर बाजार, बिजली के अधिक लागत, परियोजनाएं शुरू करने के लिए कर्ज लेने में परेशानी की वजह से घटिया और निम्न टेक्नोलॉजी का सहारा लेना पड़ता है. वस्त्र मंत्रालय ने इन चुनौतियों से निबटने और भारत को वस्त्र और परिधान के बाजार में अपना ऐतिहासिक स्थान दिलाने में मदद करने के लिए समग्र प्रयास शुरू किया है. यह देश के कुल निर्यात लक्ष्य 400 अरब डॉलर में से 44 अरब डॉलर के निर्यात के लक्ष्य पर केंद्रित है. यह लक्ष्य इस तथ्य के मद्देनजर दूर की कौड़ी नहीं लगता कि अब अमेरिका, ब्रिटेन और यूरोपीय यूनियन के देशों में भारतीय वस्त्र उत्पादों की अच्छी मांग है. इनमें से कुछ देश, जो पहले मुख्यतः चीन से माल मंगाते थे, अब भारत से मंगाने के लिए उत्सुक हैं. लिहाजा, भारतीय उद्योग में तेजी से वृद्धि होने वाली है. लेकिन यह कायापलट हुआ कैसे?

मंत्रालय की कुछ परिवर्तनकारी योजनाओं पर नजर डालते हैं, जिनसे कामयाबी की यह जबरदस्त कहानी तैयार हुईः

इन्फ्रास्ट्रक्चर विकास

कम से कम समय में स्तरीय इन्फ्रास्ट्रक्चर तैयार करने के लिए मंत्रालय ने क्लस्टर तैयार करने का फैसला किया, जिनमें निर्माण इकाइयों में फाइबर से लेकर तैयार माल तक के बड़े पैमाने पर वैल्यू चेन तैयार करना, बड़े पैमाने पर माल मंगाने, यूटिलिटी उपभोग, कामगार और विपणन शामिल हैं. इसका नतीजा उत्पादन, आधुनिकीकरण के रूप में निकला और वस्त्र की वैल्यू चेन में हर स्तर पर प्रक्रिया बदल जाती है, जिसमें बाजार के सभी श्रेणियों के हर आकार के खिलाड़ी शामिल होते हैं. कारोबार के नए मॉडल बड़े पैमाने पर उभर रहे हैं, संसाधनों का अधिक सक्षम तरीके से इस्तेमाल हो रहा है, और नवीकरणीय ऊर्जा के स्रोतों तथा सामग्रियों को अपनाया जा रहा है.

इंटीग्रेटेड टेक्स्टाइल पार्क्स की योजनाएं (एसआइटीपी)

बजट 2021-22 में सरकार की मेगा इंटीग्रेटेड टेक्स्टाइल्स रीजन ऐंड अपैरल पार्क्स (मित्रा) के अनुरूप मंत्रालय उद्योग को बड़े पैमाने पर उत्पादन करने और ढुलाई की लागत कम करने के लिए इंटीग्रेटेड टेक्स्टाइल पार्क्स तैयार कर रहा है.

इस पहल का उद्देश्य वस्त्र उद्योग को एक ही जगह पर विश्व स्तरीय सुविधाएं मुहैया कराना है, जहां वे आकर अपना काम शुरू कर सकते हैं. इसने विश्व स्तरीय इन्फ्रास्ट्रक्चर सहायता विकसित करने के लिए औद्योगिक क्लस्टरों और वृद्धि की अधिक संभावनाओं वाले स्थानों को लक्षित किया है.

टेक्निकल टेक्स्टाइल मिशन

इस मिशन में विभिन्न फाइबरों के मामले में बुनियादी अनुसंधान शामिल हैः कार्बन, एरामिड, नाइलॉन, कंपोजिट, और ग्लास फाइबर. रक्षा, पैरा-मिलिटरी, एयरोस्पेस, हाइवे, एयरपोर्ट रनवे, बंदरगाह, मेडिकल एप्लिकेशन, कृषि, और जल संसाधनों में टेक्निकल टेक्स्टाइल में व्यापक इस्तेमाल है.

जनवरी 2019 में विदेश व्यापार नीति में पहली बार टेक्निकल टेक्स्टाइल के 207 उत्पादों को अधिसूचित किया गया. मंत्रालयों/विभागों में कम से 92 उत्पादों को आवश्यक रूप से प्रयोग के लिए चिन्हित किया गया. इस मिशन के घटकों में एप्लिकेशन के लिए व्यावहारिक अनुसंधान, मशीनरी का देश में ही विकास, इनोवेशन, उत्पाद विकास और टेक्स्टाइल रिसर्च एसोसिएशन (टीआरए) के जरिए फील्ड लेवल एप्लिकेशन शामिल हैं.

के लिए तैयार

उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन योजना

टेक्स्टाइल उत्पादों के निर्यात को विस्तृत करने के लिए सरकार ने एमएमएफ और टेक्निकल टेक्स्टाइल आधारित उत्पादों के लिए उत्पदान से जुड़ी प्रोत्साहन योजना को मंजूरी दी है.

टेक्स्टाइल क्षेत्र में निवेश बढ़ाने, रोजगार के अवसर पैदा करने और निर्यात बढ़ाने के मद्देनजर लागू की जा रही इस योजना के तहत उद्यमियों के समूह को अत्याधुनिक इन्फ्रास्ट्रक्चर सुविधाओं वाले क्लस्टरों में अपनी टेक्स्टाइल इकाइयां लगाने के लिए वित्तीय सहायता दी जाती है. यह इकाइयां पर्यावरण और समाज से जुड़े अंतरराट्रीय मानकों के अनुरूप हैं, जिससे टेक्स्टाइल क्षेत्र में निजी निवेश आकर्षित होता और रोजगार के नए अवसर पैदा होते हैं.

आरओएससीटीएलः एक गेमचेंजर

आयात शुल्क और जीएसटी, जो प्रायः वापस कर दिए जाते हैं, के अलावा केंद्र, राज्य और स्थानीय सरकारों के स्तर पर विभिन्न प्रकार के दूसरे कर/शुल्क वसूले जाते हैं, जिन्हें वापस नहीं किया जाता. ये कर और उपकर निर्यात होने वाले अंतिम उत्पाद की कीमत में जुड़ जाते हैं, और इससे भारतीय परिधानों और निर्मित वस्तुओं की कीमत बढ़ जाती है और उनके लिए अंतरराष्ट्रीय बाजार में होड़ लगाना मुश्किल हो जाता है. वस्त्र मंत्रालय ने वस्त्र उद्योग के निर्यात होने वाले वस्त्रों और निर्मित वस्तुओं के लिए 2019 में रिबेट ऑफ स्टेट ऐंड सेंट्रल टैक्सेज ऐंड लेवीज (आरओएससीटीएल) को अधिसूचित किया.

आरओएससीटीएल 1 जनवरी, 2021 को प्रभावी हो गया और यह 31 मार्च, 2024 तक प्रभावी रहेगा, और तब तक परिधानों/वस्त्रों और निर्मित वस्तुओं के निर्यात पर लागू होगा. परिधान/वस्त्र के लिए आरओएससीटीएल के विस्तार से हर तरह के करों/उपकरों से मुक्ति मिल गई और इससे टेक्स्टाइल उत्पादों को दुनियाभर में होड़ लगाने में मदद मिलने की उम्मीद है.

निफ्टः उत्कृष्टता का उत्सव

वस्त्र मंत्रालय के तत्वाधान में 1986 में स्थापित नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ फैशन टेक्नोलॉजी (निफ्ट) फैशन एजुकेशन के क्षेत्र में अग्रणी है, फिलहाल इसे दुनियाभर के फैशन इंस्टीट्यूट में 9वीं रैंकिंग हासिल है. इस इस्टीट्यूट से नामी-गिरामी स्टुडेंट्स निकले हैं, जिनमें कई प्रतिष्ठित फैशन डिजाइनर और इस उद्योग के चोटी के प्रोफेशनल हैं, जिन्हें दुनियाभर में पहचान हासिल है.

निफ्ट टेक्निकल टेक्स्टाइल के क्षेत्र में भी कोर्स शुरू करने की योजना बना रहा है. क्राफ्ट क्लस्टर इंटरवेंशन के हिस्से के तौर पर विभिन्न निफ्ट कैंपसों के करीब 7,000 स्टुडेंट्स हर सेमेस्टर में 1,200 से अधिक कारीगरों वाले 70 क्लस्टरों में काम कर रहे हैं. निफ्ट ने कारीगरों, विशेषज्ञों और स्टुडेंट्स के साथ ऑनलाइन इंटरैक्शन और उस्ताद कारीगरों के वर्चुअल डिमॉन्स्ट्रेशन के जरिए अपने क्राफ्ट क्लस्टर इंटरवेंशन को जारी रखा है.

पीपीईः संकट को बदला अवसर में

मार्च 2020 में जब कोविड-19 महामारी आई तो देश में पीपीई और एन-95 मास्क निर्माण का तरीका विकसित करना बहुत जरूरी हो गया. स्वास्थ्य मंत्रालय ने पीपीई के निर्माण के लिए डब्लूएचओ द्वारा स्वीकृत नई विशेषताएं बता दी. चूंकि पूरे देश में फौरन लॉकडाउन लगा दिया गया, लिहाजा पीपीई निर्माण के लिए उद्योग तैयार करना बहुत बड़ी चुनौती बन गया. परीक्षण के लिए तमिलनाडु के कोयंबटूर स्थित साउथ इंडिया टेक्स्टाइल्स रिसर्च एसोसिएशन (सिट्रा) एनएबीएल से मान्यता प्राप्त इकलौती प्रयोगशाला थी.

मंत्रालय ने नए निर्माताओं को तैयार करने और इस प्रक्रिया में उन्हें निरंतर सीधी मदद देने के लिए एक वार रूम तैयार किया. इसमें मंत्रालय के निदेशक शामिल थे और वरिष्ठ अधिकारियों को निगरानी के काम में लगाया गया. चूंकि लॉकडाउन लगा दिया गया था इसलिए कुछ कनिष्ठ अधिकारियों को छोड़कर कोई भी दफ्तर नहीं जा रहा था और उन अधिकारियों को मदद हासिल नहीं थी. दिलचस्प बात यह है कि बैठक कक्ष सचिव के कार्यालय से दूर था और अधिकारियों को नए काम देने और पहले के काम की प्रगति समीक्षा के लिए हर घर पर नियंत्रण कक्ष में आना पड़ता था. इस बड़े काम में अतिरिक्त सचिव विजय कुमार सिंह मदद कर रहे थे, जो टेक्स्टाइल मशीनरी और टेक्नोलॉजी (टीएमऐंडटी) डिविजन के

प्रमुख थे.

तत्कालीन वस्त्र मंत्री श्रीमती स्मृति ईरानी ने नियंत्रण कक्ष के इस्तेमाल के लिए अपना कार्यालय खोल दिया. इस तरह, प्रोजेक्ट पीपीई वार रूम ने मंत्री के चैंबर से काम करना शुरू कर दिया. जब भी प्रगति समीक्षा की जरूरत होती, वे इस काम के लिए सचिव के कक्ष में उनके साथ बैठती थीं.

स्वास्थ्य मंत्रालय ने अपनी जरूरत को संशोधित करके दो करोड़ पीपीई कर दिया. दबाव बढ़ रहा था और चारों ओर से मांग थी. कुछ ही निर्माता थे जो कुछ सौ पीपीई तैयार कर सकते थे. ऐसी स्थिति में फैसला किया गया कि वस्त्र मंत्रालय की ओर से नागरिक उड्डयन मंत्रालय से बात की जाए कि वह किसी फ्लाइट से सैंपल को जांच के लिए कोयंबटूर ले जाए. बेंगलूरू में बड़े गार्मेंट निर्माताओं द्वारा इस्तेमाल होने वाले फैब्रिक का सैंपल लेने के लिए एक विशेष एटीआर कार्गो जहाज को हैदराबाद से भेजा गया. इसके बाद, नागरिक उड्डयन मंत्रालय ने जरूरी मेडिकल सप्लाईज और परीक्षण किटों को विभिन्न राज्यों में पहुंचाने के लिए कुछ लाइफलाइन फ्लाइट शुरू कर दी. यह जानकारी हमारे लिए जैसे ईश्वर ने भेजी. हमने नागरिक उड्डयन मंत्रालय से आग्रह किया कि वे लाइफलाइन फ्लाइट्स की योजना इस तरह बनाएं कि बेंगलूरू के लिए हर रोज एक फ्लाइट हो. केंद्रीय रेशम बोर्ड के अधिकारियों को यह जिम्मेदारी सौंपी गई कि वे बेंगलूरू से सैंपल लेकर हर रोज उसे सड़क मार्ग के जरिए सिट्रा, कोयंबटूर पहुंचाएं.

सैंपलों की मंजूरी के बाद फैब्रिक की उपलब्धता सुनिश्चित करना, उनके शॉप फ्लोर सुपरवाइजरों को गाइड करना, हांगकांग में सीम सीलिंग मशीन को लोकेट करने में मदद करना, विशेष कार्गो फ्लाइट से उन्हें मंगाना, शंघाई में काउंसल जनरल कार्यालय तथा कार्गो फ्लाइट्स का संचालन कर रही सभी एयरलाइंस से समन्वय करना जरूरी था. हर कारखाने को स्थानीय प्रशासन से मंजूरी दिलाने में मदद करने और माल ढुलाई की दूसरी जरूरतों में समन्वय के लिए मंत्रालय ने प्रत्येक कारखाने में एक अधिकारी नियुक्त कर दिया. धीरे-धीरे, निर्माताओं ने अपने उत्पादों को एक निश्चित कीमत पर हिंदुस्तान लेटेक्स लि. को देना शुरू कर दिया और इस तरह आपूर्ति शुरू हो गई.

इसी प्रकार, मास्क निर्माता चाहते थे कि उनके एन95 मास्क के सैंपल का परीक्षण किया जाए. इसके लिए डीआरडीओ की प्रयोगशाला डीआरडीई ग्वालियर से संपर्क किया गया और पाया गया कि उनके पास इसके परीक्षण का उपकरण है.

एक साल बाद हमारे पास 1100 से अधिक निर्माता हैं, जिनकी प्रति दिन पांच लाख पीपीई निर्माण क्षमता है. एन95 निर्माण करने वाले 250 निर्माता हैं, जबकि महामारी से पहले सिर्फ दो निर्माता थे. इस उद्योग ने 6.3 करोड़ पीपीई का उत्पादन किया है, जिनमें से 2.2 करोड़ का निर्यात किया गया. भारत पीपीई का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक देश बन गया है और महामारी के दौरान 7000 करोड़ रु. का उद्योग खड़ा हो गया और इस प्रक्रिया में किसी तरह की सब्सिडी शामिल नहीं है.

वस्त्र मंत्रालय के सचिव यू.पी. सिंह के शब्दों में, ''बजट की घोषणा के अनुरुप हमारे पास सात मेगा टेक्स्टाइल पार्क्स होंगे, भारत में टेक्स्टाइल सेक्टर बहुत इंटीग्रेटेड नहीं है क्योंकि एक जगह कताई होती है, दूसरी जगह बुनाई होती है और तीसरी जगह प्रोसेसिंग होती है. ये मेगा टेक्स्टाइल पार्क्स फाइबर से लेकर तैयार माल तक, सब कुछ एक जगह पर ले आएंगे, जिससे न केवल बड़े पैमाने पर काम करने के लाभ शामिल होंगे बल्कि इससे ढुलाई का खर्च भी काफी कम हो जाएगा. और, फिर हमने अपने टेक्स्टाइल उत्पादों को बेहद प्रतिस्पर्धी बनाने के लिए टेक्निकल टेक्स्टाइल मिशन शुरू किया है.''

वस्त्र मंत्रालय के सचिव यू.पी. सिंह के शब्दों में, ''बजट की घोषणा के अनुरुप हमारे पास सात मेगा टेक्स्टाइल पार्क्स होंगे, भारत में टेक्स्टाइल सेक्टर बहुत इंटीग्रेटेड नहीं है क्योंकि एक जगह कताई होती है, दूसरी जगह बुनाई होती है और तीसरी जगह प्रोसेसिंग होती है. ये मेगा टेक्स्टाइल पार्क्स फाइबर से लेकर तैयार माल तक, सब कुछ एक जगह पर ले आएंगे, जिससे न केवल बड़े पैमाने पर काम करने के लाभ शामिल होंगे बल्कि इससे ढुलाई का खर्च भी काफी कम हो जाएगा. और, फिर हमने अपने टेक्स्टाइल उत्पादों को बेहद प्रतिस्पर्धी बनाने के लिए टेक्निकल टेक्स्टाइल मिशन शुरू किया है.''

वे यह भी बताते हैं, ''निर्यात को प्रोत्साहन देने के लिए सरकार ने आरओएससीटीएल को बढ़ाने का फैसला किया है, जो निर्यात पर हर तरह के करों से मुक्ति दिला देगा. यह योजना इस बुनियादी सिद्धांत पर आधारित है कि निर्यात जीरो रेटेड होना चाहिए. हम जल्दी ही टेक्स्टाइल क्षेत्र के लिए 10 हजार करोड़ रु. से ज्यादा की प्रदर्शन से जुड़ी प्रोत्साहन (पीएलआइ) योजना लाने जा रहे हैं, जिसे हम फोकस्ड प्रोडक्ट इंसेंटिव स्कीम कहते हैं. (एफपीआइएस) इस प्रकार, आरओएससीटीएल विस्तार, पीएलआइ, मेगा टेक्स्टाइल पार्क्स और टेक्निकल टेक्स्टाइल मिशन से न केवल वस्त्रों का उत्पादन बढ़ जाएगा बल्कि हमारा निर्यात भी काफी बढ़ जाएगा.''

राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान (निफ्ट)

राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान (निफ्ट) फैशन शिक्षा, ज्ञान को एकीकृत करने, अकादमिक स्वतंत्रता और रचनात्मक सोच के क्षेत्र में एक अग्रणी संस्थान है। इसकी स्थापना वर्ष 1986 में भारत सरकार के कपड़ा मंत्रालय के अंतर्गत किया गया था एवं इस वर्ष 2006 में निफ्ट अधिनियम, 2006 के माध्यम से स्वायत्त संवैधानिक संस्थान का दर्जा प्रदान किया गया। वर्तमान में, निफ्ट पूरे विश्व के फैशन संस्थानों में 9वें स्थान पर है। निफ्ट ने फैशन जगत को कई प्रसिद्ध फैशन डिजाइनर दिए हैं और इस जगत के कई दिग्गज निफ्ट को अपनी मातृ संस्थान का दर्जा प्रदान करते हैं। फैशन उद्योग की नित बदलती जरूरतों को पूरा करने के लिए निफ्ट में पढ़ाई के दौरान शिक्षक निरंतर उद्योग जगत से संपर्क में रहते हैं, जिससे विद्यार्थी उद्योग जगत में चल रहे नए–नए अनुभवों से सीखते हैं ।

निफ्ट की शैक्षणिक रणनीति में वैश्विक मानकों को अपनाया गया है। निफ्ट ने विश्व के 26 प्रमुख अंतरराष्ट्रीय फैशन संस्थानों और संगठनों के साथ रणनीतिक समझौता किया है, जिससे निफ्ट के विद्यार्थी फैशन की वैश्विक मुख्य धारा से जुड़ जाते हैं। निफ्ट एक्सचेंज प्रोग्राम के जरिए अपन विद्यार्थियों को 'विदेश में पढ़ने' के विकल्पों का सुनहरा अवसर प्रदान करता है। निफ्ट के सभी परिसरों में विद्यार्थियों को अंतरराष्ट्रीय आयोजनों और प्रतिस्पर्धाओं में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। हमारे विद्यार्थियों ने कई अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पाधार्ओं में भाग लिया है, जैसे, चीन में बीजिंग के बीजिंग इंस्टीट्यूट ऑफ फैशन टेक्नोलॉजी (बीआइएफटी) की ओर से आयोजित डिजाइन कंपीटिशन, वूलमार्क, फैशन वीक 2017 पेरिस, स्वीडन के दूतावास की ओर से आयोजित स्वीडन इंडिया नॉवेल में मोरियलवाल पेंटिंग, न्यूजीलैंड के दूतावास की ओर से आयोजित न्यूजीलैंड रनअवे, रेड डॉट अवार्ड, वुहान इंटरनशनल कंपीटिशन, चीन, वर्ल्ड ऑफ वियरेबल आर्ट (वॉव) कंपीटिशन।

> **निफ्ट अपनी दृष्टि और दृढ़ विश्वास के माध्यम से ज्ञान, कौशल और व्यावहारिक अनुप्रयोगों को शामिल करते हुए अपनी शैक्षणिक प्रथाओं के माध्यम से भारत मे कपड़ा उद्योग के बेहतर भविष्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।**
>
> **शांतमनु, महानिदेशक**

यह संस्था अंतरराष्ट्रीय विद्यार्थियों को भी आकर्षित करती है, जो यहां आकर अकादमिक और सांस्कृतिक समृद्धता का लाभ उठाते हैं। निफ्ट के शिक्षक संस्था के विजन को वास्तवकिता में बदलने वाली रणनीतिक सहयोगी है। अंतरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा वाले फैशन संस्थानों में प्रशिक्षित शिक्षकों के पास पेशेवर क्षमता, व्यापक, अनुभव और उद्योग के साथ वर्षों का अनुभव है। हाल के कुछ समय में यह देश में विशाल परियोजनाओं को अपने हाथ में लेकर फैशन की दुनिया में शीर्ष पर पहुंच गया है। प्रोजेक्ट इंडिया साइज के तहत विविधता को देखते हुए भारतीय शरीर के लिए आकर चार्ट तैयार किया जा रहा है। भारतीय वस्त्र और शिल्प जातीयता और भौगोलिक विविधता के संरक्षण तथा प्रोत्साहन के लिए नॉलेज पोर्टल फॉर टेक्स्टाइल्स, क्राफ्ट्स एवं क्लोदिंग बनाया गया है। विजन नेक्ष्ट (VisioNxt) ट्रेंड की जानकारी देती है और फैशन फोर कास्टिंग लैब भारत के भावी फैशन के बारे में भविष्यवाणी करता है। निफ्ट टेक्स्टाइल और क्राफ्ट रिपोजिट्री तैयार कर रहा है, जो कपडा, हस्तकला और परिधान का ज्ञान भंडार होगा। निफ्ट ने जो अन्य प्रमुख परियोजनाएं शुरू की हैं उनमें विकास आयुक्त (हथकरघा) के लिए बुनकर सेवा केन्द्र पर डिजाइन स्रोत केन्द्र, इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के लिए हस्तकला आधारित उद्यमों के डिजिटल प्लेटफॉर्म तैयार करने की योजना शामिल है।

बदलाव के अग्रणी वाहक के तौर पर निफ्ट के 25,500 से ज्यादा पूर्व छात्र उद्योग में प्रमुख एवं उच्च पदों पर काम कर रहे हैं और फैशन कारोबार के भविष्य को बदलने में अहम भूमिका निभा रहे हैं। निफ्ट के पूर्व छात्र अपने ज्ञान का उपयोग बुनियादी स्तरों पर कर रहे है। वे देश के शिल्पकारी के क्षेत्रों को बढ़ावा दे रहे है।

मौजूदा महामारी के दौरान निफ्ट ने विभिन्न प्लेटफॉर्म का उपयोग करते हुए अपने पाठ्यक्रमों को पूरी तरह ऑनलाइन कर दिया। पिछले कुछ महीनों में 100 से ज्यादा वेबिनार आयोजित किए गए, जिनमें कई अंतरराष्ट्रीय विशेषज्ञों ने भाग लिया। परीक्षा और आकलन का काम ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के जरिए किया गया। पीएचडी के लिए प्रतिवाद सत्रों का आयोजन भी ऑनलाइन ही किया गया।

श्री यू पी सिंह, सचिव (वस्त्र), निफ्ट दीक्षांत समारोह – 2021 में दीप प्रज्वलित करते हुए।

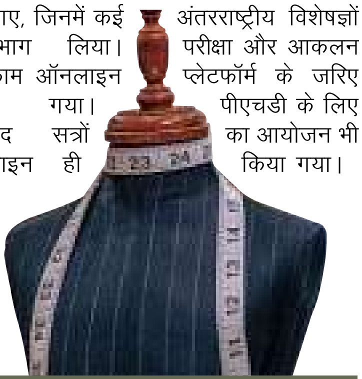

2020 और 2021 के लिए ऑनलाइन माध्यम से प्रवेश प्रारंभ किए गए और इसनें लाइव काउंसलिंग की गई.

साथ मिलकर गढ़ रहे विकास

वस्त्र मंत्रालय के अंतर्गत आने वाला विकास आयुक्त (हस्तशिल्प) कार्यालय देशभर के कारीगरों का सशक्तीकरण करके हस्तशिल्प क्षेत्र के पुनरुत्थान करने के लिए मिशन मोड में जुटा हुआ है

हस्तशिल्प क्षेत्र ग्रामीण और अर्धशहरी क्षेत्रों में विभिन्न प्रकार के कारीगरों को रोजगार मुहैया कराकर देश की ओर से निर्यात के जरिए पर्याप्त विदेशी मुद्रा कमाकर भारत की अर्थव्यवस्था में बड़ी भूमिका अदा करता है, साथ ही यह सांस्कृतिक विरासत का भी संरक्षण करता है. यह क्षेत्र न केवल देश के कोने-कोने में लाखों मौजूदा कारीगरों की मदद करता है बल्कि हस्तशिल्प की गतिविधियों में शामिल हो रहे ज्यादा से ज्यादा लोगों की मदद कर रहा है. हस्तशिल्प का महत्व उसके उत्पादन में पर्यावरण के अनुकूल और कुछ भी बर्बाद न करने वाले तरीकों में निहित है.

लेकिन इस क्षेत्र की अपनी समस्याएं भी हैं, जैसे, कम पूंजी, नई तकनीक के बारे में अपर्याप्त जानकारी, और बाजार की समझ न होना, जिसका सामना कारीगर करते रहते हैं. वस्त्र मंत्रालय ने इस तरह के सारे अवरोधों को दूर करके इस क्षेत्र को उत्पाद विकास, घरेलू बिक्री और निर्यात के तेज पथ पर पहुंचा दिया है. प्रधानंमत्री मोदी के नारे 'लोकल गोज ग्लोबल - मेक इन इंडिया फॉर द वर्ल्ड' से प्रेरित होकर इसने संग्रह, वितीय सहायता और बाजार में पहुंच के जरिए हस्तशिल्प को नई ऊंचाई पर पहुंचा दिया है.

विकास आयुक्त (हस्तशिल्प) ने प्राथमिकताओं और वस्त्र मंत्रालय के जोर के आधार पर राष्ट्रीय हस्तशिल्प विकास कार्यक्रम (एनएचडीपी) और कंप्रीहेंसिव हैंडीक्राफ्ट्स डेवलपमेंट स्कीम (सीएचसीडीएस) के तहत हस्तशिल्प क्षेत्र के और विकास के लिए कई तरह की योजनाओं को लागू किया है.

एनएचडीपी ने हस्तशिल्प को कारगर बनाने के लिए समग्र, सक्रिय, तकनीक से प्रेरित और टिकाऊ विकास का रवैया अपनाया है. साथ ही, सीएचसीडीएस ने मेगा क्लस्टर्स और देशभर में विशेष परियोजनाओं के जरिए कारीगरों की अधिक आबादी वाले क्षेत्रों को विकसित करने के मामले में अच्छा काम किया है. ये क्षेत्र उत्पादों के मामले में बहुत उत्पादक केंद्र बन गए हैं, जिससे हस्तशिल्प के निर्यात में काफी योगदान हुआ है. उत्पाद विकास के लिए विपणन सहायता प्रदान करने के लिए हस्तशिल्प कुटीर उद्योगों ने देश के विभिन्न हिस्सों में शिल्प समूहों के साथ खुद को जोड़ा है.

हस्तशिल्प की क्षमताओं को बढ़ाने के उद्देश्य से विकास आयुक्त (हस्तशिल्प) ने कई तरह की पहल शुरू की है.

वस्त्र को पर्यटन से जोड़ा

शिल्प और पर्यटन को एक साथ प्रोत्साहन देने के लिए क्राफ्ट्स टूरिज्म विलेजेज विकसित किए गए हैं, जहां कारीगर रहकर काम करते हैं और वहां उनके उत्पाद की बिक्री की जबरदस्त संभावना होती है, जिससे वे अपनी आजीविका कमा लेते हैं. ये गांव ऐसी जगहों पर हैं जो प्रमुख पर्यटन ठिकानों या सर्किट से घिरे या जुड़े हैं, और उनके पास पारंपरिक कला और शिल्पकला की विरासत है, और जहां पर्यटक और डिजाइन इनोवेटर आते हैं. इन सबसे उन्हें अपने हस्तशिल्प के उत्पादों को काम करने की जगह पर ही बेचने में मदद मिलती है.

प्रोड्यूसर कंपनियों का निर्माण

मंत्रालय ने प्रोड्यूसर कंपनियों का एक नेटवर्क तैयार किया है, जिसे वित और बाजार तक पहुंच हासिल है. हस्तशिल्प के क्षेत्र में कारीगरों का व्यवसायीकरण लाने के लिए देशभर में अब तक 56 प्रोड्यूसर कंपनियां गठित की गई हैं.

बुनकरों/कारीगरों की बाजार तक सीधी पहुंच

बुनकरों/कारीगरों को अपने उत्पाद सीधे मंत्रालयों/सरकारी विभागों को बेचने के लिए उन्हें सरकारी ई-मार्केट प्लेस (जीईएम) की सुविधा दी गई है. कारीगर विकास आयुक्त (हस्तशिल्प) कार्यालय की ओर से जारी अपने पहचानपत्र का इस्तेमाल करके पंजीकरण करा सकते हैं, और जीईएम पोर्टल पर पंजीकरण कराने के लिए कारीगरों की मदद करने की खातिर फील्ड अधिकारियों को नामित किया गया है. जीईएम टीम ने इन अधिकारियों को कारीगरों की मदद करने के लिए प्रशिक्षण भी दिया है.

ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म

कारीगरों/बुनकरों को मार्केटिंग प्लेटफॉर्म मुहैया कराने के लिए वस्त्र मंत्रालय डिजिटल इंडिया कॉर्पोरेशन, इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के जरिए ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म तैयार कर रहा है. पहले चरण में देशभर के 100 हैंडीक्राफ्ट्स क्लस्टर को पंजीकरण और अपने उत्पादों के फोटोग्राफ की अपलोडिंग के लिए चुना जा रहा है. वे कॉमन सर्विस सेंटर (सीएससी) की मदद से ई-कॉमर्स पोर्टल पर पंजीकरण के बाद अपने उत्पाद की जानकारी देंगे. कारीगरों की मदद करने के लिए नजदीक के सीएससी से क्लस्टरों को जोड़ दिया जाएगा. इस प्रकार, देशभर के विभिन्न रचनात्मक कौशल में माहिर कारीगरों की क्षमताओं का इस्तेमाल करके विकास आयुक्त (हस्तशिल्प) का उद्देश्य सही मदद और कारोबारी माहौल तैयार करके इस क्षेत्र को अरबों डॉलर का बाजार बनाना है. यह संगठन का उद्देश्य भारत की शिल्प की विरासत को प्रोत्साहन देना है. इसमें अद्भुत क्षेत्रीय विविधता है, जो वैश्विक बाजारों में देश को अलग ढंग से पेश करती है.

indian भारतीय handicrafts हस्तशिल्प continuing tradition

विकास आयुक्त (हस्तशिल्प) कार्यालय
वस्त्र मंत्रालय,भारत सरकार

ई. पी. सी. एच.

हस्तशिल्प विकास एवं प्रोत्साहन मे रत्

हस्तशिल्प निर्यात प्रोत्साहन परिषद (ईपीसीएच) की स्थापना 1986-87 में की गई और तभी से यह हस्तशिल्प के निर्यात की संभावना को बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान कर रही है. महत्वपूर्ण बात यह है कि परिषद ने जरूरी इन्फ्रास्ट्रचर और सूचना सुविधाएं तैयार की है, जिसका लाभ हस्तशिल्प के निर्यातक उठाते हैं. परिषद के पूरे देश में 10 कार्यालय हैं, जिसका मुख्य कार्यालय नई दिल्ली में है और जयपुर, जोधपुर, मुरादाबाद, नरसापुर, सहारनपुर और उत्तर पूर्व क्षेत्र जैसे शिल्प समूहों में बारीकी से काम कर रहे हैं.

हस्तशिल्प उद्योग का बढ़ता आकार

वित्त वर्ष 2020-21 के अप्रैल-मार्च के दौरान 25,679 करोड़ रु. का हस्तशिल्प निर्यात किया गया, जो पिछले साल (2020-21) में इसी अवधि के मुकाबले 1.62 फीसद ज्यादा है. पिछले दस साल के दौरान हस्तशिल्प निर्यात में वार्षिक चक्रवृद्धि दर (सीएजीआर) 8 फीसद के हिसाब से इजाफा हुआ और यह 2010-11 में 12,975 करोड़ रु. से बढ़कर 2020-21 में 25,679 करोड़ रु. हो गया.

वैश्विक मानकों के अनुरूप बनाने में मदद

लकड़ी के हस्तशिल्प का क्षेत्र 2013 में अस्तित्व के संकट से जूझ रहा था क्योंकि यूरोपीय यूनियन ने लकड़ी के हस्तशिल्प के उत्पादन में इस्तेमाल लकड़ी की वैधता के लिए उचित प्रमाणपत्र की मांग की थी. परिषद ने देसी मानक वृक्ष–इंडियन टिंबर लीगलिटी असेसमेंट ऐंड वेरिफिकेशन स्कीम–तैयार किया, जिसे अब सीआइटीईएस (CITES) पर हस्ताक्षर करने वाले 183 देशों में मान्यता प्राप्त है और देश में 600 से ज्यादा वृक्ष प्रमाणित निर्यातक हैं. संयुक्त राष्ट्र के सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल्स (एसडीजी) को ध्यान में रखते हुए आगे बढ़कर वृक्ष के मानकों को एसडीजी से भी जोड़ दिया गया है

पिछले दस साल से ईपीसीएच ने खासकर विदेशी बाजारों के उपभोक्ताओं के बदलती पसंद और प्राथमिकताओं को ध्यान में रखते हुए उत्पाद और डिजाइन डेवलपमेंट पर करीब निगाह रखी है. यह उद्यमियों को आधुनिक डिजाइन उपकरणों, उत्पाद की तकनीकों के इस्तेमाल और डिजिटल मार्केटिंग ऑपरेशन में मदद कर रही है, जिससे इस क्षेत्र में वृद्धि हो रही है. इसके अलावा, कंप्लायंस, निर्यात प्रक्रिया, उत्पाद विकास, पैकेजिंग आदि के क्षेत्रों में परिषद द्वारा उद्यमियों को विभिन्न प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण कार्यक्रमों में शामिल होने का मौका दिया गया है. परिषद में पंजीकृत निर्यातकों की संख्या 2010-11 में 6,000 से बढ़कर 2020-21 में 10,000 हो गई.

ईपीसीएच ने विदेशी ग्राहकों के लिए पहली बार 1994 में इंडियन हैंडीक्राफ्ट्स ऐंड गिफ्ट्स फेयर का आयोजन किया था. आज (5 आयोजनों के बाद) यह हस्तशिल्प निर्यातकों का भारत के अत्याधुनिक कला प्रदर्शनी कॉम्प्लेक्स इंडिया एक्सपो सेंटर ऐंड मार्ट, ग्रेटर नोएडा मे आयोजित किया जाने वाला विश्वस्तरीय बड़ा मेला है, जिसे लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड्स ने प्रमाणित किया है.

ईपीसीएच निर्यातकों को गुणवत्ता और डिजाइन के मामले में हस्तशिल्प की खूबियों को बरकरार रखते हुए वैश्विक मानकों को पूरा करने में मदद करती रही है. इन खूबियों में भारतीय डिजाइन, रंगों, मोटिफ और पैटर्न को दर्शाया जाता है. मिसाल के तौर पर मुरादाबाद में बनने वाले सामान्य धातु के गुलदानों को खूबसूरत लैंप और लाइटिंग के आइटम में तब्दील कर दिया गया है.

हस्तशिल्प और कालीन क्षेत्र में हुनर की कमी की भरपाई के लिए हैंडीक्राफ्ट्स ऐंड कारपेट स्किल काउंसिल (एचसीएसएससी) का गठन किया गया, जिसका उद्देश्य देश में राष्ट्रीय व्यायवसायिक मानकों पर आधारित हुनर सिखाना है. हस्तशिल्प क्षेत्र के लिए प्रशिक्षित कामगार और उद्यमी तैयार करने के लिए सेंटर फॉर हैंडीक्राफ्ट्स एक्सपोर्ट्स मैंनेजमेंट स्टडीज (सीएचईएमएस) शुरु किया गया और नए उत्पादों तथा नए डिजाइनों के विकास को बढ़ावा दिया गया.

महामारी की परेशानियों को धता बताते हुए परिषद ने जून 2020 में पहला वर्चुअल इंटरनेशनल बी2बी फेयर आयोजित किया और तब से छह वर्चुअल एग्जिबिशन और चार बायर सेलर बैठकों समेत 10 वर्चुअल इवेंट आयोजित किए गए हैं. हस्तशिल्प निर्यात ने 2020-21 में करीब 1.62 फीसद की वृद्धि दर्ज की. गौर तलब है कि 2020-21 के पहले छह महीनों में 23 फीसद नकारात्मक वृद्धि थी, लेकिन यह क्षेत्र फिर पटरी पर आ गया और अगले छह महीने में 26 फीसद वृद्धि दर्ज की. ईपीसीएच हस्तशिल्प निर्यात की संभावनाओं को बढ़ा रही है और अगले पांच साल में यह क्षेत्र 15 से 20 फीसद वृद्धि कर सकता है, जिससे निर्यात मौजूदा 25,000 करोड़ रु. से बढ़कर 50,000 करोड़ रु. से अधिक हो जाएगा.

हस्तशिल्प निर्यात संवर्धन परिषद
Export Promotion Council for Handicrafts
www.epch.in I mails@epch.com

अंतरराष्ट्रीय स्तर के रेशम उत्पादन में आत्मनिर्भर बनने की ओर अग्रसर

भारत को रेशम के क्षेत्र में विश्व का अग्रणीय देश बनाने की अपनी परिकल्पना और माननीय प्रधानमंत्री के भारत को आत्मनिर्भर राष्ट्र बनाने के सपने को साकार करने के लिए केंद्रीय रेशम बोर्ड (सीएसबी) निरंतर अथक प्रयास कर रहा है. भारत सरकार के वस्त्र मंत्रालय के अंतर्गत संविधानिक इकाई सीएसबी ने पिछले सात साल के दौरान अंतरराष्ट्रीय स्तर के 4ए ग्रेड बायोल्टाइन रेशम के उत्पादन की दिशा में लंबी छलांग लगाई है.

आयात पर निर्भरता

भारत रेशम का सबसे बड़ा उपभोक्ता और दूसरा सबसे बड़ा रेशम उत्पादक देश है. अंतरराष्ट्रीय स्तर के रेशम के धागे की घरेलू मांग की पूर्ति के लिए यह वर्षों से मुख्यतः चीन से आयात पर निर्भर रहा है. देश में अंतरराष्ट्रीय स्तर के बाइवोल्टाइन कच्चे रेशम की अनुमानित मांग करीब 10,000 मीट्रिक टन (एमटी) है, जिसका इस्तेमाल मुख्यतः पावर लूम, निर्यात बाजार और हथकरघों के तानों में होता है.

कमियों की समझ

शुरू में बाइवोल्टाइन रेशम का उत्पादन शीतोष्ण इलाकों तक ही सीमित था. देश में बाइवोल्टाइन रेशम उत्पादन के वर्षों तक निरंतर प्रयास के बावजूद कई तरह की चुनौतियां बनी हुई हैं. जैसे, उष्णकटिबंधीय जलवायु के अनुकूल बायोल्टाइन रेशम के कीड़े की अनुपलब्धता, शहतूत की खेती में पुराने तरीकों का इस्तेमाल, अंडे के उत्पादन के लिए पारम्परिक तकनीकों का इस्तेमाल, डिसइनफेक्शन के तरीके, चॉकी कीटपालन की अपर्याप्त देखभाल, तैयार करने की खराब परिस्थितियां, अनुचित माउंटिंग प्रबंधन और कोये से रेशम निकालने की पारम्परिक मशीनरी और विधियां.

लीक से हटकर पहल

सीएसबी ने देशभर में शहतूत पर रेशम- कीट पालन और खासकर बाइवोल्टाइन रेशम-कीट पालन के लिए भारत सरकार की विभिन्न योजनाओं, परियोजनाओं और कार्यक्रमों को लागू किया. इसके अलावा, सीएसबी के वैज्ञानिकों ने पोषक शहतूत के पौधे की गुणवत्ता बढ़ाकर बाइवोल्टाइन रेशम-कीट की नई प्रजातियां तैयार की, जिसके नतीजे आशा अनुरुप निकले और शीतोष्ण कटिबंधीय क्षेत्रों में बायोल्टाइन रेशम के उत्पादन का सपना साकार हो गया.

गौरतलब है कि सरकार ने 'लुक ईस्ट पॉलिसी' के अंतर्गत पूर्वोत्तर क्षेत्र में रेशम-कीट पालन को प्रोत्साहन देने पर ध्यान दिया है, जो वहां की अर्थव्यवस्था, रोजगार, क्षमता निर्माण और आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने के लिए है. नॉर्थ ईस्ट रिजन टेक्सटाइल प्रमोशन स्कीम (एनईआरटीपीएस) के अंतर्गत पूर्वोत्तर राज्यों में बाइवोल्टाइन रेशम-कीट पालन समेत हर तरह के रेशम उत्पादन को बड़े पैमाने पर प्रोत्साहन दिया जा रहा है.

> **“सरकार ने 'लुक ईस्ट पॉलिसी' के अंतर्गत पूर्वोत्तर क्षेत्र में रेशम-कीट पालन को प्रोत्साहन देने पर ध्यान दिया है, जो वहां की अर्थव्यवस्था, रोजगार, क्षमता निर्माण और आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने के लिए है ”**

इन सभी कार्यक्रमों के सकारात्मक परिणाम दिखने लगे हैं. पिछले सात साल के दौरान बाइवोल्टाइन रेशम का उत्पादन 173.89 फीसद बढ़कर 2559 एमटी से 7009 एमटी हो गया है. इस वृद्धि के साथ ही कच्चे रेशम का आयात 2014-15 में 3260 एमटी से घटकर 2020-21 में 1804 एमटी रह गया है.

भविष्य के लिए निवेश

भारत सभी चार कमर्शियल रेशम की वैराइटी का उत्पादक देश होने पर गर्व कर सकता है–2020-21 में मलबेरी, एरी, टसर और मुगा का 34000 एमटी उत्पादन किया गया.

फिलहाल, 7009 एमटी बाइवोल्टाइन रेशम उत्पादन में से करीब 1892 एमटी या करीब 27 फीसद अंतरराष्ट्रीय स्तर का 4ए ग्रेड रेशम है. इसके अलावा, सिल्क समग्र-2 के अंतर्गत अंतरराष्ट्रीय स्तर के 4ए ग्रेड रेशम का उत्पादन 27 फीसद से बढ़ाकर 45 फीसद करने का लक्ष्य रखा गया है. रेशम उद्योग के विकास के लिए समन्वित योजना सिल्क समग्र-2 को सीएसबी ने अगले पांच वर्षों (2021-22 से 2025-26) में लागू करने का प्रस्ताव रखा है. इस योजना का उद्देश्य पोषक वृक्षारोपण क्षेत्र का दायरा बढ़ाकर बाइवोल्टाइन रेशम उत्पादन में वृद्धि करना, बाइवोल्टाइन रेशम-कीट के बीज की उपलब्धता बढ़ाना और देश में अंतरराष्ट्रीय स्तर के रेशम के उत्पादन की क्षमता तथा कौशल बढ़ाना एवं किसानों की आय दोगुनी करना है. इस योजना के लागू होने के बाद अंतरराष्ट्रीय स्तर के 4ए रेशम की मौजूदा कमी दूर हो जाएगी और कच्चे रेशम का आयात न्यूनतम हो जाएगा, जिससे भारत रेशम के क्षेत्र में पूरी तरह आत्मनिर्भर हो जाएगा. इसके अलावा, केंद्रीय रेशम बोर्ड ने ''सिल्क मार्क'' द्वारा प्रमाणित रेशम के उत्पादों की शुद्धता के बारे में उपभोक्ताओं को जागरूक करने की अत्यंत आवश्यक पहल की है.

SILK MARK INDIA
Your Assurance of Pure Silk

HEPC
HANDLOOM EXPORT PROMOTION COUNCIL

मेरा हथकरघा मेरा गौरव

वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार के विकास आयुक्त (हथकरघा) के तत्वावधान में हथकरघा निर्यात सवंर्धन परिषद (एचईपीसी) का गठन भारत से हथकरघा उत्पादों के निर्यात को प्रोत्साहन देने के लिए 1965 में किया गया था. एचईपीसी का मुख्य उद्देश्य हथकरघा निर्यातकों की मदद करना है, व्यापार प्रोत्साहन और अंतरराष्ट्रीय मार्केटिंग के लिए मुख्यतः निर्यातकों को जरूरी मदद और दिशानिर्देश देना है.

एचईपीसी का मुख्यालय चेन्नै में है और क्षेत्रीय कार्यालय नई दिल्ली में है. एचईपीसी ने करूर, पानीपत में संपर्क कार्यालय खोले हैं और पूर्वोतर क्षेत्र की सीधी मदद के लिए गुवाहाटी में हेल्प डेस्क शुरू किया है, जो आइआइएचटी/डब्लूएससी, गुवाहाटी के कैंपस से संचालित हो रहा है.

हथकरघा निर्यात के प्रमुख केंद्र करूर, पानीपत, वाराणसी, कन्नूर, इत्यादि हैं. निर्यात के मुख्य उत्पाद और श्रेणियां हैंः होम टेक्स्टाइल (जिसमें बिस्तर की चादर, मेजपोश, टॉयलेट और किचन के कपड़े, तौलिया, पर्दे, अपहोल्स्ट्री, इत्यादि शामिल हैं), फ्लोर कवरिंग्स (जिसमें कालीन, दरी, फ्लोर मैट, बाथ मैट, इत्यादि शामिल हैं), क्लोदिंग एक्सेसरीज (स्टोल, स्कार्फ, इत्यादि) और फैब्रिक (साड़ी, टेरी टॉवल, फैशन फैब्रिक, इत्यादि). हथकरघा उत्पादों का निर्यात तेजी से बढ़ रहा है और 2019-2020 तथा 2020-2021 को छोड़कर यह पिछले पांच साल के दौरान करीब 35 करोड़ डॉलर है. कोविड-19 महामारी की वजह से 2019-2020 में निर्यात घटकर 31.562 करोड़ डॉलर और 2020-2021 में 2.265 करोड़ डॉलर हो गया.

भारत वैश्विक व्यापार में इकलौता ऐसा देश है जो न केवल दूसरे देशों से जबरदस्त प्रतिस्पर्धा और देश में ही मशीन से तैयार उत्पादों के बावजूद हाथ से बने सामान के निर्यात में बड़ा योगदान करता है.

एचईपीसी की गतिविधियां

एचईपीसी ने विकास आयुक्त (हथकरघा) की मदद से परिषद के उद्देश्यों की खातिर कई नई पहल शुरू की है, जिनमें शीर्ष निर्यातकों को पुरस्कार देना, विदेशी बाजारों में प्रचलित ट्रेंड पैटर्न और रंगों से निर्यातकों को जागरूक बनाने के लिए पैंटोन नंबरों से मिलते विभिन्न रंगों का कलर कैटलॉग, हथकरघा उद्योग के फायदे के लिए मंत्रालय के अनुदान के अंतर्गत विभिन्न पत्रिकाओं का प्रकाशन शामिल हैं. एचईपीसी भारत में हाथ से बने उत्पादों के निर्यात को प्रोत्साहन देने के लिए हर साल दुनियाभर में करीब 20 अंतरराष्ट्रीय कार्यक्रमों का आयोजन करती है. इसके अलावा, यह भारत में रिवर्स बायर सेलर मीट्स का भी आयोजन करती है, जिसमें दुनियाभर के खरीदारों को आमंत्रित किया जाता है.

कोविड-19 महामारी की वजह से आवाजाही पर लगे प्रतिबंधों के चलते दुनियाभर में कई भौतिक मेले या तो निलंबित कर दिए गए हैं या फिर उन्हें अगली बार के लिए टाल दिया गया है. इस स्थिति से उबरने के लिए एचईपीसी विभिन्न बाजार क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करते हुए वर्चुअल कार्यक्रमों का आयोजन कर रही है. एचईपीसी ने 2021 के दौरान स्वीडन, डेनमार्क, इटली, फ्रांस, स्पेन, जापान, अमेरिका, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड तथा दक्षिण अफ्रीका के ट्रेड विजिटर्स को ध्यान में रखते हुए 12 वर्चुअल कार्यक्रमों का आयोजन किया है.

एचईपीसी अपने वर्चुअल और फिजिकल ईवेंट्स के जरिए अपने निर्यातक सदस्यों को बाजार में पहुंच के अवसर दिलाने के लिए हर संभव कदम उठा रही है. इनमें निम्न आयोजन महत्वपूर्ण हैं क्योंकि उनका आयोजन राष्ट्रीय हथकरघा दिवस के मौके पर किया गया. वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन हथकरघा निर्यात प्रोत्साहन परिषद ने राष्ट्रीय हथकरघा दिवस के मौके पर नई दिल्ली के मोती बाग क्लब हाउस में ''सेलीब्रेटिंग माईहैंडलूममाईप्राइड ऑन नेशनल हैंडलूम डे 2021'' नामक प्रदर्शनी का आयोजन किया. इस प्रदर्शनी में 22 एग्जिबिटर्स ने हिस्सा लिया, जिनमें पद्मश्री पुरस्कार, राष्ट्रीय पुरस्कार पाने वालों, कोऑपरेटिव, प्रोड्यूसर कंपनियों और बुनकर उद्यमियों ने हिस्सा लिया.

वर्चुअल आइटीएसएफ

एचईपीसी ने 7 अगस्त को राष्ट्रीय हथकरघा दिवस के मौके पर भारत के पारंपरिक टेक्स्टाइल्स को प्रदर्शित करने के लिए विशेष वर्चुअल कार्यक्रम का आयोजन किया. सात दिनों (7-13 अगस्त) के इस आयोजन में देशभर के 57 विशेष हथकरघा उत्पाद निर्माताओं/निर्यातकों/कोऑपरेटिव/राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्तकर्ताओं/क्लस्टरों/भारतीय हैंडलूम ब्रांड (आइएचबी) धारकों ने हिस्सा लिया. यह विकास आयुक्त (हथकरघा) कार्यालय, वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार के अनुदान से आयोजित किया गया.

बांग्लादेश, मलेशिया, सिंगापुर, श्रीलंका, नेपाल, भूटान और म्यांमार जैसे पड़ोसी एशियाई देशों के करीब 220 ट्रेड विजिटर्स ने इस वर्चुअल कार्यक्रम में हिस्सा लेने के लिए पंजीकरण कराया है. एग्जिबिटर्स और इंटरनेशनल विजिटर्स की प्रतिक्रिया काफी उत्साहजनक है और इससे हथकरघा वस्त्र निर्यातकों के लिए अंतरराष्ट्रीय बाजार में दरवाजे खुलना तय है और इससे इन देशों में हथकरघा उत्पादों के निर्यात में इजाफा करने में मदद मिलेगी.

प्रधानमंत्री द्वारा तय निर्यात के लक्ष्य को हासिल करने के लिए एचईपीसी हर संभव पहल और प्रयास करती है, और हम अपने उत्पादों को लोकल से ग्लोबल बनाने के लिए सभी हथकरघा निर्यातकों को समर्थन जारी रखेंगे. और इसे भारतीय तथा अंतरराष्ट्रीय बाजारों में संभव बनाने के लिए ''माई हैंडलूम माई प्राइड'' जागरूकता अभियान चलाते रहेंगे.

जब विश्व सपना देखना शुरू करती है, हमारे हाथ बुनने लगते हैं.

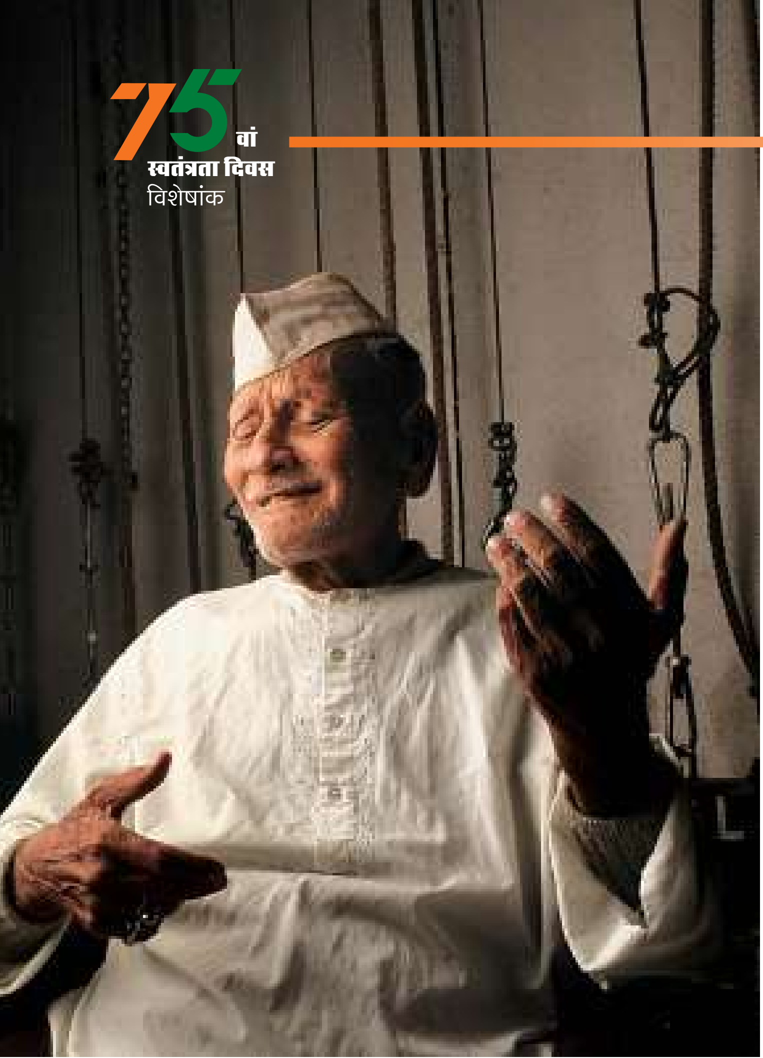

संदीप सिंह

गूंज उठी शहनाई

उस्ताद बिस्मिल्लाह खान (1916-2006)

शहनाई सम्राट उस्ताद बिस्मिल्लाह खान ने इस सुषिर वाद्य को न केवल भारतीय शादियों की कैद से मुक्त किया बल्कि दुनिया भर में लोकप्रिय बनाया

गौरव मजुमदार

भारत ने 15 अगस्त 1947 को स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में अपना पहला कदम रखा, तब देश की आजादी के जश्न पर उस्ताद बिस्मिल्लाह खान ने लाल किले को अपनी शहनाई के मधुर सुरों से गुंजा दिया. उन्होंने पाकिस्तान जाने की बजाए भारत में रहना चुना. उस्ताद बिस्मिल्लाह खान पथप्रवर्तक संगीतकार थे, जो न केवल शहनाई को संगीत की अगली कतार में लाए बल्कि शहनाई के सुरों से एकता के फलसफे को साकार किया. वे खुदा को मानने वाले मजहबपरस्त मुसलमान थे, जिन्होंने दूसरे धर्मों और आस्थाओं को भी बराबर सम्मान दिया. ऊंचे नैतिक मानदंडों, सादगी और चारित्रिक मजबूती के लिए मशहूर खान ने अपने सहज आकर्षण और जादुई संगीत से दुनिया फतह की. वे वाराणसी के पुश्तैनी मकान में दशकों रहे और संगीत के जरिए विशाल परिवार को मृत्युपर्यंत सहारा देते रहे. शास्त्रीय संगीत हो, सुगम या सिनेमाई, वे हर विधा में माहिर थे और सबको बराबर सराहते थे. पर अहम यह कि उन्होंने शहनाई में हर किस्म के संगीत को खूबसूरती से गूंथा.

गौरव मजुमदार *सितारवादक और ग्रैमी अवार्ड नामित हैं*

पंडित रविशंकर
(1920-2012)

इंडिया टुडे आर्काइव

सितारा सितार का

पं. रविशंकर ने दुनिया के कुछ बेहतरीन और सबसे मशहूर संगीतकारों से साथ काम किया और भारतीय शास्त्रीय संगीत को दुनिया के नक्शे पर लाए

पंडित सतीश व्यास

भारत रत्न पंडित रविशंकर अपने आप में संस्था थे. वे अव्वल दर्जे के उस्ताद थे, पर उनमें छात्र सरीखी उत्सुकता ताउम्र बनी रही. उन्होंने मैहर घराने के उस्ताद अलाउद्दीन खान से संगीत सीखा, बल्कि वे मैहर जाकर रहे और वहां अपने गुरु से आला दर्जे की तालीम ली. संगीतकार के तौर पर उनकी खासियत यह है कि वे अलग ढंग से सोचते और व्याख्या करते थे. उन्होंने राग की शुद्धता को लेकर कभी समझौता नहीं किया. दुनिया के दूसरे संगीतकारों के साथ काम करते हुए भी उन्होंने न केवल इसे साबुत रखा बल्कि उसमें खुद अपना पुट भी जोड़ा. संगीत पर उनकी विलक्षण पकड़ थी और उसकी रंजकता उन्होंने सदैव बनाए रखी. मैं यकीन से कह सकता हूं कि 1960 और 1970 के दशक में उन्होंने अकेले अपने दम पर भारतीय शास्त्रीय संगीत को दुनिया भर में लोकप्रिय बनाया. 1980 के दशक में जब मैंने अपने कंसर्ट के लिए विदेश जाना शुरू किया, मैंने देखा कि नक्शे पर भारत को ढूंढने में मुश्किल महसूस करने वाले ढेरों लोग भी पंडित रविशंकर को बखूबी जानते थे. पंडित जी मुझे बेटे की तरह प्यार करते थे.

> पंडित रविशंकर ने राग की शुद्धता को लेकर कभी समझौता नहीं किया; उन्होंने न केवल इसे साबुत रखा बल्कि इसमें अपना पुट भी जोड़ा

उन्होंने येहुदी मेनुहिन, जुबिन मेहता और जॉर्ज हैरिसन सरीखे प्रखर मेधावियों के साथ मिलकर कुछ शानदार प्रस्तुतियां दीं. उन्होंने अपनी विरासत आगे बढ़ाने के लिए न केवल बेटी अनुष्का को तैयार किया बल्कि विश्व मोहन भट्ट, गौरव मजुमदार और शुभेंद्र राव सरीखे संगीतकारों को भी. ■

पंडित सतीश व्यास *संतूर वादक हैं*

अध्यात्म की आवाज

एम.एस. सुब्बुलक्ष्मी (1916-2004)

जवाहरलाल नेहरू ने उन्हें 'संगीत की मलिका' कहा और सरोजिनी नायडु ने 'भारत की कोकिला'. फिल्म से फैशन तक इस भारत रत्न विजेता ने भारतीय सांस्कृतिक जीवन के हर पहलू में चार चांद लगाए

बेगम परवीन सुल्ताना

एम. एस. सुब्बुलक्ष्मी से पहली बार मैं कोई 30 साल पहले मिली. मद्रास में खचाखच भरे एक हॉल में मैं गा रही थी और मुझे अंदाज तक नहीं था कि अगली कतार में वे बैठी हैं. वे करीब 80 बरस की थीं और उनके लिए चलना तक मुहाल था, फिर भी मुझे याद है वे अपने पति के साथ मेरे ग्रीन रूम में आईं. देखते ही उन्होंने मुझे बांहों में भर लिया. सुब्बुलक्ष्मी जी ज्यादा अंग्रेजी नहीं बोलती थीं, पर मेरी गायकी के बारे में बोलते हुए वे 'वंडर' और 'वंडरफुल' लफ्जों का इस्तेमाल करती रहीं. मेरी आंखों में आंसू थे. मुझे लगा मानो मैं साक्षात अपनी मां से मिल रही थी.

सुब्बुलक्ष्मी जी और मैं कभी-कभार पुट्टपार्थी में मिलते. हम दोनों सत्य साईं बाबा के भक्त थे. एक बार मैंने कह क्या दिया कि उनके लड्डू और बर्फी मुझे अच्छे लगे, हम जब भी मिलते, हर बार वे टिफिन भरकर दोनों ले आतीं. बाबा ने एक बार मेरे शौहर उस्ताद दिलशाद खान से उनके लिए मीरा के चार भजनों का संगीत तैयार करने को कहा. उन्हें अपने हिंदी उच्चारणों पर बहुत भरोसा नहीं था, पर उन्होंने इतना अच्छा गाया कि पूरा हिंदुस्तान लट्टू हो गया.

एम.के. राजशेखर

जब किसी की तस्वीरें अच्छी आती हैं तो हम उसे कैमरा-फ्रेंड्ली कहते हैं. इसी तरह माइक्रोफोन सुब्बुलक्ष्मी जी पर जान छिड़कते थे. उन्हें इतनी सुरीली आवाज का वरदान मिला कि लगता था, उसे सुनकर बेजान मशीनों में भी जान आ जाती थी. उनका स्वभाव भी उनकी गायकी की तरह निहत्था कर देने वाला था. वे मेरी या लता मंगेशकर की तारीफ करते कभी दोबारा नहीं सोचती थीं. उनकी तुलना केवल मां सरस्वती से ही की जा सकती है. ■

बेगम परवीन सुल्ताना *हिंदुस्तानी शास्त्रीय गायिका और पद्मभूषण हैं*

अलामी स्टॉक फोटो

उन सम कौन

पंडित भीमसेन जोशी (1922-2011)

कम ही हिंदुस्तानी शास्त्रीय गायक सभागारों को श्रोताओं से उस तरह भर पाते थे जैसा कि पंडित भीमसेन जोशी. उनकी खयाल गायिकी हमें हर्षातिरेक में डुबो देती थी. इस भारतरत्न विजेता ने *मिले सुर मेरा तुम्हारा* से देश को एक सूत्र में पिरोया

शुभा मुद्गल

पंडित भीमसेन जोशी की अनूठी शैली, आवाज और भंगिमाओं की देश भर के बीसियों गायक नकल करते रहते हैं. उनकी ऑडियो और वीडियो रिकॉर्डिंग सोशल मीडिया के दबदबे वाली इस दुनिया में भी लाखों व्यूज आकर्षित करती हैं. उनकी प्रतिभा की चमक और वैयक्तिकता के सम्मान में कई अवार्ड, महोत्सव, शैक्षणिक संस्थानों में पीठ स्थापित की गई हैं. अपने जीवनकाल में उनके अनुयायियों और मुरीदों की कोई बराबरी नहीं थी. जब वे अपने आखिरी सालों में एक बार पुणे के सवाई गंधर्व महोत्सव में महज हाजिरी लगाने के लिए अपनी कार से आए तो प्रशंसकों की भारी भीड़ अनायास उनके पैरों की तरफ बढ़ी और जयजयकार से आसमान गुंजा दिया.

फिर भी इस भारतरत्न की विरासत उसी अनिश्चित भविष्य से घिरी है जिससे कई दूसरे महारथियों की विरासतें घिरी हैं. उनकी शैली का अनुसरण करने वाले अक्सर दरिद्र या ज्यादा से ज्यादा उस वैयक्तिकता के समर्थ नकलची ही बने रहते हैं जिसकी संभवत: नकल नहीं की जा सकती. उनके उपासक अक्सर बिना किसी संदेह के उनके वक्त की यादों के आगे घुटने टेककर इन नकल या प्रतिकृतियों को स्वीकार कर लेते हैं. ऐसा करके वे न तो वह माहौल दे पाते हैं और न भरोसा, जिसमें उस्ताद जैसी शख्सियत फल-फूल सके. उन्हीं उस्ताद जैसी, जिन्होंने संदेह से परे साबित किया था कि घराना परंपराओं के प्रति वफादार रहते हुए भी अपनी आवाज खोजना मुमकिन है. उनकी विरासत असल में, इसी अक्सर अनदेखी कर दी गई सचाई की याद दिलाती है. ■

शुभा मुद्गुल *हिंदुस्तानी शास्त्रीय गायिका और पद्मश्री हैं*

उस आवाज को भूलना मुश्किल

एम. बालमुरलीकृष्ण
(1930-2016)

आठ साल की उम्र में पहली बार लाइव गाने वाले एम. बालमुरलीकृष्ण ने आगे चलकर 25,000 से ज्यादा कंसर्ट्स में संगीत प्रस्तुतियां दीं. वे प्रयोग करने को लेकर हमेशा खुले रहे और कर्नाटक संगीत को उन्होंने अखिल भारतीय श्रोताओं तक पहुंचाया

अरुणा साईराम

बंबई में बड़ी होते हुए मैं शहर में होने वाले कर्नाटक संगीत के तमाम बड़े उस्तादों के कंसर्ट में जाती रहती थी. पर खासकर एक आयोजन मुझे साफ-साफ याद है. बालमुरली सर ने उस दिन यही कोई तीन घंटे गाया होगा. तब मैं हालांकि बच्ची ही थी और मुझे कोई भान नहीं था कि वे असल में कर क्या कर रहे थे, पर मैंने महसूस किया कि हर वक्त मैं खुश और रोमांचित थी. उन्होंने बिल्कुल सहज ढंग से जैसे बिना प्रयास के ही सबसे मुश्किल चीजें कीं. उनकी आवाज हरेक सप्तक में रची-बसी और पूर्णत: तराशी हुई थी. वे आपसे अपने संगीत की तारीफ करवाते थे और अपनी खामोशियों की भी.

तकनीकी तौर पर हमारा रिश्ता गुरु-शिष्य का नहीं था, पर मैं उन्हें गुरु की तरह इज्जत देती और वे मुझे 'वात्सल्यम' के भाव या पितृ प्रेम से देखते. सर ने 'छवि'—यानी कर्नाटक संगीतकार को कैसा होना या नहीं होना चाहिए—की बाध्यताओं से खुद को या अपने संगीत को कभी परिभाषित नहीं होने दिया. मसलन, उन्होंने जितने भी फिल्मी गाने गाए, वे सब अविस्मरणीय हैं.

उन्हें हमेशा यह लगता था कि कर्नाटक संगीत को चौतरफा फैलना चाहिए, वह महज कुछेक लोगों का विशेषाधिकार नहीं होना चाहिए. जब भी किसी ने उनसे पूछा, ''आप अपने संगीत से यह सब कैसे कर सकते हैं?'', उनका बस एक ही विनम्र जवाब होता, ''मैंने संगीत को नहीं खोजा, संगीत ने मुझे खोजा है.'' ■

अरुणा साईराम *कर्नाटक संगीत की गायिका, रचयिता और पद्मश्री विजेता हैं*

एक शांत बागी

पंडित कुमार गंधर्व
(1924-1992)

पंडित कुमार गंधर्व ने घराना संगीत की परिपाटी को तोड़कर खुद अपनी निजी शैली विकसित की

पंडित विश्व मोहन भट्ट

कुछ संगीतकार ऐसे होते हैं जो सदी में एक बार जन्म लेते हैं. पंडित कुमार गंधर्व ऐसे ही रहनुमा थे. कुमार जी बचपन से ही विलक्षण प्रतिभा से संपन्न थे. उन्होंने जाने-माने गुरु बी.आर. देवधर से संगीत की शिक्षा ली और फिर घराना संगीत परंपरा तोड़कर खुद अपनी निजी शैली और मुहावरा विकसित किया. कम उम्र में तपेदिक से उबरने के बाद वे और ज्यादा ऊर्जा और नए सांगीतिक विचारों के साथ उभरकर आए.

वे एक किस्म के विद्रोही थे जिन्होंने लोकसंगीत और भजनों के साथ प्रयोग किए. उनके नवाचार और रागों की गैर-रूढ़िगत व्याख्या ने आलोचना को न्यौता दिया, पर वह उन्हें हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में नए रागों की रचना से रोक नहीं पाई. दूसरे संगीतकारों के विपरीत, वे अपनी संगीत रचनाओं से आपको महज 15 मिनट में मंत्रमुग्ध

भारतीय संगीत का राजदूत

उस्ताद अल्ला रक्खा
(1919-2000)

शागिर्दों में 'अब्बाजी' के नाम से विख्यात और सदैव पितृतुल्य उस्ताद अल्ला रक्खा ने अपनी उदारता और संगीत मेधा दोनों से प्यार कमाया. कभी केवल संगत का वाद्य माने जाने वाले तबले को उन्होंने गौरव और इज्जत की जगह दिलवाई

रंजीत बारोट

कर सकते थे.

कुमार जी की आवाज अनूठी और बांधने वाली थी. इसने राग की पारंपरिक प्रस्तुति के तरीके को नई इबारत दी. राग की कल्पना और उन्हें प्रस्तुत करने की उनकी कला अभूतपूर्व थी—संगीत के हर सुर की उनकी व्याख्या प्रेक्षकों के लिए आंख खोल देने वाली होती. उनके भजन और सुरीली लोक धुनें सुनिए, वे जिंदगी भर आपका पीछा नहीं छोड़ेंगी. असल में, वे खुद अपने कंसर्ट बहुत ध्यान से संजोते और तैयार करते.

कंसर्ट में कुमार जी की थीम आधारित प्रस्तुतियां—गीत वर्षा, ऋतुराज, गीत हेमंत—संगीत रचनाओं की लीक से हटकर होतीं. उन पर मालवा इलाके के लोक संगीत का असर था. उनकी आवाज में गांव-देहात की अनुगूंज और लय और स्वर की नजाकत ही थी जो उन्हें गायकी का मेधावी जादूगर बना देती थी.

कुमार जी आजाद पंछी थे, जिसे पिंजरे में कैद नहीं किया जा सकता था. हरेक जीनियस की तरह वे मुक्त हृदय से गाना चाहते थे. वे घरानों के परे थे. उन्होंने खुद अपना घराना रचा. उन्होंने खुद अपने संगीत विश्वासों का अनुसरण किया. वे एक ऐसे विद्रोही थे, जिसका एक साफ-सीधा उद्देश्य था. ■

पंडित विश्व मोहन भट्ट *मोहन वीणा के उस्ताद, पद्म भूषण और ग्रैमी अवार्ड विजेता हैं*

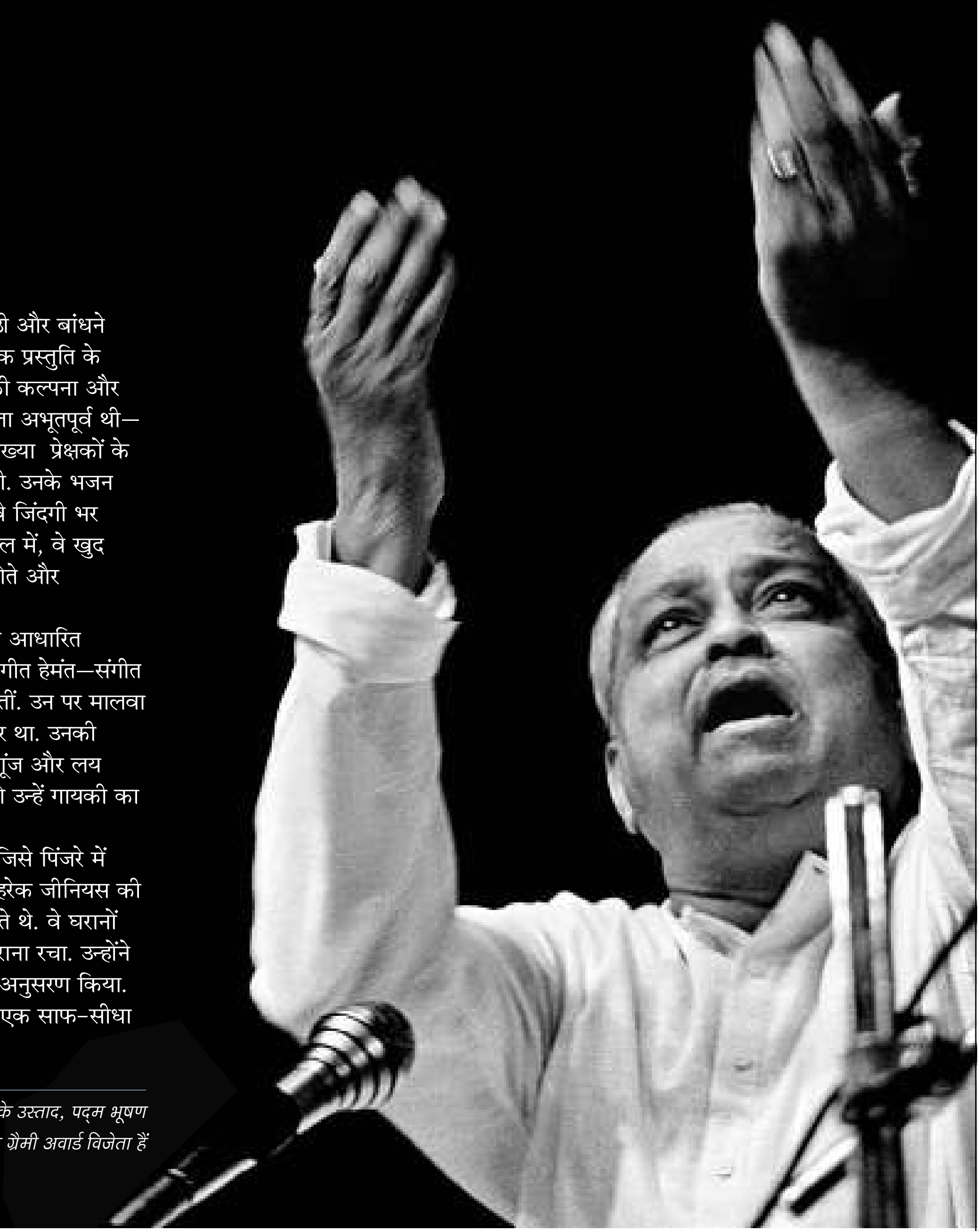

अलामी स्टॉक फोटो

इंडियन एक्सप्रेस

मेरी मां सितारा देवी अब्बाजी के बहुत करीब थीं. वे अक्सर हमारे घर आया करते थे. उनके साथ कुछ वक्त बिताकर आप यह एहसास लेकर लौटते थे कि आप संत की सोहबत में थे. वे हमेशा मुस्कराते और उदारता से अपना ज्ञान और बुद्धिमता बांटते रहते. मैं कहूंगा कि उन्होंने सबसे पहले मुझे इनसान के तौर पर प्रभावित किया.

मैंने उनसे तबले की कुछ तालीम ली, पर उन्होंने जल्द ही ताड़ लिया कि मेरा दिल तो ड्रम सेट में है. मुझे याद है उन्होंने कहा था, ''अगर तुम्हें ड्रम बजाना पसंद है तो तबला बजाने की जरूरत नहीं है.'' उन्होंने मुझे ताल के कुछ सार्वभौम सिद्धांत समझाए. उन्होंने मेरा दिमाग नई संभावनाओं की तरफ खोला. मैंने देखा कि अब्बाजी ने घरानों के बीच भी कोई सरहदें नहीं बनाईं. उनके तईं सभी उपनदियां एक ही नदी—संगीत—की तरफ ले जाती थीं.

वे और पंडित रविशंकर जी बाकी दुनिया के लिए भारतीय संगीत के पहले बड़े राजदूत थे. उन्होंने बाहर से भारत पर बहुत रोशनी डाली. अमेरिका और यूरोप घूमते हुए वे सामर्थ्य के शिखर पर थे. अब्बाजी ने दुनिया भर के संगीतकारों और तालवादकों को झलक दिखलाई कि भारतीय ताल व्यवस्था कैसे काम करती है और इसका प्रयोग कैसे किया जा सकता है. उनकी प्रतिष्ठा और प्रभाव की थाह नहीं ली जा सकती. ■

रंजीत बारोट *कंपोजर, ड्रमर और गायक हैं*

नृत्य की प्रसिद्ध पुजारिन

रुक्मिणी देवी अरुंडेल

(1904-1986)

भरतनाट्यम में आमूलचूल बदलाव लाते हुए रुक्मिणी ने पशु अधिकारों के लिए लड़कर, भारतीय हथकरघे को लोकप्रिय बनाकर और देश की शिक्षा प्रणाली पर असर डालकर कुछ और क्रांतियों को भी अंजाम दिया

लीला सैमसन

रुक्मिणी नीलकांत शास्त्री 1904 में मदुरै में जन्मीं. वे आठ बच्चों के परिवार में छठी संतान थीं. युवा वय में वे स्वप्नदर्शी थीं, पर 16 की होते-होते उन्होंने एक अंग्रेज—प्रतिष्ठित शिक्षाशास्त्री और थोड़े-बहुत थियोसोफिस्ट—से शादी करने की ठान ली. उन्होंने 'सादिर' कला, जिसे अब भरतनाट्यम कहा जाता है, सीखकर जातिगत भेदभाव की बेड़ियां तोड़ दीं. इस कला में आमूलचूल बदलाव लाते हुए उन्होंने इसे सभी जातियों, धार्मिक समुदायों और राष्ट्रीयताओं के लोगों के लिए सुलभ बनाया.

अपने पति के साथ उन्होंने उनकी गुरु डॉ. ऐनी बेसेंट की याद में वनों से घिरे परिवेश के बीच बेसेंट स्कूल ऑफ अड्यार और इंटरनेशनल सेंटर ऑफ आर्ट्स शुरू किया, बाद में जिसका नाम बदलकर कलाक्षेत्र रखा गया. उस वक्त जब न तो शाकाहारी होना फैशनेबल था और न ही दुनिया भर के बूचड़खानों और प्रयोगशालाओं में मानवीय परिस्थितियों का प्रवक्ता होना, वे इंटरनेशनल वेजिटेरियन कांग्रेस और राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय पशु कल्याण बोर्डों की प्रमुख रहीं. उन्हीं के छह सालों के अथक प्रयास की बदौलत 1960 में भारत की संसद में पशु कल्याण विधेयक पारित किया गया. वे भारतीयों के हथकरघे के कपड़े पहनने के हक में थीं और इसकी सबसे बड़ी समर्थक बन गईं. यही नहीं, उन्होंने जो पहना, वह जल्द ही देश भर के महिला और पुरुषों के लिए फैशन स्टेटमेंट बन गया.

उनके पति जॉर्ज अरुंडेल और उन्होंने मैडम मारिया मॉन्टेसरी को 1939 में भारत बुलाया. मॉन्टेसरी आंदोलन उन्हीं की दूरदृष्टि से भारत में फैला. वे भारत में तिब्बतियों के पुनर्वास के लिए बनी समिति की सदस्य थीं और 1959 में दलाई लामा के भारत आने पर उन्होंने उनके साथ नजदीक से काम किया. ■

लीला सैमसन *भरतनाट्यम की विश्वविख्यात नृत्यांगना हैं*

परपंराओं का कायापलट

पंडित बिरजू महाराज, 83 वर्ष

अपनी कला में सब कुछ समेट लेने वाले पंडित बिरजू महाराज ने न केवल कथक के भंडार को आमूलचूल बदला बल्कि उसका जीवनकाल भी बढ़ाया

अदिति मंगलदास

पंडित बिरजू महाराज की कलात्मक शख्सियत ऐसी है, जो तर्क से परे चली जाती है. वे गुरु, नर्तक, कोरियोग्राफर, गायक और कंपोजर हैं. जैसे इतना काफी न हो, तो वे तालवाद्य बजाते, कविता लिखते और चित्र बनाते हैं. कथक नृत्य जितनी प्राचीन परंपरा के कायापलट के लिए जीनियस की जरूरत पड़ती ही है. महाराज जी के मामले में तो और भी बहुत ज्यादा, जो कथक के प्रख्यात कालका-बिंदादीन घराने के वंशज और ध्वजवाहक हैं और इस घराने में उनसे पहले कई महान कलाकार हुए.

बचपन से प्रतिभा संपन्न महाराज जी की नृत्य की जन्मजात समझ, प्रकृति और मानवता का गहरा अवलोकन और व्यापक कल्पनाशीलता कथक को उसके भौगोलिक संदर्भ से आगे ले गई और उच्च क्षमता के शास्त्रीय नृत्य के रूप में न केवल भारत बल्कि दुनिया भर में मंच के बीचोबीच ले आई. उन्होंने न केवल कथक के भंडार को बल्कि उसकी प्रस्तुति, तालीम, जीवनकाल को भी आमूलचूल बदला और यह सब उसके सार तत्व को साबुत रखते हुए किया. वे विरासत में मिली परंपरा और उसकी समकालीन शक्ति के मूर्त रूप हैं. उनके शिष्य अब जाने-माने कलाकार हैं और दुनिया भर में फैले हैं.

वे कथक के अकेले कलाकार हैं, जिन्हें भारत सरकार से पद्म विभूषण मिला. इस विद्वतापूर्ण मस्तिष्क, हृदय और शरीर में जो कुछ भी प्रवेश करता है, नृत्य में बदल जाता है. कथक की उनकी खोजों में भिन्न-भिन्न क्षेत्रों के सत्यजित राय, बालसरस्वती, जाकिर हुसैन, केलूचरण महापात्र और संजय लीला भंसाली जैसे महान कलाकारों के साथ मिलकर किए गए कई काम शामिल हैं.

उनकी शिष्या होने के नाते मैं हमेशा यह देखकर चकित रह जाती हूं कि कैसे उनका हर पल नृत्य में डूबा रहता है, हर प्रेरणा नृत्य में बदल जाती है और हर सांस नृत्य की लय बन जाती है. यह यकीनन उन्हें महान बनाता है. ■

अदिति मंगलदास *कथक नृत्यांगना और कोरियोग्राफर हैं*

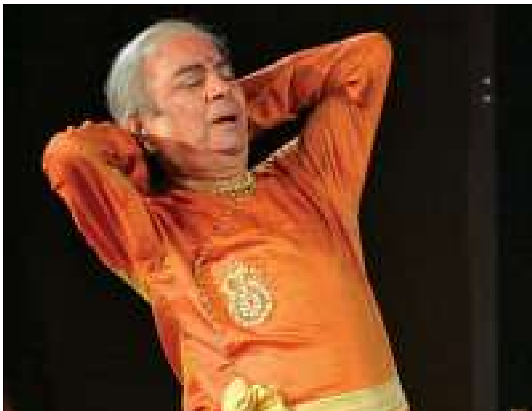

मनीष अग्निहोत्री

रघु राय

गजब की गरिमा

केलूचरण महापात्र (1926-2004)

ओडिसी के पुरोधा केलूचरण महापात्र ने इस नृत्य कला का भंडार स्थापित करने में अहम भूमिका अदा की

माधवी मुद्गल

अगर केलूचरण महापात्र नहीं होते तो ओडिशी नृत्य कला वह नहीं होती जो आज है. मेरे लिए वे इसके मुख्य वास्तुकार हैं. ओडिशा में रघुराजपुर के चित्रकारों के परिवार से आए महापात्र ने पारंपरिक नृत्य प्रथाओं 'गोटीपुआ' और 'महरी' के तत्वों का सार लेकर और मंदिर के मूर्तिशिल्पों, चित्रकारी का अध्ययन करके ओडिसी को बहुआयामी रूप दिया. अगर कोई उनसे कहता कि उन्होंने जो किया वह शुद्ध और सच्चा है, तो वे कहते, ''ये तो ऐसा ही था.'' यह ऐसा नहीं था. उन्होंने गति की शब्दावली को तराशा.

उनकी रचनात्मक मेधा ने उन्हें महापुरुष बना दिया. उन्होंने जयदेव के *गीत गोविंद* की उत्कृष्ट अष्टपदियां इतनी वैचारिक निरंतरता के साथ कोरियोग्राफ कीं कि उनमें दर्शक के भीतर भावनाएं जगाने की क्षमता उत्पन्न हो गई. 1979 में जब वे एक कार्यशाला के दौरान उनमें से एक हमें पढ़ा रहे थे, मैंने उन्हें इसे मंच पर दिखाने के लिए प्रोत्साहित किया. नायिका को चरितार्थ करते वक्त वे जरा भी स्त्रैण नहीं दिखते थे. आज ओडिशी के सैकड़ों पुरुष नर्तक हैं, पर यह रुझान शुरू तो उन्होंने ही किया. संयुक्ता पाणिग्रही हों, सोनल मानसिंह या कुमकुम मोहंती, उन्होंने ऐसे नर्तक-नर्तकी बनाए जो उनका विजन साकार कर सकें.

वे अपने पीछे ऐसे कई नृत्यकार छोड़ गए, जो दुनिया भर की अकादमियों में उनकी शैली को फैला रहे हैं. उन्होंने वह नींव रखी, जिस पर दूसरे अपने भंडार बना रहे हैं. ■

माधवी मुद्गल *प्रतिष्ठित ओडिसी नृत्यांगना हैं*

कोमल और शक्तिशाली

अनीश कपूर, 67 वर्ष

शिकागो में 'क्लाउड गेट' जैसी अप्रतिम कृतियों के सर्जक अनीश कपूर ऐसे मूर्तिकार और कलाकार हैं जिन्हें रोजमर्रा की चीजों में भी कुछ नया तलाश लेने में महारत हासिल है

सुबोध गुप्ता

चार्ल्स प्लेटिऑ/रायटर्स

मेरी राय में अनीश कपूर आज के सबसे महत्वपूर्ण जीवित कलाकारों में से हैं. मैं पहली बार 1980 के दशक के अंत में दिल्ली आया था और भारत में काम कर रहे सभी तरह के कलाकारों की कृतियों को देख रहा था. इंटरनेट से पहले के दौर में अंतरराष्ट्रीय कलाकारों के कामों को देख पाना कठिन था, इसलिए मुझे याद है कि मैं अमेरिकन सेंटर लाइब्रेरी गया था, जहां मैंने रंजकों के साथ किए गए कपूर के शुरुआती कामों को देखा था. इनमें लाल, पीले और काले रंग की ढेरियों को अलग-अलग आकार दिया गया था. कोमल और शक्तिशाली. मेरी दिलचस्पी यह जानने में थी कि कैसे कोई भारतीय मूल का कलाकार किसी चीज को मूल से ग्रहण करने के बाद उसे समकालीन भाषा में बदल सका. इससे कई ऐसे कलाकारों के रास्ते का पता चला जो वस्तुओं में परिचित तत्व को देखते हुए कुछ और भी देख पाते हैं, जो अपने आस-पास को विषयगत रूप से देखते हैं और फिर उसे एक वस्तु के रूप में बदल देते हैं.

2003 में मैंने लंदन में टेट मॉडर्न के टर्बाइन हॉल में उनकी उत्कृष्ट कृति 'मार्सियाज' देखी थी जो वास्तव में एक ऐसा स्थान प्रदर्शित कर रही थी जो अपने भीतर से एक इमारत को बाहर धकेल रही थी. कपूर की बनाई मेरी कुछ पसंदीदा कृतियों में उनके स्टेनलेस स्टील दर्पण के टुकड़े और शिकागो में क्लाउड गेट हैं जो वास्तव में शहर के साथ वैसे ही संवाद करते हैं जैसे किसी सार्वजनिक मूर्ति को करना चाहिए. ■

सुबोध गुप्ता *प्रतिष्ठित समकालीन भारतीय कलाकार हैं*

लाजवाब दीवानगी

पृथ्वीराज कपूर (1906-1972)

भले *मुगल-ए-आजम* में शहंशाह अकबर का किरदार हमारी यादों बसा है, मगर पृथ्वीराज कपूर वाकई रंगमंच के सरताज थे, जिन्होंने प्रेम, राष्ट्रीयता और भाईचारे का संदेश दिया

लिलेट दुबे

इंडियन एक्सप्रेस

अपनी थिएटर कंपनी पृथ्वी थिएटर्स के जरिए पृथ्वीराज कपूर ने सामाजिक और राजनैतिक महत्व के नाटक किए

जब भी मैं आधुनिक भारतीय रंगमंच के बारे में सोचती हूं, मेरे जेहन में एक ही कद्दावर शख्सियत पृथ्वीराज कपूर की उभरती है. मेरे लिए सबसे खास रंगमंच को लेकर उनकी दीवानगी है, जो उनके सामाजिक दायित्व के गहरे बोध से गुंथी हुई थी.

बहुआयामी प्रतिभा के धनी उस प्रकांड किस्म के व्यक्ति ने निर्देशन और अभिनय, स्क्रीन, स्टेज, लेखन हर मामले में समान सहजता से अपनी जगह बनाई लेकिन उनका दिल थिएटर में बसता था. वरना, और कौन हो सकता है जो अपने निर्देशन और अमूमन लेखन के 2,662 शो में सभी में खुद भी अभिनय करे? उन दिनों वे अपने नाटकों को पूरे भारत भर में ले गए, और अपनी फिल्मों की कमाई से अपने स्टेज प्रोडक्शन के खर्चे भरते रहे.

पृथ्वीराज कपूर इंडियन पीपल्स थिएटर एसोसिएशन (इप्टा) के संस्थापक सदस्य थे और बाद में उन्होंने अपनी खुद की कंपनी पृथ्वी थिएटर स्थापित की. इसमें वे सामाजिक और राजनैतिक प्रासंगिकता वाले नाटक पेश किया करते थे. उनके विषय विविध होते थे—भारत छोड़ो आंदोलन से लेकर राष्ट्रवादी आंदोलनों तक. मसलन *पठान* में हिंदू-मुस्लिम एकता दिखाई गई थी. आज के वातावरण में, यह संदेश खास तौर पर प्रासंगिक है.

पृथ्वी थिएटर देश की रंगमंच बिरादरी के लिए मकबूल है क्योंकि इसमें उसके संस्थापक की भावना की शुद्धता जुड़ी है. चाहे आप परफॉर्मर हों या दर्शक, पृथ्वी मंच हमें शानदार मानवीय अनुभव देता है. ■

लिलेट दुबे *रंगमंच और फिल्मों की अभिनेत्री और रंगमंचीय निर्देशक भी हैं*

बंदीप सिंह

रंगमंच और अदाकारी के महा गुरु

इब्राहिम अल्काजी
(1925-2020)

उनके निर्देशन में नाटकों को भूलना मुश्किल है, लेकिन राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के निदेशक के नाते इब्राहिम अल्काजी ने जैसे देश के आला अभिनेताओं को तराशा, उसका कोई जोड़ नहीं

नसरुद्दीन शाह

हर छात्र, जिसने इब्राहिम अल्काजी के मातहत पढ़ाई की है, वह उन जैसा बनना चाहता था. ऐसे असंख्य छात्र अपना कोर्स पूरा करके अपने गृहनगरों को लौट गए और अमूमन उनके भव्य प्रोडक्शन में से किसी के मंचन की कोशिश करते रहे (और प्राय: नाकाम हुए). उनकी शख्सियत ने जिस तरह से हम सबको सम्मोहन में जकड़ रखा था, वह सिर्फ एक बात से स्पष्ट होती है कि चाहे कोई कितनी भी बार उनके दफ्तर के सामने से गुजर जाए, पर वे अंदर क्या कर रहे हैं, यह देखने की इच्छा इतनी बलवती होती थी कि मैं तो खुद उनके कमरे में तब भी ताकझांक करता था, जब वे शहर में नहीं होते थे.

लड़के उनकी पूजा करते थे और लड़कियां उन पर जान देती थीं—यहां एक किस्सा भी है. पता नहीं झूठ या सच. उनके घर पर डिनर पर गईं दो छात्राओं ने बाथरूम में उनका सेफ्टी रेजर देख लिया. उन्होंने उस रेजर को झाड़कर उसमें से उनकी दाढ़ी के टुकड़े निकाल कर रख लिए थे.

भारतीय रंगमंच को स्तरीयता और अनुशासन के साथ खुद उसके लिए मिसाल पेश करते हुए, कला और साहित्य के अपने ज्ञान को अपने नाट्य कार्यों में लगातार प्रसारित करने की उनकी विरासत, हम सभी को उन सभी क्षेत्रों की अहमियत के बारे में बताकर हमें हरफनमौला रंगकर्मी बनाने में उनकी भूमिका कमाल की रही. यह काम उनके कुछ मुरीद अब भी कर रहे हैं जो मंच से जुड़े हैं.

मेरे लिए, कुछेक असहमतियों के बावजूद उनकी कद्दावर शख्सियत कभी छोटी नहीं पड़ी. मंच पर क्या प्रभावी होता है इस पर उनकी सहज वृत्ति अतुलनीय थी और उनके पास शुष्क विश्लेषण और 'मेथड' के पेचो-खम के लिए जरा भी धीरज नहीं था. हालांकि, वे शायद ही कभी किसी खास कंपोजिशन या मंचीय कार्य की व्याख्या करने की जहमत उठाते थे (किसी को पूछने की हिम्मत भी नहीं थी). उनके कारण पर्याप्त रूप से स्पष्ट होते थे जब उस कार्य को जिंदगी मिलती थी—मंचीय कार्य में यह बुनियादी महत्व की बात है. उनकी प्रस्तुतियों की गतिशीलता, परिष्कार और सफाई आज भी अपने देश में तो बेजोड़ है. ऐसे गुरु हर दौर में मिलें. ■

नसीरुद्दीन शाह *मशहूर रंगमंचीय और सिनेमा अभिनेता हैं. उन्होंने कई नाटकों का निर्देशन भी किया है*

बिंदु में समाया जगत

एस.एच. रज़ा (1922-2016)

दुनिया में ज्यामितीय आकृतियों पर उतनी सघनता से बहुत चित्रकारों ने काम नहीं किया, जितना एस.एच. रज़ा ने किया, उनके काम में आकृतियां हैं और हर बिंदु अलग एहसास और भावनाओं से भरा है

गणेश हलोई

उनसे मैं सिर्फ एक दफा मिला हूं. वे अपने श्रोताओं के लिए 'पॉइन्ट' (बिंदु) की व्याख्या कर रहे थे—जिसका मूल भाव यह था कि वे अपनी रचना की तरफ ज्यामितीय आकारों से पहुंचना चाह रहे हैं. मैं यह समझने की कोशिश कर रहा था कि क्या मेरी समझ उनके विचारों से मेल खाती है.

निजी तौर पर, मैं जब ज्यामितीय आकृतियों के उनके कैनवस की तरफ देखता हूं—त्रिकोण, आयत, वर्ग, बेलनाकार, रेखाएं—तो मुझे उनमें एक खिलदंड़पन नजर आता है, उनमें एक तरलता है. इनमें आकारों को इस तरह से सजाया गया है कि वे कोई भावना, कोई एहसास को प्रकट करते दिखते हैं.

यह कुछ ऐसा था मानो वे रूपों के माध्यम से निराकार तक या शायद उसके उलट पहुंचने की कोशिश कर रहे थे. बिंदु सभी आकृतियों का अभिसरण और विचलन दोनों था. यह सृजन का बिंदु था.

रंगों का उनका उपयोग भी आकर्षक था—कोई सम्मिश्रण नहीं, केवल शुद्ध रंगों का उपयोग. यह सादगी 'बिंदु' की सरल लेकिन गहन और पेचीदा कहानी भी बताती है. ■

गणेश हलोई *देश के सर्वाधिक प्रतिष्ठित चित्रकारों में हैं*

बंदीप सिंह

फोटो सौजन्य आकार प्रकार, गणेश प्रताप सिंह के आर्काइव से

लोकरंग कला

जामिनी रॉय (1887-1972)

'आधुनिक भारतीय कला के जनक' के रूप में विख्यात जामिनी रॉय अपने समय से 50 साल आगे थे

अंजलि इला मेनन

जामिनी रॉय पश्चिम बंगाल के एक गांव बेलियातोर में पले-बढ़े और उन्होंने राजकीय कला महाविद्यालय, कोलकाता में अबनींद्रनाथ टैगोर की देखरेख में शिक्षा ग्रहण की. आधुनिक भारतीय कला के जनक के रूप में प्रतिष्ठित जामिनी रॉय का प्रशिक्षण पेंटिंग की ब्रिटिश अकादमिक शैली में हुआ था लेकिन आगे चल कर उन्होंने अकादमिक प्रशिक्षण में मिली शैली को छोड़ कर बंगाली लोक परंपराओं से प्रेरित शैली अपना ली थी. 1930 आते-आते उन्होंने पटुआ स्क्रॉल पेंटिंग और कालीघाट पाट शैली से प्रेरित पारंपरिक शैलियों को ही पूरी तरह से अपना लिया था.

पश्चिमी कला और भारतीय संस्कृति के प्रभाव के बीच की खाई पाटने के प्रयास में रॉय ने शांतिनिकेतन में प्रचलित 'वाश' तकनीक, लोक और आदिवासी कला तथा कालीघाट पेंटिंग शैलियों के प्रभावों का असाधारण मिश्रण विकसित किया.

जामिनी के विपुल कलाकृति उत्पादन में युवा कलाकारों के एक समूह का सहयोग शामिल था, जिन्होंने आयातित विदेशी सामग्रियों पर निर्भर होने के बजाय हस्तनिर्मित कागज पर गोंद के साथ मिलाए गए स्वदेशी रंजकों का उपयोग करते हुए काम किया. इसके चलते रॉय अपने चित्रों को बहुत कम कीमत पर पेश कर सके, ताकि हर व्यक्ति पेंटिंग खरीद सके और हर घर की दीवाल पर जगह पा सके. (विडंबना यह है कि आर्टरी इंडिया आर्ट इंटेलिजेंस के अनुसार, 'संगीतकार' शीर्षक की उनकी पेंटिंग मई 2007 में लंदन की एक नीलामी में 72.1 लाख रुपए में बिकी थी.)

रॉय को आज भारतीय कला में उनके अद्भुत योगदान के लिए याद किया जाता है, लेकिन, पीछे मुड़कर देखें तो उनके काम को उत्तर-आधुनिक की श्रेणी में रखा जा सकता है. मतलब कि जामिनी रॉय अपने समय से 50 साल आगे थे.

अंजलि इला मेनन *प्रसिद्ध समकालीन कलाकार हैं*

अबाध ऊर्जा

एफ.एन. सूज़ा (1924-2004)

कलाकार एफ.एन. सूज़ा के काम में रचनात्मक और कलात्मक स्वतंत्रता औपनिवेशिक शासन से देश की सांस्कृतिक मुक्ति का भाव

रुबीना करोडे

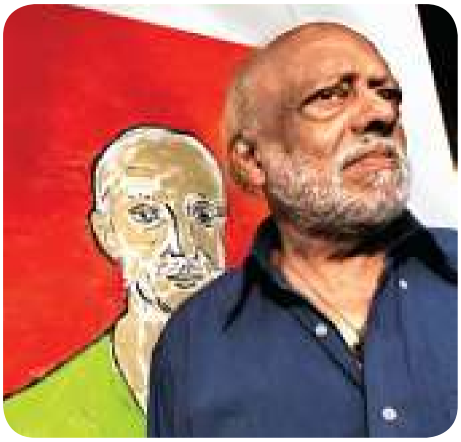

गेट्टी इमेजेज

कलाकार फ्रांसिस न्यूटन सूज़ा बॉम्बे प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स ग्रुप के संस्थापक सदस्य थे. देश की स्वतंत्रता के आसपास गठित इस समूह का जोर औपनिवेशिक शासन से हमारी सांस्कृतिक मुक्ति का जश्न मनाती रचनात्मक और कलात्मक स्वतंत्रता पर था. सूज़ा और उनके समकालीनों ने हाशिए के आदमी, मजदूरों और किसानों को अपने काम का विषय बनाया. नव-स्वतंत्र देश सामाजिक विषमता, आर्थिक गैर-बराबरी तथा थोपी जा रही धार्मिकता के मुद्दों से जूझ रहा था और सूज़ा के विद्रोही मन ने इन विषयों को रेखा और रंग में पिरोकर अबाध ऊर्जा के साथ चित्रित किया.

सूज़ा का शुरुआती जीवन गोवा में उनके पुश्तैनी जिले में बीता था. माना जाता है कि 1947 में सूज़ा की बोर्ड पर ऑयल पेंटिंग—जिसे 'भारतीय परिवार' के रूप में पहचाना जाता है—का मूल शीर्षक 'आफ्टर वर्किंग इन द फील्ड ऑल डे, वी हैव नो राइस टु ईट' (खेत में दिन भर काम के बाद भी हमारे पास खाना नहीं) था. इस कृति से कलाकार का वामपंथी झुकाव स्पष्ट होता है. कला का उपयोग ''दयनीय स्थितियों को बदलने'' में करने के विश्वास ने सूज़ा को हाशिए के पात्रों को करुणा के साथ चित्रित करने के लिए प्रेरित किया. ■

रुबीना करोडे *किरण नाडर कला संग्रहालय की निदेशक और मुख्य क्यूरेटर हैं*

बहुमुखी प्रतिभा की खान

एम.एफ. हुसेन (1915-2011)

मकबूल फ़िदा हुसेन के जीवन का उत्तरार्द्ध विवादों से घिरा रहा, लेकिन वे 20वीं सदी के महान भारतीय कलाकार, देवताओं से लेकर गांधी तक उनके कैनवास में भारत खूब खिला

कृशन खन्ना

यकीनन मैं पहले कलाकार हुसेन से प्रभावित हुआ, लेकिन बाद में व्यक्ति के रूप से भी उनसे प्रभावित हुआ. वे बहुत आकर्षक थे. सेलेब्रिटी महिलाओं के प्रति उनका खिंचाव एक बात थी, लेकिन मेरे जैसे दोस्तों और कलाकारों के लिए यह आकर्षण बिल्कुल अलग किस्म का था. उन्होंने एक बार मुझसे एक किताब उधार ली थी—क्लाइव बेल की *आर्ट*. कुछ दिनों बाद उन्होंने मुझे अपनी एक पेंटिंग भेजी, जिसके साथ एक नोट था कि वे किताब किसी टैक्सी में भूल गए. ऐसा कोई दिन नहीं होता था जब मैं उनसे न मिलूं. जब उन्होंने मुझे बॉम्बे प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स ग्रुप में शामिल होने के लिए कहा तो मुझे सम्मानित होने जैसा महसूस हुआ. इस समूह का हर चित्रकार महान था—मैं इस शब्द का सबसे सच्चे अर्थ में उपयोग कर रहा हूं. हालांकि हम सभी गरीब थे, लेकिन हमें लगता था कि हम राजकुमार हैं.

हुसेन की कला न केवल सुलभ होने के कारण प्रतिष्ठित हुई, बल्कि इसलिए भी कि उन्होंने बहुत सारा काम किया था. कलाकार बनने से पहले उन्होंने होर्डिंग पेंट किए थे. तेजी से काम करने की वह क्षमता उनके पास बरकरार रही. इसके बावजूद, वे जानते थे कि आदमी मशीन नहीं है और वे अपनी कमियों से कभी नहीं कतराते थे. उन्होंने कभी भी खुद को 'मुस्लिम' के रूप में पेश नहीं किया. पहचान और समुदाय के सवालों में उनकी दिलचस्पी नहीं थी. हर आदमी उनका दोस्त था. मेरा मानना है कि उनका असर कोई जड़ चीज नहीं है. उनकी कला की तरह, यह भी सजीव है. ■

कृशन खन्ना *प्रसिद्ध कलाकार और पद्मभूषण पुरस्कार विजेता हैं*

आउटलुक स्टॉक फोटो

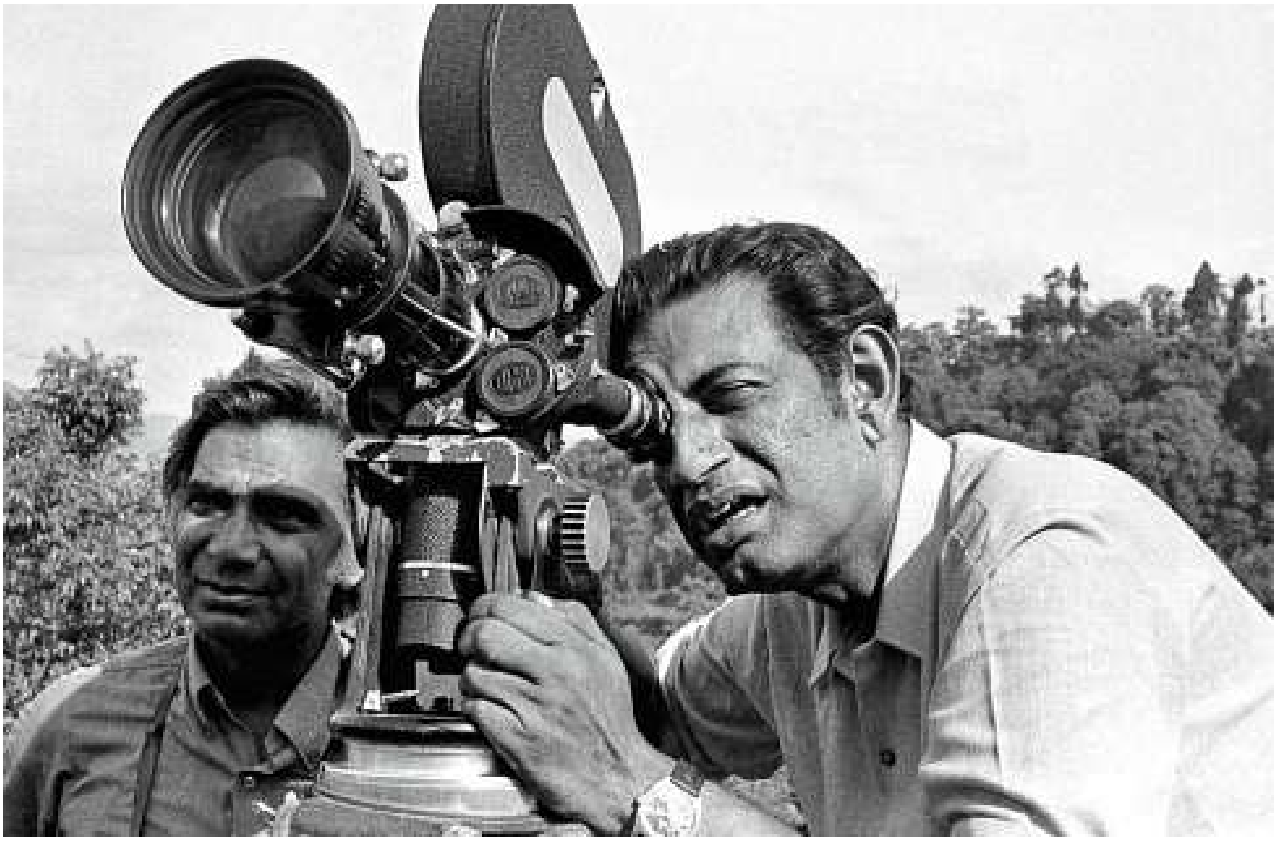

अलामी स्टॉक फोटो

सिनेमा का उस्ताद

सत्यजित रे (1921-1992)

पटकथा लिखने से लेकर संगीत रचना तक फिल्म के हरेक पहलू पर सत्यजित रे को महारत हासिल थी. दुनिया भर में यशस्वी उनकी फिल्मों ने बताया कि साधारण जिंदगी में भी असाधारण संभावनाएं हो सकती हैं

रितेश बत्रा

जब मैं बॉम्बे में बड़ा हो रहा था, मुझे याद है एक वीडियो लाइब्रेरी से मैं सत्यजित रे की फिल्में यूं ही उठा लाया. मेरे लिए वे रहस्योद्घाटक थीं. उन्होंने मुझे न सिर्फ यह बताया कि बॉलीवुड की मुख्यधारा से बाहर भी सिनेमा मुमकिन था, बल्कि यह भी कि रोजमर्रा की जिंदगी और रोजमर्रा की कहानियों पर फिल्में बनाई जा सकती हैं. यह एहसास मेरे दिलो-दिमाग से कभी गया नहीं. यह मेरे लिए बड़ा तोहफा था.

उनके दूसरे बहुत अच्छे काम भी हैं, पर रे की मेरी पसंदीदा फिल्म *महानगर* है. यह मेरी दुनिया भर की पसंदीदा फिल्मों में है. इसकी छोटी-छोटी बारीकियां मुझे अच्छी लगती हैं, पर सबसे अच्छा मुझे यह लगता है कि राय अपने हर किरदार के हमदर्द हैं. कई साल पहले मैंने ओम पुरी का एक इंटरव्यू पढ़ा था. *सद्गति* के दौरान रे ने सिर्फ एक दृश्य में उन्हें निर्देशित किया, जिसमें उन्हें दरवाजे पर खड़े होना था. रे ने उनसे पूछा कि क्या उन्होंने कभी किसी बच्चे या बकरी को भीतर आने से पहले झिझकते देखा है. यह नतीजों पर केंद्रित निर्देशन नहीं था. यह ऐसा था जिसका लाभ अच्छा अदाकार उठा सकता था, जो फिर उस दृश्य और फिल्म को सत्य पर पहुंचने में मदद करता. मैं इसका पूरी क्षमता से अनुसरण करने का जतन करता हूं.

रे का सिनेमा दिखाता है कि जो बहुत स्थानीय है, किसी एक स्थान या समय का सत्य है, वह दुनिया भर में जा सकता है. जितना विशिष्ट आप अपनी फिल्म को बनाते हैं, उतनी ही ज्यादा सार्वभौम वह बन जाती है. रे की फिल्में कालातीत हैं. फिल्में आम तौर पर तुरंत देखकर फेंक देने के लिए बनाई जाती हैं. मगर रे इस्तेमाल करके फेंक देने योग्य नहीं हैं. उनकी फिल्में उस घड़ी की तरह हैं जो जिंदगी भर आपकी होती है और फिर आप उसे अगली पीढ़ी को सौंप देते हैं. देश या विदेश में प्रतिक्रियाओं के बारे में सोचे बगैर रे अपने रास्ते पर डटे रहे. यह जिंदगी की सबसे बड़ी सीखों में से एक है. ■

रितेश बत्रा *लंचबॉक्स और फोटोग्राफ सरीखी दुनिया भर में सराही गई फिल्मों के निर्देशक हैं*

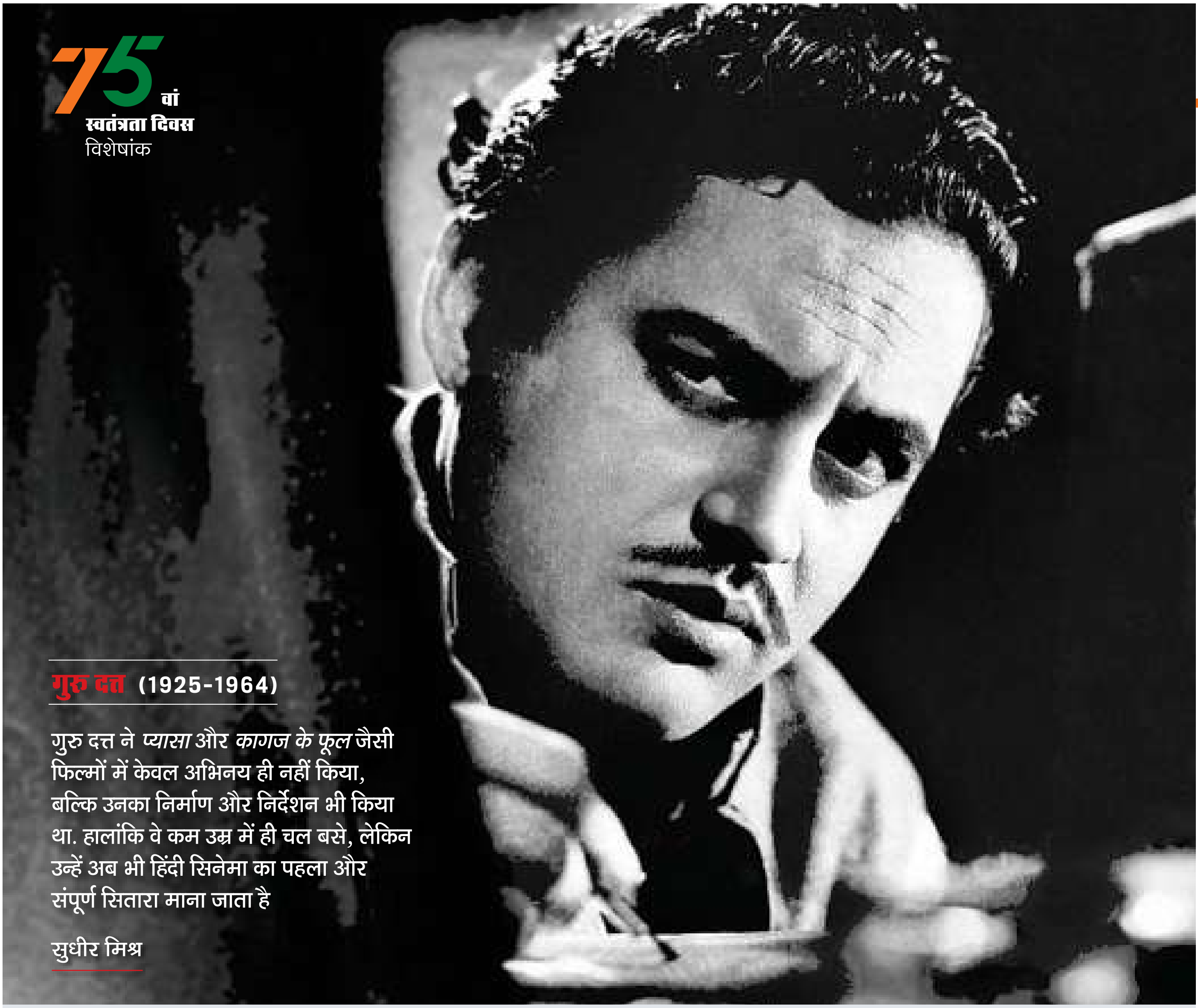

गुरु दत्त (1925-1964)

गुरु दत्त ने *प्यासा* और *कागज के फूल* जैसी फिल्मों में केवल अभिनय ही नहीं किया, बल्कि उनका निर्माण और निर्देशन भी किया था. हालांकि वे कम उम्र में ही चल बसे, लेकिन उन्हें अब भी हिंदी सिनेमा का पहला और संपूर्ण सितारा माना जाता है

सुधीर मिश्र

अलामी स्टॉक फोटो

परिष्कृत शिल्पकार

दरअसल, मेरी दादी *साहिब, बीवी और गुलाम* की छोटी बहू के किरदार से मिलती-जुलती थीं और पहली बार उन्होंने ही मुझे वह फिल्म दिखाई थी. मैं बच्चा था तो वह मुझे बहुत समझ में नहीं आई, पर मैंने वह फिल्म 25-30 बार और देखी तथा इस फिल्म के काव्यात्मक यथार्थवाद और गुरु दत्त की जज्बात की गहराई से सन्न रह गया. सामंतवाद की सड़न की कहानी को उन्होंने खूबसूरती से पेश किया. कोई मुझसे कहे कि मैं अपने आखिरी वक्त में अपने साथ एक हिंदी फिल्म साथ ले जा सकता हूं तो मैं *साहिब, बीवी...*साथ ले जाऊंगा. दादी ने वह फिल्म मुझे नहीं दिखाई होती, तो मुझे नहीं लगता कि मैं आज फिल्में बना रहा होता.

गुरु दत्त ने ही मुझे सिखाया कि आप सिर्फ यथार्थ की शूटिंग करके फिल्मकार नहीं बनते हैं. आपको उस यथार्थ को अपने शिल्प में ढालना होता है. जिस कदर उन्होंने कैमरे और प्रकाश का इस्तेमाल किया, वह बताता है कि उनके लिए तकनीशियन पहले सह-कलाकार होते हैं. उन्होंने बहुत कम फिल्में बनाई और वे 39 की उम्र में चल बसे—पर उन्होंने उन्हीं फिल्मों के साथ लोकप्रिय हिंदी सिनेमा को महान कला में बदल दिया. उन्होंने बंबई और महिलाओं का भी उत्थान किया था. उनके किरदार अपने साथ अपने चरित्र का विरोधाभास भी लेकर चलते थे. गुरु दत्त की फिल्मों के मायने अलग लोगों के लिए अलहदा है, पर यह साफ है कि इनकी एक ही कवित्व शक्ति थी—सिनेमा. ■

> गुरु दत्त की कुछ ही फिल्मों ने हिंदी सिनेमा को महान कला में बदल दिया. उनके किरदार अपने चरित्र का विरोधाभास लेकर चलते थे

सुधीर मिश्र हजारों ख्वाहिशें ऐसी *और* धारावी *जैसी बहुप्रशंसित फिल्मों के निर्देशक हैं*

पथ प्रदर्शक

राज कपूर (1924-1988)

महज 24 साल की उम्र में कपूर ने अपना स्टूडियो आरके फिल्म्स स्थापित किया. *आवारा* के साथ वे स्वतंत्र भारत के सबसे विलक्षण फिल्म प्रतिभा बन गए

सिमी ग्रेवाल

एक शख्स के तौर पर राज कपूर भावुक, बच्चों-जैसे, शक्की और भगवान से डरने वाले थे. वे बेहद उदार मेजबान थे और बेहद खिलंदड़ थे और उन्हें आर्ची कॉमिक्स पढ़ना बहुत पसंद था. वे मूडी थे और कई बार झक्की की तरह बर्ताव करते थे. कई बार वे बेचैन दिखते थे, और कभी-कभी बहुत वाचाल हो उठते थे, वे स्नेहिल भी थे और बहुत पजेसिव और संवेदनशील भी. हर चीज में वे डबल डोज सरीखे थे. कल्पना के मामले वे बेहद प्रतिभाशाली थे; निश्चित रूप से एक संपूर्ण मनुष्य, जिसमें आंतरिक आग, ऊर्जा, मूर्खता और बुद्धिमत्ता भरी हुई थी.

बतौर फिल्मकार, जब राजकपूर ने कहा था, 'सिनेमा मेरी जिंदगी है', तो यह उनमें कूटकर भरी हुई हकीकत थी. फिल्मों को लेकर उनमें जो पीड़ादायक जुनून था, वह अद्‌भुत था. उनके लिए उनकी फिल्मों से अधिक अहम कोई और चीज या व्यक्ति नहीं था. राजजी अपने क्रू को लेकर स्नेहिल थे, यहां तक कि उनका वे अपने बच्चों से भी अधिक ध्यान रखते थे. अगर किसी ने बढ़िया काम किया हो, तो उसकी तारीफ से वे पीछे नहीं हटते थे.

वे भारतीय सिनेमा के लिए पथ प्रदर्शक थे. चाहे किसी राहत कोष के लिए चैरिटी का शो हो, राजजी फिल्मोद्योग की डांस और गानों में अगुआई करते थे. वे न तो कभी सकुचाए, न कभी डरे, वे आत्मविश्वास से भरकर आगे बढ़ते रहे और उन्हें खुद पर और इस दुनिया में अपनी जगह को लेकर पक्का यकीन था. ■

सिमी ग्रेवाल *ने राज कपूर की फिल्म* मेरा नाम जोकर *में अभिनय किया और एक डॉक्यूमेंट्री* लिविंग लीजेंड राज कपूर *का निर्देशन किया है*

अलामी स्टॉक फोटो

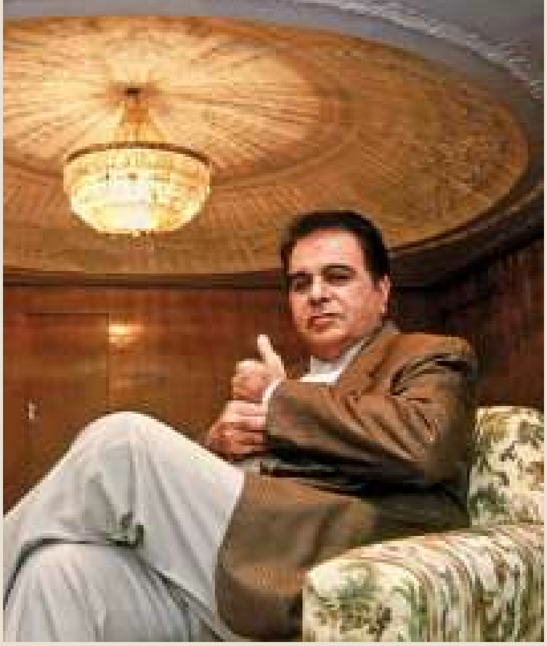

फयजान हुसैन

मोहक अदाकार

दिलीप कुमार (1922-2021)

बहुत कम लोग हैं जिन्होंने दिलीप कुमार जैसी बेशकीमती विरासत छोड़ी है, जिनकी शैली ने दो पीढ़ियों तक लोगों को प्रेरणा दी

ऋचा चड्ढा

एक ऐसे दौर में जब उनके समकालीन अपने तकियाकलाम ठीक करने में व्यस्त थे, दिलीप कुमार ऐसे नायक थे जिन्होंने नायकत्व नहीं चुना. मधुमती के गाने *चढ़ गयो पापी बिछुआ* में कोई नाटकीय एंट्री नहीं थी. वे बस चने खाते हैं, सामान्य अंदाज में आसपास देखते हैं और फिर इस खूबसूरत बाला (वैजयंती माला) को निहारते हैं, और इन सबके जरिए भी पुरअसर साबित होते हैं. मेथड ऐक्टिंग पर उनका जोर अपने समय के लिहाज से काफी आगे था.

दिलीप कुमार हमेशा उस क्षण में होते थे. उन्होंने संवाद अदायगी के प्रचलित लय का अनुसरण नहीं किया. उन्होंने भारत में अभिनेताओं के लिए स्तर काफी ऊंचा बना दिया. आज, जाने या अनजाने में, कई अभिनेता इस महान कलाकार की नकल जितना मुमकिन हो उतना कुदरती और असली दिखने की कोशिश में करते हैं. यह उनकी विरासत है.

मैं छोटी बच्ची थी जब मैंने उनको *राम और श्याम* में देखा था. वे कुछ अजीब हरकत कर रहे थे, मसलन उबला अंडा निगल जाना, लेकिन उन्होंने इसे भी मजेदार बना दिया था. और वे ट्रेजडी किंग के तौर पर मशहूर हैं. उनकी बहुमुखी प्रतिभा देखने लायक है. यहां तक कि अगर आप उनके काम को 2021 के नजरिए से भी देखें, तो वे पुराने पड़े हुए नहीं नजर आएंगे. एक कलाकार के तौर पर मैं इस दिग्गज शख्सियत की ऋणी हूं. ■

ऋचा चड्ढा मसान, फुकरे *और* गैंग्स ऑफ वासेपुर *जैसी फिल्मों के लिए मशहूर हैं*

सदाबहार आनंद

देव आनंद (1923-2011)

हर लिहाज से शानदार देव आनंद ने जो भी किया उस पर अपनी छाप छोड़ी, फिर चाहे उनकी संवाद अदायगी हो या उनके लिबास

जैकी श्रॉफ

देव आनंद का पोर-पोर शानदार था. अपने शिखर पर वे देश की जान थे. हिंदी सिनेमा में वे स्टाइल के पर्याय थे. उनके चलने, देखने और बोलने में एक अंदाज होता था. वे पहनावे में स्टाइल लेकर आए, चाहे शर्ट के कॉलर हों या उनके स्कार्फ. वे भड़कीले थे पर हमेशा गरिमापूर्ण. उनकी आंखों में एक चमक थी और उनमें एक किस्म की पवित्रता थी, जिससे वे बुरे किरदार निभाते हुए भी अच्छे उभरकर आते थे.

मैं बच्चा था तब मेरी मां उनकी

भारत की आवाज

लता मंगेशकर, 91 वर्ष

अपना पहला गाना उन्होंने 13 साल की उम्र में रिकॉर्ड करवाया और फिर 73 साल लंबे करियर में भारत के सबसे प्रिय गानों की आवाज रहीं

श्रेया घोषाल

भास्कर पॉल

अपनी आदर्श से मैं पहली बार उनके स्टुडियो में मिली, जहां मैं रिकॉर्डिंग के लिए गई थी. मेरे संगीत निर्देशक जानते थे कि यह मेरे लिए कितना बड़ा पल है, इसलिए उन्होंने रिकॉर्डिंग रोक दी और मुझे बताया कि लताजी आ गई हैं. मैं उसी पल सब कुछ छोड़कर उन्हें देखने नीचे भागी, जहां वे बैठी थीं, अपनी उसी जानी-पहचानी सफेद साड़ी में, चेहरे पर शर्मीली मुस्कान, उम्र के साथ थोड़ी झुकी हुई और फिर भी भीतर की रोशनी से जगमगाती आंखें. उनकी सादगी में गजब की आभा थी, जिसे देख मैं अवाक् रह गई. उन्होंने मुझे पहचान लिया और अपना आशीर्वाद दिया, पर मैं इतनी हतप्रभ थी कि समझदारी की कोई बात न कह सकी. संगीत के बारे में मैं जो कुछ जानती हूं, उसका ज्यादातर मैंने उनके

तरह मेरे बाल बना देती थीं. जब उनकी फिल्में देखने लगा तो उनमें ऐसा बह गया कि उनकी तरह बोलने लगा. मैं मॉडलिंग कर रहा था, तभी उन्होंने *स्वामी दादा* में मुझे बड़ा ब्रेक दिया. उन्होंने कहा (देव आनंद के अंदाज में बोलते हुए), ''सुबह सुबह तुम्हारी तस्वीर देखी और अब तुम सामने खड़े हो.'' फिर 15 दिन बाद उन्होंने माफी मांगी और कहा कि मेरी जगह मिथुनदा को लिया है क्योंकि वे बहुत अच्छे डांसर हैं. आखिरकार उन्होंने मुझे टहलुए के रोल में कास्ट किया. एक बार फाइट मास्टर नाराज होकर मुझ पर चिल्लाने लगा. वे खड़े हुए और कहा, ''शांत. नया लड़का है. सीख जाएगा. उसे वक्त दो और दिखाओ कि कैसे करना है.'' हर अदाकार के साथ इज्जत से पेश आने का वह रवैया मेरे दिलो-दिमाग में बस गया. उन्हीं के जैसे महान लोगों से आप सीखते हैं कि कैसे जमीन से जुड़े रहें और सबको सहज महसूस करवाएं. ■

जैकी श्रॉफ *ने* रामलखन, परिंदा *और* रंगीला *जैसी फिल्मों में काम किया है*

बंदीप सिंह

अनगिनत गाने सुनकर सीखा है. शहद में डूबी उनके कंठ की आवाज, स्वर, बारीकियां, अभिव्यक्तियां, ताकत, नजाकत, नफासत, सब बिल्कुल मुकम्मल है. फिर भी यह बता पाना नामुमकिन है कि कभी-कभी जब मैं उनके 'माई री मैं कासे कहूं', 'रस्मे उल्फत' जैसे या कई अन्य गाने सुनती हूं तो मैं इतनी भावविभोर क्यों हो जाती हूं कि आंखों में आंसू आ जाते हैं. यही वह अपरिभाषित पहलू है जिसे महसूस तो किया जा सकता है पर बताया नहीं जा सकता. कलाकार बारीकी से ईश्वर की मूर्ति गढ़ता है, पर हम उस मूर्ति की पूजा तभी करते हैं जब समृद्ध अनुष्ठानों से उनमें 'प्राण' प्रतिष्ठा होती है. यही 'प्राण' लताजी अपने हर गाने में डाल देती हैं. ■

श्रेया घोषाल *राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता पार्श्वगायिका हैं*

असली मनमौजी

किशोर कुमार (1929-1987)

किशोर कुमार गाते थे तो जादू जगा देते थे. अपनी सामान्य जिंदगी में वे अपने खिलौनों से बहुत प्यार करते थे

अमित खन्ना

भवान सिंह

हम साठ के दशक के बच्चे हिंदी फिल्मों के गाने सुन-सुनकर बड़े हुए हैं. हम बिनाका गीत माला के उत्सुक श्रोता होने के नाते साल-दर-साल हिट गानों से वाकिफ थे. मुझे लता, रफी, आशा और दूसरों के गाने सुनना पसंद था, लेकिन सबसे ज्यादा मुझे किशोर कुमार को सुनना अच्छा लगता था.

संयोग कुछ ऐसा हुआ कि मैं फिल्मों में देव आनंद के साथ काम करने लगा. वहीं साल 1971 में पहली बार नवकेतन की रिकॉर्डिंग में मेरा किशोर कुमार से आमना-सामना हुआ. वह सचमुच फैन बॉय मोमेंट था. तब मुझे जरा पता नहीं था कि बहुत जल्द किशोर कुमार 'चलते चलते मेरे ये गीत याद रखना...' सरीखा मेरा गीत गाएंगे.

वक्त के साथ किशोर कुमार मुझे चाहने लगे और मुझे देखकर वे हमेशा खुश होते थे. मुझे उन कुछ चुनिंदा लोगों में शुमार होने का सौभाग्य मिला, जिन्हें जुहू में उनके घर आमंत्रित किया जाता था. उन्होंने मुझे वह पुरानी खटारा मोटर गाड़ी दिखाई जिसका *चलती का नाम गाड़ी* में इस्तेमाल किया गया था. दूसरे कमरे में सैकड़ों मशीनी खिलौने बिखरे पड़े हुए थे, जिनसे खेलना जाहिरा तौर पर उन्हें बहुत अच्छा लगता था. इससे उनके बारे में एक कहानी याद आती है जो पता नहीं कितनी सच्ची, कितनी झूठी है. जब वे गायकी और अदाकारी के शिखर पर थे, एक प्रोड्यूसर ने उन्हें वादे से आधी रकम ही दी. वे आधी मूंछ साफ करके शूट पर आ गए, और बोले, ''आधे पैसे में आधा चेहरा शूट कर लो.''

जबरदस्त प्रतिभा से ओतप्रोत किशोर कुमार असली मनमौजी थे. उन्होंने फिल्में, संगीत और जादू रचा. किशोर कुमार सुपरस्टारों की आवाज थे. उनके गाए आखिरी गानों में *सच्चे का बोलबाला* फिल्म का मेरा यह गीत भी था—'तन्हा, मैं अकेला, टूटा तारा कोई, आसमान मेरा, मेरी जमीन, मंजिल खोई खोई.' ■

अमित खन्ना *लेखक, फिल्मकार और मीडिया दिग्गज हैं*

रोमांस का राजा

यश चोपड़ा (1932-2012)

यश चोपड़ा अपनी किंवदंतियों वाली प्रेम कथाओं के लिए मशहूर हैं, लेकिन उन्होंने वर्जना भरे विषय भी उठाए, और ऐंग्री यंग मैन का किरदार भी उन्होंने ही गढ़ा

रानी मुखर्जी

यश चोपड़ा ने मुख्यधारा के फॉर्मेट में हमेशा धारा के खिलाफ जाने का विकल्प चुना और अधिकतर बार इसमें कामयाब रहे. उन्होंने 1959 में *धूल का फूल* बनाई जहां वह अवैध बच्चे के बारे में बात कर रहे थे. उनकी अगली फिल्म, *धर्मपुत्र* हिंदू-मुस्लिम संबंधों की गतिशीलता पर थी. उनकी पहली रंगीन फिल्म *वक्त*, पहली मल्टीस्टार थी. उन्होंने 1969 में पहली बगैर गानों वाली फिल्म *इत्तफाक* बनाई, जब कोई बिना गानों के हिंदी सिनेमा के बारे में सोच भी नहीं सकता था! उन्होंने *दाग* (1979) के साथ अपनी निर्माण कंपनी शुरू की, जो एक व्यक्ति के दो महिलाओं के साथ रहने के बारे में बोल्ड ड्रामाई फिल्म थी! बच्चन को *दीवार* और *त्रिशूल* में ऐंग्री यंग मैन के तौर पर पेश करने के बाद, उन्होंने उनको *कभी-कभी* और *सिलसिला* में हर महिला के सपनों का आशिक बना दिया.

जब मुख्यधारा की फिल्में मोटे तौर पर पुरुष किरदारों से संचालित होती थी, यश चोपड़ा की फिल्मों में महिलाओं के किरदार बराबरी पर खड़े होते थे. वे अपने वक्त से आगे चलने वाले शख्स थे, जिनको अपनी हीरोइनों से जिंदगी और समाज के बारे में कुछ कहलवाना पसंद था. वे हर विधा के पारंगत थे, पर रोमांस अपने आप में उनकी एक विधा है. उन्होंने ऐसी प्रेम कथाएं गढ़ीं जो वक्त से काफी आगे थीं, मसलन *लम्हे*. उनके लिए मुहब्बत कभी गलत नहीं हो सकता था. वे इसे कुछ शुद्ध जैसा मानते थे और उन्हें यकीन था कि अधिक मुहब्बत के साथ दुनिया एक बेहतर जगह बन सकती है. ■

रानी मुखर्जी हम तुम, ब्लैक *और* मर्दानी *जैसी फिल्मों के लिए मशहूर हैं*

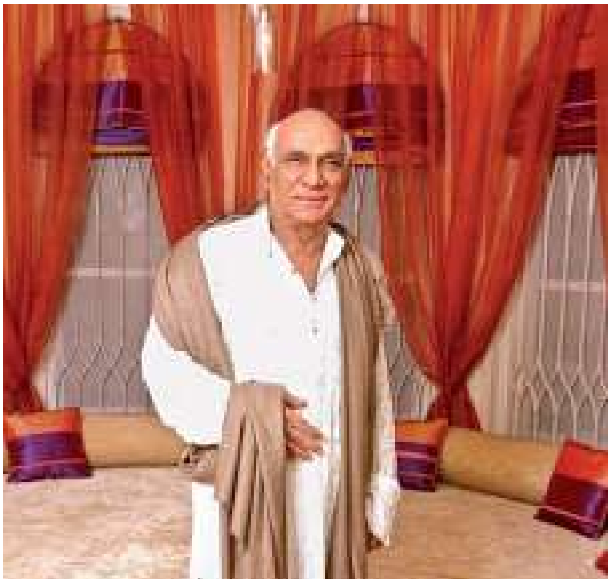

भास्कर पॉल

बंदिशों से परे

आर.डी. बर्मन (1939-1994)

बर्मन की विविधता भरी फिल्मों की फेहरिस्त सुबूत है कि जो आवाजें उनका ट्रेडमार्क बनीं, वह सब खास उनकी थीं

प्रीतम चक्रवर्ती

आर.डी. बर्मन मेरी सबसे बड़ी प्रेरणा हैं. जब मैं बच्चा था और तब मुझे जो गाने पसंद थे—चाहे हिंदी या बांग्ला—सब उनकी रचनाएं थीं. आरडी हर साल दुर्गापूजा के दौरान अपने एल्बम रिलीज करते थे. हमारा एक ग्रुप इसे सुनने जुट जाता था और हमारे लिए वही उत्सव था. हमें उनके सभी संगीतकारों और रिकॉर्डिस्टों के नाम याद थे. वे किसी फिल्म के लिए संगीत देते—*जीवा* हो या *सागर*—हम पहले दिन पहला शो देखते थे. हमने आर.डी. बर्मन फैन क्लब भी बनाया था.

उनका अपना खास सिग्नेचर था, और मुझे लगता है कि इसी वजह से वे अपने हर गाने के लिए उन्हीं खास संगीतकारों के साथ काम करते थे. साथ ही, उनकी अपनी एक शैली थी जो अनूठी थी. मसलन, गिटार का उनका इस्तेमाल. बाद में, कई लोगों ने उनकी नकल की कोशिश की, पर उस जैसा संगीत नहीं बन पाया. आरडी जो काम ध्वनियों के साथ करते थे, वह अपने वक्त में अभूतपूर्व था. मैं चकित हूं कि उनका संगीत आज भी कितना आधुनिक लगता है.

जब मैं एफटीआइआइ में छात्र था, मैंने आरडी से मिलने की बहुत चेष्टा की थी, पर उससे पहले उनका निधन हो गया. सत्तर के दशक में वे अपने शीर्ष पर थे. वे नब्बे के दशक तक उम्दा संगीत रचते रहे, पर वे बहुत हिट नहीं हो पाए. मैं कभी-कभी महसूस करता हूं कि उन्हें असली नाम उनके जाने के बाद ही मिला. ■

प्रीतम चक्रवर्ती *एक पुरस्कार विजेता फिल्म संगीतकार हैं*

कामयाबी की ड्रेस

भानु अथैया

(1929-2020)

भानु अथैया ने कॉस्ट्यूम डिजाइन की कला के जरिए दुनिया, किरदार और जादुई सिनेमाई पल रचे हैं

सव्यसाची मुखर्जी

बेटमैन आर्काइव

उन्होंने *चौदहवीं का चांद* (1960) में वहीदा रहमान को लखनऊ के नवाबी विरासत की पृष्ठभूमि में दिव्य सौंदर्य की दृष्टि दी, *तीसरी मंजिल* (1966) में उन्होंने हेलन के लिए आइकॉनिक फ्लेमेंको-प्रेरित कैबरे कॉस्ट्यूम तैयार किया था, *सत्यम शिवम सुंदरम* (1978) में उनके पास एकांतप्रिय गंवई लड़की और अप्सरा जैसी फंतासी शख्सियत के बीच चहलकदमी करने वाली जीनत अमान थी, और बिला शक, सर रिचर्ड एटनबरो की *गांधी* (1982) की ऑस्कर विजेता महान कृति में उन्होंने पूरी आधी सदी को समेटा और केंद्रीय चरित्र तथा असंख्य एक्स्ट्रा को विभिन्न टाइम जोन और भारतीय इतिहास के सबसे अहम दौर के लिहाज से कपड़े पहनाए. संसार, किरदार और कुछ बेहतरीन जादुई सिनेमाई पल कॉस्ट्यूम डिजाइन की कला के जरिए गढ़ने में भानु अथैया असाधारण रूप से प्रतिभावान थीं.

जब वे 1953 में बॉम्बे में प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट ग्रुप में प्रदर्शनी लगाने वाली एकमात्र महिला कलाकार थीं, से लेकर यह समझने में कि उन्हें नियमित आय की जरूरत है और *इव्स वीकली* जैसी पत्रिका में इलस्ट्रेटर बनने तक, और फिर अपना फैशन बूटीक खोलने से लेकर आखिर में अपनी असली मंजिल पाने तक, जब हिंदी सिनेमा ने उन्हें खोज लिया—अथैया एक कलाकार और विचारक दोनों थीं, उन्होंने जो रचा उससे प्रेरित भी करती रहीं. उन्होंने पहली ही फिल्म से धमाका कर दिया, गुरु दत्त की 1956 में आई *सीआइडी.* प्रामाणिकता की खोज में उन्हें एक असाधारण विरासत छोड़ी. यह एक सबक है जिसे समझने में रचनात्मक लोगों को दशकों लग जाते हैं.

फैशन डिजाइनर का काम कॉस्ट्यूम डिजाइनर से अलहदा होता है, पर अथैया ने मुझे सिखाया कि कैसे मकसद को लेकर खरा रहा जा सकता है, आप कैसे सीखते हैं, आप जो किस्सागोई कर रहे हैं उसे दर्शकों को सटीक तरीके से सुनाकर कैसे मंत्रमुग्ध कर देते हैं. ■

सव्यसाची मुखर्जी *अग्रणी फैशन डिजाइनर और कॉस्ट्यूम डिजाइनर हैं*

शरद सक्सेना

रचयिता

अदूर गोपालकृष्णन, 80 वर्ष

विश्वस्तर पर प्रतिष्ठित फिल्म निर्देशक अदूर गोपालकृष्णन ने मलयाली सिनेमा की भाषा नए सिरे से गढ़ने के अपने प्रयासों के साथ कभी समझौता नहीं किया

बी. उन्नीकृष्णन

अदूर गोपालकृष्णन मलयाली सिनेमा को दुनिया भर के दर्शकों के बीच पहुंचाने वाले संभवतः पहले फिल्म निर्देशक हैं. उन्होंने और जी. अरविंदन तथा शाजी एन. करुण जैसे केरल के उनके समकालीनों ने भारत के समानांतर सिनेमा आंदोलन में क्रांतिकारी योगदान दिए हैं.

अदूर की पहली फीचर फिल्म *स्वयंवरम* (1972) से ही उनकी प्रतिभा का पता चल गया था. मलयाली सिनेमा में नए दौर की शुरुआत करने वाली इस फिल्म को राष्ट्रीय पुरस्कार मिला. यूरोप के यथार्थवादी सिनेमा से प्रेरित होकर उन्होंने भी मलयाली साहित्य की कुछ प्रसिद्ध कृतियों को बड़े पर्दे के लिए रूपांतरित किया. एक तरह से उन्होंने अपने लिए फिल्में बनाईं, फिर भी हर फिल्म के साथ अपने दर्शकों का दायरा वैश्विक बनाने में सफल रहे. *स्वयंवरम* से *पिन्नेयम* (एक बार फिर) तक अदूर की बनाई 12 फिल्मों को देखें तो लगता है कि हम केरल के समाज और उसमें हुए परिवर्तनों को दिखाने वाला दर्पण देख रहे हैं.

अदूर अपनी कार्यनीति में अडिग रहे हैं और उन्होंने न कभी बाजार गतिविधियों की चिंता की, न ही कभी सांस्कृतिक अथवा राजनैतिक निहित स्वार्थों के शिकार बने. उनकी फिल्में स्वयं को नए सिरे से तलाशने के उनके निरंतर प्रयोग को उजागर करती हैं. वे 80 वर्ष के हैं, लेकिन अभी भी वे एक नई स्क्रिप्ट और नई परियोजना के डिजाइन पर काम कर रहे हैं. महामारी के दौरान कोई सांस्कृतिक प्रतीकपुरुष इससे ज्यादा क्या कर सकता है. ■

बी. उन्नीकृष्णन *मलयाली फिल्म निर्माता, स्क्रिप्ट राइटर और प्रोड्यूसर हैं*

दानिश जस्सेवाला

समानांतर दुनिया

नसीरुद्दीन शाह, 80 वर्ष

मंच हो या परदा, भारत के समानांतर सिनेमा के पोस्टर बॉय नसीरुद्दीन शाह से नजरें हटाए नहीं हटतीं

मनोज वाजपेयी

हमारे गांव के सिनेमाघर में मिस्टर शाह की फिल्में कभी आईं नहीं, पर मैं उन्हें पत्रिकाओं में छपे उनके इंटरव्यू से जानता था. दिल्ली आने के बाद मैं श्याम बेनेगल और गोविंद निहलानी के साथ बनी उनकी फिल्में सुबह के शो में देखने लगा. मैं पूरी तरह सम्मोहित था. अपनी थिएटर मंडली में हम केवल दो लोगों के बारे में बात करते—नसीरुद्दीन शाह और ओम पुरी. अपनी अभिनय कला को संवारने के लिए उनके पास भले कोई संदर्भ नहीं रहा हो, हमने अपनी अभिनय कला उनकी अदाकारी देखकर सीखी. हमारे तो वे ही डि नीरो और अल पचिनो थे, जिनकी हमें जरूरत थी.

मिस्टर शाह खासकर जिस तरह अपनी कला का इस्तेमाल करते थे, उससे मैं मंत्रमुग्ध रह गया. *मिर्च मसाला* हो या *स्पर्श* या *अर्धसत्य* का वह शानदार दृश्य, उन्हें देखना अदाकारी के उस्ताद को देखना था. जिस क्षण आप उन्हें चलते या उनकी चाल-ढाल देखते या जिस क्षण आप उन्हें बोलते या उनका लहजा सुनते, आप हक्के-बक्के रह जाते थे. इधर, मैं उनकी तैयारी के बारे सोचना बंद करता, उधर अचंभे में पड़ जाता. उन्होंने मुझे अभिनय में इतना कुछ सिखाया.

> **अपनी थिएटर मंडली में हम केवल दो लोगों के बारे में बात करते—नसीरुद्दीन शाह और ओम पुरी. हमारे तो वे ही डि नीरो और पचिनो थे, जिनकी हमें जरूरत थी**

मिस्टर शाह से सहज रिश्ता बनाना बहुत आसान है, पर वे तभी खुलते हैं जब आप खुलें. वे उर्दू में बोलें, या हिंदुस्तानी या अंग्रेजी में, उन्हें बस बोलते सुनना शानदार होता है. उनसे मैंने सीखा कि किस तरह बर्ताव करूं. किस तरह बेबाक रहूं और मैंने सीखा कि पढ़ना कितना जरूरी है. उनकी प्रतिभा का तो बस जश्न मनाना चाहिए. ■

मनोज वाजपेयी *राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता अभिनेता हैं*

शब्दों के धनी

गुलज़ार, 87 वर्ष

गुलज़ार जिस चीज को छूते हैं वही सोना बन जाती है. *अंगूर* और *आंधी* जैसी उनकी फिल्मों से लेकर उनके गीतों ने हिंदी सिनेमा को यादगार बना दिया

वरुण ग्रोवर

गुलज़ार वह ओवरकोट हैं जिससे आधुनिक हिंदी फिल्मों के गीत उभरे. बेशक उनके सामने हिंदी फिल्म संगीत की सुदृढ़ काव्य परंपरा थी जिसमें शामिल कई हस्तियां गीतों के स्तर को लगातार ऊपर उठाती रहती थीं, लेकिन किसी ने भी लोकप्रिय और अमूर्त तथा बौद्धिक और भावात्मक पक्षों की परतें इतनी सहजता से नहीं खोला है जितना गुलज़ार ने. और, उन्होंने न केवल इन परतों को खोला, बल्कि पिछले छह दशकों से मशाल लिए वह हमारे मार्गदर्शक रहते हुए लगातार उद्घाटित करते रहे हैं कि एक सीधा-सादा गीत भी कल्पना और अर्थ के संदर्भों में कहां तक पहुंच सकता है.

'वो शाम कुछ अजीब थी' या 'तुझसे नाराज नहीं जिंदगी' जैसे गहरे दार्शनिक गीत इसलिए लोकप्रिय हो

लिविंग मीडिया इंडिया

हिंदी फिल्म संगीत में गीतों की लोकप्रिय और भावात्मक परतों को किसी ने इतनी सहजता से नहीं खोला है जितना गुलज़ार ने

सके कि गुलज़ार ने इन जटिल विचारों को पिरोने के लिए सुरुचिपूर्ण शब्द तलाशे. बोलियों की अंतर्निहित संगीतमयता के प्रति उनके आकर्षण ने हिंदी फिल्म संगीत में ढेरों शब्दकोषीय लगने वाले शब्दों को केंद्र में ला खड़ा किया है. ‘चड्डी पहन के फूल’ से लेकर ‘किमाम की खुशबू’ तक, ‘कांधे का तिल’ से ‘नैना ठग लेंगे’ तक, ‘रूस का पुश्किन’ और पंजाबी छाप लिए ‘औनी-पौनी यारियां तेरी’ से लेकर बांग्ला के ‘पांता-भाटे टटके बेगुन पोरा’ तक गुलजार की डायरी से कोई शब्द नहीं छूटता.

वह हिंदी फिल्म इतिहास के सबसे कुशल और संवेदनशील पटकथा लेखकों और निर्देशकों में भी शामिल हैं, जो पूरे समीकरण को और भी हैरान करने वाला बना देता है. लेकिन फिर, गणित की सभी महान प्रमेयों की तरह ही गुलज़ार के अस्तित्व को उनकी शान से अलग नहीं किया जा सकता. ■

वरुण ग्रोवर *हिंदी फिल्मों की गीतकार, कवि, लेखक और स्टैंड-अप कॉमिक हैं*

अलामी स्टॉक फोटो

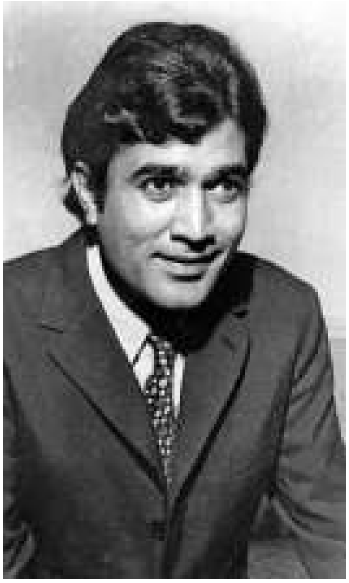

दिलकश नायक

राजेश खन्ना
(1942-2012)

राजेश खन्ना भारत के पहले सुपरस्टार थे, जिन्होंने हिंदी फिल्मों में रोमांस के युग की शुरुआत की

शत्रुघ्न सिन्हा

राजेश खन्ना से जुड़ी मेरी पहली याद 1970 की है. फिल्म ऐंड टेलीविजन इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया (एफटीआइआइ) से ताजा-ताजा निकलने के बाद मुझे छोटे रोल मिलने लगे थे, जबकि राजेश खन्ना पहले से ही स्टार थे. उनके भाव प्रवण चेहरे-मोहरे और तौर-तरीके को देखकर महसूस होता था जैसे कोई जादू हो. कई और भी लोग थे जो शायद फिल्म उद्योग में ऊंचे मुकाम के हकदार थे, लेकिन उनके पास राजेश खन्ना का जलवा नहीं था. उनका दृढ़ विश्वास था कि वे सुपरस्टार हैं, और इसी बात से सारा फर्क पैदा होता था.

राजेश खन्ना को हम वह ‘परिघटना’ कहते थे जिसने अपने सहज प्रदर्शन के साथ रोमांस के बारे में भारत की धारणाओं को बदल दिया था. उनकी आभा ने अकेले ही भारतीय सिनेमा के एक ऐसे युग का सृजन किया जिसके केंद्र में मासूमियत थी और जिसके आखिर में हमेशा अच्छे लोगों की जीत होती थी. वह ‘अनंत प्रेम’ की जीती-जागती अभिव्यक्ति बन गए थे.

मैंने उनके साथ कई फिल्मों में काम किया, और हालांकि वह देर से आने के लिए बदनाम थे लेकिन यह केवल देखने वाले ही जान सकते हैं कि जब खन्ना सेट पर पहुंचते थे तो पूरा सेट कैसे उनकी ओर खिंचा चला आता था. औरों को निहत्था कर देने वाली मुस्कान के साथ जब वे सेट पर घूमते तो हर कोई उन्हें लपक लेने को तैयार होता, उनके हर शब्द को पकड़ता और उनका चुटकुला पूरा होने से पहले ही हंसने लगता था.

राजेश खन्ना ऐसे भी थे जो सेट पर अपने भोजन का भुगतान करते थे (‘मेरे खाते में लिखो’) और रद्द की गई शूटिंग के लिए अपने निर्माताओं को मुआवजा देते थे. इन सबसे ऊपर, वे बेहद ईमानदार व्यक्ति थे और अपनी भावनाओं को छिपाते नहीं थे. नई दिल्ली सीट के लिए 1992 में हुए लोकसभा उपचुनाव में जब मैंने उनके खिलाफ चुनाव लड़ा तो राजेश खन्ना मुझसे नाराज हो गए थे (मुझे अभी भी इस फैसले पर अफसोस है क्योंकि मैं उस समय आडवाणी जी को मना नहीं कर सका था).

खन्ना ने गौरव का शिखर देखा तो अपना सर्वश्रेष्ठ देने के बाद एकांत का दौर भी देखा. मुझे याद है कि मैं घंटों उनके घर पर उनके साथ बैठा रहता था. वे कहते थे, ‘‘शेर भूखा मर जाएगा, लेकिन बीड़ी नहीं पिएगा.’’ ■

शत्रुघ्न सिन्हा *अभिनेता और पूर्व लोकसभा सांसद तथा पूर्व केंद्रीय मंत्री हैं*

स्टाइल के गुरु

रजनीकांत 70 वर्ष

‘थलाइवा’ की उदारता मिथकीय है और यही कारण है कि वे रील के साथ-साथ वास्तविक जीवन में भी नायक हैं

सुरेश कृष्णा

हम पहली बार एक साथ फिल्म (*अन्नामलै*) पर काम कर रहे थे, जब मुझे एहसास हुआ कि रजनीकांत कितने अनूठे हैं. उनके बोलने, चलने और जनता से जुड़ने का तरीका अनोखा था. उनकी फिल्मों को सिनेमाघरों में मिलने वाली प्रतिक्रिया मुझे हमेशा चकित करती है. एक ऐसा अभिनेता जो सुदर्शन नहीं है, तमिल नहीं है, असल में अच्छी तमिल भी नहीं बोलता. लेकिन संवाद बोलने की उनकी लय और उनकी देह भाषा इतनी अनोखी है कि हर कोई उनसे प्यार कर बैठता है.

रजनी के बारे में मुझे जो बात सबसे ज्यादा पसंद है, वह है किरदारों को शक्ति प्रदान करना, अनूठी शैली और विनम्र स्वभाव. काम के प्रति उनका समर्पण उल्लेखनीय है. जब शूटिंग चल रही होती, रजनी कभी भी सेट नहीं छोड़ते थे, सबको नाम से जानते थे और अक्सर लोगों की जेब में पैसे डाल देते थे. वह कभी भी प्रशंसकों के साथ फोटो खिंचवाने से मना नहीं करते. हर किसी के घर में उसकी रजनी के साथ खिंचाई फोटो होती है.

मैंने उनके साथ चार फिल्में की हैं और हर फिल्म की रिलीज से पहले वे घबराते थे. पूरे तमिलनाडु में थिएटर मालिकों, वितरकों और यहां तक कि कैंटीन मालिकों को फोन करके फिल्म पर प्रतिक्रिया जानते थे. वे चाहते थे कि उनकी फिल्में अच्छा करें और सभी के लिए पैसा कमाएं. वे हमेशा चुपचाप उन लेखकों, निर्देशकों और अन्य लोगों की मदद करते हैं जिन्हें मदद की जरूरत होती है. वे केवल परदे पर नहीं, बल्कि असल जीवन में भी अद्भुत भूमिकाएं निभाते हैं.

सुरेश कृष्णा *ने रजनीकांत को चार फिल्मों* अन्नामलै, वीरा, बाशा *और* बाबा *में निर्देशित किया है*

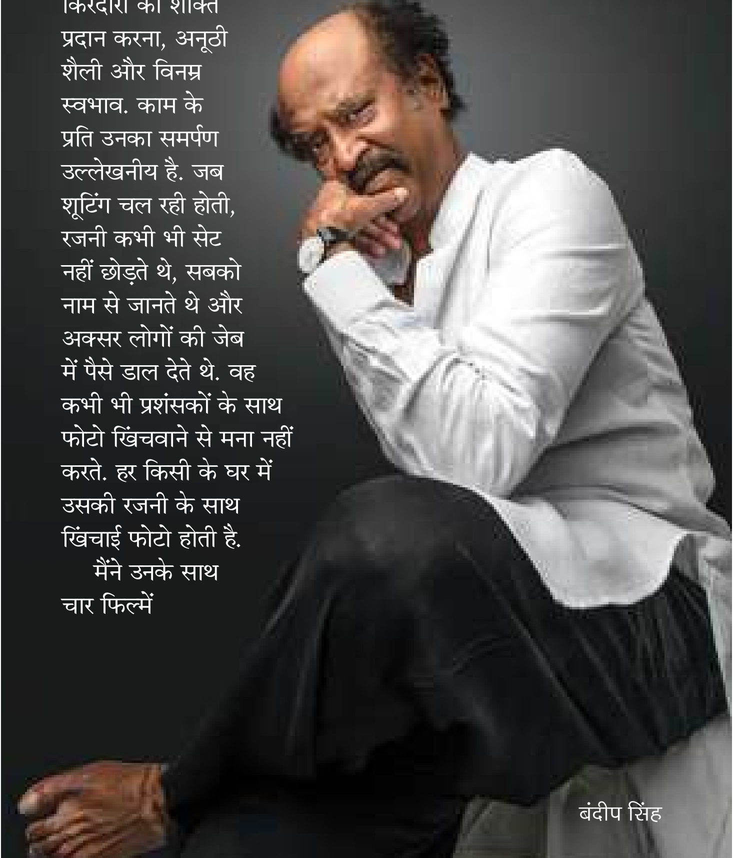

बंदीप सिंह

निशिकांत गामरे

वाकई अव्वल

आमिर खान, 56 वर्ष

हर काम के प्रति पूर्ण प्रतिबद्धता और जोखिम लेने का माद्दा इस अभिनेता को अनूठा बनाता है

राजकुमार हीरानी

आमिर के साथ काम करना किसी भी डायरेक्टर का सपना है. इसकी एक बड़ी वजह यह है कि वे एक वक्त में एक ही फिल्म लेते हैं और अपना सब कुछ उसमें झोंक देते हैं.

फिल्म चुनते वक्त आमिर हमेशा अपनी सहज भावना के मुताबिक चलते हैं. अगर उन्हें ‘क्या कामयाब होगा’ और ‘उनकी सहज भावना क्या कह रही है’ के बीच चुनना हो, तो वे अपनी सहज भावना, अपने मन की आवाज चुनेंगे. *लगान* देखिए, यह तीन घंटे 40 मिनट का पीरियड ड्रामा है, आखिरी 75 मिनट तो क्रिकेट मैच है. होशो-हवास में कोई सोचेगा भी नहीं कि यह कारगर होगा! पारंपरिक अक्लमंदी यही कहेगी कि वह जोखिम ले रहा है, पर उनके दिमाग में ऐसा नहीं है. वे बस नई और अनदेखी चीज की तलाश कर रहे होते हैं. इसीलिए उन्होंने *दंगल, सीक्रेट सुपरस्टार* और *तारे जमीं पर* सरीखे दिलचस्प विषय चुने.

आम धारणा के उलट, उनके साथ काम करना बहुत आसान है. *पीके* में हमने तय किया कि जब एलियन (खान का निभाया किरदार) धरती पर उतरेगा तो वह नंगा होगा और इसलिए हम उसकी नंगी पीठ शूट करेंगे. दृश्य सुनाते वक्त मुझे लगा कि वे एतराज करेंगे. उन्होंने नहीं किया. शूट के दिन मैंने सोचा कि वे मीन-मेख निकालेंगे पर उन्होंने पलक छपकाए बगैर उसे शूट किया. बाद में पोस्ट-प्रोडक्शन में हमने इसे धुएं से ढक दिया. सिनेमा के प्रति यह उनकी संपूर्ण प्रतिबद्धता ही है जो उन्हें बेहद अनोखा अदाकार बनाती है. ■

राजकुमार हीरानी *हिंदी सिनेमा की कुछ सबसे बड़ी हिट फिल्मों* मुन्नाभाई एमबीबीएस, 3 ईडियट्स *और* पीके *के निर्देशक तथा सह-लेखक हैं*

खास और अलहदा

श्रीदेवी (1963-2018)

अपने शिखर पर श्रीदेवी भारत की सबसे बड़ी अखिल भारतीय स्टार थीं जब फिल्में महज उनके नाम पर बेची जाती थीं

विद्या बालन

मंदार देवधर

श्रीदेवी समय से परे हैं. जब भी आप उन आंखों में देखते, वे आपको बांध लेती थीं, उनमें खालिस जज्बात होते. इसने उन्हें सर्वोपरि क्लोज-अप अदाकारा बना दिया, जो अपने किए हर काम में जान डाल देती थीं. मैं समझती हूं वे अकेली भारतीय अदाकारा थीं जो कॉमेडी, खासकर शारीरिक कॉमेडी, इतनी उम्दा करती थीं. सबूत है *मिस्टर इंडिया*. डायरेक्टर शेखर कपूर की यह बात मशहूर है कि 'हवा हवाई' के दौरान उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि कैमरा कहां रखें क्योंकि उनका एक-एक इंच अदाकारी कर रहा था.

उनके अभिनय की छटाएं बेजोड़ थीं. ऐसा कुछ नहीं था जो वे न कर सकती हों. वे शायद हमारी सबसे बड़ी अखिल भारतीय स्टार थीं. एक वक्त था जब फिल्में उन्हीं के नाम से बेची जाती थीं.

उन्होंने अपने काम को बौद्धिकता को जामा नहीं पहनाया. उन्होंने बस इस तरह आपके दिल को छुआ जैसे कभी किसी ने नहीं छुआ था. उन्होंने खुद पर कभी कोई राय नहीं बनाई और अभिनेता के लिए इससे बड़ा वरदान नहीं हो सकता. उन्होंने हिंदी फिल्मों की नायिका को तराशा और हमें बताया कि वह अच्छी, बुरी, भद्दी, कुछ भी हो सकती है. काम के प्रति उनका जुनून कभी कम नहीं हुआ.

मैंने (फिल्मकार) गौरी शिंदे से कहा कि मैं *इंग्लिश विंग्लिश* में उनकी सहायक बनना चाहती हूं, महज इसलिए कि मैं श्रीदेवी के जादू को खिलते देख सकूं. बरसों पहले मुझसे *सदमा* के रीमेक की पेशकश की गई थी. मैं तो दस फुट दूर से भी इसे हाथ न लगाऊं. जो पावन और अलौकिक है, पावन और अलौकिक ही बना रहे. ■

विद्या बालन *राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता अभिनेत्री हैं*

बड़ी-बड़ी चीजों का शाह

शाहरुख खान, 55 वर्ष

बॉलीवुड के बादशाह ने विभिन्न शैलियों और जायकों की फिल्मों से दर्शकों के दिलो-दिमाग को बांधे रखा

आशुतोष गोवारीकर

बंदीप सिंह

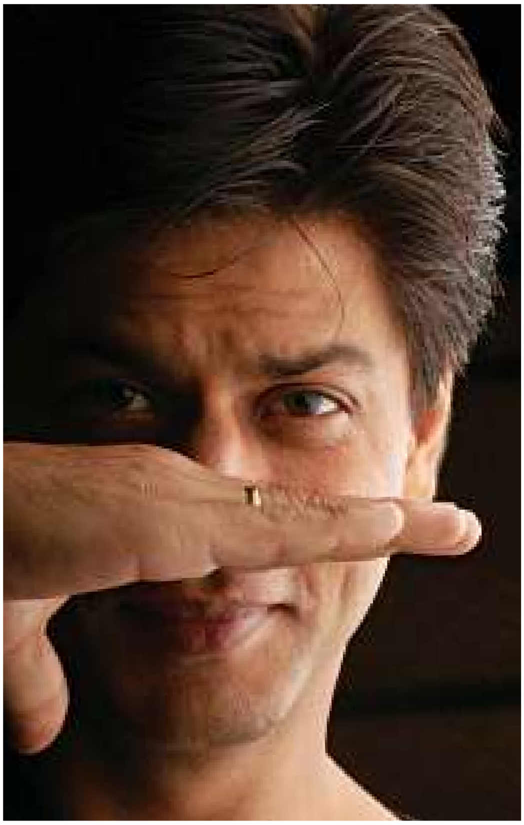

शाहरुख को मैं तब से जानता हूं जब वे शाहरुख थे, न कि शाहरुख खान. सह-अभिनेता से निर्देशक बनने के अपने सफर में मैंने शाह को बढ़ते, विकसित होते और आसपास के लोगों को बहुत-से तरीकों से सम्मोहित करते देखा.

सह-अभिनेता के नाते मैं अचरज में पड़ जाता जब वे अभिनय की 'पद्धति' को अपना खास मोड़ दे देते. रिकॉर्ड रफ्तार से संवाद सीखने और दोहराने की काबिलियत उनमें है. संवाद याद करने के बाद उन्हें मायने देने के लिए उनका पूरा जोर अपनी आंखों, होठ, हाथों और अपने समूचे शरीर के इस्तेमाल पर होता. उन्हें देखना सम्मोहक है और यही उन्हें चुंबकीय बनाता है!

निर्देशक के तौर पर मुझे उनकी जो बात अच्छी लगती है, वह है उनका सच्चा, खरा और गंभीर रवैया. उनकी कल्पनाशीलता भी इसमें जुड़ जाती है. *स्वदेश* के लिए उन्होंने अपनी शख्सियत का वह हिस्सा निकाला जो अभी तक इस्तेमाल नहीं हुआ था और उसे मोहन भार्गव के किरदार में डाल दिया. अगर आप उनकी विभिन्न शैलियों, अंदाज और जायकों की फिल्मों का सफर देखें, तो उनमें कई सारी छटाएं हैं. उनकी शख्सियत के ऐसे और भी मायावी हिस्से हैं जिन्हें अभी फिल्मकारों को सामने लाना है. जब यह होगा, शाहरुख दमक उठेंगे...एक और प्रकाश स्तंभ! ■

आशुतोष गोवारीकर *ऑस्कर के लिए नामांकित* लगान *फिल्म के लेखक-निर्देशक हैं*

मिलिंद शेल्टे

भाईजान

सलमान खान, 55 वर्ष

बॉलीवुड में कोई भी अभिनेता उस तरह का आवेश और दीवानापन नहीं जगाता, जैसा सलमान भाई जगाते हैं, यही वजह है कि वह भारत के बॉक्स ऑफिस पर चहेते हैं

अली अब्बास जफर

सलमान के साथ एक दशक तक काम करने के बाद, मुझे यह एहसास हुआ कि उनकी सबसे बड़ी ताकत निष्ठावान दर्शकों के साथ उनके जुड़ाव में है. बेशक, बहुत सारे महान अभिनेता रहे होंगे लेकिन उनमें से कोई भी नायकत्व की पूजा को इस तरह से प्रेरित नहीं करता. यही वह चीज है जो नौ साल के बच्चे को भी *ढिंक-चिका* या *बेबी को बेस पसंद है* पर नाचने को मजबूर कर देता है. यह सिर्फ तभी मुमकिन है जब लोग आपके काम से प्रभावित हुए हों. दर्शकों में ऐसा आवेश पैदा करने के लिए बरसों की कड़ी मेहनत और हर मुमकिन विधा में फिल्म करने की जरूरत होती है. सलमान अपनी तरह के अकेले अभिनेता इसलिए हैं क्योंकि उनके करिश्मे का कोई जोड़ नहीं है.

इंडस्ट्री में तीन दशक बिताने के बाद, मुझे लगता है कि उनकी प्रतिभा का पूरा इस्तेमाल नहीं हुआ है. उनकी छवि ताकतवर पुरुष आइकन की है, पर उनके साथ मजबूत जज्बाती तार भी जुड़े हैं, जो बहुत ज्यादा नहीं देखा जा सका है. काम को लेकर सलमान खान बेहद ईमानदार हैं. वे जानते हैं कि उनके दर्शकों में 99 फीसद लोग बुनियादी जज्बात को समझते हैं इसलिए वह गैर-जरूरी तौर पर चीजों को जटिल नहीं बनाते. उन्हें परिवारों को थिएटर तक वापस लाने का श्रेय भी जाता है, वह भी उस दौर में जब सिंगल स्क्रीन सिनेमा संघर्ष कर रहा था. यह उनके नाम पर दर्ज ब्लॉकबस्टरों की फेहरिस्त से जाहिर होता है, *हम आपके हैं कौन* (1994) से लेकर *बजरंगी भाईजान* (2015) तक. वे साफ-सुथरे मनोरंजन के ध्वजवाहक हैं जिसमें भारत के मूल्य दिखते हैं. जब वे उसे पेश करते हैं तो फिर बॉक्स ऑफिस पर उन्हें कोई रोक नहीं सकता. ■

अली अब्बास *ने सलमान खान को* सुल्तान *और* टाइगर जिंदा है *में निर्देशित किया है*

विश्वस्तरीय

ए.आर. रहमान, 54 वर्ष

भारत के असली ग्लोबल स्टार ने बहुत सारी फिल्मों के साथ हमारी जिंदगी को भी साउंड ट्रैक दिया

इम्तियाज अली

पहली दफा मैंने रहमान को सुना तो उस वक्त मैं कॉलेज में था. मैं अपने एक दोस्त के साथ वाइएमसीए हॉस्टल में लेटा था और उनके दो एल्बम हमने एक के बाद एक सुन लिए थे—*रोजा* और *तिरुदा तिरुदा*. मुझे तमिल समझ में नहीं आई. मैं महज संगीत सुन रहा था. मैं मंत्रमुग्ध रह गया. आप जिनके फैन होते हैं, एक बार उन से मिल लें और काम कर लें तो आपको वे साधारण लगने लगते हैं. बस रहमान हैं जो इसके बाद भी सितारे की तरह दमकते हैं. वे असाधारण रूप से ईमानदार और पहुंच में होने की वजह से चमत्कृत कर देते हैं.

मेरी फिल्मों का अस्तित्व नहीं होता जब मैं रहमान को उनकी कहानी बताता हूं, पर जब वे किसी धुन या इंटरल्यूड के साथ आते थे, मैं चकित रह जाता था कि मैंने उन्हें जो भी सुनाया था उन्होंने हर किसी को आवाज दी है. बातचीत में वे कभी भी बौद्धिक के तौर पर खुद को पेश नहीं करते, लेकिन जब वे संगीत सिरजते हैं, मैं इससे हैरत में पड़ जाता हूं कि मैंने उन्हें जो बताने की कोशिश की उस संदर्भ को उन्होंने कितनी गहराई से समझा है. कभी वे एक मौसम का क्रेज थे, बाद में वे पूरे दशक की खुशबू बन गए.

कुछ ही वक्त में, वे हॉलीवुड रिटर्न संगीत निर्देशक बन गए. भले ही उन्होंने यह सब पा लिया हो, पर अभी भी वे उम्दा तरीके से ऐसा संगीत बना रहे हैं जो उन्होंने पहले नहीं रचा. उनका हर गाना नया होता है और उसका बस एक टुकड़ा सुनकर आप समझ जाते हैं कि वह उन्हीं का है. ■

इम्तियाज अली *ने रॉकस्टार और तमाशा जैसी फिल्मों का निर्देशन किया है*

महाकाव्यात्मक नजरिया

एस.एस. राजमौलि, 47 वर्ष

राजमौलि की अनूठी बात महाकाव्यात्मक नजरिए को स्क्रीन में यथार्थ पर उतारने में उनकी महारत है

राना दग्गूबती

टीसीडी/पीआरओडी.डीबी/आलामी स्टॉक फोटो

राजमौलि की खासियत किसी उच्च अवधारणा को उठाना और उसे मुख्यधारा के अफसाने से जोड़ देना है जिससे देश का हर शख्स जुड़ जाए. वह *ईगा* में घरेलू मक्खी पर बेहद कामयाब व्यावसायिक फिल्म बना सकते हैं या फिर *बाहुबली* फ्रेंचाइज खड़ी कर सकते हैं जिससे वे पूरे भारत को एक धागे में पिरो देते हैं. वे यह साबित करते हैं कि ऐसी फिल्में भी बनाई जा सकती हैं जो भाषा और क्षेत्र की सरहदें ध्वस्त कर देती हैं. दो *बाहुबली* फिल्मों के साथ, उन्होंने एक भारतीय कथा को विशाल पैमाने पर पेश किया जिसमें भावनाएं थीं और उससे भी भव्य विजुअल्स. उन्होंने विजुअल इफेक्ट्स, साउंड और नई तकनीक का प्रयोग किया ताकि फिल्म एक 'अनुभव' बन जाए.

मैं बहुत सारे रचनात्मक लोगों से मिला हूं, और ऐसे बहुत सारे लोग हैं जो भव्य कहानियां कहना चाहते हैं, लेकिन राजामौलि एकमात्र शख्स हैं जो बारीकी के साथ इसे हासिल कर पाए. वे लोगों में अपना सर्वश्रेष्ठ देने का जज्बा भर देते हैं और उन्हें साथ लाकर उनके जेहन में चल रहे एकल विजन को साकार कर देते हैं. ■

राना दग्गूबती *एक अभिनेता, निर्माता और उद्यमी हैं*

किंग बी

अमिताभ बच्चन, 78 वर्ष

भारतीय फिल्म जगत का यह महामानव उम्र से जरा-भी धीमा नहीं पड़ा, अभी भी उनके अभिनय से सजी तीन प्रोजेक्ट रिलीज होनी हैं

आर. बाल्की

आप अमिताभ बच्चन को महान अभिनेता या महान स्टार कहें, पर मुझे नहीं लगता कि उनके नाम अमिताभ बच्चन से ज्यादा कुछ भी उनके साथ न्याय कर सकता है. वे फिल्म जगत के अकेले अदाकार हैं जिन्होंने अपने निभाए किरदारों में—चाहे वह शराबी, कुली, बच्चा, रूमानी या नाराज आदमी हो—अपने खुद का कुछ हिस्सा डाल दिया है. इसलिए हर फिल्म में अंततः वे दोहरी भूमिका अदा कर रहे होते हैं—एक अमिताभ बच्चन की, दूसरी किरदार की. किसी और ने ऐसा किया है तो वे हैं मार्लन ब्रांडो. ज्यादातर डॉन ब्रांडो के *गॉडफादर* की तरह बनना चाहते हैं.

ज्यादातर ऐक्टिंग स्कूलों में आपको किरदार में अपने को खो देना सिखाया जाता है. मगर बच्चन अपने को खोए बगैर बच्चन बने हैं. आप इसे अक्लमंदी कहें या सयानापन, पर उन्होंने ऐसा करना कभी बंद नहीं किया. उन्होंने समझ लिया कि इसी से कई किरदार जीते-जागते बने और पूरी पीढ़ी उनकी तरह बर्ताव करने और बोलने लगीं. कई महान अभिनेता हुए हैं और महान अभिनेता होंगे, लेकिन बच्चन तथा बाकियों के बीच फर्क हर बार खुद को खो नहीं देने की यह अद्‌भुत काबिलियत ही है. यही वजह है कि अमिताभ बच्चन उनके लिए गढ़ी गई ज्यादातर भूमिकाओं से कहीं ज्यादा बड़े हैं.

उनका मुरीद होने के नाते तब मैं परेशान हो जाता हूं जब भूमिका में 'उन्हें' नहीं देख पाता. मैं चाहता हूं कि किरदार में ढेर सारा बच्चन हो. मैं समझता हूं कि किसी भी दूसरे अदाकार ने सिनेमा से परे इतने सारे लोगों के दिल, दिमाग और जिंदगियों पर वैसा असर नहीं डाला जैसा कि अमिताभ बच्चन ने डाला है. ■

आर. बाल्की चीनी कम, पा *और* पैडमैन *के लेखक-निर्देशक हैं*

बंदीप सिंह

वर्षः 35; अंकः 40; 26 अगस्त-1 सितंबर 2021; प्रत्येक शनिवार को प्रकाशित, *कुल पन्ने:* 116 *(कवर सहित)*